॥ श्रीः ॥

तीर्थयात्रानिरूपण

रामेश्वरादिक चार धाम

बद्री केदार माहात्म्य भा० टी० सहित

सचित्र ।

लेखक तथा प्रकाशकः—

उपाध्याय पं० बलिराम शर्मा

मैनेजर

भारततीर्थप्रचारक कार्य्यालय बद्रिकाश्रम, गढ़वाल ।

श्री० एल० पावगी द्वारा हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित ।

द्वितीय बार
२००० प्रति

१९१४

प्रति पुस्तक १)
बाइंडिंग सहित १॥)

विषयानुक्रमणिका ।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ भूमिका ।

स जयति सिंधुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम् ।
वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम् ॥१॥

प्रिय पाठकगण !

आजकल कराल कलिकाल की विशाल महिमा से कैसे कैसे कपोलकल्पित कुतर्क वागूजल रचकर बहुधा छात्रिक लोग हमारे सच्चे सनातन धर्म्म के प्रत्येक मर्म्मस्थान पै कठोर प्रहार कर रहे हैं उन्हें देख कौन ऐसा सत्य धर्म्मानुरागी है कि जिसको रोमाञ्च और कम्प के साथ २ मनोवेदना न होती हो । महाशय ! आप जानते ही हैं कि इस समय में सत्ययुग के समान तपश्चर्य्या नहीं होसकती और न त्रेतायुग के तुल्य ज्ञान की आशा है और

न द्वापर के सदृश राजसूय आदि यज्ञों की सम्भावना है इस कलिकाल में केवल भगवद्भजन, पाठ, पूजन, श्राद्ध, तर्पण और तीर्थ-सेवनादि धर्म्माचरण ही इस असार संसार से पार होने का उपाय शेष रहा है।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखाजाय तो उक्त कार्यों में तीर्थसेवा ही सबकी मूलभूत प्रतीत होती है क्योंकि प्रायः गृहस्थ लोग घर में रात दिन लौकिक कार्यों में लगे रहते हैं और स्त्री पुत्रादि के निमित्त मिथ्या महामोह में निमग्न हो हाहाकार करते हैं और अपने वास्तविक कर्त्तव्य से सर्वथा भ्रष्ट होकर अपने उद्धार का स्मरण मात्र भी नहीं करते। यदि करें भी तो अनेक लौकिक गृहसम्बन्धी कार्यकलाप की निकटता से स्वल्प ही कर सकते हैं। और उतने में चित्त एकाग्र नहीं होता है।

इस कारण जब मनुष्य तीर्थयात्रा आदि को जाता है तब "मैं इन कार्यों को फिर आकर करूँगा" इस आशा से कुछ काल तक लौकिक कार्य व्यवहार आदि से मन हटा लेता है और केवल धर्माचरण में तत्पर होकर बहुत कर्त्तव्य को थोड़े समय में ही कर लेता है क्योंकि उसी (तीर्थवासी जीव) को धर्मा-नुष्ठान के सिवाय और कुछ भी कर्त्तव्य नहीं होता। इस कारण जितना समय धर्माचरण के लिए तीर्थयात्रा में मिल सकता है घर में उसका दशांश निकलना भी कठिन होता है। प्रायः पवित्र क्षेत्र में

महात्मा धर्मात्मा विद्वान् और साधुजनों के सत्संग से समस्त काल स्नान, दान, भगवद्भजन, पाठ पूजन आदि सत्कर्मों में ही व्यतीत करना होता है अतएव इस समय में तीर्थसेवा ही सनातन धर्म का मूल कारण है ।

परन्तु शोक की बात है कि किसी प्रकार से बची बचाई तीर्थसेवा पर भी कलि के प्रभाव आधुनिक कल्पित कुतर्क वाग्जाल लगचला है और कई भोले भाले हमारे ही भाइयों ने सहसा उस जाल में फँसकर निज धर्म को तिलाञ्जलि दे वैदिककर्मी और आर्यधर्मी होने की शुष्क आशा से मनमाने लड्डू खाने के लोभ में वृथा पड़कर समस्त भूमण्डल के शिरोमणि पवित्र क्षेत्र भारतवर्ष के मध्य शुद्ध चातुर्वर्ण्य कुल में अतिदुर्लभ अमूल्य रत्न मनुष्यजन्म को विना दाम खो देना ही परम लाभ समझ लिया है ।

वास्तव में उन लोगों का भी दोष नहीं किन्तु यह कलिकाल राज्य का तेज और अविद्या का प्रताप है तथा कपोलकल्पित कुतर्क वाग्जाल का फल है ।

इसीसे उस आधुनिक मिथ्या कपोलकल्पित कुतर्क वाग्जाल लेख का पोल दिखाना और नदियों तथा तीर्थ आदि चारों धामों की सनातनता को वेद तथा पुराणादि सच्छास्त्रों के प्रमाणों से सिद्ध तथा प्रचालित करना ही अपेक्षित है । इसकारण मैं भी अपनी बुद्धि के अनुसार चारों धामान्तर्गत तीर्थ तथा देवमूर्त्तियों को वेदादि मंत्रों

द्वारा पूजनादि कर्म, स्त्रीधर्मानुसार देवपूजन कर्म, शूद्रादियों को देवस्पर्शास्पर्श निषेध तथा विचार, विधवाकर्म, सुवासिनीनित्यकर्म, कुलवती स्त्रियों का दोष, स्त्रियों को धर्मपालन से फल, ब्राह्मणादियों के गोत्र, वेदोपवेदादियों का निरूपण, तीर्थ आदि स्थानों में क्षौरनिर्णय, श्राद्ध, पिंड तर्पणादि कर्म, हेमाद्रीकृत महास्नानसंकल्प, भारतवर्ष में जन्म लेने का फल, गृहस्थाश्रम, चार धाम, सात पुरी, द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग, गंगा आदि पवित्र नदियां ज्वालामुखी आदि शाक्तक्षेत्र तथा गिरनार आदि जैनतीर्थ, कैलास, मानसरोवर, पशुपतिनाथ, अमरनाथ इत्यादि तीर्थों के मार्ग की मीलसंख्या, मुकाम, चढ़ाई, उतराई तथा माहात्म्य स्तोत्रादियों से विभूषित " तीर्थयात्रानिरूपण " नामक पुस्तक आप लोगों की सेवा में समर्पण करता हूं और आशा करता हूं कि सज्जन धार्मिक यथार्थ भाव से मेरे परिश्रम पर विचार कर मुझे अनुग्रहित करेंगे और आप भी शुद्ध सनातन धर्म्म से कभी विचलित न होंगे प्रत्युत यथासाध्य मुग्ध और वंचित पुरुषों को भी प्रेरणा करके सत्य मार्ग " तीर्थयात्रा " में प्रवृत्त करावेंगे । इति शुभम् भूयात् ।

आपका अनुग्रहित

उपाध्याय पं० बलिराम शर्म्मा

जोशीमठ (गढ़वाल)

श्रीगणेशाय नमः ।

तीर्थयात्रानिरूपण ।

तीर्थप्रशंसा ।

सहाग्निर्वा सपत्नीको गच्छेत्तीर्थानि संयतः ॥
प्रायश्चित्ती व्रती तीर्थं पत्नीविरहितोऽपि वा १

अग्निहोत्री हो वा गृहस्थ हो नियमपूर्वक तीर्थों को जाना चाहिये, प्रायश्चित्ती हो, व्रतधारी हो वा स्त्री रहित हो तीर्थयात्रा का अधिकारी है ॥ १ ॥

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वा राजसत्तमः ॥
न वियोनिं व्रजन्त्येते स्नानात्तीर्थे महात्मनः २

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र अथवा राजा

तीर्थों में स्नान करने से दुष्ट (खोटी) योनि में जन्म नहीं पाते ॥ २ ॥

तीर्थयात्रां चिकीर्षुः प्राग् विधायोपोषणं गृहे । गणेशं च पितॄन् विप्रान् साधूञ्छक्त्या प्रपूज्य च ॥ ३ ॥ कृतपारणको हृष्टो गच्छेन्नियमधृक् पुनः । आगत्याभ्यर्च्य च पितॄन् यथोक्तफलभाग् भवेत् ॥ ४ ॥

तीर्थयात्रा करने की इच्छावाला प्रथम घर में उपवास करके गणेश पितर ब्राह्मण साधु इनका अपनी शक्ति के अनुसार पूजन करके ॥ ३ ॥

पारणाकर शांति और प्रसन्नतापूर्वक पूर्वोक्त नियम के अनुसार तीर्थयात्रा करे फिर लौटकर पितरों का पूजन करने से यथोक्त फल को पाता है ॥ ४ ॥

न वारो न च नक्षत्रं न कालस्तत्र कारणम् । यदैव दृश्यते तीर्थं तदा पर्वसहस्रकम् ॥ ५ ॥

तीर्थयात्रा करने में वार, नक्षत्र, समय, यह कुछ कारण नहीं, जिस समय तीर्थ दीखे वही समय सहस्र (हजार) पर्व के समान है ॥ ५ ॥

यश्चान्यं कारयेच्छक्त्या तीर्थयात्रां नरेश्वरः ।
स्वकीयद्रव्ययानाभ्यां तस्य पुण्यं चतुर्गुणं ॥६॥

जो कोई सामर्थ्यवान् पुरुष अपने द्रव्य और यान (सवारी) से दूसरे को यात्रा कराता है उसको चौगुना फल मिलता है ॥ ६ ॥

मातरं पितरं जायां भ्रातरं सुहृदं गुरुम् ।
यमुद्दिश्य निमज्जेत अष्टमांशं लभेत सः ॥७॥

माता, पिता, भ्राता, स्त्री, गुरु इनमें से जिसका नाम लेकर जो पुरुष तीर्थमें स्नान करता है उसको अष्टमांश फल मिलता है ॥ ७ ॥

तीर्थोपवासः कर्तव्यः शिरसो मुण्डनं तथा ।
यदह्नि तीर्थप्राप्तिः स्यात्तदह्नः पूर्ववासरे ॥८॥
उपवासः प्रकर्तव्यः प्राप्तेऽह्नि श्राद्धदो भवेत्॥९॥

जिस दिन तीर्थ मिले उससे पहिले दिन तीर्थोपवास और मुण्डन करना चाहिये और तीर्थप्राप्ति ही के दिन श्राद्ध करे ॥ ८ ॥ ९ ॥

पूर्वमावाहनं तीर्थे मुण्डनं तदनन्तरम् ।

ततः स्नानादिकं कुर्यात्पश्चाच्छ्राद्धं समाचरेत् १०

प्रथम तो तीर्थ में जाकर उस तीर्थ का आवाहन करे फिर मुण्डन, तदनन्तर स्नान, देवदर्शन, ब्राह्मण-पूजन अपनी शक्ति के अनुसार भूमि, सुवर्ण, गज, अश्व, भूषण, वस्त्र और खाण्डदानादि कर श्राद्ध करे ॥१०॥

तीर्थावाहन ।

सरस्वती च सावित्री वेदमाता गरीयसी ।
सन्निधात्री भवत्वत्र तीर्थे पापप्रणाशिनी ।११।

सरस्वती, सावित्री, वेदमाता (गायत्री) इस तीर्थ में पाप नष्ट करने के निमित्त मेरे सन्मुख होवें ॥ ११ ॥

अकालेप्यथवा काले तीर्थश्राद्धं च तर्पणम् ।
अविलम्बेन कर्तव्यं नैव विघ्नं समाचरेत् ।१२।

समय हो अथवा न हो किन्तु श्राद्ध तर्पण करने में विलम्ब न करे, श्राद्ध में विघ्न नहीं करना चाहिये ॥१२॥

तीर्थद्रव्योपपत्तौ च न कालमवधारयेत् ।
पात्रं च ब्राह्मणं प्राप्य सद्यःश्राद्धं समाचरेत् १३

द्रव्य मिलजाय और सुपात्र ब्राह्मण मिलजाय तब समय का विचार न करे किन्तु विना विचारे ही तत्काल श्राद्ध का आरंभ करदे ॥ १३ ॥

दिवा वा यदि वा रात्रौ भुक्तो वोपोषितोऽपि वा ।
न कालनियमस्तत्र गंगां प्राप्य सरिद्वराम् १४

दिन हो अथवा रात्रि हो भोजन किया हो अथवा उपवासी हो किन्तु नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी के मिल जाने पर समय का कुछ नियम नहीं रहता ॥ १४ ॥

तीर्थप्रशंसा ।

पर्वकालेऽथवाकाले शुचिर्वाप्यथवाऽशुचिः ।
यदैव दृश्यते तत्र नदी त्रिपथगा प्रिया ॥
प्रमाणदर्शनं तस्मान्न कालस्तत्र कारणम् ॥१५॥

पर्व में वा पर्व के विना शुचि (पवित्र) हो अथवा अशुचि (अपवित्र) हो किन्तु जिस समय गंगा भागीरथी धवला और अलकनन्दा इत्यादि दृष्टिगोचर हों वही समय मुख्य है इसमें कोई समय का हेतु नहीं है॥१५॥

अर्घ्यमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम् ।
तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत् ॥१६॥

तीर्थश्राद्ध में अर्घ्य, आवाहन, ब्राह्मणका अंगुष्ठनिवेशन, तृप्तिप्रश्न, विकिर, इनको श्राद्ध करनेवाला त्याग दे अर्थात् यह न करे ॥ १६ ॥

आवाहनं विसृष्टिश्च तत्र तेषां न विद्यते ।
आवाहनं न तीर्थे स्यान्नार्घ्यदानं तथा भवेत् १७
आहूताः पितरस्तीर्थे कृतार्घ्याः सन्तिवैयतः १८

तीर्थ में पितरों का आवाहन, विसर्जन नहीं होता और आवाहन, अर्घ्यदान भी नहीं होता कारण कि तीर्थ में पूजन मात्र से ही पितर कृतार्घ्य हैं (अग्नौकरणं च नेति) और अग्नौकरण भी नहीं होता ॥१७॥१८॥

अत्र षड्दैवते श्राद्धेऽपि मात्रादीनां पिंडमात्रदेयम्

तीर्थश्राद्ध में मात्रादि को केवल पिंडप्रदान करना ॥

हविःशेषं ततो मुष्टिमादायैकैकमादतः ।
क्रमशः पितृपत्नीनां पिंडनिर्वपणं चरेत् ॥१९॥

तीर्थ में पित्रादिकों के शेष भाग की क्रम से एकेक

से माता आदि के निमित्त पिंडदान करे ॥ १९ ॥

ततः पिंडमुपादाय हविषः संस्कृतस्य च ।
ज्ञातिवर्गस्य सर्वस्य सामान्यं पिंडमुत्सृजेत्॥२०।
गच्छेद्देशान्तरं यस्तु श्राद्धं कुर्यात्ससर्पिषा ॥२१॥

तीर्थ में उक्त संस्कार किये हुए घृत, मधु, आदि से पिंड लेकर संपूर्ण जातिवालों के निमित्त केवल पिंडदान करे वा सामान्य अर्थात घृत आदि से ही पिंड देवे, यह विधि उस समय की है कि जब देशान्तर को जाय ॥ २० ॥ २१ ॥

तीर्थश्राद्धं प्रकुर्वीत पक्कान्नेन विशेषतः ।
आमान्नेन हिरण्येन कंदमूलफलैरपि ॥ २२ ॥
सक्तुभिः पिंडदानं च यावकैः पायसेन वा ।
कर्तव्यमृषिभिःप्रोक्तं पिण्डपाके गुडेन वा ॥२३॥

तीर्थ में पिंडदान करना मुख्य तो पक्कान से है सो तीर्थश्राद्ध पद्धति के अनुसार करना अथवा आमान्न (कच्चा अन्न) से, सुवर्ण से और यह न हो तो कन्द मूल फलों से श्राद्ध करे ॥ २२ ॥ अथवा जवके सत्तू से

पायस से पिंडदान करना यह विधि पिंडपाक में ऋषियों ने कहा है ॥ २३ ॥

विप्रपादोदकं पुण्यं सर्वव्याधिविनाशनम् ।
धन्यं वै कीर्तनं विष्णोर्धन्यं ब्राह्मणपूजनम् ॥ २४
विप्रपादोदकं पुण्यं धन्यं गंगाजलं स्मृतम् ।
अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो भगवत्तनुः॥२५॥
संसारतापतप्तानां भेषजं ब्राह्मणा विभो ।
तत्रैव सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे प्रतिष्ठिताः॥२६॥

ब्राह्मण के चरणों का जल पवित्र है संपूर्ण दुःखों को नाश करता है जिस प्रकार विष्णु भगवान का नामोच्चारण करना धन्य है उसी प्रकार ब्राह्मणपूजन भी धन्य है, ब्राह्मणों के चरणों का जल धन्य है जैसा कि गंगाजी का जल धन्य है, वसिष्ठजी बोले कि हे राम! जन्म मरण की यातना भोगनेवालों के निमित्त ब्राह्मण औषधिरूप हैं इसलिये जहां ब्राह्मणपूजन है वहां संपूर्ण तीर्थ और संपूर्ण देवता विराजते हैं ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥

ब्रह्महत्यादिपापानां ब्राह्मणादेव निष्कृतिः ।

ब्रह्महत्या आदि पाप करनेवालों की ब्राह्मण से ही निष्कृति होती है ।

केदारखण्डमहिमा ।

इति तत्परमं स्थानं देवानामपिदुर्लभम् ॥
पंचाशद्योजनायामं त्रिंशद्योजनविस्तृतम् ॥१॥
इदं वै स्वर्गगमनं न पृथ्वीं तामवेहि भोः ।
आगंगाद्वारमर्य्यादं सुश्वेताम्बरवर्णिनि ॥ २ ॥
तमसातटतः पूर्वमर्वाग्बौद्धाचलं शुभम् ।
केदारमण्डलं ख्यातं भूम्यास्तद्भिन्नकं स्थलम् ३
वात्सल्यात्तव देवेशि कथितो देश उत्तमः ॥४॥

शिवजी बोले कि हे पार्वति ! दो सौ कोश लम्बा और एक सौ बीस कोश चौड़ा मुख्य और उत्तम स्थल है जिसको देवता भी नहीं पा सकते, यह स्वर्ग का मार्ग है इसको पृथ्वी नहीं जानती, हरिद्वार से श्वेतपर्वत पर्यन्त तौंस नदी से वधाण तक लम्बा इस प्रकार केदारखण्ड का प्रमाण विख्यात है, यह स्थल भूमि से भिन्न है, हे पार्वति ! तुम्हारी प्रीति से यह उत्तम स्थल (केदारखण्ड)

का कथन किया ॥ १।२।३।४ ॥ केदारखण्डे ४० अध्याये ।

पुण्यात्मलभ्या महाराज इयं भूमिर्नराधिप ।
अत्र ये पशुपक्ष्याद्या वर्तंते तेऽपि देवताः ॥ १ ॥
इदं स्थानं महाभाग स्वर्ग एव न संशयः ।
गंगाद्वारावधि प्राज्ञ स्वर्गभूमिःसुशोभना ॥२॥

हे राजन् ! यह केदारखण्ड की भूमि पुण्यात्माओं को ही मिलती है, यहां जो पशु पक्षी आदि वास करते हैं वे सब देवता हैं ॥ १ ॥ हे महाभाग ! यह स्थान स्वर्ग ही है इसमें संदेह नहीं ॥ २ ॥ केदारखण्डे ६७२ अध्यायें ॥

क्षौरनिर्णय ।

प्रायः यात्री लोग वा गृहस्थ, ब्रह्मचारी, सन्यासी व्रती, अनुष्ठानी, प्रायश्चित्ती, स्त्री, गर्भिणीपति आदि यात्रा समय वा घर में या किस तीर्थ में किस समय क्षौर (मुण्डन) करना आवश्यक है इस विषय को न जानकर शास्त्रहीन विधि से वा जिन तीर्थों में मुण्डन नहीं लिखा है वहां मुण्डनादि कर्म करते हैं और जहां मुण्डनविधि लिखी है वहां नहीं करते हैं इत्यादि विधिहीन

होनेसे अनर्थ होता है इस वास्ते अब गृहस्थादि यात्री शास्त्रोक्त विधिसे तीर्थ आदि स्थानों में मुण्डनादि कर्म करें जिसको मैं अनेक शास्त्रमतानुसार भाषा में स्पष्ट लिखता हूं।

अब गृहस्थों का क्षौरकर्मनिर्णय कहा जाता है। उस में गृहस्थों ने निमित्त विना (निमित्त-माता पितृ मरणादि आगे कहे हैं) साधारण क्षौरकर्म में दाढी मोछ वालों का विल्कुल छेदन अर्थात् मुण्डन नहीं करना चाहिये। इसी कारण धर्मसिन्धु ग्रन्थ के तृतीय परिच्छेद के पूर्वार्ध में " कर्त्तन " अथवा कैंची से काटकर छोटे वाल दाढ़ी नख बनावे विशेष निमित्त विना सर्वथा मुंडन न करे क्योंकि (न समावृत्तौ मुंडेरन्निति निषेधादित्युक्तम्) समावर्तन होने पर यथेच्छ मुंडन न करें श्रुति में निषेध है ऐसा कहा है। इसी कारण मनुस्मृति में भी दूसरे अध्याय में ब्रह्मचारि क्षौरनिर्णय प्रकरण में मुंडन करे अथवा जटा रक्खे अथवा शिखाजट होवे इत्यादि कहकर ब्रह्मचारी को ही शिखाजट होना लिखा है। परन्तु गृहस्थ को कहीं शिखाजट होने की विधि नहीं कही है शिखामात्र ही जटा जिसकी है उसे शिखाजट कहते हैं अर्थात् शिखा को छोड़कर और सम्पूर्ण शिर को जिसने

मुंडन किया है वह शिखाजट है यह अर्थ है । अन्यत्र स्मृति में भी कहा है कि विना तीर्थ, यज्ञ के, माता पितृ मरणादि विना जो पुत्र मुंडन करता है इत्यादि ग्रन्थवचनों से मुंडन करने का निषेध ही जान पड़ता है । स्मृत्यन्तर में भी कहा है कि प्रयाग में तीर्थयात्रा में अथवा माता पिता के मरने पर बालों (केशों) का मुंडन करे व्यर्थ मुंडन न करे इत्यादि वचनों से निमित्त विना सर्वथा शिरोमुंडन का निषेध ही मालूम पड़ता है । मिताक्षरा में भी तीन सौ छब्बीस (३२६) वीं कारिका के व्याख्यान में प्रायश्चित्त कर्म में ही शिखा को छोड़कर सम्पूर्ण शिर का मुंडन लिखा है परन्तु साधारण क्षौरकर्म में नहीं जैसा कि यह कृच्छ चान्द्रायणादि व्रत प्रायश्चित्तार्थ जब किये जाते हैं तभी केशादि मुंडन पूर्वक बनाये जाते हैं क्योंकि " वपनं चरेद् व्रती " ऐसा गौतम मुनि का वाक्य है, इसमें व्रती करके प्रायश्चितवाला है । अभ्युदय के लिये व्रत में तो अर्थात् मंगलार्थ व्रत करने में इस प्रकार का सर्वथा मुंडन नहीं कहा है । वसिष्ठ मुनि का भी वचन है कि व्रतरूप जो कृच्छ्र चान्द्रायणादिक हैं उनमें ही बाल, मूछ, दाढ़ी, आदि का

मुंडन करे परन्तु कोख उपस्थ शिखा को छोड़दे। और अग्निहोत्र में तथा तीर्थ में दाढ़ी आदि क्षौर करे। प्रेत-कर्म में राजदंड में केशादिकका अर्थात् मूछसमेत मुंडन करे ऐसा कहा है। स्त्री का तो प्रायश्चित्तार्थ व्रतानुष्ठान में भी मुंडन नहीं करना चाहिये जैसा कि पराशर मुनि वचन है। स्त्रियों का वपन नहीं होता है और न कहीं प्रायश्चित्तार्थ अनुगमनादिक भ्रमण होता है और न गोठ में उनका शयन चाहिये और गोचर्म को स्त्रियां न पहिरें किन्च सब केशों को उठाकर दो अंगुल प्रमाण केश छेदन करे ऐसाही सर्वत्र स्त्रियों के शिर का मुंडन कहा है। पुरुषों में विशेष भी संवर्ताचार्य ने दिखलाया है— एक पाद में अंग रोमों का मुंडन करे दो पाद में दाढ़ी का भी मुंडन और तीन पाद में शिखा छोड़ सर्व मुंडन करे चार पाद पूर्ण होने पर शिखा सहित मुंडन करे. अर्थात् इसका यह अर्थ है कि चतुर्थांश प्रायश्चित्त के जो योग्य है उस पुरुष का कंठ से नीचे अंगरोमों का ही (छाती) आदि का ही वपन होता है, अर्धप्रायश्चितार्ह (योग्य) पुरुष का दाढ़ी का वपन है पौन (तीन पाद) प्रायश्चित्ति शिखा छोड़कर सर्व मुंडन करे और पूर्णप्राय-श्चित्ति को शिखा सहित संपूर्ण केशमात्र का मुंडन

करना चाहिये । " हारीतस्मृति में " कहा है राजा अथवा राजपुत्र अथवा ब्राह्मण विद्वान् केश मुंडन करके प्राय-श्चित्त करे । केशों की रक्षा के लिये द्विगुण व्रत करे । द्विगुण व्रत करने में दक्षिणा दूनी होती है । यह हारीत-स्मृति वचन महापातकादि दोष विशेषाभिप्राय में जानना चाहिये । विद्वान ब्राह्मण, राजा और स्त्रियों का मुंडन करना ठीक नहीं है । महापातकी को गौहत्यावाले को और अवकीर्णी (स्खलित ब्रह्मचर्य) मुंडन करे ऐसा मनुजी का वचन है । याज्ञवल्क्यस्मृति में भी विशेष स्थल में ही मुंडन लिखा है परन्तु साधारण क्षौरकर्म में मुंडन नहीं लिखा है । गंगा में भास्कर (पुष्कर) क्षेत्र में माता पिता और गुरु के व्रत में आधान समय में सोमायन में इस सात विषयों में मुंडन कहा है-इस वचन से सात जगहों पर ही सर्वथा मुंडन दिखाया है अन्यत्र स्मृति में भी विशेष दिखलाया है-मुंडन और उपवास सिर्फ कुरुक्षेत्र और विशाला, विरजा, तथा गया को छोड़कर सर्व तीर्थों में करना यह विधि है । यहां विशाला इन्द्रवारुणी को कहते हैं ऐसा मेदिनीकोश है और विशाला मथुरा को कहते हैं ऐसा भी कहीं लिखा है-विरजा नर्मदा को कहते हैं, गया, कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध ही

हैं। और भी लिखा है कि जो राजकार्य्य में नियुक्त हैं अथवा नट काम करते हैं जिनका स्वरूप बदलना ही आजीविका है उनका दाढ़ी, मूछ, नख, बाल छेदन में कालशुद्धि नियम नहीं है। समुद्र का स्नान और वृक्षों का काटना, मुंडन तथा प्रेत को लेजाना तथा विदेशगमन भी गर्भिणी स्त्री का पति (मालिक) न करै। राजा, योगी और सौभाग्यवती स्त्री तथा जिसके मा, बाप जीवित हैं और गर्भिणीपति ये सब सर्वत्र तीर्थों में मुंडन न करैं। नारदजी का भी वचन है मुंडन और मैथुन तथा तीर्थ को गर्भिणीपति वर्जित करै, सात मास से ऊपर अन्यत्र श्राद्ध भी वर्जित करे। पराशरी ग्रन्थ में भी दूसरे अध्याय में दाढ़ी, बाल आदि बराबर रखने का प्रमाणवचन पराशर ऋषि का वाक्य है-जो दाढ़ी मूछों में बालों में तथा देहरोमों में जो जल है उसको विद्वान हाथों से न वस्त्र से पोंछे जो मनुष्य हाथ से वस्त्र से उसे पोंछे तो सब देवता और पितर और सब मनुष्य भी उस ब्राह्मण को सब उसी समय छोड़देते हैं। यहां स्नानांग तर्पण के बिना अंग प्रोक्षण वस्त्रादिक से नहीं करना चाहिये ऐसा कहते हुए ग्रन्थकार ने दाढ़ी मूछ आदि का पोंछना निषेध किया है। अस्तु दाढ़ी, मूछ, बाल जब होंगे तभी न उनका

मार्जन निषेध वचन सार्थक हो सकता है? जब समस्त मुंडन हो तब यह वचन कैसा? दाढ़ी, बालादि होने पर ही मनुस्मृति में भी (८) आठवें अध्याय में जहां दण्डकाठिन्यनिर्णय प्रकरण है उसमें (८३) तिरासिवे श्लोक में जो बालों को पकड़े उसके हाथों को विना विचारे काट डाले ऐसेही पैरों को, दाढ़ी, गले अंडों को भी इत्यादि ग्रन्थ प्रमाण प्रमाद करके केश ग्रहण पूर्वक विवाद में प्रहारादिक करने पर हस्तछेदनादि दण्ड दिखाया है-यदि दाढ़ी बाल आदि न होते सब सर्वदा मुंडनही कर देते तो बाल दाढ़ी न होने पर उनका पकड़ना असंगत होता और यह वचन ही व्यर्थ होता। गृहस्थाश्रम को छोड़कर और आश्रमवालों को वनवास भिक्षावृत्ति इत्यादि से निर्वाह करना लिखा है इस कारण और आश्रम वालों में विवाद झगड़ा होना अयोग्य अयुक्त होने से यह वचन गृहस्थाश्रम में ही चरितार्थ होते हैं क्योंकि यह वाक्य गृहस्थियों की ही व्यवस्था के बोधक हैं सन्यासियों के सर्वथा दाढ़ी मूछ न होने से भी और प्रायः गृहस्थों का ही विवाद होना सम्भव है। इस कारण से भी जानना चाहिये। इसी कारण वृहत्पाराशरी ग्रन्थ के चौथे अध्याय में शुद्धिनिरूपण प्रसंग में कहा है कि सूर्य चन्द्र की किरणों से मार्ग

की शुद्धि कही है और भोजन के पीछे घी आदि पदार्थों से चिकने ओठ मुख दाढ़ी सब शुद्ध है इत्यादि ग्रन्थ से भोजन के पीछे जो दाढ़ी मूछ चिकने उच्छिष्ट नहीं होते हैं कहा है । यदि दाढ़ी मूंछ न रखे जाते केवल मुंडन ही सदा किया जाता तो दाढ़ी मूंछ चिकने कैसे होते ?

गृहस्थधर्म में ही इस वचन के लिखे जाने से अन्य आश्रम विषयक यह वचन है ऐसा कहना अशक्य है ।

बस अधिक इस विषय में क्या लिखना सर्वथा मुंडन करना गृहस्थ को निमित्त विना अयुक्त है शुभम् ॥

इति गृहस्थाऽदिनां तीर्थयात्रादि क्षौरनिर्णयः समाप्तः ॥

भारत की महिमा और जन्म का फल ।

विष्णुपुराणे—अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बुद्वीपे महामुने । यतोहि कर्मभूरेषा ततोऽन्या भोग-भूमयः ॥ कदाचिल्लभते जन्तुर्मानुष्यं पुण्य-संचयात् । गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे । स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते भवन्ति भूयः पुरुषा, सुरत्वात् ॥

अर्थ–हे महामुनि ! इस जम्बूद्वीप में भारतवर्ष श्रेष्ठ है क्योंकि यह कर्मभूमि है अर्थात् यहां कर्म करने से फल मिलता है इससे अन्यदेश भोगभूमि है अर्थात् वहां कर्म करने से कुछ फल प्राप्त नहीं होता केवल भोग मात्र यहां मिलता है ।

धन्य इस भारतवर्ष को जहां के लोगों का यश देवता लोग भी गाते हैं यहां के रहनेवाले लोगों को स्वर्ग और मोक्ष भी मिलता है ।

धर्म जानने के स्थान ।

याज्ञवल्क्यः–पुराणन्यायमीमांसाधर्मशास्त्राङ्गमिश्रिताः । वेदाः स्थानानि विद्यानां धर्मस्य च चतुर्दश ॥

याज्ञवल्क्यस्मृति–पुराण न्याय मीमांसा धर्मशास्त्र अङ्गों के सहित वेद यह चौदह धर्म जानने के स्थान हैं । धर्म करने की आवश्यकता (विश्वामित्रकल्पे) अपनी सहाय करनेवाले न माता न पिता न पुत्र न दारा न जाति

केवल धर्म ही सहाय है ।

धर्म का स्वरूप ।

विश्वामित्रकल्पे याज्ञवल्क्यः—आत्मनो न सहायार्थे पिता माता च तिष्ठति । न पुत्र दारा न ज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठति केवलम् ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः । दानं दया दमः शान्तिः सर्वेषां धर्मसाधनम् ॥

अहिंसा, सत्य, चोरी न करना, शुचिर्भूत रहना, इन्द्रियों को रोकना, दान, दया, अन्तःकरण निग्रह क्षमा ये सब साधारण धर्म हैं ।

ब्रह्मणानां वेदाध्ययनावश्यकता ।

व्यासः—श्रुतिः स्मृतिश्च विप्राणां नयने द्वे विनिर्मिते । एकेन विकलः काणो द्वाभ्यामन्धः प्रकीर्तितः ॥

व्यासः । वेद और शास्त्र ये दो ब्राह्मणों के नेत्र हैं एक न होने से ब्राह्मण काना कहलाता है दोनों न होने से अंधा कहलाता है ।

वेदों के भेद ।

चरणव्यूहे-तत्र यदुक्तं चातुर्वेद्यं चत्वारो वेदा विज्ञाता भवन्ति । ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ऽथर्वणवेदश्चेति ॥

चरणव्यूह में लिखा है कि चार वेद हैं ऋवेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद इन भेदों से ।

वर्णों के भेद ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्न्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां ७ शूद्रोऽअजायत ।

भगवान के मुख से ब्राह्मण और बाहु से क्षत्रिय और जंघा से वैश्य, पांव से शूद्र पैदा हुए ।

गोत्रादिक जानने की व्यवस्था ।

गोत्र,	वेद,	उपवेद,	शाखा,	सूत्र,	प्रवर,	शिखा,	पाद,	देवता,	म०		
कात्यायन,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कात्यायन,	कात्यायन,	विश्वामित्र,	किल,	दाहिन,	२शिव		
कश्यप,	सामवेद,	गांधर्व,	कौथुमी,	गोभिल,	कश्यप,	असित,	दैवल,	वाम,	विष्णु		
शांडिल्य,	"	"	"	"	शांडिल्य,	"	"	"	"		
सांकृत,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कात्यायन,	सांकृत,	किल,	सांख्यायन,	दाहिन,	दा०शिव		
उपमन्यु,	"	"	"	"	उपमन्यु,	वसिष्ठ,	याज्ञवल्क्य,	दाहिन,	"		
भरद्वाज,	"	"	"	"	भरद्वाज,	अंगिरा,	बार्हस्पत्य	"	"		
गर्ग,	"	"	"	"	अङ्गिरस,	सैन,	गर्ग,	"	"		
गौतम,	"	"	"	"	गौतम,	अंगिरस,	बार्हस्पत्य	"	"		
भारद्वाज,	"	"	"	"	भारद्वाज	"	"	"	"		
धनंजय,	सामवेद,	गन्धर्व,	कौथुमी,	गोभिल,	धनंजय,	मधुच्छंदस,	विश्वामित्र,	वाम,	वा०विष्णु		
कश्यप,	"	"	"	"	काश्यप,	नैध्रुवआवत्सार,	कौशिक,	लौहित,	वाम,	वा०विष्णु	
वत्स,	"	"	"	"	वत्स,	च्यवन,	और्व	अत्यवान,	जमदग्न्य,	वाम,	वा० वि०

वसिष्ठ	यजुर्वेद	धनुर्वेद	माध्यन्दिनी	कात्यायन	वसिष्ठ	इन्द्रप्रमद	भारद्वासित	दाहिन	दा० शिव
एकावसिष्ठ,	,,	,,	,,	,,	एकावसिष्ठ,	,,	,,	,,	,,
कौशिक,	,,	,,	,,	,,	कौशिक,	देवराज	अघमर्षण,	,,	,,
कविस्त,	,,	,,	,,	,,	कविस्त,	,,	विश्वामित्र,	,,	,,
पाराशर,	,,	,,	,,	,,	पाराशर,	वसिष्ठ,	सांकृत,	,,	,,
अत्रि,	,,	,,	,,	,,	अत्रि,	अर्चिमान,	स्यावस्व	,,	,,
असित,	,,	,,	,,	,,	असित,	वाशिल,	कौशल्य,	,,	,,
आयास्य,	,,	,,	,,	,,	आयास्य,	अंगिरस,	गौतम,	,,	,,
अत्यवान,	,,	,,	,,	,,	अत्यवान	यमदग्नी.	च्यवन,	,,	,,
अम्बसार,	,,	,,	,,	,,	अम्बसार,	विश्वामित्र,	भार्गव,	,,	,,
अगस्त्य,	,,	,,	,,	,,	अगस्त्य,	पुलस्त्य, वशिष्ठ,	ऐन्द्र, और्व,	,,	,,
आभद्रशुक	,,	,,	,,	,,	आभद्रशुक,	लोमस,	सावर्ण्य,	,,	,,
अंगिरस,	,,	,,	,,	,,	अंगिरस,	अत्रि,	अगस्त, और्व ऐन्द्र,	,,	,,
और्व,	,,	,,	,,	,,	और्व	मौनस,	वृहस्पत्य	,,	,,
इन्द्रौदर,	,,	,,	,,	,,	इन्द्रौदर,	कौडन्य,	भार्गव,	,,	,,

इन्दुप्रमद,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कात्यायान,	इन्दुप्रमद,	अत्यवान,	वतहव्य,	दाहिन,	दा०शिव
कपिल,	”	”	”	”	कपिल,	देवराज,	ध्रुवनेन,	”	”
कृष्णात्रि,	”	”	”	”	कृष्णात्रि	आर्चमानस्,	श्यावस्व,	”	”
गौरव,	”	”	”	”	गौरव,	अभद्रशुक,	अलौक,	”	”
कौलव,	”	”	”	”	कौलव,	मधुच्छन्दस,	विश्वामित्र	”	”
कौशल्य,	”	”	”	”	कौशल्य,	अघमर्पण,	मधुच्छन्दस,	”	”
गंगेय,	”	”	”	”	गंगेय,	गर्ग,	सांख्य लित,	”	”
चान्द्रायण	”	”	”	”	चान्द्रायण,	वत्स,	वामदेव	”	”
जातूकर्ण,	”	”	”	”	जातूकर्ण,	आत्रि,	वसिष्ठ,	”	”
च्यवन,	”	”	”	”	च्यवन	” वत्स,	कपिल,	अगस्त,	”
देवल.	”	”	”	”	देवल.	वासल.	शौनकेतु.	”	”
ध्रुवनैन.	”	”	”	”	ध्रुवनैन.	कोलक	वामदेव.	”	”
निन्तुद.	”	”	”	”	निन्तुद.	” शक्ति,	दोलभ्य.	मौहत	”
पुलस्त्य.	”	”	”	”	पुलस्त्य.	मौनस.	मरीच,	”	”
मोहित.	”	”	”	”	मोहित.	लोमस.	याज्ञवल्क्य.	”	”

वाशल,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कात्यायन,	वासल,	अत्रि,	अर्चिमान,	दाहिन,	दा० शिव
वाल्मीक	"	"	"	"	वाल्मीक.	यस्क.	याज्ञवल्क्य.	"	"
वामदेव.	"	"	"	"	वामदेव.	मध्यायन.	गौतम.	"	"
विश्वामित्र,	"	"	"	"	विश्वामित्र	अंगिर,	शौनकेतु,	"	"
विष्णुवर्धन,	"	"	"	"	विष्णुवर्धन,	अंगिरस,	मौहित, कुत्स, गादस्य,	"	
वैहल,	"	"	"	"	वैहल,	असित,	वासल,	"	"
भद्रशील,	"	"	"	"	भद्रशील,	वासल,	भारद्वाज,	"	"
भागीर,	"	"	"	"	भागिर,	ध्रुवनैन,	इन्द्रौदर,	"	"
भार्गव,	"	"	"	"	भार्गव, च्यवन अत्यवान,	और्व,	यमद	"	"
मुद्गल,	"	"	"	"	मुद्गल, गौतम अत्रि,	बृहस्पति,	भरद्वाज	"	"
मैत्रेतृण,	"	"	"	"	मैत्रेतृण,	मित्रावरुण,	पराशर,	"	"
मौनस,	"	"	"	"	मौनस,	भार्गव,	वैतहव्य,	"	"
मौकल्य,	"	"	"	"	मौकल्य,	अंगिरस,	बृहस्पत्य,	"	"
जमदग्नि,	"	"	"	"	जमदग्नि, भार्गव,	च्यवन,	आत्रिवान और्व	"	"
याज्ञवल्क्य,	"	"	"	"	याज्ञवल्क्य,	लोमस,	अगस्त्य,	"	"

लौमस,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कात्यायन,	लौमस,	मरीच,	पुलस्त्य,	दाहिन,	दा०शिव
शारद्वत,	,,	,,	,,	,,	शारद्वत,	अंगिरस,	गौतम,	,,	,,
शक्तिसार,	,,	,,	,,	,,	शक्तिसार,	अघमर्षण,	निन्तुद,	,,	,,
शौनकेतु,	,,	,,	,,	,,	शौनकेतु,	सावर्ण्य,	भागिर,	,,	,,
सिंहल,	,,	,,	,,	,,	सिंहल,	मधुच्छंदस,	लौहित,	,,	,,
सावर्ण्य,	,,	,,	,,	,,	सावर्ण्य,	पुलस्त्य,	पौहित,	,,	,,
कौण्डिन्य,	,,	,,	,,	,,	कौण्डिन्य,	वसिष्ठ,	मित्रावरुण,	,,	,,
लौहित,	,,	,,	,,	,,	लौहित,	अम्वसार,	कौण्डिन्य,	,,	,,
यस्क,	,,	,,	,,	,,	यस्क,	सावर्ण्य,	सारद्वत,	,,	,,
देवराज,	,,	,,	,,	,,	देवराज,	विष्णुवर्धन,	रइस्त,	,,	,,
दालभ्य,	,,	,,	,,	,,	दालभ्य,	अंगिरस,	बृहस्पत्य,	,,	,,
वाभ्रव्य,	,,	,,	,,	,,	वाभ्रव्य,	विश्वामित्र,	अत्रिवान,	,,	,,
वैतहव्य,	,,	,,	,,	,,	वैतहव्य,	भार्गव,	पार्थस्थ,	,,	,,
मरीचि,	,,	,,	,,	,,	मरीचि,	कात्यायन,	वसिष्ठ,	,,	,,
सिहरस,	,,	,,	,,	,,	मिहरस,	काश्यप,	कौशिक,	,,	,,

मित्रयुव,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कत्यायन,	मित्रयुव,	भार्गव,	देवल,	दाहिन,	दा०शिव
मांडव्य,	”	”	”	”	मांडव्य,	मांडुकेय,	विश्वामित्र,	”	”
विद,	”	”	”	”	विद,	भार्गवऔर्व,	जमदग्नि,	”	”
वैन्य,	”	”	”	”	वैन्य,	”	पाथ	”	”
उदाह,	”	”	”	”	उदाह,	वामदेव,	वसिष्ठ	”	”
हरित,	”	”	”	”	अङ्गिरस,	अम्बरीप,	यौवनाश्व,	”	”
शौश्रवास्व,	”	”	”	”	भरद्वाज,	विश्वामित्र,	औदले,	”	”
पूर्ण,	ऋग्वेद,	यजुर्वेद,	आश्वलायन,	आश्वलायन,	पूर्ण,	”	देवराज,	वाम,	वा० ब्रह्मा
सावर्णी,	यजुर्वेद,	धनुर्वेद,	माध्यन्दिनी,	कात्यायन,	सावर्णी,	पुलस्त्य,	पुलह,	दा०,	दा०शिव
शौनक	”	”	”	”	शौनक,	शैव,	भावन,	”	”
बृहस्पत,	”	”	”	”	अंगिरस,	भरद्वाज,	”	”	”
मङ्गल	”	”	”	”	मङ्गल,	अगुमेन,	वासक,	”	”
तायल	”	”	”	”	तायल,	अग्रसेन,	वासुक,	”	”
मौतल	”	”	”	”	मौतल,	”	”	”	”
गोयल,	”	”	”	”	गोयल,	”	”	”	”

वेदों की स्त्रियां ।

वेदयोषितः-ईतिर्धृतिः शिवा शक्तिश्चतस्रो वेदयोषितः। भवन्ति यज्ञकालेऽस्मिन्नीशानादि व्यवस्थिताः ॥

ईति, धृति, शिवा, शक्ति, ये चार वेदों की स्त्रियां ईश्वरादिकों से व्यवस्थित हैं ।

वेदों के अङ्ग ।

वेदाङ्गानि-शिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छन्दो ज्योतींषि षड्वेदाङ्गानि ॥ छन्दः पादौतु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते॥ ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणंतु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ॥

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष, यह ६ वेदों के अङ्ग हैं ।

वेद के पांव छन्द हैं, और हाथ कल्प हैं, और ज्योतिष नयन हैं, निरुक्त कान हैं, और शिक्षा नासिका

हैं, और मुख व्याकरण हैं ।

वेदों की संख्या ।

वेदादिसंख्या—लक्षंतु वेदाश्चत्वारो लक्षं भारतमेव च । लक्षं व्याकरणं प्रोक्तं चतुर्लक्षंतु ज्योतिषम् ॥

चारों वेद की संख्या लक्ष श्लोक है और भारत की संख्या भी लक्ष है और व्याकरण की संख्या लक्ष है और चार लाख ज्योतिष है ।

विद्याओं के भेद ।

अष्टादशविद्याः । विष्णुपुराणे—अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः । धर्म-शास्त्रं पुराणं च विद्याह्येताश्चतुर्दश ॥ आयुर्वेदो धनुर्वेदो गान्धर्वश्चेति ते त्रयः । अर्थशास्त्रं चतुर्थंतु विद्याह्यष्टादशैवतु ॥

अठारह विद्या विष्णुपुराण में लिखी हैं—चारों वेद और उनके छओं अङ्ग तथा मीमांसा, न्याय, धर्मशास्त्र और पुराण ये चौदह और आयुर्वेद, धनुर्वेद, गांधर्ववेद

और अर्थशास्त्र इस प्रकार विद्याओं के कुल अठारह भेद हैं ।

पोष्यवर्ग ।

पिता माता गुरुर्भार्या प्रजा दीनाः समाश्रिताः ॥
ज्ञातिर्बन्धुजनः क्षीणस्तथाऽनाथः समाश्रितः ॥
अन्येप्यधनयुक्ताश्च पोष्यवर्गउदाहृतः ॥

दक्षः-पिता, माता, गुरु, भार्या, दीन, प्रजा और अपने भाई बिरादर और लोग जो निर्धन हों सब पोष्यवर्ग कहलाते हैं अर्थात् इनका पोषण करना योग्य है ।

स्वीकारयोग्यधन ।

मनुः-सप्तवित्तागमाधर्म्यादायोलाभः क्रयो जयः । प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ।

बपौती, लाभ और जो खरीदा और जो पराजय से मिला और जो व्यापार से मिले और जो कृषि आदि से मिले और जो सत्प्रतिग्रह से मिले ये सात प्रकारके धन स्वीकार करने के योग्य हैं ।

गृहस्थधर्म ।

पराशरः—गृहस्थस्तु यदा युक्तो धर्ममेवानुचिन्तयेत् । पोष्यधर्मार्थसिद्ध्यर्थं न्यायवर्ती सुबुद्धिमान् ॥ न्यायोपार्जितवित्तेन कर्तव्यं जीवरक्षणम् । अन्यायेन तु यो जीवेत् सर्वकर्मबहिष्कृतः ॥

अन्यच्च—न्यायार्जितधनस्तत्त्वज्ञाननिष्ठोऽतिथिप्रियः । शास्त्रवित्सत्यवादी च गृहस्थोऽपि विमुच्यते ॥ तस्मात् सद्गृहस्थैर्न्यायागतधर्मार्जितेन स्वकष्टसंपादितद्रव्येण वा स्वकुटुम्बोदरभरणं कर्तव्यमिति ॥

अर्थ—गृहस्थ को सदा धर्म की चिन्ता करनी चाहिये। कुटुम्बपोषण और धर्म, कर्म करने के वास्ते योग्य मार्ग से धन का अर्जन करे न्याय से जो धन कमाया है उसीसे अपनी जीविका करना अन्याय से जो जीविका करता है वह सब धर्म कर्मों से च्युत हो जाता है । और भी न्याय से धन कमावे

और तत्वज्ञान में निष्ठा रखे अतिथि की सेवा करे शास्त्र को जाने और सत्य बोले ऐसा जो गृहस्थ भी हो वह भी मुक्ति को पाता है, इसवास्ते गृहस्थ को चाहिये कि न्यायार्जित धन ही से धर्म, कर्म करे और अपने कुटुम्ब का पोषण करे।

गृहस्थाश्रमप्रशंसा ।

वसिष्ठस्मृतौ–गृहस्थ एव यजते गृहस्थस्तप्यते तपः । चतुर्णामाश्रमाणां तु गृहस्थस्तु विशिष्यते ॥ यथा नद्यो नदाः सर्वे समुद्रे यांति संस्थितिम् । एवमाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम् ॥ यथा मातरमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तवः। एवं गृस्थमाश्रित्य सर्वे जीवन्ति भिक्षुकाः ॥ नित्योदकी नित्ययज्ञोपवीती नित्यस्वाध्यायी नित्यपतितान्नवर्जी । ऋतौ गच्छन् विधिवच्च जुह्वन् न ब्राह्मणश्च्यवते ब्रह्मलोकात् ॥ व्याससंहितायाम्-गृहाश्रमात्परो धर्मो नास्ति नास्ति पुनः

पुनः। सर्वतीर्थफलं तस्य यथोक्तं यस्तु पालयेत्॥ सुभाषिते–सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता मनोहारिणी। सन्मित्रं स्वधनं स्वयोषिति रतिश्चाज्ञापराः सेवकाः। आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे साधोः सङ्गमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः॥ नारदः–अहिंसा सत्यवचनं सर्वभूतानुकम्पनम्। शमो दानं यथाशक्ति गार्हस्थो धर्म उच्यते। परदारेष्वसंसर्गो धर्मस्त्रीपरिरक्षणम्। अदत्तादानविरमो मधुमांसविवर्जनम्। एष पञ्चविधो धर्मो बहुशाखः सुखोदयः। देहिभिर्देहपरमैः कर्तव्यो देहसम्भवः॥ औशनः–कामं क्रोधं भयं निद्रां गीतवादित्र नर्तकम्। द्यूतं जनपरीवादं स्त्रीप्रेक्षालापनं तथा॥ परोपतापपैशून्यं प्रयत्नेन विवर्जयेत्। संध्यास्नानरतो नित्यं ब्रह्मयज्ञपरायणः। अनसूयो मृदुर्दान्तो गृहस्थः संप्रवर्त्तते॥

वसिष्ठस्मृति में लिखा है कि गृहस्थ ही यज्ञ कर सक्ता है और तप कर सक्ता है। चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही श्रेष्ठ है। जैसी सब नदीं और नद समुद्र ही में आश्रय पाते हैं उसी प्रकार से सब आश्रम के लोक गृहस्थ ही में आसरा पाते हैं। जैसे अपने माता के आसरा से सब जन्तु जीते हैं उसी प्रकार से गृहस्थ के आसरा से सब भिक्षुक जीते हैं। जो ब्राह्मण नित्य जलपात्र धारण करे और यज्ञोपवीत धारण करे और रोज वेदपाठ करे और पतितों से अन्न ग्रहण न करे और ऋतुकाल में अपनी स्त्री के पास जाय और यथाविधि होम करे उसको निश्चय ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। व्यास-संहिता में लिखा है कि गृहस्थाश्रम से बढ़कर कोई भी धर्म नहीं है। जो गृहस्थधर्म को शास्त्र अनुसार पालन करता है उसको सर्व तीर्थ का फल प्राप्त होता है।

सुभाषित में लिखा है कि जिस गृहस्थ को सुन्दर घर और पुत्र विद्वान है और पत्नी मन को हरनेवाली है और सच्चा मित्र है, पास में धन भी है, अपनीही स्त्री में प्रीति है और सेवक आज्ञा मानते हैं, अतिथियों में और शिवपूजन में प्रीति है, प्रतिदिन मिष्ठान्न पान घर में है और जो नित्य सत्संग करता है उसका

गृहस्थाश्रम धन्य है । नारदसंहिता में लिखा है कि अहिंसा, सत्यवचन, सर्व प्राणियों पर दया, इन्द्रियों का जीतना, यथाशक्ति दान देना यह गृहस्थधर्म कहलाता है । परस्त्री का संग न करना और अपनी स्त्री की रक्षा करना, चोरी न करना और मद्य मांस को न छूना यह पांच प्रकार का धर्म सब देहधारियों को सुखकारक है । औशनः (शुक्रनीति) में लिखा है कि काम, क्रोध, भय, निद्रा, गीत, नृत्य, बाजा बजाना, जुआ, पराये निन्दा, परस्त्री को देखना या उससे भाषण करना, पराये को ताप देना या किसीसे कपट करना यह बातें यत्न से छोड़नी चाहिये । गृहस्थ को प्रतिदिन स्नान, संध्या, ब्रह्मयज्ञ, करना चाहिये और किसी की असूया न करे और जितेन्द्रिय होकर मृदुता के साथ व्यवहार करे ।

स्त्रीधर्माः ।

सुवासिनीनित्यकृत्यम् तथा स्त्रीदेवपूजा । व्याससंहितायाम्–पत्युःपूर्वं समुत्थाय देहशुद्धिं विधाय च । उत्थाप्य शयनाद्यानि कृत्वा वेश्मविशोधनम् ॥ मार्जनैर्लेपनैः प्राप्य साग्निशालं

स्वमङ्गणम् । शोधयेदग्निकार्याणि स्निग्धान्युष्णेन वारिणा ॥ प्रोक्षणैरिति तान्येव यथास्थानं प्रकल्पयेत् । द्वन्द्वपात्राणि सर्वाणि न कदाचिद्वियोजयेत् । मृद्भिश्च शोधयेच्चुल्लीं तत्राग्निं विन्यसेत्ततः ॥ स्मृत्वानि योगपात्राणि रसांश्च द्रविणानि च । वस्त्रालङ्काररत्नानि प्रदत्तान्येव धारयेत् ॥ मनोवाक्कर्मभिः शुद्धा पतिदेशानुवर्तिनी ॥ ततोऽन्नसाधनं कृत्वा पतये विनिवेद्य तत् ॥ वैश्वदेवकृतैरन्नैर्भोजनीयांश्च भोजयेत् । पुनः सायं पुनः प्रातर्गृहशुद्धिं विधाय च ॥ कृतान्नसाधना साध्वी सुभृशं भोजयेत्पतिम् । आस्तीर्य साधु शयनं ततः परिचरेत्पतिम् ॥

स्त्री पति के पहिले शय्या से उठे और बरतनों को मांजकर अपने २ स्थान में रखे उनको अलग २ न रखे, शौचविधि करके शय्यावस्त्र को उठावे और घर में मार्जन कर अग्निशाला सहित सब घरों को लीपे और

आंगन को साफ करे, चुल्ही को लीपकर वहाँ अग्नि सुलगावे, मन, वाणी, कर्म से शुद्ध होकर पति की सेवा करे तब अन्न सिद्ध करके पति को निवेदन करे, वैश्वदेव होने पर सबोंको अन्न परोसे इसी प्रकार से सायंकाल को भी रसोई कर पति को परोसे और सायंकाल को भी गृहशुद्धि करके उत्तम शय्या बिछाकर पति की सेवा में रहे ।

कुलयोषितां दूषणम् ।

व्यासः–द्वारोपवेशनं नित्यं गवाक्षेण निरीक्षणम् । असत्प्रलापो हास्यं च दूषणं कुलयोषिताम् ॥

कुलीन स्त्रियों को द्वार पर बैठना या खिड़की से झाँकना, बकवाद करना, बहुत हँसना ये बातें न करनी चाहिये ।

विधवाधर्माः ।

वृद्धहारीतसंहितायाम्–केशरञ्जनताम्बूलगंधपुष्पादिसेवनं । भूषितं रङ्गवस्त्रं च कांस्य-

पात्रे च भोजनम् ॥ द्विवारभोजनं चाक्ष्णोरञ्जनं वर्जयेत् सदा । स्नात्वा शुक्लाम्बरधरा जितक्रोधा जितेन्द्रिया ॥ न कल्ककुहका साध्वी तन्द्रालस्यविवर्जिता । सुनिर्मला शुभाचारा नित्यं सम्पूजयेद्धरिम् ॥

केशों को संवारना, ताम्बूल खाना, सुगन्धों का सेवन करना, अलंकारों का पहिरना और रंगा वस्त्र धारण करना, कांसे के बरतन में भोजन करना, दो बार भोजन करना, आंखों में कज्जल देना ये सब बातें विधवा को मना हैं । नित्य प्रातःकाल स्नान करके श्वेत वस्त्र पहिरे काम क्रोध को जीते और किसी से कलह या कपट न करे, निद्रा, तन्द्रा को छोड़कर शुचि होकर प्रतिदिन हरि की पूजा करे ।

स्त्रीणां देवार्चनविधिः ।

स्मृत्यन्तरे–स्त्री शूद्रोऽनुपनीतश्च वेदमन्त्रान्विवर्जयेत्। अतः स्त्रीभिः कलौ पुराणविधिना

देवार्चनादिकं कर्त्तव्यम् । वैशेषिककार्यसमये देवतार्चनादौ तु पतिनासह वेदोक्तकर्मण्यपि स्त्रीणामधिकारः । स्त्रीभिर्ब्राह्मणं पुरस्कृत्य अष्टादश पुराणानि श्रोतव्यानि ॥

स्त्री, शूद्र और अनुपनीत ये वेदमंत्रों को न पढ़ें इसलिये स्त्रियां पौराणिक मंत्रों से देवपूजा आदि करें, पति के सहयोग में वेदमंत्रों से भी करें, ब्राह्मणों के मुख से स्त्रियां अठारहों पुराण सुन सकती हैं ।

प्रदक्षिणाविधिः ।

स्त्रीभिः प्रदक्षिणाः कार्या विष्णुमग्निं गुरुं तथा । जितेन्द्रिया जितप्राणा नाममन्त्रं समुच्चरेत् ।

विष्णु, अग्नि और गुरु को प्रदक्षिणा करने के समय स्त्रियों को जितेन्द्रिय और जितप्राण होकर नामस्मरण करना चाहिये ।

स्त्रीणां धर्मपालनात्फलम् ।

अन्यच्च-एते वै विधिना प्रोक्ताः स्त्रीणां धर्माः सनातनाः । ते नौकाः परमाः प्रोक्ता भवसंसारतारणे ॥

ये जो स्त्रियों के धर्म कहे सो संसारसागर से तर ने के वास्ते नौका रूप हैं ।

श्रीतुलसीनित्यपूजाप्रयोगः ।

आचमनम्-(स्त्रियस्तु आचमनस्थाने उदकेन नेत्रस्पर्शं कुर्वन्ति) केशवाय नमः । नारायणाय नमः । माधवाय नमः । इति पिबेत् । हस्तप्रक्षालनम् । गोविन्दाय नमः (इति करं प्रक्षाल्य) । विष्णवे नमः (इति नेत्रयोरुदकस्पर्शनम्) । मङ्गलोच्चारणम् । श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । श्रीलक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । श्रीउमामहेश्वराभ्यां नमः। पतिचरणारविंदाभ्यां

नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्म-णेभ्यो नमो नमः। निर्विघ्नमस्तु पुण्यंपुण्याहं दीर्घमायुरस्तु। मंगलप्रार्थना। सुमुखश्चैकद-न्तश्चादि। संकल्पः। विष्णवे नमः विष्णुः ३ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्त-मानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीये परार्धे श्रीश्वेतवा-राहकल्पे अष्टाविंशतिमे कलियुगे कलिप्रथम-चरणे भारतवर्षे भारतखण्डे जम्बूद्वीपे केदार-खण्डान्तर्गत बद्रिकाश्रमे (संवत्सरायनऋतु-मासपक्षतिथिवासरनक्षत्रयोगप्रातः कालादि-नामान्यनुकीर्त्य) ममाऽत्मनः पुराणोक्तफल-प्राप्त्यर्थं तथा च ममभर्त्रासह अखण्डितसुख-सौभाग्यसंतत्यायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिद्वारा श्री-तुलसी (वा अमुकदेवता) प्रीत्यर्थं वृन्दावने (वा अन्यस्थाने) तुलसीपूजनमहं करिष्ये। कलशपूजनम्। गंगे च यमुने चैव गोदावरि

सरस्वति। नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु॥ कलशस्थवरुणदेवतायै नमः सकल पूजार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि कल्पयामि नमस्करोमि ॥ पूजाद्रव्यप्रोक्षणम् । अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः॥ घण्टापूजनम्। आगमार्थंतु देवानां गमनार्थंतु रक्षसाम्। कुरु घण्टे महानादं देवतार्चनसन्निधौ॥ घण्टास्थ गरुडदेवतायै नमः । सकलपूजार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ दीपपूजनम् । दीपस्त्वं ब्रह्मरूपोसि ज्योतिषां प्रभुरव्ययः। सौभाग्यं देहि पुत्रांश्च सर्वान्कामांश्च देहि मे ॥ दीपदेवताभ्यो नमः सकलपूजार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि ॥ श्रीतुलसीध्यानम् । ध्यायेच्च तुलसीदेवीं श्यामां कमललोचनाम्। प्रसन्नां

पद्मवदनां वराभयचतुर्भुजाम् ॥ किरीटहार-केयूरकुण्डलादि विभूषणाम् । धवलाङ्कुश-संयुक्तां पद्मासननिषेविताम् ॥ प्रियां च सर्वदा विष्णोः सर्वदेवनमस्कृताम्। श्रीतुलस्यै नमः ध्यायामि ॥ आवाहनं । देवि त्र्यैलोक्य-जननि सर्वलोकैकपावनि । आगच्छ वरदे मातः प्रसीद तुलसी प्रिये॥ श्रीतुलस्यै नमः । आवाहयामि ॥ आसनम् । सर्वदेवमये देवि सर्वदा विष्णुवल्लभे । देवि स्वर्णमयं दिव्यं गृहाणासनमव्यये ॥ श्रीतुलस्यै नमः आस-नार्थे अक्षतान्समर्पयामि । पाद्यम् । सर्वदेवा यथा स्वर्गे तथा त्वं भुवि सर्वदा । दत्तं पाद्यं गृहाणेदं तुसली त्वं प्रसीद मे ॥ अर्घ्यम् । गन्धपुष्पसमायुक्तं सर्वेषां प्रीतिदायकम् । अर्घ्यं गृहाण त्वं देवि दैत्यान्तकरणप्रिये ॥ श्रीतुलस्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि । आचम-

नम् । कर्पूरवासितं तोयं सुवर्णकलशे स्थितम् । दत्तमाचमनीयं च गृहाण हरिवल्लभे ॥ श्रीतुलस्यै नमः आचमनं समर्पयामि ॥ स्नानम् । गङ्गा सरस्वती रेवा पयोष्णी नर्मदा जलैः । स्नापितासि मया देवि तथा शान्तिं कुरुष्व मे ॥ श्रीतुलस्यै नमः स्नानं समर्पयामि । मलापकर्षणस्नानम् । गंगा गोदावरी कृष्णा पयोष्ण्याद्यापगास्तथा । आयान्तु ताः सदा देऽयस्तुलसीस्नानकर्मणि ॥ श्रीतुलस्यै नमः मलापकर्षणस्नानं समर्पयामि । पञ्चामृतं मयाऽनीतं पयो दधि घृतं मधु । सह शर्करया देवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्रीतुलस्यै नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ॥ शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि । गन्धाक्षतपुष्पं समर्पयामि ॥ वस्त्रं । क्षीरोदमथनोद्भूते चन्द्रलक्ष्मीसहोदरे । गृह्यतां परिधा-

नार्थमिदं क्षौमाम्बरं शुभे ॥ श्रीतुलस्यै नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ सौभाग्यद्रव्यम् । हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् । मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि ॥ श्रीतुलस्यै नमः सौभाग्यद्रव्यं समर्पयामि । धूपम् । वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥ श्री तुलस्यै नमः धूपं समर्पयामि ॥ नीराजनम् । वैश्वानरप्रज्वलितं घृतकार्पासनिर्मितम् । दीपं भक्त्या गृहाणेदं त्रैलोक्यध्वांतनाशके ॥ श्रीतुलस्यै नमः नीराजनं दर्शयामि ॥ नैवेद्यम् । अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्। नैवेद्यार्थेऽर्पयामि त्वां तुलसी माधवप्रिये। प्राणाय नमः। अपानाय नमः। व्यानाय नमः। समानाय नमः। उदानाय नमः। (इति मन्त्रैः ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य) श्रीतुलस्यै नमः नैवेद्यं

समर्पयामि ॥ आचमनं समर्पयामि। हस्तौ मुखंच प्रक्षाल्य। चन्दनं समर्पयामि। क्षेपकम्-फलम्। इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि। श्रीफलं समर्पयामि। श्री ताम्बूलं स०। दक्षिणा-हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ श्रीतुलस्यै नमः दक्षिणां समर्पयामि। कर्पूरारातिक्यम्। नीराजयामि सततं हरिवल्लभे वै कर्पूरवर्तिभिरलं सुखदायके त्वाम्। पादौ भजाम्यविरतं तव देवि माये वंशायसौख्यमपि देहि बलं च पूर्णम् ॥ श्रीतुलस्यै नमः कर्पूरारातिक्यं स० ॥ प्रदक्षिणा। यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥ प्रदक्षिणामन्त्रः। नमस्ते गार्हपत्याय नमस्ते दक्षिणाग्नये। नम

आह्वनीयाय तुलस्यै ते नमोनमः॥ श्रीतुलस्यै नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ॥ मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः। विष्णुप्रियकरे देवि तुलसी सुखदा-यके। पुष्पाञ्जलिं प्रयच्छामि पत्युरायुष्यवर्द्धके ॥ श्रीतुलस्यै नमः मंत्रपुष्पाञ्जलियुक्तं नमस्कारं सम० ॥ विशेषार्घ्यः—गन्धप्रसूनसंयुक्तं फलमु-द्रादिशोभितम्। अर्घ्यं ददामि तुलसि तव प्रीत्यै नमो नमः ॥ श्रीतुलस्यै नमः विशेषार्घ्यं स० । प्रार्थना । सौभाग्यं सन्ततिं देवि धनं धान्यं च मे सदा । आरोग्यं शोकशमनं कुरु मे माधवप्रिये ॥ अभीष्टफलसिद्धिं च सदा देहि हरिप्रिये । देवैस्त्वं निर्मिता पूर्वमर्चितासि मुनीश्वरैः॥ अतो मां सर्वदा भक्त्या कृपादृष्ट्या विलोकय । पत्युरायुश्च भाग्यं च सदा देहि हरिप्रिये ॥ पतनाभयसन्त्रासाद्रक्षितश्च यथा हरिः। तथा संसारसन्त्रासाद्रक्ष मे वंशमुत्तमम् ॥

श्रीतु० प्रार्थनां समर्पयामि । अर्पणम् । अनेन मया यथाशक्त्या पूजनेन श्रीतुलसीदेवता प्रीयतां न मम ॥ इति तुलसीनित्यपूजाप्रयोगः ।

देवस्पर्शेऽनधिकारः ।

नारदीये--स्त्रीणामनुपनीतानां शूद्राणां च नराधिप । स्पर्शने नाधिकारोऽस्ति विष्णोर्वा शङ्करस्य च ॥ शूद्रो अनुपनीतो वा स्त्री वापि पतितोऽपि वा । केशवं वा शिवं वापि स्पृष्ट्वा नरकमश्नुते ॥ (अतएव देवालये शिवलिङ्ग-देव्यादिमूर्तीनां पर्युषितनिर्माल्योत्सर्जनपूर्वकं प्रथमपूजनादौ नियुक्ताः शूद्रा (गुरवा) इत्य-भिधानाः सन्तीति सांप्रदायप्रवृत्तः) ।

स्त्रियां, अनुपनीत और शूद्र इनको शिवमूर्त्ति वा विष्णुमूर्त्ति को स्पर्श करने का अधिकार नहीं। जो शूद्र या अनुपनीत या स्त्री विष्णु वा शिवमूर्त्ति को छूवें वे नरक को प्राप्त होंगे ।

इसी वास्ते देवालय में शिवलिङ्ग वा देवतों की मूर्त्तियों पर का पुराना निर्माल्य निकाल करके गुरव जाति के लोग पूजा करने के वास्ते नियुक्त किये गये हैं और अन्य शूद्रों को अधिकार नहीं है ।

पूजाफलम् ।

शम्भुरहस्ये-स्वयं यजति चेद्देवमुत्तमा सोदरात्मजैः । मध्यमा या यजेद्भृत्यैरधमा याजनक्रिया । भविष्ये-धर्मार्जितधनक्रीतैर्यः कुर्यात् केशवार्चनम् । उद्धरेत्स्वेन सहितान्द-शपूर्वान्दशापरान् ॥ महाभारते-कलौ कलि-मलध्वंसं सर्वपापहरं हरिम् । अर्चयन्ति नरा नित्यं तेपि वन्द्या यथा हरिः ॥

स्वयम् पूजा करो सो उत्तम, भाई और लड़के के हाथ जो पूजा करावे सो मध्यम और जो अन्य लोगों से पूजा करावे सो अधम कहलाती है । धर्म से धनार्जन करके मंगाई हुई जो पूजासामग्री उससे जो हरि की पूजा करो तो अपने सहित दश पूर्वपुरुषों को और दश

उत्तर पुरुषों को उद्धार करे । कलिमल को नाश करनेवाली सर्व पाप को हरनेवाली ऐसी हरि की पूजा करें सो हरि के तुल्य वन्दनीय हो जाते हैं ।

अथ देवपूजाप्रयोगः ।

आचम्य प्राणानायम्य । सुशान्तिर्भवतु ॥ मङ्गलोच्चारणम् । ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः । स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु १ आदि पठेत् । नमस्काराः । श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः । कुलदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः । निर्विघ्नमस्तु । यथाशक्ति गणेशपूजां कुर्यात् । संकल्पः । विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्यादि (तुलसीपूजादर्शितक्रमेण कुर्यात्) । कलशपूजनम् । तत्रादौ । कलशाऽ

वाहनम् । सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः । आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥ कलशस्य मुखे विष्णुःकण्ठे रुद्रः समाश्रितः । मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः । कुक्षौतु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा । ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः । अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशंतु समाश्रिताः ॥ अग्रे पञ्चाङ्गपूजादर्शितक्रमेण कुर्यात् (वा संक्षेपेण)।

वाजसनेयिनां षोडशोपचारपूजाक्रमः ।

१–सहस्रशीर्षेत्यावाहनम् । २–पुरुषऽएवेत्यासनम् ३–एतावानस्येति पाद्यम् । ४–त्रिपादूर्ध्वमित्यर्घ्यम् । ५–ततो विराडजायतेत्याचमनीयम् । ६–तस्माद्यज्ञादिति स्नानम् । ७–तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत इति वस्त्रम् । ८–तस्माद्श्वा इति यज्ञोपवीतम् । ९–तंयज्ञमिति

गन्धम् । १०–यत्पुरुषमिति पुष्पम् । ११–ब्राह्मणोस्येति धूपम् । १२–चन्द्रमामनस इति दीपम् । १३–नाभ्याऽ आसीदिति नैवेद्यम् । १४–यत्पुरुषेणेति दक्षिणायुक्तताम्बूलम् । १५–सप्तास्या इति आरार्तिकपूर्वकप्रदक्षिणाः । १६–यज्ञेन यज्ञमिति मन्त्रपुष्पयुक्तो नमस्कारः । इति षोडशोपचारपूजा संक्षेपेणेति स० ॥

विशेषनैमित्तिक आराध्यदेवता–
पूजायांतु आर्तिक्यादिकर्माणि

पञ्चायतनार्तिः ।

करुणापारावारं कलिमलपरिहारम् । कद्रूसुतशयितारं करधृतकल्हारम् । धनपटलाभशरीरं कमलोद्भवपितरम् । कलये विष्णुमुदारं कमलाभर्तारम् ॥ जय देव जय केशव हर गजमुख सवितर्नगतनयेऽहं चरणौ तव कलये ॥

जयदेव जय देव । इति विष्णोः आर्तिः ॥ १ ॥
भूधरजारतिलीलं मङ्गलकरशीलं भुजगेश-
स्मृतिलोलं भुजगावलिमालम् । भूषाऽकृति-
मतिविमलं संधृतगाङ्गजलम् भूयो नौमि
कृपालं भूतेश्वरमतुलम् ॥ जयदेव० ॥ इति
शिव–आर्तिः॥ २ ॥ विघ्नारण्यहुताशं विहिताऽ-
न्यनाशं विपदवनीधरकुलिशं विधृताङ्कु-
शपाशम् । विजयार्कज्वलिताशं विदलित-
भवपाशं विनताः स्मो वयमनिशं विद्या-
विभवेशम् । जयदेव० इति गणपति-आर्तिः॥३॥
कश्यपसूनुमुदारं कालिन्दीपितरं कालत्रितयवि-
हारं कामुकमन्दारम् । कारुण्याब्धिमपारं काला-
नलमदरं कारणतत्त्वविचारं कामय उष्मकरम् ॥
जयदेव० । इतिसूर्य–आर्तिः ॥ ४ ॥ निगमैर्नुत-
पदकमले निहतासुरजाले हस्तधृतकरवाले
निर्जरजनपाले । नितरां कृष्णकपाले निर-

वधिगुणलीले निर्जरनुतपदकमले नित्योत्सव-
शीले । जयदेवि० । इति देवी–आर्तिः ॥ ५ ॥

देव्या आर्तिः ।

प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्ये ।
पारावारविहारिणि नारायणि हृद्ये ॥ प्रपञ्चसारे
जगदाधारे श्रीविद्ये । प्रपन्नपालननिरते मुनि-
वृन्दाराध्ये ॥ जयदेवि जयदेवि जय मोहनिरूपे ।
मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ १ ॥
दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने पदनख-
निर्जितमदने मधुकैटभकदने । विकसितपङ्क-
जनयने पन्नगपतिशयने । खगपतिवहने गहने
सङ्कटवनदहने ॥ जय देवि० ॥ २ ॥ मञ्जीरा-
ङ्कितचरणे मणिमुक्ताभरणे कञ्चुकिवस्त्रावरणे
वक्राम्बुजधरणे शक्रामयमयहरणे भूसुरसुख-
करणे करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे ॥

जय देवि० ॥ ३ ॥ छित्वा राहुग्रीवां पासि त्वं विबुधान् ददासि मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान्। विहरसि दानव क्रुद्धान्समरे संसिद्धान् मध्वमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान्॥ जय देवि०॥४॥

तर्पणविधिः ।

ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को नित्य पितरों का तर्पण करना चाहिये, यह शातातप ऋषि ने कहा है यथा–

तर्पणंतु शुचिः कुर्यात् प्रत्यहं स्नातको द्विजः।
देवेभ्यश्च ऋषिभ्यश्च पितृभ्यश्च यथाक्रमम्॥१॥

अर्थ–गृहस्थ, द्विज, पवित्र होकर नित्य देवताओं का ऋषियों का और पितरों का तर्पण क्रम से करे ॥ १ ॥ जो गृहस्थ सूतक आदि निषिद्ध समय से भिन्न समय में तर्पण नहीं करता उसके पितरों को कष्ट होता है यह योगी याज्ञवल्क्यजी ने कहा है यथा–

नास्तिक्यादथवा लौल्यान्न तर्पयति वैसुतः ।
पिबन्ति देहनिःश्रावं पितरोऽस्य जलार्थिनः॥२॥

अर्थ –नास्तिकता से चञ्चलता से जो पुरुष तर्पण

नहीं करता उसके पितर पिपासित होते हैं और देह से निकले हुए अपवित्र जल को पीते हैं। छान्दोग्यपरिशिष्ट में कात्यायनजी लिखते हैं कि जो तर्पण नहीं करता उसे पाप होता है यथा-

तस्मात्सदैव कर्तव्यमकुर्वन्महदेनसा। युज्यते ब्राह्मणः कुर्वन् विश्वमेतद् विभर्त्ति हि ॥

अर्थ—इस कारण निषेधरहित तर्पण के समय सदा तर्पण करना चाहिये न करने से बड़ा पाप होता है। तर्पण करता हुआ ब्राह्मण आदि इस विश्व को पालता है ॥

तिलतर्पण का निषेध न हो तो तिल और कुश से तर्पण करे, लाचारी पर तो केवल मन्त्र से ही तर्पण करे।

तर्पणे तिलनिषेधः। मरीचिः—सप्तम्यां भानुवारे च गृहे जन्मदिने तथा। भृत्यपुत्रकलत्रार्थी न कुर्यात्तिलतर्पणम्। सङ्ग्रहे--नन्दायां भार्गवदिने कृत्तिकासु मघासु च। भरण्यां भानुवारे च गजच्छायाह्वये तथा। तर्पणं नैव

कुर्वीत तिलमिश्रं कदाच न ॥ बौधायनः-
विवाहे चोपनयने चौले सति यथाक्रमम् ।
वर्षमर्धन्तदर्धञ्च नेत्येके तिलतर्पणम् ॥ वह्नि-
पुराणे-दर्शश्राद्धं गयाश्राद्धं तिलैस्तर्पणमेव च ।
न जीवत्पितृको भूयः कुर्यात्कृत्वाघमाप्नुयात् ॥

अर्थ—सप्तमी, रविवार, घर में, जन्मदिन को, नौकर, पुत्र, स्त्री, इनको चाहनेवाले उक्त दिनों में तिल तर्पण न करें, नन्दातिथी (१ । ६ । ११) इन तिथियों में, शुक्रवार में, कृत्तिका, मघा, भरणी इन नक्षत्रों में, रविवार में, और गजछाया पर्व के दिन इन दिनों में तिलमिश्र तर्पण नहीं करना चाहिये । विवाह होने के बाद १ वर्ष तक और यज्ञोपवीत के बाद ६ महिना तक और चूड़ाकर्म के बाद ३ महिना तक और तिलतर्पण न करे । दर्शश्राद्ध, गयाश्राद्ध, तिलतर्पण जिसका बाप जीता हो वह न करे । किसे कै अञ्जली देना चाहिये गोभिल ऋषि ने लिखा है यथा—

एकैकमञ्जलिं देवा द्वौ द्वौ तु सनकादयः ।
अर्हन्ति पितरस्त्रीं स्त्रीन् स्त्रिय एकैकमञ्जलिम् ।

अर्थ-देवताओं को एक एक, सनकादिकों को दो दो, पितरों को तीन तीन और माता को ३ अंजलि और माता से शेषस्त्रियों को एक एक, अंजलि देवे ॥

अथ देवर्षिपितृतर्पणम् ।

जिससे पितृ आदि को तृप्त किया जाय उसे तर्पण कहते हैं ॥ सव्य होकर आमचन करै फिर पवित्री पहन मोटक या पवित्री हाथ में लेकर पूर्व की ओर को मुख करके संकल्प को पढ़े ॥

ॐ अद्येहामुकगोत्रोत्पन्नोहममुकनामाहम् । श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्यफलप्राप्त्यर्थं देवर्षिपितृतर्पणमहंकरिष्ये ॥

फिर अंगोछे को सीधे कंधे पर रखकर उपवीत हो (यज्ञोपवीत को सीधे हाथ के अंगूठे में लगाकर) पूर्व को मुख कर आगे लिखे मंत्रों से तिलचन्दन पुष्पों से मिले हुए जल की देवतीर्थ से एक २ अंजुली दे ॥

(आवाहनम्) ॐ ब्रह्मादयोदेवा आगच्छन्तु गृह्णन्त्वेतान् जलांजलीन् ॥ ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्

ॐ विष्णुस्तृ० ॐ रुद्रस्तृ० ॐ गणपतिस्तृ०
ॐ प्रजापतयस्तृ० ॐ देवास्तृ ॐ छन्दांसितृ०
ॐ ऋषयस्तृ० ॐ वेदास्तृ० ॐ पुराणाचार्यास्तृ०
ॐ इतराचार्यास्तृ० ॐ गंधर्वास्तृ० ॐ संवत्सराः
सावयवास्तृ० ॐ नागास्तृ० ॐ सागरास्तृ०
ॐ पर्वतास्तृ० ॐ सरितस्तृ० ॐ मनुष्यास्तृ०
ॐ यक्षास्तृ ॐ रक्षांसितृ० ॐ पिशाचास्तृ०
ॐ सुपर्णास्तृ० ॐ भूतानितृ० ॐ पशवस्तृ०
ॐ वनस्पतयस्तृ० ॐ औषधयस्तृ० ॐ भूतग्रा-
माश्चतुर्विधास्तृ० ॥

तदनन्तर देवतर्पण के समान मरीचि आदि ऋषियों का भी आगे लिखे मन्त्रों से तर्पण करै ॥

ॐ मरीचिस्तृ० ॐ अत्रिस्तृ० ॐ अंगिरा-
स्तृ० ॐ पुलस्त्यस्तृ० ॐ पुलहस्तृ० ॐ क्रतुस्तृ०
ॐ प्रचेतास्तृ० ॐ वसिष्ठस्तृ० ॐ भृगुस्तृ०
ॐ नारदस्तृ ॐ भरद्वाजस्तृ० ।

तदनन्तर यज्ञोपवीत को माला के तुल्य कण्ठ में लटकाकर तथा अंगोछे को भी कंठी कर उत्तर को मुख कर यज्ञोपवीत को दोनों हाथों के अंगूठों में करके चन्दन जौ पुष्प सहित बांया घोंटा नवायके प्रजापति तीर्थ से २ अंजुली दे ।

ॐ सनकस्तृ० २ ॐ सनन्दनस्तृ० २ ॐ सनातनस्तृ० २ ॐ कपिलस्तृ० २ ॐ आसुरिस्तृ० २ ॐ वोढुस्तृ० ॐ पञ्चशिखस्तृ० ।

अर्थ—फिर दक्षिण को मुख कर बाईं वगल तथा दाहिने कंधे पर यज्ञोपवीत और बाये कन्धे पर अंगोछा रखकर तथा बांये घोंटे को नवाकर तिलादि मिश्रित जल से अंगूठे के बल तीन २ अंजुली से कव्यवाडनलादि का तर्पण करै ।

(अथावाहनम्) (ॐ कव्यवाडनलाद योदिव्यपितर इहागच्छन्तु गृह्णन्त्वेतां जलांजलीन्) ओं कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधानमः ३ ओं सोमस्तृप्य-

ताम् ३ ओं यमस्तृ० ओं अर्यमास्तृ० ओं-अग्निष्वात्तास्तृ० इदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा-नमः ३ ॐ सोमस्तृ० ३ ॐ बर्हिषदस्तृ० ३

अर्थ-फिर पूर्वोक्त वही दक्षिण को मुख करके यज्ञोपवीतादि भी बांई ओर रखकर इन १४ मन्त्रों को पढ़ता हुआ अंगूठे के बल से दो २ अंजुली दे ॥

ॐ यमाय नमः ३ ॥ ॐ धर्मराजाय नमः ३ ॥ ॐ मृत्यवे नमः ३ ॥ ॐ अंतकाय नमः ३ ॥ ॐ वैवस्वताय नमः ३ ॥ ॐ कालाय नमः ३ ॥ ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः ३ ॥ ॐ औदुम्बराय नमः ३ ॥ ॐ दध्नाय नमः ३ ॥ ॐ नीलाय नमः ३ ॥ ॐ परमेष्ठिने नमः ३ ॥ ॐ वृकोद-राय नमः ३ ॥ ॐ चित्राय नमः ३ ॥ ॐ चित्र-गुप्ताय नमः ३ ॥

अर्थ-फिर पूर्वोक्त प्रकार से दक्षिण को मुख कर पितृतीर्थ से पिता आदि व नाना आदि सपत्नीक छः

पुरुषों का तर्पण करे और सबको तीन २ अंजुली दे ।

(पिता) ओं अस्मत्पिता अमुकगोत्रः अमुकशर्मा वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधानमः ३ ॥ (दादा) ओं अस्मत्पितामहः अमुकगोत्रः अमुकशर्मा रुद्रस्वरूपस्तृप्य० ३ ॥ (परदादा) अस्मत्प्रपितामहः ॐ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा आदित्यस्वरूपस्तृप्य० ३ ॥ (माता) अस्मन्माता अमुकगोत्रा अमुकीदेवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधानमः ३ ॥ (दादी) अस्मत्पितामही ॐ अमुकगोत्रा अमुकीदेवी सावित्रीस्वरूपा तृप्य० ३ ॥ (परदादी) अस्मत्प्रपितामही ॐ अमुकगोत्रा अमुकीदेवी सरस्वतीस्वरूपा तृ० ३ ॥ (नाना) अस्मन्मातामहः ॐ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अग्निस्वरूपस्तृ० इदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः ३ ॥

(परनाना) ॐ अस्मत्प्रमातामहः अमुकगोत्रः अमुकशर्मा वरुणस्वरूपस्तृप्य० ३ ॥ (बूढ़े परनाना) अस्मत्वृद्धप्रमातामहः ॐ अमुगोत्रः अमुकशर्मा प्रजापतिस्वरूपः तृप्य० ३ ॥ (नानी) अस्मन्मातामही ॐ अमुकगोत्रा अमुकीदेवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यैस्वधानमः ३ ॥ (परनानी) ॐ अस्मत्प्रमातामही अमुकगोत्रा अमुकीदेवी सावित्रीस्वरूपा तृ० ३ (बूढ़ी परनानी) ॐ अस्मत्वृद्धप्रमातामही अमुकगोत्रा अमुकीदेवी सरस्वतीस्वरूपा तृप्य० ३ ॥

अर्थ-फिर पूर्वोक्त विधि से अपसव्य होकर अगले मन्त्रों से तर्पण करे और एक २ अंजुली दे ॥

ॐ ये बान्धवा बान्धवा ये येऽन्ये जन्मनि बांधवाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु ये चास्मत्तोयकांक्षिणः ॥ १ ॥ ये मे कुले लुप्तपिंडाः पुत्रदारा-

विवर्जिताः । तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमाता-महादयः ॥ २ ॥ अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वी-पनिवासिनां । आब्रह्मभुवनान् लोकानिदमस्तु तिलोदकम् ॥ ३ ॥

अर्थ-इसके उपरान्त इस मन्त्र को पढ़कर एक अंजुली जल भूमि में छोड़ देना चाहिये ।

ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येप्यदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥ ४ ॥

अर्थ-आगे लिखे मंत्र को पढ़कर अंगोछे के पल्ले को निचोड़े ॥

ॐ येचास्माकं कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः ॥ ते पिबन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनो-दकम् ॥ ५ ॥

अर्थ-तदन्तर अगिले मंत्र से सूर्य को जल दे ।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ।

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ ६ ॥

अर्थ फिर अगले मंत्र से प्रणाम करै ॥

ॐ पिता स्वर्गः पिता धर्मः पिता हि परमं तपः । पितरि तृप्तिमापन्ने प्रीयन्ते सर्व-देवताः ॥ ७ ॥

अर्थ-फिर नीचे लिखे मंत्र को पढ़के ३ अंजुली दे ।

ॐ आब्रह्मस्तम्भपर्यन्तं जगत्तृप्यतु ॥

इति तर्पणविधिः समाप्तः ॥

नोट-तीर्थ में और पितृपक्ष में तर्पण करने के समय इदं जलं इस के आगे सतिलं इतना हर एक वाक्य में लगाकर तर्पण करना चाहिये।

अथ नित्यश्राद्धम् ।

आचमन कर कुश की पवित्री पहन अपसव्य व दक्षिणाभिमुख हो संकल्प को पढ़े ।

ॐ अद्येहपुण्यतिथौ ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तपुण्यफलावाप्तये अमुकगोत्राणाममुकशर्मणां अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां स-

पत्नीकानां यथानामगोत्राणाममुकशर्मणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तृप्त्यर्थं नित्यश्राद्धमहं करिष्ये ॥

अर्थ—तदनन्तर छः मोटक रखकर पितरों का आवाहन करे ॥

ॐ आयान्तुनः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः अस्मिन्यज्ञे स्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान् ॥ १ ॥

अर्थ–फिर छः कुशा के आसन हाथ में लेकर संकल्प कर मोटकों के नीचे रख दे ॥

अद्यामुकगोत्रा अमुशर्माणः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः तथा चामुकगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाः एतानि गंधपुष्पधूपदीपवस्त्रादीनिमद्दत्तानि तेभ्यः स्वधा ॥

अर्थ-फिर उन छओं पितरों के आगे जल से छः मंडल करे और छः पत्ते रख अन्न तथा जल परोसे सहत तथा घृत भी लगा दे और इस मंत्र को पढ़े ॥

ॐ मधुवाताऋतायते मधुक्षरंति सिंधवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ १ ॥ ॐ पृथिवीतेपा-त्रंद्यौरपिधानं ब्राह्मणस्यमुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥ २ ॥ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रे-धानिदधेपदं समूढमस्य पांसुरे ॥ ३ ॥

अर्थ-इसके उपरान्त सीधे हाथ के अंगूठे को अन्न पर लगाकर यह वाक्य कहे (अन्न को बतावे) 'इदं अन्नम्' (जल को) 'इमा आपः' (घृत को) 'इद-माज्यम्' फिर आगे लिखे मंत्र को पढ़ तिल छोड़े ॥

ॐ अद्या अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाःअ-मुकगोत्राः अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाःतथा अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा अ-मुकगोत्रा अमुकामुकशर्माणः सपत्नीकाः इद-मन्नं सोपस्करणं सजलं तेभ्यः स्वधा नमः ॥

अर्थ-इसके पश्चात् (अभिरम्यतामिति विसर्जनम्) पढ़कर श्राद्ध के अन्न को ब्राह्मण को देदे फिर भोजन में से छः भाग निकाल के गौ आदि को अन्न दे। उसकी विधि-

(गौ को) सुरभिर्वैष्णवीमाता नित्यं विष्णुपदे स्थिता । गोग्रासंतु मयादत्तं सुरभिः प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ (कुत्ते को) द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ । ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्यातांचे तावहिंसकौ ॥२॥ (कौवे को) यमोसि यमदूतोसि वायसोऽसि महामते । अहोरात्रकृतं पापं बलिं भक्षतु वायसः ॥ ३ ॥ (चीटींआदि को) पिपीलिका कीटपतंगकाद्याबुबुक्षिताःकर्मनियोगबद्धाः । प्रयान्तु ते तृप्तिमिदं मयान्नं तेभ्योवसृष्टं सुखिनो भवन्तु ॥ ४ ॥ अनेन मयाकृतेन नित्यश्राद्धकर्मणा मम पित्रादिरूपो जनार्दनःप्रीयताम् ॥

इति नित्यश्राद्धकर्म समाप्तम् ।

अयं सङ्कल्पः–तीर्थस्नानादौ श्रावण्यादि-नैमित्तिकस्नानादौ च स्वतः कुर्वन्ति तीर्थोपाध्यायतः कारयन्ति च ।

अर्थ–इस संकल्प को तीर्थस्नानादि और श्रावणी आदि नैमित्तिक स्नान में स्नान करनेवाले स्वयम् करें। या तीर्थों के पंडागण इस महापुण्यशाली संकल्प से स्नानादि कर्म करावें तो उनको पूर्ण दक्षिणा देकर शुभाशीर्वाद लेवे ॥

हेमाद्रिकृतस्नानमहासंकल्पः ।

आचम्य प्राणानायम्य ॥ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। श्री गुरुभ्यो नमः। श्री सरस्वत्यै नमः। वेदाय नमः। वेदपुरुषाय नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमो नमः। अविघ्नमस्तु। सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो गणाधिपः ॥ धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ॥ द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते। शुक्ला-

म्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ॥ प्रसन्नवदनं ध्याये-त्सर्वविघ्नोपशान्तये । अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः ॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥ वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ । अविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ वागीशाद्याः सुमनसः सर्वार्थानामुपक्रमे । यं नत्वा कृतकृत्याः स्तु तं नमामि गजाननम् ॥ ॥ गणनाथं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहं । विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥ स्थानं क्षेत्रं नमस्कृत्य दिननाथं निशाकरम् ॥ धरणीगर्भसंभूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम् ॥ दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं शनैश्चरम् ॥ राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥ शक्रादिदेवताः सर्वानृषींश्चैव तपोधनान् । गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं पर्वतं तथा । वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम् ॥ अगस्त्यं च पुलस्त्यं च दक्षमित्रं पराशरम् । भरद्वाजं च माण्डव्यं याज्ञवल्क्यं च गालवम् ॥ अन्ये विप्रास्तपोयुक्ता वेदशास्त्रविचक्षणाः । तान्सर्वान्प्रणिपत्याहं शुभकर्म समारभे । लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ अग्रतः श्रीनृसिंहश्च पृष्ठतो देवकी-

सुतः ॥ रक्षतां पार्श्वयोर्देवौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥ ०

ॐ–स्वस्ति श्रीमुकुन्दसच्चिदानंदस्य ब्रह्मणोऽनिर्वाच्य मायाशक्ति विजृम्भिता विद्यायोगात् कालकर्मस्वभावाविर्भूत महत्तत्वोदिताहङ्कारोद्भूत वियदादि पञ्चमहाभूतेन्द्रिय देवता निर्मितेऽण्डकटाहे चतुर्दशलोकात्मके लीलया तन्मध्यवर्ति भगवतः श्रीनारायणस्य नाभिकमलोद्भूत सकललोकपितामहस्य ब्रह्मणः सृष्टिं कुर्वतस्तदुद्धरणाय प्रजापतिप्रार्थितस्य समस्तजगदुत्पत्तिस्थितिलयकारणस्य जगद्रक्षाशिक्षाविचक्षणस्य प्रणतपारिजातस्य अच्युतानन्तवीर्यस्य श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य अचिन्त्यापरिमित शक्त्याध्येयमानस्य महाजलौघमध्ये परिभ्रममाणनामनेककोटिब्रह्माण्डानामेकतमे ऽव्यक्तमहदहङ्कारपृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाद्यावरणैरावृते अस्मिन्महति ब्रह्माण्डखण्डे आधारशक्ति श्रीमदादिवाराहदंष्ट्राग्रविराजिते कर्मानन्तवासुकितक्षककुलिककर्कोटकपद्ममहापद्मशङ्खाद्यष्टमहानागैर्ध्रियमाणे ऐरावतपुण्डरीकवामनकुमुदाञ्जनपुष्पदन्तसार्वभौमसुप्रतीकाष्टदिग्गजप्रतिष्ठितानाम् तल वितलसुतलतलातलरसातलमहातलपाताललोकानामुपरिभागे भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक महर्लोक जनोलोक तपोलोक सत्यलोकाख्य सप्तलोकानामधोभागे चक्रवाल

शैल महावलयनाग मध्यवर्तिनो महाकाल महाफणिराज शेषस्य सहस्रफणानां मणिमंडलेमंडिते दिग्दन्तिशुण्डो-त्तम्भिते अमरावत्यशोकवती भोगवती शोकवती सिद्ध-वती गान्धवती काञ्च्यवन्त्यलकावती यशोवतीति पुण्य-पुरी प्रतिष्ठिते वरध्रुवाधर सोमपाप्रभञ्जनानल प्रत्यूष प्रभाख्याष्टवसुभिर्विराजिते हरत्र्यम्बक रुद्र मृगव्याधा पराजित कपाली भैरव शम्भु कपर्दि वृषाकपि वटुरूपा-ख्यैकादशरुद्रैः संशोभिते रुद्रोपेन्द्र सवितृ धातृत्वष्टृर्यमे-न्द्रेशान भगमित्र पूषाख्य द्वादशादित्य प्रकाशिते यम-नियमासनप्राणायामप्रत्याहार धारणाध्यानसमाध्यष्टाङ्ग-निरत वसिष्ठ वालखिल्या विश्वामित्र दक्ष कत्यायन कौं-ण्डिन्य गौतमाङ्गिरस पाराशर्य व्यास वाल्मीक शुक शौनक भरद्वाज सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार नारदादि मुख्य मुनिभिः पवित्रिते लोकालोकाचलवलयिते लव-णेक्षुरससुरासर्पिर्दधिक्षीरोदकयुक्तसप्तार्णवपरिवृते जम्बु प्लक्ष शाल्मलि कुश क्रौञ्च शाक पुष्कराख्य सप्तद्वीप-युते इन्द्र कांस्य ताम्र गभस्ति नागसौम्य गन्धर्व चारण भारतेतिनवखण्डमण्डितेसुवर्णगिरिकर्णिकोपेत महासरो-रुहाकार पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णभूमण्डले अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्च्यवन्तिका द्वारावतीति सप्तपुरी

प्रतिष्ठिते महामुक्तिप्रदस्थले शालग्राम शम्भलनंदिग्रामेति ग्रामत्रयविराजिते चम्पकारण्य बदरिकारण्य दण्डकारण्या-र्बुदारण्य धर्मारण्य पद्मारण्य गुह्यारण्य जम्बुकारण्य विन्ध्यारण्य द्राक्षारण्य नहुषारण्य काम्यकारण्य द्वैतारण्य नैमिषारण्यादिनां मध्ये सुमेरु निषकूट श्रीकूट हेमकूट रजतकूट चित्रकूट त्रिकूट किष्किन्ध श्वेताद्रिकूट हिमवि-न्ध्याचलानां हरिवर्ष किम्पुरुषवर्षयोश्च दक्षिणे नवस-हस्रयोजनविस्तीर्णे भरतखण्डे मलयाचल सह्याचल विन्ध्याचलानामुत्तरेणस्वर्णप्रस्थ चण्डप्रस्थ सूक्तिक आवन्तक रमणक महारमणक पाञ्चजन्य सिंहल लङ्का-ऽशोकवत्यलकावती सिद्धवती गान्धर्ववत्यादि पुण्यपुरी विराजिते नवखण्डोपद्वीपमण्डितेदक्षिणावस्थित रेणुकाह्वय सूकर काशी काञ्ची कालिका लवटेश्वर कालञ्जर महाकालेति नवो खर युते द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग गङ्गा (भागीरथी) गोदा (गौतमी) क्षिप्रा यमुना सरस्वती नर्मदा तापी पयोष्णी चन्द्रभागा कावेरी मन्दाकिनी प्रवरा कृष्णा वेण्या भीमरथी तुंगभद्रा मलापहा कृतमाला ताम्रपर्णी विशालाक्षी वञ्जुला चर्मण्वती वेत्रवती भोगावती विशो-का कौशिकी माण्डकी वासिष्ठी प्रमदा विश्वामित्री फाल्गुनी चित्रकाश्यपी सरयु सर्वपापहारिणी करतोया

प्रणीता वज्रा वक्रगामिनी सुवर्णरेखा शोणा भवनाशिनी शीघ्रगा कुशवर्तिनी ब्रह्मानन्दा महितनयेत्यनेकपुण्यनदीभिर्विलसिते ब्रह्मपुत्रसिन्धुनदादिपरमपवित्रजलविराजिते हिमवन्मेरुगोवर्धनक्रौञ्चचित्रकूटहेमकूट महेन्द्रमलय सह्येन्द्रकील पारियात्राद्यनेकपर्वतसमन्विते मतङ्ग माल्य किष्किन्ध ऋष्यशृङ्गेति महानगसमन्विते अङ्ग वङ्ग कलिङ्ग काश्मीर काम्बोज सौवीर सौराष्ट्र महाराष्ट्र मगध नेपालकेरल चोरलपाञ्चाल गौड मालव मलय सिंहल द्रविड कर्नाटक ललाट करहाट वरहाट पानाट पाण्ड्य निषध मागध आन्ध्रदशार्णव भोज कुरु गान्धार विदर्भ विदेह बाल्हीक बर्बर कैकेय कोशल विराट शूरसेन कोङ्कण कैकट मत्स्यमद्र पारसिक खर्जूर यावनम्लेच्छ जालन्धरेति सिद्धवत्यन्यदेशविशेषभाषाभूमिपालविचित्रिते इलावृत कुरुभद्राश्व केतुमाल किम्पुरुष रमणक हिरण्यादि नववर्षाणां मध्ये भरतखण्डे बकुल चम्पक पाटलाब्ज पुन्नाग जाति करवीर रसाल कल्हार केतक्यादि नानाविध कुसुमस्तब विराजिते कोकन्तहिरण्यशृङ्ग कुब्जार्बुद मणिकर्णि वट शालग्राम सूकर मथुरा गया निष्क्रमण लोहार्गल पोतस्वामि प्रभास बदरीति चतुर्दश गुह्य विलसिते जम्बुद्वीपे कुरुक्षेत्रादि समभूमध्य

रेखायाः पश्चिमदिग्भागे कुलमेरोर्दक्षिणदिग्भागे विन्ध्यस्य दक्षिणे देशे श्रीशैलस्य वायव्यदेशे कृष्णवेण्योर्मध्यदेशे मत्स्य कूर्म वराह नृसिंह वामन परशुराम कृष्ण बुद्ध कल्किरिति दशावताराणां मध्ये बौद्धावतारे गङ्गादिसरिद्भिः पाविते एवं नवसहस्रयोजनविस्तीर्णभारतवर्षे निखिल जनपावनपरमभागवतोत्तमशौनकादिनिवासिते नैमिषारण्ये आर्य्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे सूर्य्यान्वय-भूभृत्प्रतिष्ठिते श्रीमन्नारायणनाभिकमलोद्भूतसकल-जगत्स्रष्टुः परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एक-पञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे अह्नो-द्वितीयेयामे तृतीयेमुहूर्ते रथन्तरादिद्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्वेतवाराहकल्पे स्वायम्भुवादिमन्वन्तराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृतत्रेताद्वापरकलिसंज्ञ-कानां चतुर्णां युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतिमे कलियुगे तत्प्रथमे विभागे (पादे) श्रीमन्नृपविक्रमार्कात् श्रीन्नृपशालिवाहनाद्वा यथासंख्यागमेन चान्द्रसावन-सौरनाक्षत्रादिप्रकारेणागतानां प्रभवादिषष्टिसंवत्सराणां मध्ये अमुकनाम्नि संवत्सरे उत्तरगोलावलम्बिनि श्रीमा-र्तण्डमण्डले अमुकर्तौ अमुकमासे अमुक पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुक-

राशिस्थिते चन्द्रे अमुकस्थे सूर्ये अमुकस्थे देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथास्थानस्थितेषु सत्सु एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकशर्मणः (भार्ययासहाधिकृतस्य) मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा बाल्ययौवनवार्द्धक्यावस्थासु वाक्पाणि पादपायूपस्थ घ्राण रसना चक्षुः स्पर्शन श्रोत्रमनोभिश्चरित ज्ञाताज्ञात कामाकाम महापातकोपपातकादि सञ्चितानां पापानां ब्रह्महनन सुरापान सुवर्णस्तेय गुरुतल्पगमन तत्संसर्गरूप महापातकानां बुद्धिपूर्वकाणां मनोवाक्कायकृतानांवहुकालाभ्यस्तानां उपपातकानां च स्पृष्टास्पृष्ट सङ्करीकरण मलिनीकरणापात्रीकरण जातिभ्रंशकरण विहिताकरण कर्मलोपजनितानां रसविक्रय कन्याविक्रय हयविक्रय गोविक्रय खरोष्ट्रविक्रय दासीविक्रय अजादिपशुविक्रय स्वगृहविक्रय नीलीविक्रय अक्रेयविक्रय पण्यविक्रय जलचरादिजन्तुविक्रय स्थलचरादि विक्रयसम्भूतानां निरर्थकवृक्षच्छेदन ऋणानपाकरणब्रह्मस्वापहरण देवस्वापहरण राजस्वापहरण परद्रव्यापहरण तैलादिद्रव्यापहरण फलादिहरण लोहादिहरण नानावस्तुहरण स्वरूपाणां ब्राह्मणनिन्दा गुरुनिन्दा वेदनिन्दा शास्त्रनिन्दा परनिन्दा अभक्ष्यभक्षण अभोज्यभोजन अचोष्यचोषण अलेह्यलेहन अपेयपान अस्पृश्यस्पर्शन

अश्राव्यश्रवण अहिंस्यहिंसन अवन्द्यवन्दन अचिन्त्यचिन्तन अयाज्ययाजन अपूज्यपूजनरूपाणां, मातृपितृतिरस्कार स्त्री-पुरुषप्रीतिभेदन परस्त्रीगमन वेश्यागमन दासीगमन चांडा-लादिहीनजातिगमन रजस्वलागमन पश्वादिगमनरूपाणां कूटसाक्षित्व पैशुन्यवाद मिथ्यापवाद म्लेच्छसंभाषण ब्रह्म द्वेषकरण ब्रह्मवृत्तिहरण वृत्तिच्छेदन परवृत्तिहरणरूपा-णां मित्रवञ्चनगुरुवञ्चन स्वामिवञ्चनासत्यभाषण गर्भ-पातन पथि ताम्बूलचर्वणहीनजातिसेवन पराम्भोजन गणान्नभोजन लशुनपलाण्डुगृञ्जनभक्षण तालवृक्षफल-भक्षणोच्छिष्टभक्षण मार्जारोच्छिष्टभक्षण पर्युषितान्न-भक्षणरूपाणां पंक्तिभेदकरण भ्रूणहिंसा पशुहिंसा बाल-हिंसाद्यनेकहिंसोद्भूतानां शौचत्याग स्नानत्याग संध्या-त्यागौपासनाग्नित्याग वैश्वदेवत्यागरूपाणां निषिद्धाच-रण कुग्रामवास ब्रह्मद्रोह गुरुद्रोह पितृमातृद्रोह परद्रोह परनिन्दात्मस्तुति दुष्टप्रतिग्रह दुर्जनसंसर्गरूपाणां गोयान वृषभयान महिषीयान गर्दभयानोष्ट्रयानाजयान भृत्याभरण स्वग्रामत्याग गोत्रत्याग कुलत्याग दूरस्थ-सन्त्राण विप्राज्ञाभेदन अवन्दिताशीर्वादग्रहण पतितसं-भाषणरूपाणां पतितजनपङ्क्तिभोजनाहःसङ्गम वृथा-मनोरथादिपापानां तथा । महापापोपपापाभ्यां नानायो-

निषु यत्कृतम् ॥ आत्मार्थे चैव यत्पापं परार्थे चैव यत्कृतम् । तीर्थेषु चैव यत्पापं गुर्ववज्ञाकृतं च यत् ॥ रागद्वेषादिजनितं कामक्रोधेन यत्कृतम् । लिंहानिद्रादिजं पापं भेददृष्टया च यन्मया ॥ देहाभिमानजं पापं सर्वदा यन्मया कृतम् । भूतं भव्यं च यत्पापं भविष्यं चैव गौतमि ॥ शुष्कमार्द्रं च यत्पापं जानताजानता कृतम् । महल्लघु च यत्पापं तन्मे नाशय जान्हवि । ब्रह्महा मद्यपः स्तेयी तथैव गुरुतल्पगः । महापापानि चत्वारि तत्संसर्गी तु पञ्चमः ॥ अतिपातकमन्यच्च तन्न्यूनमुपपातकम् । गोवधो व्रात्यता स्तेयं ऋणानां चानपक्रियाः ॥ अनाहिताग्निता पण्यविक्रयः परिवेदनम् । इन्धनार्थे द्रुमच्छेदः स्त्रीहिंसौषधिजीवनम् । हिंसा यात्राविधानं च भृतकाध्यापनं तथा । प्रथमाश्रममारभ्य यत् किञ्चित् किल्बिषं कृतम् ॥ कृमिकीटादिहननं यत्किञ्चित् प्राणहिंसनम् । मातापित्रोरशुश्रूषा तद्वाक्याकरणं तथा ॥ अपूज्यपूजनं चैव पूज्यानां च व्यतिक्रमः । अनाश्रमस्थताग्न्यादिदेवाशुश्रूषणं तथा ॥ परकार्यापहरणं परद्रव्योपजीवनम् । ततोऽज्ञानकृतं वापि कायिकं वाचिकं तथा ॥ मानसं त्रिविधं पापं प्रायश्चित्तैरनाशितम् । तस्मादशेषपापेभ्यस्त्राहि त्रैलोक्यपावनी ॥ निष्पापोऽस्म्य-

धुना देवि प्रसादात्तव नान्यथा ॥ [स्त्रीणां विशेषः, पाणिग्रहणमारभ्य स्वकर्मापरिपालनम् । इन्द्रियाभिरतिः पुंसु नानायोनिषु या भवेत् ॥ कृमिकीटादिहननं पङ्क्तिभेदादिकं तथा । स्पृष्टास्पृष्टमनाचरं मनसा दोषकल्पनम् । तत्सर्वं नाशयेः क्षिप्रं गङ्गे त्वं यात्रयानया ॥] इत्यादि प्रकीर्णपातकानां एतत्कालपर्यन्तं सञ्चितानां लघुस्थूलसूक्ष्माणां च निःशेषपरिहारार्थं दशावरान् दशपरान् आत्मना सहितान् एकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुं ब्रह्मलोकावधि पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्णेऽस्मिन्भूमण्डले सप्तर्षिमण्डलपर्यन्तं वालुकाभिः कृतराशेः वर्षसहस्रावसाने एकैकवालुकापकर्षक्रमेण सर्वराश्यपकर्षसंमितकालपर्यन्तं ब्रह्मलोके ब्रह्मसायुज्यताप्राप्त्यर्थं कुरुक्षेत्रादिसर्वतीर्थेषु स्नानपूर्वकं सहस्रगोदानजन्यफलप्राप्त्यर्थं तथा मम समस्तपितॄणां आत्मनश्च विष्ण्वादि लोकप्राप्तये अधीतानामध्येष्यमाणानां चाध्यायानां स्थापनविच्छेदक्रोषघोषणदन्तविघृतिद्रुतद्रुतोच्चारितवर्णानां पूर्वसवर्णानां गलोपलम्बितविवृतोच्चारितवर्णानाम् श्लिष्टास्पष्टवर्णविघटनादिभिः पठितानां श्रुतीनां यद्यातयामत्वं तत्परिहारार्थं अष्टत्रिंशदानाध्यायाध्ययने रथ्यासञ्चरतः शूद्रस्य शृण्वतोऽध्ययने म्लेच्छान्त्यजादेः शृण्वतोऽध्ययने-

ऽशुचिदेशेऽध्ययने आत्मनोऽशुचित्वेऽध्ययने अक्षरस्वरानुस्वारपदच्छेदकण्डिकाव्यञ्जनह्रस्वदीर्घप्लुतकण्ठतालुमूर्द्धन्योष्ठ्यदन्तनासिकानुनासिकरेफजिह्वामूलीयोपध्मानीयोदात्तानुदात्तस्वरितादीनां व्यत्ययेनोच्चारे माधुर्याक्षरव्यक्तिहीनत्वाद्यनेकप्रत्यवायपरिहारपूर्वकं सर्वस्य वेदस्य सवीर्यत्वसंपादनद्वारा यथावत्फलप्राप्त्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं देवब्राह्मणसवितासूर्यनारायणसन्निधौ गंगाभागीरथ्यां अमुकतीर्थे वा प्रवाहाभिमुखं स्नानमहं करिष्ये ॥

(इति हेमाद्रिकृतः महासंकल्पप्रयोगः)

हरिद्वार-माहात्म्यम् *

गंगाद्वारे समागत्य नमस्कृत्य महेश्वरम् ॥
भैरवं चापि संपूज्य फलरक्षणहेतवे ॥ १ ॥

हरिद्वार में जाकर श्रीसदाशिव को प्रणाम करके

---

* हरिद्वार जिला सहारनपुर में अच्छा रमणीक तीर्थ है यहां उत्तम २ धर्मशालाएं और सदावर्त्त आदि नियुक्त किये हैं, पुलिस स्टेशन, पोस्ट आफिस, तार, औषधालय, आदि सबही मौजूद है।

संपूर्ण फलप्राप्ति के हेतु नीलभैरव का भी पूजन करे ।

दृष्ट्वा भागीरथीं गंगामलकनन्दासमन्विताम् ।
देवतीर्थे तथा स्नात्वा दृष्ट्वा रामं रमापतिम् ॥२॥

श्रीभागीरथी (गंगोत्री) से आई हुई गंगाजी का तथा श्रीबद्रीनाथ से आई हुई अलकनन्दा का संगम तथा श्रीरामचन्द्र सीतापति का दर्शन देवतीर्थ (देवप्रयाग) में होते हैं । यहींसे सीधे जाकर हरिद्वार में हरिजी के चरणों से मिलती है ॥

अन्यत्र पृथिवी प्रोक्ता गंगाद्वारोत्तरं विना ॥
इदमेव महाभाग स्वर्गद्वारं स्मृतं बुधैः ॥ ३ ॥

पहाड़ी यात्रा मार्ग । *

* बद्रीनाथ, ज्वालामुखी, गंगोत्तरी, जमुनोत्तरी, अमरनाथ, आदि पहाड़ कठिन तीर्थों का मार्ग यहीं से सुलभ और शास्त्रानुसार है । मुंडन पिंडनादि कर्म भी यहां पर होना अवश्य है । कंडी, झपान, घोड़े, आदि की सवारी भी यहां से ॥।) १) की मजदूरे की एक रोज की होती है, पहाड़ी मार्ग पैदल चलने में कठिन मालूम नहीं होता है ।

हरिद्वार से सीधे हृषीकेशवाला मार्ग *

हरिद्वार से (६) मील पर रायवाला नाम का स्थान है यहां पर मिठाई आदि खाद्य वस्तु मिलती है, यहां से (८॥) साढ़े आठ मील हृषीकेश है ।

हे विप्र नारद ! गंगाद्वार से ऊपर केदारखंड की भूमि ऋषियों ने व विद्वानों ने स्वर्ग कथन की है, और हरिद्वार से नीचे अन्य पृथिवी कही है । इस हरिद्वार को पण्डितजन स्वर्गद्वार भी कहते हैं ॥

कनखल ।

अदृष्ट्वा मां मानवा ये करिष्यंत्यल्पबुद्धयः ।
तीर्थाटनं प्रजाधीश तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ४ ॥

हे दक्ष प्रजापति ! जो हीनबुद्धि पुरुष दक्षेश्वर का बिना दर्शन किये तीर्थयात्रा करते हैं उनको उस यात्रा का फल नहीं होता ॥ ४ ॥

द्वादशयोजनायामं यज्ञस्यायतनं द्विज ।
तत्प्रमाणं महाभाग बभूव क्षेत्रमुत्तमम् ॥ ६ ॥

हे द्विज ! यह जो कनखल नाम का उत्तम क्षेत्र है, सो यह यज्ञभूमि ४८ कोस की प्रमाणवाली कही है ॥ ६ ॥

गंगाद्वारे कुशावर्ते बिल्वके नीलपर्वते ।
स्नात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते ॥७॥

हरिद्वार, कुशावर्त, बिल्वतीर्थ, नीलपर्वत, कनखल,

इन तीर्थों में स्नान करने से उसका पुनर्जन्म नहीं होता है ॥ ७ ॥

दक्षेश्वरं महादेवं दृष्ट्वा वै भक्तितत्परः ।
कृतकृत्यो भवेन्मर्त्यो धन्यतां याति सत्वरम् ॥८॥

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक दक्षेश्वर महादेव का दर्शन करता है वह कृतकृत्य और शीघ्र धन्य हो जाता है ॥८॥

कुब्जाम्र ।

यस्मादाम्रं समाश्रित्य कुब्जरूपेण वै त्वया ।
दृष्टोऽस्मि रैभ्य तस्माद्वै कुब्जाम्रकमिति स्फुटम् ॥ ९ ॥

हे रैभ्य ! तुमने आम्र का आश्रय करके कुबड़े रूप से मुझे देखा इस कारण इसका नाम कुब्जाम्र तीर्थ विख्यात हुआ ॥ ९ ॥

तीर्थमेतन्महापुण्यं भविष्यत्यविधानतः ।
इसी कारण यह तीर्थ विना विधान के ही अति पवित्र होगा।

हृषीकेश-माहात्म्यम् । *

हृषीकेशे तु यः कश्चिद् ब्रह्मतीर्थे सुपुण्यदे ।
दृष्ट्वा श्रीशरणं देवं याति वै भक्तितत्परः ॥१०॥
हृषीकेशाश्रमे क्षेत्रे गच्छन्ति शुद्धये च ये ।
हसन्ति पितरस्तेषां सर्वे वै मुक्तिलालसाः ॥११॥

जो हृषीकेश के ब्रह्मतीर्थ में स्नान करके भक्ति में

हृषीकेश । *

हृषीकेश–जिला देहरादून में गंगाजी के समीप में है यहां राम जानकीजी का सुन्दर विशाल मन्दिर है, भरतजी का मंदिर सब मंदिरों में सुशोभित है भरतजी की दिव्य श्यामल चतुर्भुज खड़ी मूर्ति है। यहां धर्मशाला, सदावर्त, पोष्टआफिस, औषधालय, संस्कृत स्कूल और गंगा किनारे ऋषि मुनियों के स्थानों को महात्मा लोग जागृत कर रहे हैं, कण्डि, झपान, घोड़ा आदि सवारी भी यहां पर मिलती है ।

तत्पर होकर श्रीभरतविष्णु का दर्शन करते हैं वे विष्णु भगवान को प्राप्त होते हैं, जो पुण्यात्मा इस तीर्थ में जाते हैं उनके पितर मुक्ति की इच्छा से प्रसन्न होते हैं ।

हृषीकाणि पुरा जित्वा दर्शः संप्रार्थितस्त्वया ।
यद्वाहं तु हृषीकेशो भवाम्यत्र समाश्रितः॥१२॥
ततोऽस्यापरकं नाम हृषीकेशाश्रितं स्थलम् ॥
त्रेतायुगे दाशरथिर्नाम्ना भरतसंज्ञकः ॥ १३ ॥
तुर्यो भागो मदीयो वै भविष्यति सहाग्रजः ।

विषयेंद्रियों को जीतकर पहिले तुमने मेरा दर्शन मांगा है, इसी कारण मैं इस स्थान में हृषीकेश नाम से स्थित हूं, इस क्षेत्र का दूसरा नाम हृषीकेशाश्रित क्षेत्र है, त्रेतायुग में दशरथजी के पुत्र भरतजी सहित मेरा चौथा अंश उत्पन्न होगा इस स्थल में भरतजी तप करेंगे ।

सप्तसामुद्रकम् ।

ततो वै चोत्तरे भागे धनुषां च चतुःशते ॥१४॥
सप्तसामुद्रकं नाम तीर्थं विष्णुसलोकदम् ॥
अश्वमेधत्रयस्यात्र फलं वै स्नानमात्रतः ॥ १५ ॥

इसके उत्तर चारसौ धनुष के प्रमाण पर, विष्णुलोक देनेवाला सप्तसामुद्रक तीर्थ है, इसमें स्नानमात्र से ही निश्चय तीन अश्वमेध यज्ञों के फल की प्राप्ति होती है ॥ १४-१५ ॥

"तपोवनं तु गंगायाः पश्चिमे वै तटे स्मृतम्"॥
तपोवनं मुनीनां तु यत्र सौमित्रिरुत्तमः॥ १६ ॥
प्राप्तराज्ये तथा रामे निहते दशकन्धरे ।
समाययौ तपस्तप्तुं लक्ष्मणो लक्षणान्वितः १७

गंगाजी के पश्चिम तट पर उस पर्वत के आसन्न भूमि पर ऋषियों का तपोवन (तप करने का वन) है, जिसमें पहिले गुणसंपन्न सुमित्रा के पुत्र (लक्ष्मणजी) रावण को मारकर रामचन्द्रजी के राज्य करने पर तपस्या करने को आये ॥ १७ ॥

तपोवनं समासाद्य कुर्वन्ति श्राद्धमुत्तमम् ।
तेषां वै पितरःसर्वे नित्यं तृप्ता भवन्ति हि ॥१८॥

जो तपोवन में जाकर उत्तम रूप से श्राद्ध करते हैं, उनके सब पितर सदा तृप्त रहते हैं ॥ १८ ॥

यमुना (यमुनोत्तरी) माहात्म्यम्। *

तस्य संचरतो देवि कस्मिंश्चित्पर्वते वरे ॥
कन्यायुग्मं महाश्चर्य्यरूपं तत्र व्यदृश्यत ॥ १ ॥
नानालंकारसंयुक्तं मुक्तामणिविभूषितम् ।
सितासितशुभांगं च चलत्कुंडलशोभितम् ॥ २ ॥

धरासू से यमुनोत्तरीवाला मार्ग। *

* धरासू से (९) मी० रामनगर है रहने को स्थान भी है रामनगर से गंगाणी (१२) मी० है यमुनाजी भी यहां पर दर्शन देती हैं धर्मशाला दूकान मौजूद है, यहांसे (१०) मी० पर बजरी है दूकान भी है यहां से (६) मी० पर राना मु० है दूकान और गांव है राना से (७) मील पर खड़ा साली है इस मुकाम पर यमुनोत्तरीजी के पंडागण रहते हैं ६ महीने जाड़ों में यमुनाजी की पूजा भोगवत्ती ही पर होती है यहांसे (५) मील खास यमुनोत्तरीजी की धारा व मंदिर है गर्म जल है इसी धारा के जल में यात्री लोग दाल, चावल, पूड़ी, तरकारी, विना इन्धनके तैयार कर भोग लगाते हैं। यमुनाजी की खास धारा गर्म जल की है जैसे फुहारे से पानी निकलता है वैसाही पहाड़ से यमुनाजी की धारा निकसती है दूकान, धर्मशाला, सब मौजूद हैं, यमुनोत्तरी से लौटती बार वही पूर्वकथित गंगाणी मुकाम तक आना होगा यहां से (१८) मील उत्तरकाशी है गंगाणी से (१२) मील क्षीरगंगा है यहां पर जो धरासू से उत्तरकाशीवाला मार्ग छोड़ा था वही यहां पर मिलगया यहां से (६) मील उत्तरकाशीजी हैं।

पप्रच्छ राजा कन्ये ते के युवां निर्जने वने ॥
अहं तु सुखसंत्यक्तो व्रजामि निर्जने वने ॥ ३ ॥
भगीरथोऽस्मि हे कन्ये युवाभ्यां कुत्र गम्यते ॥
इति तद्देवितं श्रुत्वा सिता प्रोवाच कन्यका ॥४॥
गोप्यमस्ति न ते रूपं गंगाऽस्मि हि भगीरथ ॥
इयं या त्वसिता देवी सूर्यस्य तनया शुभा ॥ ५ ॥
यमुनेति समाख्याता सर्वकल्मषनाशिनी॥ ६ ॥

हे देवि! वन में विचरते २ राजा ने किसी उत्तम पर्वत के ऊपर महाआश्चर्यप्रदरूपधारी दो कन्याओं का दर्शन किया ॥ १ ॥ वे दोनों कन्याएं अनेक आभूषण से युक्त मुक्ताओं (मोतियों) और मणियों से विभूषित, श्वेत और श्याम रूपधारी और चलायमान कुंडलों से सुशोभित थीं ॥ २ ॥ राजा ने उन कन्याओं से पूछा कि तुम दोनों इस निर्जन वन में कौन हो। और मैं स्वयम् सुखपरित्यागपूर्वक निर्जन वन में विचरता हूं ॥ ३ ॥ हे कन्याओं! मैं भगीरथ हूं तुम दोनों कहां जाती हो हे देवि! राजा के यह वचन सुन श्वेतरूपधारिणी कन्या बोली ॥ ४ ॥ हे भगीरथ मेरा

रूप तुमसे गोप्य नहीं है सो मैं गंगा हूं और जो यह श्यामरूपधारिणी देवी है यह सूर्य की कन्या है इसका नाम यमुना है और यह समस्त पापों को विनाश करनेवाली, है (हे महाराजा मैं दशधा विभक्त होकर हिमालय से निकलती हूं) ॥ ५-६ ॥

यमुना चन्द्रभागाच शतद्रुःसरयू-
स्तथा । सरस्वती शुभा मोदा-
नन्दनाद्रिनिवासिनी ॥ १ ॥

यमुना, चन्द्रभागा शतद्रु सरयू सरस्वती शुभा, मोदा, नन्दन पर्वत पर निवास करनेवाली ॥ १ ॥

स्नानात् पूर्वं पाठ्यम् ।

विष्णुपादाब्जसंभूते गङ्गे त्रिपथगामिनी ।
धर्म्मद्रवीति विख्याते पापं मे हर जान्हवि ॥ १ ॥

प्रणाम ।

सद्यःपातकसंहर्त्री सद्योदुःखविनाशिनी ॥
सुखदा मोक्षदा गंगा गङ्गैव परमा गतिः ॥

शीघ्र पातक को हरनेवाली, शीघ्र दुःख को नाश

करने वाली, सुख और मोक्ष,(परम गति) को देने वाली जो तुम हो तुम्हें प्रणाम है ।

माहात्म्यम् ।

गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि ॥
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥१॥

सहस्त्रों योजनों से भी जो गङ्गा २ कहें उनके संपूर्ण पाप छूट कर अन्त में विष्णुलोक मिलता है ।

सौम्यवाराणसी (उत्तरकाशी) महात्म्य *

स्कन्द उवाच ॥ सौम्यकाशीति विख्याता गिरौ वै वारणावते । असी च वरुणाचैव द्वे न-

धरासू से उत्तरकाशी *

(सौम्यवाराणसी) (१९) मील है (१९) मील पर डुंडाचट्टी है मार्ग सीधा है दुकान में सब वस्तु मिलती हैं गांव है भोटियों के छोलदारी, छपरा, लादवा के आस पास बहुत बसते हैं—यहां से (४) मील पर धर्मशाला है वड़ेती नामक गाँव है यहां के लोग मैले कुचैले दीखते हैं,—वडेती-से उत्तरकाशी—(६) मील है ।

द्यौ पुण्यगोचरे ॥ यत्र ब्रह्मा च विष्णुश्च महेशश्चेति ते त्रयः । नित्यं संनिहिता यत्र मुक्तिक्षेत्रे तथोत्तरे ॥ १ ॥

सौम्यवाराणसी तीर्थ वारणावत पर्वत के ऊपर स्थित है असी और वरुणा दो नदी भी उसपर हैं ब्रह्मा,

---

उत्तरकाशी । *

यह रमणीक स्थान है यहां पञ्चकोशी के अन्तर्गत सहस्रों तीर्थ देवालय हैं, जयपुर महाराज ने इस स्थान में असंख्यद्रव्यव्यय करके शिव शक्ति का मंदिर बनवाया है और पुजारी रक्खे हैं नित्य पूजा होती है ब्राह्मण तथा साधु सन्यासियों को भोजन मिलता है इसी स्थान में परशुराम ने कठिन तपस्या के बल से शिवजी से वर मांगा श्रीमहादेवजी ने प्रसन्न होकर शत्रुसंहारी परसा भी प्रदान किया इसी परशा से उन्होंने एकविंशतवार क्षत्रियों का ध्वंस किया यहां पर साक्षात शक्ति के दर्शन होते हैं। यहां के पंडागण सज्जन जन हैं पोष्ट आफिस, आदि दुकानें सर्वत्र हैं महाराजा टेहरी की ओर से यहां पर कलेक्टर आदि पुलिस स्टेशन है जयपुर महाराज तथा काली कम्मलीवाले बाबाजी आदि मान्यजनों की ओर से यहां पर धर्मशालाएं रहने के लिए मौजूद हैं।

उत्तरकाशी से-भटवाड़ी (६) मील है आधा मील चढ़ाई है बीच में एक दूकान और है भटवाड़ी से सुखवा चट्टी (७) मील है धर्मशाला और दूकान भी है मार्ग सीधा है सुखवा से धराली (९) मील का पड़ाव है धर्मशाला है, महाराजा टेहरी नरेश के हर (९)

विष्णु, और महादेवजी तीनों ही देवता नित्य तहां वास करते हैं ॥ १ ॥

यत्रर्षीणां च स्थानानि आश्रमाश्च तथा शुभाः।
यत्र मारकर्तीं भासं विभर्त्येव सदाशिवः ॥ २ ॥
निक्षिप्ता यत्र पूर्वं हि संगरे देवताऽसुरैः।
अद्यापि दृश्यते तत्र शक्तिर्धातुमयी शुभा ॥ ३ ॥

तहां अनेक ऋषियों के आश्रम और अनेक तपोभूमि

मील पर डाक बंगले हैं यहां पर भी है भगवती का कुछ दूर पर छोटा सा मन्दिर भी है धरालीसे सूकी चट्टी [९] मील है मार्ग सीधा है गांव धर्मशाला आदि सब मौजूद है।

भयानक पुल और भैरवदर्शन।

सूकी चट्टी से—भैरो घाटि (९) मील है चढ़ाई और उतार है—कुछ चढ़ाई चढ़कर फिर कुछ उतार मिलता है इसके नजदीक १ एक नदी है इस नदी के पार होने को कई एक सौ फीट ऊंचेपर और कई एक फीट लम्बा लोहा लकड़ी का बिलकुल तंग पुल बना है इस पुल से पार होने को बड़ी भय लगती है बाजे बाजे यात्री पुलपार होने के निमित्त भैरव देवको सवासेर का रोट मानते हैं १ आदमी से सिवाय दूसरा आदमी नहीं जा सकता है कुछ दूर पार होकर भैरवजी का मन्दिर और दर्शन है, पुल से अलाहिदा इसी नदी में छोटा सा लकड़ी का पुल है किन्तु इस पुल से पार होकर रास्ता

हैं तहां एक शिवलिङ्ग मरकत मणि के आभावाला शोभा-युक्त है, देवता और दैत्यों का जब युद्ध हुवा था उनकी फेंकी हुई शक्ति अबतक वहां स्थित है ॥ २-३ ॥

वरुणा च नदी चासी मध्ये वाराणसी तयोः।
अत्र स्नानं जपो होमो मरणं हरपूजनम् ॥ ४ ॥
श्राद्धं दानं निवासश्च यत्नःस्याद् भुक्तिमुक्तिदः।

चढ़ाई और खतरनाक है यह दोनों पुल महाराजा टेहरी की ओर से हैं भैरव घाटी से-गंगोत्तरी (६) मील है बिलकुल चढ़ाई है—झाड़ी और भययुक्त मार्ग निर्जन है, यहांपर सुविशाल गंगाजी तथा मार्कण्डेय महादेवजी का मंदिर है दिव्यमूर्ति के दर्शन होते हैं पिंडादि कर्म करके पण्डागण सुफल देते हैं गङ्गाजी से जल भर कर वर्तन पंडा पूजे जाते हैं इसी को यहांपर सुफल कहते हैं यहां के अध्यक्ष को रावला की उपाधी है, सज्जन जन हैं, यहांपर गंगाजी में गोता बाजे बाजे यात्री ले सक्ते हैं बिलकुल बरफ है यहां के रावल आदि पंडागण गर्म जल से स्नान करते हैं। यहां से अन्दाजन १८ मील दूरीपर ३०० फूट मोटी बर्फिस्तान से धारा निकली है, सीधे देवप्रयाग में आकर अलकनन्दा में संगम हुआ है हिन्दुस्तान की सबसे प्रसिद्ध और पवित्र नदी है यहां पर भगीरथजी के तपोबल से प्राप्त हुई है, इस कारण भागीरथी के नाम से पुकारी जाती हैं सुन्दर बन में इसकी कई एक शाखायें होगई हैं, जिनमें से खास २ यह हैं, पदमा, हुगली, सातभंगा, त्रिलंगी इत्यादि।

मणिकर्णिकायां स्नात्वा यः पितॄन्सन्तर्पयेज्जलैः॥
पितरस्तस्य तृप्ताःस्युर्यावत्कल्पशतं शतम्॥ ५ ॥

वरुणा और असी गङ्गाओं के मध्य वाराणसी है, इसमें स्नान जप होम देहपरित्याग और महादेवजी का पूजन करना एवं श्राद्ध दान वहां निवास करना तथा यज्ञ करना इत्यादि सबही का फल भोग और मोक्षप्रदान करते हैं, जो व्यक्ति मणिकर्णिका में स्नान कर, जल से पितरों को तर्पण करता है उसके पितर सैकड़ों कल्प पर्य्यन्त तृप्त रहते हैं ॥ ४-५ ॥

जन्मान्तरसहस्रेषु येन तप्तं महत्तपः ।
तेनैव प्राप्यते नूनं मत्पुरी नान्यथा द्विजाः॥६॥
पञ्चक्रोशात्मकं क्षेत्रं पूर्वपश्चिमतस्तथा ।
दक्षिणोत्तरतश्चैव मृतो मुक्तिमवाप्नुयात् ॥७॥

हे ब्राह्मणो ! अन्य सहस्रों जन्म में किसीने उग्र तप का आचरण किया हो तो एक बार उसको इस पुरी की प्राप्ति होसक्ती है, अन्यथा कदापि नहीं, पूर्व से पश्चिम को तथा उत्तर से दक्षिण को यह पांच कोस का

क्षेत्र है यहां मृत्यु होने से मुक्ति का लाभ होता है॥६-७॥

तत्रैव वर्तते लिंगं मम मारकतप्रभम् ।
तत्र यत्क्रियते कर्म तदक्षय्याय कल्पते ॥ ८ ॥
महारुद्रविधानेन ह्यभिषेकं करोति यः ॥
ममानुचरतां प्राप्य मयैव सह मोदते ॥ ९ ॥

तहां हमारा लिङ्ग मरकतमणि की आभावाला विद्यमान है, वहां जो काम किया जाता है उसका फल कभी नष्ट नहीं होता, जो मनुष्य उक्त स्थान में महारुद्र की विधि से पूजा करता है वह हमारा अनुचर बन हमारे साथ ही आनन्द करता है ॥ ८ ॥ ९ ॥

इति ते कथितो विप्र सौम्यवाराणसीभवः ।
यं श्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते भवभीतितः॥१०॥

हे विप्र ! इस प्रकार जो सौम्यवाराणसी माहात्म्य को श्रवण करता है वह सब पापों से छूटकर संसार के भयों से बचा रहता है ॥ १० ॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखण्डे श्रीस्कन्दशिवसंवादे सौम्यवाराणसीमाहात्म्यं समाप्तम् ।

अथ गंगोत्तरी-माहात्म्य तथा उत्पत्ति *

नारद उवाच । केन वै हि प्रकारेण समायाता सरिद्वरा । अलकायां महाभाग कौवेर्य्यां शिवपुत्रक ॥ १ ॥

नारदजी पूछने लगे कि हे महाभाग शिवजी के पुत्र ! श्रेष्ठ गंगाजी कुवेर की अलकापुरी में किस प्रकार से आई ॥ १ ॥

नोट-यहां से गंगाजल शीशियों में बंद करके ले जाते हैं और रामेश्वर को चढ़ाते हैं। हरिद्वार आदि स्थानों में गंगाजली कह कर विक्री होती है वह सत्य नहीं है।

हरिद्वार से सीधे गंगोत्तरीवाला मार्ग । *

* हरिद्वार से-देहरादून का ॥=) रेल भाड़ा है यहां से (७) मील पर राजपूर मुकाम है यहां तक इक्का गाड़ी सवारी को मिलती है यहीं पर मसूरी जानेवाले वेगारियों पर फी मन -) रसूम लेने का नियम है किन्तु यात्रियों पर शायद नहीं लियाजाता है यहां से (३) मील पर जड़ीया पाणी मुकाम सुन्दर झरनों सहित सुशोभित है

स्कंद उवाच । साधु पृष्टं त्वया विप्र सर्वभूतोपकारकम् । तद्वक्ष्यामि मुनिश्रेष्ठ शृणु चैकमना भव ॥ २ ॥

स्कन्दजी बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ ! हे विप्र ! संपूर्ण प्राणियों के हित के निमित्त भली बात पूछी, अब मैं तुमसे कहता हूं, तुम मन लगाकर सुनो ॥ २ ॥

राजपूर से मसूरी तक चढ़ाई का मार्ग है जड़ीया पाणी से मसूरी लंडोरबाजार (३॥) मील पर है स्थान सुन्दर और रहने को धर्मशाला है लंडोर से (७) मील पर झालकी चट्टी पर धर्मशाला, सदावर्त है मार्ग सीधा है झालकी से (७) मील पर धनोलटी मुकाम पर सदावर्त धर्मशाला मौजूद है धनोलटी से (८) मील पर काणाताल है धर्मशाला सदावर्त भी है यहां से सीधे (७) मील पर गडूगाड नाम का स्थान है इस मुकाम पर से एक सड़क रियासत टेहरीको और दूसरी गंगोत्तरा को जाती है गडूगाड से (२) मील पर भलड्याणां चट्टी है यहां धर्मशाला दूकान सदावर्त मौजूद है यहां से (५) मी० पर छामाचट्टी है नैपाल वाले महाराजा की वड़ी भारी धर्मशाला है सदावर्त नहीं है छाम से (५) मी० नगूण मुकाम है यहां पर भागीरथी माता का दर्शन और सत्यनारायण महाराज के पूजन होते हैं नगूण से (५) मी० पर धरासु चट्टी है सदावर्त, धर्मशाला, दूकानें सब मौजूद हैं यहां से वांये अन्दाजन (५०) मील पर यमुनोत्तरीजी का मंदिर है मार्ग सीधा है और (१९) मी० यहां से उत्तर काशी है मार्ग सीधा है।

श्री विष्णुर्वामनो भूत्वा गतो बलिगृहे मुने
पादैकेन महाविष्णुः सर्वभूमंडलं मुने ॥ ३ ॥

हे मुने ! एक समय श्री विष्णु भगवान वामनरूप-धारण करके राजा बलि के घर गये और तीन चरण पृथिवी मांगी एकही चरण में समस्त भूमंडल को नापलिया ॥ ३ ॥

आक्रम्य च द्वितीयेन पातालं नीतवान् बलिम् ॥
तृतीयेन तथा चैषा क्रान्ता ब्रह्मांडभित्तिका ॥४॥

दूसरे चरण से राजा बलि को पाताल भेजा, और तीसरे चरण से इस ब्रह्माण्ड को क्रमितं किया अर्थात नापलिया ॥ ४ ॥

ततस्तस्य महाभाग वामनस्य महात्मनः ।
पादांगुलिनखेनासौ स्फुटिता रंहसा ततः ॥५॥

हे महाभाग ! उन महात्मा वामनजी के चरण की अंगुली से वेग के साथ गंगाजी निकलीं ॥ ५ ॥

यदाधाराणि सर्वाणि ब्रह्मांडानि महामुने ।
तद्वै तु जलरूपेण वर्तते जलमुत्तमम् ॥ ६ ॥

हे महामुने ! जो समस्त ब्रह्माण्डों का आधारभूत है, वह वहाँ उत्तम जलरूप से बहीं ॥ ६ ॥

तद्वै ब्रह्मद्रवाख्यं वै पतितं ध्रुवमंडले ।
गृहीतं शिरसा तेन ध्रुवेणोत्तानपादिना ॥ ७ ॥

वह ब्रह्मद्रव नाम की गंगाजी ध्रुवमंडल में गिरीं उस जल को उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव राजा ने अपने सिर-पर धारण किया ॥ ७ ॥

विष्णुपादाब्जसंभूतं जलं मोक्षप्रदायकम् ।
निपपात ततस्तत्तु सप्तर्षीणां तु मंडले ॥ ८ ॥

हे मुने ! मोक्ष देनेवाला विष्णु के चरणकमल से निकला हुआ वह जल ध्रुवलोक से सप्तर्षियों के लोक में गिरा ॥ ८ ॥

तैश्च सप्तर्षिभिर्विप्र धृतं तच्छीर्षकैस्ततः ।
ब्रह्मलोके मेरुशृंगे पतितं जलमुत्तमम् ॥ ९ ॥

हे विप्र ! उस जलको सप्तर्षियों ने अपने२ मस्तकों पर धारण किया, फिर वह जल मेरुपर्वत के शृंग ब्रह्म-लोक में गिरा ॥ ९ ॥

ततो वै ब्रह्मसदनाच्चतुर्द्धागात्ततो मुने ।
जलधाराश्चतुर्भिश्च नामभिर्मुनिसत्तम ॥ १० ॥

हे मुने ! उस ब्रह्मलोक से चार धारा चार नामों से पृथिवी में गिरीं उनके नाम नीचे लिखे हैं ॥ १० ॥

सिता चालकनन्दा च चक्षुर्भद्रा तथैव च ।
चतुर्दिक्षु समुद्रं वै क्षारं प्राप्तवती ततः ॥ ११ ॥

सिता, अलकनन्दा, चक्षु, और भद्रा, यह चारों दिशाओं में होकर क्षारसमुद्र में मिलजाती हैं ॥ ११ ॥

सिता तु ब्रह्मसनादाजगाम च केशरा ।
अधोधःप्रस्रवंती सा गंधमादनमूर्द्धसु ॥ १२ ॥

हे मुने ! ब्रह्मलोक से निकली हुई सिता नामवाली धारा गंधमादन पर्वत के नीचे के प्रदेश में बहती है ॥१२॥

पतिता सा तु भद्रा च वर्षाप्रायं मुनीश्वर ।
माल्यवच्छिखरात् सा तु चक्षुर्वै केतुमालकम् १३
प्रतीच्यां दिशि पतिता भद्रा चोत्तरतो मुने ।
पर्वताद्वै शृंगवतः कौबेरं वर्षमाप सा ॥ १४ ॥

हे मुनीश्वर! अलकनन्दा नाम की धारा इला वर्ष में गिरी और चक्षु नामवाली धारा माल्यवान पर्वत के शिखर से केतुमाल वर्ष की ओर गिरी ॥ १३ ॥
और भद्रा नाम की धारा पूर्व में शृंगवान् पर्वत से उत्तर की ओर कौबेर वर्ष में बही ॥ १४ ॥

इयं त्वलकनन्दा हि दक्षिणस्यां दिशि प्रभो ।
बहूनि गिरिकूटानि आक्रम्य हिमपर्वते ॥१५॥

हे प्रभो! यह अलकनन्दा धारा दक्षिण दिशा में बहती हुई और अनेक पर्वतों के शृंगों को भेदन करती हुई हिमालय पर्वत में आई ॥ १५ ॥

धारिता तु जटाभिश्च हरेणामिततेजसा ।
तत इक्ष्वाकुवंशे वै जातो राजा भगीरथः ॥१६॥

अमित तेजधारी शिवजी ने अपनी जटाओं पर धारण किया, फिर कुछ समय के उपरान्त इक्ष्वाकुवंश में भगीरथ राजा उत्पन्न हुए ॥ १६ ॥

तुतोष तपसा देवं शिवं कैलाससंस्थितम् ।
ययाचे स महाराजो गंगां स्वपितृमुक्तये॥१७॥

उन्होंने कैलास पर्वत में स्थित शिवजी को तप करके प्रसन्न किया और अपने पितरों की मुक्ति के निमित्त गंगाजी को मांगा ॥ १७ ॥

ततश्च पतिता सा तु अधःशृंगे हिमालयात् ।
तच्छृंगं हि द्विधाभूतं गंगाया रंहसा मुने ॥१८॥

तब गंगाजी शिवजी की जटाओं से हिमालय पर्वत के शिखर के नीचे गिरीं हे मुने ! गंगाजी के वेग से उस पर्वत के दो भाग हो गये ॥ १८ ॥

ततस्तस्याः प्रवाहौ द्वावागतौ भारते शुभौ ।
एकःप्रवाहो गंगाया अलकायां समागतः १९

वहां से भारतखंड में आकर गंगा की सुंदर दो धारा हो गईं, गंगा का प्रवाह (अलकनन्दा एक भाग) अलका पुरी में आया ॥ १९ ॥

अतो वै मुनिशार्दूल नामाभूत्सर्वपापनुत् ।
अलकनन्देति चाख्याता प्राणिनां मुक्तिदा-
यिनी ॥ २० ॥

हे मुनिशार्दूल ! इसी कारण संपूर्ण पापों को नष्ट

करनेवाली प्राणियों को मुक्ति प्रदान करनेवाली अल-कनन्दा नाम से विख्यात हुई ॥ २० ॥

देवप्रयागके क्षेत्रे एकीभूता तु सा मुने ।
गां गतेति ततो गंगा जाताऽसौ मुक्तिदायिनी २१

हे मुने ! दूसरी धारा मुक्ति देनेवाली गंगा के नाम से विख्यात हुई, और देवप्रयाग क्षेत्र में वे दोनों एक होकर बही हैं । आकाश में बही इस कारण उनका नाम गंगा हुआ ॥ २१ ॥

प्रवाहयोर्महाभाग श्रीगंगालकनन्दयोः ।
भेदस्त्वया न कर्तव्यः पर्य्यायः कथितो मया२२

हे महाभाग ! श्री गंगा और अलक नन्दा में तुमको भेदबुद्धि नहीं करना चाहिये मैंने पर्य्याय मात्र कहा है, अर्थात् फल दोनों का एक ही है ॥ २२ ॥

उत्पत्तिश्चैव गंगायाः कथिता हि तवाग्रतः ।
द्विधाभूतो यदा गंगाप्रवाहो मुनिसत्तम ॥२३॥

हे मुनिसत्तम ! गंगा की उत्पत्ति जिस प्रकार हुई और जिस प्रकार से गंगा दो भाग होकर बही वह सब

तुमसे कहा ॥ २३ ॥

ईश्वर उवाच।साधु२महादेवि पृष्टं नामामृतं त्वया
गुह्याद्गुह्यतरं स्तोत्रं प्रवक्ष्यामि समासतः॥२४॥

शिवजी बोले हे देवि ! यह नामरूपी अमृत तुमने पूछा, इस कारण तुम धन्य हो अब गुप्त स्तोत्र संक्षेप रूप से तुम्हारे प्रति कथन करता हूं सुनो ॥ २४ ॥

यस्य श्रवणमात्रेण नरो वै शिवतां व्रजेत् ।
पठनाल्लेखनाच्चैव पूजनात्किं न जायते ॥२५॥

जिसके श्रवण मात्र से मनुष्य निश्चयपूर्वक शिव-रूप हो जाते हैं पढ़ने लिखने और पूजन से तो न जाने क्या फल मिलेगा ॥ २५ ॥

श्लोकमेकं पठित्वापि गंगायाः शतयोजने ।
गंगास्नानफलं सद्यः प्राप्नुयान्नैव संशयः॥२६॥

हे देवि ! गंगाजी से सौ योजन दूर पुरुष एक श्लोक के पढ़ने से ही तत्काल गंगा के स्नान का फल पाता है, इसमें संदेह नहीं ॥ २६ ॥

सहस्रनामस्तोत्रस्य भगीरथ ऋषिर्मतः ।

छंदोऽनुष्टुप्तथा ख्यातं गंगा वै देवता मता॥२७॥

हे देवि ! गंगासहस्रनाम स्तोत्र का भगीरथ ऋषि अनुष्टुप् छन्द, और गंगाजी देवता है ॥ २७ ॥

सर्वतः पापनाशार्थं पुत्रकामार्थसिद्धये ।
अक्षयस्वर्गकामाय विनियोगः प्रकीर्तितः २८

सर्व पापनाश वा पुत्रोत्पत्ति की कामना के निमित्त और अक्षय स्वर्ग प्राप्ति के निमित्त विनियोग कथन किया है ॥ इस प्रकार विनियोग आदि करना चाहिये २८

गंगा सरिद्वरा विष्णुपदांबुजविनिःसृता ।
शिवशेखरसंवासा ब्रह्मणः कलशे स्थिता॥२९

नदियों में श्रेष्ठ गंगाजी विष्णु भगवान के चरण-कमल से निलक कर शिवजी के मस्तक और ब्रह्माजी के कमण्डल में स्थित रहीं ॥ २९ ॥

आकाशगामिनी भद्रा चतुरात्मा प्रवाहिनी ।
ब्रह्मरन्ध्रसमुद्भूता ब्रह्मरन्ध्रनिवासिनी ॥ ३० ॥

आकाश में बहनेवाली भद्रा नाम की गंगाजी चार प्रकार से वहन करती है, ब्रह्मरन्ध्र से उत्पन्न हुई है

और ब्रह्मरन्ध्र में ही निवास करती हैं ॥ ३० ॥

ब्रह्मरन्ध्रधरा धेनुः सर्वकामार्थदायिनी ।
ब्रह्मांडोद्भेदनपरा परब्रह्मधरा परा ॥ ३१ ॥

ब्रह्मरन्ध्रधरा, धेनु, संपूर्ण कामनाओं की सिद्धि करनेवाली, ब्रह्मांड को भेदन करनेवाली परब्रह्मधरा ॥३१॥

द्रवरूपधरा चैव शिवसंगमदायिनी ।
भुक्तिदा मुक्तिदा गंगा शत्रुदावानलात्मिका ३२

द्रव रूप धारण करनेवाली शिवलोक की देनेवाली, भुक्ति मुक्ति को देनेवाली कामरूप धारण करने वाली, शत्रुओं के निमित्त दावाग्नि रूप धारण करनेवाली॥३२॥

अनंगांगी त्रिमूर्तिश्च ब्रह्माणी कमला स्थिता ।
सरस्वती च सावित्री जयसेना जयात्मिका ३३

गंगा, रतिरूपा, त्रिमूर्ति, ब्रह्माणी, वैष्णवी, शैवी. कमला, सरस्वती, सावित्री,जयसेना और जयरूपश्री ३३

जयभद्रा वैष्णवी च चिच्छक्तिः परमेश्वरी ।
त्रयी वेदवदान्या च मेदिनी मेदिनीधरा ॥३४॥

जयभद्रा, वैष्णवी, चित्‌शक्ति, परमेश्वरी, त्रयी, वेदवाच्या, मेदिनी और पृथिवी की धारणशक्ति॥ ३४ ॥

वेदमूर्तिस्त्रिमूर्तिश्च देवमूर्तिर्दयापरा ।
दामिनी दामिनीवासा कुलिशा कुलिशप्रिया ३५

वेदमूर्ति, त्रिगुणात्मकमूर्ति, देवमूर्ति, दयायुक्त, विद्युत् (बिजली रूप) दामिनी में निवास करनेवाली कुलिशा और कुलिशप्रिया है ॥ ३५ ॥

कुलिशांगी कुलांगी च कुलनाथा कुटुम्बिनी ।
कुलीना सुभगा भाग्या भाग्यगम्या यशोमती ३६

वज्ररूप धारण करने वाली, कुलांगी कुल की पालना करनेवाली, कुटुम्बिनी, कुलीना, रम्या भाग्यवती, भाग्यलभ्या, यश देनेवाली ॥ ३६ ॥

कला कलाधरधरा कलाधरशतप्रिया ।
षोडशी षोडशाराध्या षोढान्याससहायिनी ३७

कला, कलाधर को धारण करनेवाली शत कलाधरों की प्रिया षोडशी षोडशाराध्या षोढा न्यास की सहाय करनेवाली ॥ ३७ ॥

षोढासमासनिलया षोढांगी कालरूपिणी ।
कालिका मुंडमाला च कालानां शतनाशिनी ३८

षोढ़ासमासरूपा, षोढ़ांगवाली, कालरूपिणी कालिका मुंडमाला धारण करनेवाली सौ कालों का विनाश करनेवाली ॥ ३८ ॥

कालांगी कालनिलया काली कालेश्वरी वरा ।
शिवमाया शिवा रुंडा चंडमुंडविनाशिनी ॥३९॥

काल के समान धारण करनेवाली, काल के स्थान में निवास करनेवाली, शिव की माया, शिवा, रुंडा, और चंड, मुंडों का विनाश करनेवाली ॥ ३९ ॥

चंडाट्टहासा दुर्गम्या चंडानां प्रीतिवर्द्धिनी ।
चंडेश्वरी महाप्राज्ञा प्रज्ञा धीसिद्धिदायिनी ॥४०॥

प्रचंड हास्य करनेवाली, दुर्गम्या, चंडों की प्रीति बढ़ानेवाली, चंडेश्वरी, महाबुद्धिमती, । प्रज्ञारूपा, बुद्धिसिद्धि की देनेवाली ॥ ४० ॥

लक्षलाभस्य जननी शतलाभा सुरेश्वरी ।
कौमारी शक्तिरुद्दिष्टा क्रौञ्चदैत्यविनाशिनी ४१

लक्षलाभ की माता, शतलाभवती, सुरेश्वरी, कौमारी, शक्तिरूपा, क्रौञ्चदैत्य का विनाश करनेवाली ४१

तारकासुरहंत्री च तारकामयगामिनी।
तारकस्य परा शक्तिस्तारकाणां पतिप्रिया ४२

तारकासुर को नष्ट करनेवाली, तारकामयगामिनी तारक की श्रेष्ठ शक्ति, तारका (नक्षत्रों) के पति की प्रिया॥ ४२॥

नारायणी दयासिंधुः सिन्धूत्तरनिवासिनी।
सिन्धुश्रेष्ठतमा भार्या रत्नदा रत्नहारिणी॥४३॥

नारायणी, दया का समुद्र, सिन्धु के उत्तर निवास करनेवाली, समुद्र की मुख्य स्त्री, रत्नदेनेवाली, और रत्नों को हरण करनेवाली॥ ४४॥

जलंधरस्य जननी जलंधरविरूपिणी।
भीष्ममाता महाभीष्मा भीष्माणां प्रीतिदायिनी

जलंधर की माता जलंधर को विरूप करनेवाली, भीष्म की माता, महाभीष्मा और भीष्मों की प्रीति देनेवाली४४

ज्वालाकराली तुंगेशी तुंगशेखरवासिनी।

तुंगेश्वरसहाया च बदर्य्याश्रमवासिनी ॥ ४५ ॥

ज्वालाकराली, तुंगेशी, ऊंचे शृंग पर निवास करने-वाली तुंगेश्वर की सहायक, बद्रिकाश्रम में निवास करनेवाली ॥ ४५ ॥

श्रीक्षेत्रनिलया चैव द्वारस्था द्वारपालिनी ।
जान्हवी जन्हुतनया नागालयनिवासिनी॥४६॥

श्रीक्षेत्र में निवास करनेवाली, द्वारस्था, द्वार की रक्षा-करनेवाली, जान्हवी जन्हु की कन्या, पाताल में निवास करनेवाली ॥ ४६ ॥

नागेश्वरसहाया च कैलासनिलया तथा ।
हरसंगरता चैव हरिपादविनिःसृता ॥ ४७ ॥

नागेश्वर की सहायता करनेवाली, कैलास पर निवास करनेवाली, शिवसंगरता, विष्णु के चरणकमल से निकलनेवाली ॥ ४७ ॥

यमुना चन्द्रभागा च शतद्रुःसरयूस्तथा ।
सरस्वती शुभा मोदा नन्दनाद्रिनिवासिनी ४८

यमुना, चन्द्रभागा, शतद्रुः, सरयू, सरस्वती, शुभा, ॥ गोदा, नन्दन पर्वत पर निवास करनेवाली ॥ ४८ ॥

नन्दप्रयागनिलया देवतीर्थनिवासिनी ।
केदारशिखरावासा महावलयवासिनी ॥ ४९ ॥

नन्दप्रयाग में निवास करनेवाली, देवप्रयाग, केदार के शिखर पर निवास करनेवाली, महालय वासिनी यह गंगाजी की महिमा है ॥ ४९ ॥

ईश्वर उवाच ।

नाम्ना श्रीस्तोत्रमाख्यातं गंगायाः सर्वकामदम्
यस्तु वै पठते नित्यं मुक्तिभागी भवेत् नरः॥५०॥

फिर शिवजी बोले कि संपूर्ण कामनाओं को देनेवाला गंगाजी का श्रीस्तोत्र कथन किया जो मनुष्य नित्य पाठ करता है, वह मुक्ति का भागी होता है॥५०॥

पुत्रार्थी लभते पुत्रं भगीरथसमं द्रुतम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां वाचस्पतिसमो भवेत् ५१

पुत्र की कामनावाला शीघ्र ही भगीरथ के समान

पुत्र पाता है, विद्या की इच्छावाला विद्या पाता है और विद्या में बृहस्पति के समान हो जाता है ॥ ५१ ॥

श्राद्धे शृणोति यो भक्त्या पठते वै समाहितः ।
दुर्गताश्चापि पितरो मुक्तिं गच्छन्त्यनामयाः ५२

जो पुरुष श्राद्ध में इस स्तोत्र का मन लगाकर पाठ करता अथवा सुनता है, दुर्गति को प्राप्त हुए भी उसके पितर रोगादि से रहित होकर मुक्ति को प्राप्त होते हैं ५२

तथा दशहरायां हि गंगामध्ये स्थितः पुमान् ।
पठते प्रत्यहं देवि तस्य मुक्तिर्नसंशयः ॥ ५३ ॥

और जो मनुष्य दशहरे के दिन गंगा के मध्य में स्थित होकर प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करता है निःसंदेह उसकी मुक्ति हो जाती है ॥ ५३ ॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखंडे गंगोत्तरीमाहात्म्य
तथा उत्पत्ति वर्णनं समाप्तम् ।

आवश्यक सूचना ।

यहां पर रहने को कई एक धर्म शालाएं हैं-दूकान में मामूली रसद मिलती है शीत बहुत है । गंगोत्तरी से लौटकर वही पूर्वकथित मार्ग

त्रियुगी ।

माहात्म्य।

त्रिविक्रमातटादूर्ध्वे सार्द्धक्रोशे महत्फलम् ।
नारायणक्षेत्रमिति तस्मिन्वै यज्ञपर्वते ॥ १ ॥

हे पार्वति ! मंदाकिनी के संगम में त्रिविक्रमा के पश्चिम तट से डेढ़ कोस ऊपर यज्ञ नामक पर्वत पर नारायण क्षेत्र नामक तीर्थ विख्यात है ॥ १ ॥

भटवाड़ी तक है, यहां पर रहने को धर्मशाला दूकान देवदर्शन गंगास्नान है ।

गंगोत्तरी से लौटकर केदारनाथ को

भटवाड़ी से-पहिलेवाला मार्ग छोड़कर-श्रीकेदार जी के वास्ते दूसरा मार्ग पगडंडी और खतरेनाक-अति कठिन, निर्जन वन होकर चढ़ाई और उतार अधिक है, इस मार्ग से जाने में नजदीक पड़ता है, भटवाडी से-सारीसौरा (६) मील है । झूला पार करके मार्ग सीधा है।

सारीसौरा से-करीब अन्दाजन (२०।२२) मील निर्जन वन होकर गुफा आदि में निवास करके दूसरे दिन बंगार नामक चट्टी है ३।४। दुकानें हैं १ धर्मशाला भी है।

बंगारचट्टी से-रेयाणी चट्टी (३) मील उतार है।

रेयाणी से-बूढ़ाकेदार अन्दाजन (१०) मील है केवल उतार होकर आना होता है यहां पर बढ़ाकेदारनाथजी का मंदिर है ।

नित्यं तत्र स्थितो वह्निर्दृश्यते मुक्तिदो महान् ।
विवाहस्थानमेतद्धि गौरीशंकरयोश्शुभम् ॥ २॥

हे पार्वति ! उस नारायण क्षेत्र में मुक्ति देनेवाला अग्नि सदा प्रज्वलित रहता है, यह शिव और पार्वती के विवाह का सुन्दर स्थान है ॥ २ ॥

तत आरभ्य वसते नित्यमत्र धनंजयः ।
उपोष्य दशरात्रंतु पापैः कोटिभिरावृतः ॥ ३ ॥
प्राणांस्त्यजति पूतात्मा वैकुण्ठनिलये वसेत् ॥४॥

उस दिन से लेकर यहाँ नित्य अग्नि प्रज्वलित रहता है करोड़ पापों से युक्त भी दश दिन निराहार

वृद्धाकेदार से-(६) मील पर भट्टिगांव और १ दूकान है मार्ग चढ़ाई का है । भट्टि से अन्दाजन (५) मील पर हटगुणि चट्टी है यहां से गोल भौंट (४) मील है मार्ग उतार का है ।

गोलभौंट से-सांकरीचट्टी (६) मील है १ दूकान है सांकरी से-घुतुचट्टी (३) मील है । यहां पर रघुनाथ जी का मंदिर है । घुतुसे (१२) मील पर पंवाली नामक स्थान है मार्ग चढ़ाई का है १ धर्म-शाला है खाद्य पदार्थ सब मिलते हैं ।

पंवाली से-मग्गुचट्टी अन्दाजन (१०) मील है दुकान है मार्ग उतराई का है । मग्गुसे-त्रियुगीनारायण (५) मील है मार्ग उतराई का है ।

रहने से पवित्र हो जाता है, और जो पुण्यात्मा पुरुष यहां प्राण त्यागता है वह वैकुण्ठ में वास करता है ॥ ३ ॥ ४ ॥

सरस्वतीति विख्याता धारा परमपावनी ।
श्रीविष्णोर्नाभितस्तत्र आयाति दुरितापहा ॥५॥
नमो नारायणेत्युक्त्वा मंत्रपूतं जलं पिबेत् ।
जलं पिबन्ति तेषां वै दश पूर्वा दशापरे ॥ ६ ॥
तस्मिन्नग्नौतु ये मर्त्या एकामप्याहुतिं ददुः ।
ते सर्वे मुक्तिमापन्नाः पुनरावृत्तिदुर्लभाम् ॥ ७ ॥
हवनं कारयेत्तत्र नारायणसुमन्त्रतः ।
भस्मनो धारणे कृत्वा सर्वदेवमयो भवेत् ॥ ८ ॥

वहां श्रीविष्णु की नाभि से परम पवित्र, पापों को नष्ट करनेवाली सरस्वती की विख्यात धारा निकलती है ॥ ५ ॥ " नमोनारायणाय " यह मन्त्र पढ़ कर उसजल को पीवे, जो मनुष्य उसका जल पान करते हैं, उनके दश पहिले और दश आगे के पितर मुक्त हो जाते हैं ॥६॥ और उस अग्नि में जो एक आहुति भी छोड़ते हैं, वे सब मनुष्य मुक्त हो जाते हैं, और फिर जन्म नहीं लेते ॥७॥

वहां " नमो नारायणाय " इस मन्त्र से हवन (यथा शक्ति) करना चाहिये और उस हवन की भस्म को धारण करने से मनुष्य सर्वदेवमय हो जाता है ॥ ८ ॥

तत्रैव ब्रह्मकुण्डाख्यं तीर्थं परमपुण्यदम् ।
तत्र चाल्पतरा नागाः स्थापिता भीतिदाःप्रिये॥९॥
न दशन्ति च ते नागा भीतिकारणमेव ते ।
तस्य वै दक्षिणे भागे विष्णुतीर्थमिति स्मृतम् ।
प्रदक्षिणं हरेः कृत्वा अश्वमेधफलं लभेत् ॥१०॥

हे प्रिये पार्वति ! वहीं परम पवित्र ब्रह्मकुण्ड नामक तीर्थ है वहां डरके निमित्त छोटे सर्प रहते हैं ॥ ९ ॥ किन्तु वे सर्प किसी को काटते नहीं हैं । केवल उनके देखने से भय ही होता है, उसके दक्षिण भाग में,

विष्णुतीर्थ विख्यात है, वहां विष्णु की परिक्रमा करने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ॥ १० ॥

(पिण्डादि कर्म भी यहांपर होते हैं)

जलमयपत्तनं (किलमोलपट्टण) *

तत्र त्रिविक्रमातीरे ख्यातं जलमयपत्तनम्।
पुण्यान्येव जलान्यत्र योजनायामविस्तृते ॥११॥

हे प्रिये! त्रिविक्रमा नदी के तट पर जलमय पत्तन है, इसमें एक योजन पर्यन्त पवित्र जल है यहां सात दिन तक तप करने से वा मन्त्र जपने से सिद्धि होजाती है इसके दक्षिण दरदा नामक नदी विख्यात है ॥ ११ ॥

त्रिविक्रमामंदाकिनीसंगमे।
कालीशनामशिवलिंगंतीर्थंच।

त्रिविक्रमा मंदाकिनी के संगम पर कालीश नामक शिवलिंग और तीर्थ शिवलोक का देनेवाला है ॥

आवश्यक सूचना।

गङ्गोत्तरी से आनेवाले यात्रीगणों को त्रियुगी नारायणजी के यहीं पर शुभ दर्शन हो गये हैं। और सीधे हरिद्वार से केदारनाथजी जाने

वाले यात्री गणों को रामपुर से (२॥) मील आगे पाटीगाड़ पुल है इस पुल के बांये (३) मील पर त्रियुगी नारायणजी हैं तब दर्शन होते हैं सीधे दहिने के तर्फ आमयात्रालाईन की सड़क गई है। त्रियुगी के दर्शन करके फिरसे इसी दहिने हाथ की सड़क से (झलमल पटन) सोनप्रयाग को आ जाते हैं, त्रियुगी जाने का मार्ग चढ़ाई का है। यहीं पर गङ्गोतरीवाले मार्ग के जानेवाले और हरिद्वार से सीधे केदारनाथ जानेवाले यात्रीगणों को समूह तथा एक मार्ग केदार के दर्शन होगये। शुभ हो मंगल हो यात्रा सुफल हो बोलो श्रीगंगा माई तथा केदारनाथ जी की जय ॥ २ ॥

हरिद्वार से सीधे बद्रिनाथजी का मार्ग ।

भीमगोड़ा ।

हरिद्वार से (१) मील पर भीमगोड़ा है भीमकुण्ड में स्नानकर भीमेश्वर महादेव के दर्शन अवश्य करने चाहिए । फिर वही पूर्व कथित हृषीकेश को १४॥ मील मार्ग है।

हृषीकेश ।

से (१) मील पर शत्रुघ्नजी का मंदिर है। इस मंदिर से कुछ चढ़ाई से जाकर लक्ष्मणजी का सुविशाल मंदिर है, १ धर्मशाला तथा दूकान भी यहां है। यहीं पर तप की भूमि (तपोवन) नामक स्थान है।

रामगोड़ा ।

गंगाद्वारादुत्तरेऽस्मिन्भागे वायव्यमाश्रिते ।
रामाश्रम इति ख्यातो माने षोडशयोजने ॥१॥

हे देवि ! हरिद्वार से उत्तर वायव्य कोण में रामाश्रम देवप्रयाग तीर्थ ६४ कोस पर है ॥ १ ॥

हृषीकेश से-(३) मील पर लछमन झूला नाम का पक्का पुल है लक्ष्मणजी के दर्शन तथा धर्मशाला सदावर्त आदि भी हैं । लक्ष्मण झूला से-(३।) मीलपर फुलवाडी चट्टी है यहां पर दूकानें हैं । यहां से (४) मील पर गुलर चट्टी है । इसके आगे हिंउल नदी है, इस नदी से पार होने को (१) छोटा पुल है ५।४ दूकानें हैं, यहां से आगे (१॥) मील की मामूली चढ़ाई है। यहां से आगे (४॥) मील पर विजनी चट्टी है । दूकानें हैं गांव भी है । विजनी से कुछ चढ़ाई उतराई होकर (६) मील पर वन्दरभेल चट्टी है ५।४ दूकानें हैं यहां से (४) मील पर महादेव चट्टी है तथा महादेव के दर्शन हैं ५।४ छप्पर हैं गंगास्नान धर्मशाला आदि आराम है । महादेव चट्टी से कांडी चट्टी (३।) मील पर है, यहां भी रमणीक स्थान तथा दूकानें भी अच्छी हैं । कांडी से-(४॥) मीलपर व्यास तीर्थ है, इस स्थान में-नयार पूर्वी-दूधातोली के दक्षिण पश्चिम से निकल कर ६० मील वही है ।

पश्चिमीनयार-इसी पहाड़ के उत्तरी हिस्सेसे निकल कर (४५) मील बह कर नौ गांवकमाद में दोनो मिलकर यहां से (१६) मील वहकर व्यास घाट में गंगा में मिल गई । इसी में पक्कापुल है, पुलपार होकर ही, व्यासघाट तीर्थ है ।

व्यासघाट-इन्द्रप्रयाग माहात्म्य । *

तयोःसुसंगमः पुण्यः सर्वकामफलप्रदः ।
इन्द्रप्रयाग इति वै सर्वतीर्थोत्तमोत्तमः ॥ १ ॥

उन दोनों का संगम पवित्र और संपूर्ण कामनाओं के फल का देनेवाला है, यह तीर्थ सब तीर्थों से उत्तम और इन्द्रप्रयाग नाम से यह विख्यात है ॥ १ ॥

देवप्रयाग-माहात्म्य । ※

गंगाद्वारात्पूर्वभागे श्रीगंगालकनन्दयोः ।
संगमोऽत्र प्रदेशे तु देवप्रयागसंज्ञकम् ॥ १ ॥
वदन्ति मुनयः सर्वे हरिभक्तिपरायणाः ।
यस्य दर्शनमात्रेण स्मरणादपि नारद ॥ २ ॥

---

* (यहां पर व्यासजी का छोटासा मंदिर है, और व्यासकुंड है। रहने व खाने पीने का स्थान अच्छा है)

व्यासघाट से (२) मी० छालड़ी चट्टी है, यहां से (५) वें मील पर उमरास है, यहां से (२॥) मीलपर देवप्रयाग तीर्थ है ।

※ इस प्रयाग में-इस जिले की जो सबसे बड़ी नदी " अलकनन्दा" बद्रीनाथ के उत्तर अलकापुरी बांक से निकल कर (१५२) मील

पातकानिप्रणश्यन्तिब्रह्महत्यासमानिच ॥३॥

हे नारद ! गंगाद्वार (हरिद्वार) से पूर्व भाग में जहाँ गंगाजी और अलकनन्दा का संगम (मेल) हुआ है वहाँ देवप्रयाग नामक तीर्थ विख्यात है, हरिभक्ति-परायण (वैष्णव) सब मुनीश्वर देवप्रयाग ही कहते हैं जिसके दर्शन और स्मरण करने से ही ब्रह्महत्या के समान पातक भी नष्ट हो जाते हैं । १ । २ । ३ । जागवती धारा पुष्पदन्तिका च भानुमती, नृदेवी, दृषद्वती कांडिका उपेन्द्रजाधारा ॥ १७८ केदार० अ०

देवप्रयाग (श्रीक्षेत्रम्) *

अथ राजा सत्यसंधः शिरःकायौ मृतस्य हि ।
हस्ताभ्यां तोलयित्वा तु संचिक्षेप पृथक् पृथक् ४

जिला गढ़वाल में बहने के बाद देशको चलीगई है, देवप्रयाग में भागीरथी में संगम हुआ तवसे गंगा के नाम से पुकारी गई है ।

आवश्यक कथन । *

यहाँ पर श्री संगम में स्नान दान पिण्डादिक करके रघुनाथजी के दर्शन हैं । संगम पर जाने के लिए पक्का पुल है, सुविशाल नगरी में पण्डागण निवास करते हैं । संस्कृत पाठशाला में पंडागणों के

शिरस्तु पतितं तस्य नैर्ऋत्यां योजने ततः ॥
तद्वपुः पूर्वभागे तु योजनानां त्रयेऽपतत् ॥५॥
तदेव मानं क्षेत्रस्य बभूव परितो भृशम् ।
इति ते कथिता देव श्रीक्षेत्रस्य जनिःशुभा ॥६॥

तब उस सत्यसागर राजा ने उस मृतक का शिर हाथसे कंधेसे अलग कर और उठाकर पृथक् पृथक् स्थानों में फेंक दिया ॥ ४ ॥ नैर्ऋत्य की ओर एक योजन में उसका शिर गिर गया और उसका शरीर पूर्व की ओर तीन योजन पर जाकर गिरा ॥ ५ ॥ वही उस क्षेत्र के सर्व ओर का प्रमाण हुआ है देव ! यह आपसे श्री-क्षेत्र की उत्पत्ति कही ॥ ६ ॥

बालक पढ़ते हैं। यहां से भी गंगोत्तरी को मार्ग गया है आवश्यकीय यात्रीं गणों के साथ पण्डा लोग रहते हैं वे लोग सब तरह खात्री से ले जाते हैं।

देवप्रयाग-से विद्या कोटी मुकाम (३) मील पर है यहां से (५) मील राणीबाग चट्टी है ५। ६ दूकानें हैं। राणीबाग से रामपुर चट्टी (२) मील पर है, दूकान झरना आदि सब आनन्द है। रामपुर से (५) मील विल्वकेदार स्थान है यहां विल्वेश्वर महादेव हैं।

अर्कणि ।

आश्रमं परमं पुण्यमलर्कस्य महात्मनः ।
शिवमाराध्य यत्तीर्थे प्राप यः परमां गतिम् ॥७॥

महात्मा अलर्क का उत्तम और पवित्र यह तपोवन है जिस तीर्थ में शिवजी की आराधना करने से उनको परम गति प्राप्त हुई थी ॥ ७ ॥

तत ऊर्ध्वप्रदेशे हि माने शरचतुष्टये ।
पर्वतोपरितो राजन् कंदुकेश्वरभैरवः ॥ ८ ॥

उससे ऊपर कंदुकेश्वर नाम से भैरव विख्यात हैं ॥ ८ ॥

जीवनेन्द्रेण राज्ञा वै स्थापितः सुखहेतवे ।
भैरवाज्ञां गृहीत्वा वै गच्छेत्सूक्ष्मे हि क्षेत्रके ॥९॥

हे राजन्! भैरव यात्रा के सुख के निमित्त जीवनेन्द्र राजा ने भैरव जी को स्थापित किया, इनका पूजन कर और इनसे आज्ञा लेकर सूक्ष्म (श्री क्षेत्र) की यात्रा करे। इति देवप्रयाग माहात्म्यं समाप्तम् ॥

भिल्लकेदारः बिल्वेश्वर-माहात्म्य ।

शिवप्रयाग इति वै खांडवा गंगयोर्युतो ।
सोऽपि बिल्वेश्वरो नाम महादेवो बभूव ह ॥१॥

खांडवती अलकनन्दा के संगम में शिवप्रयाग नामक तीर्थ है इसमें पहिले भिल्लरूपधारी शिवजी का युद्ध अर्जुन के साथ हुआ था, इसीलिये बिल्वेश्वर महा, देव उस नाम से विख्यात हुए यह अर्जुन का तपस्थल है ॥१॥

जाखणी-माहात्म्य ।

तस्माच्छरद्वये भूप स्ववेंश्या तु जयैषिणी ।
सस्मार मनसा देवं सर्वज्ञं पार्वतीपतिम् ॥१॥

हे राजन्! उससे ८० हाथ की दूरी पर जय की इच्छावाली स्वर्ग की अप्सरा ने मन से पार्वतीपति

बिल्वकेदार से (४) मील मैदान चलकर गढ़वाल का मुख्य नगर श्रीनगर है। और (१) मील पर जाखणी नामक स्थान है यहीं पर गंगोत्तरीवाले यात्री गण-जो पूर्व कथित भटवाडी नामक चट्टी से-बूढ़े केदार होकर श्रीकेदारनाथ को नहीं गए सीधे रियासत टेहरी होकर जो आते हैं और जो गंगोत्तरी न जाकर सीधे हरिद्वार से बद्रीनाथवाली यात्रा लाईन को आते हैं, उन यात्रियों का यहां पर संगम होता है, यहां से श्रीनगर (३) मील है।

महादेव का ध्यान किया था सो यही तीर्थ है ॥ १ ॥

श्रीनगर उलूफडा-माहात्म्य ।

ततो ममाश्रमे चास्मिँस्तीर्थानि प्रवराणि च ।
इदमेव महातीर्थंकरोति तपउत्तमम् ॥ २ ॥

हे राजन्! मेरे इस उलफालकाश्रम में श्रेष्ठ २ अनेक तीर्थ हैं यह भी बड़ा तीर्थ है इस तीर्थ में जो तप करता है वह श्रेष्ठ है ॥ २ ॥

ततः श्रीस्थंडिलम् ।

तस्माद् द्विशरविक्षेपे गंगाया दक्षिणे तटे ।
श्रीस्थंडिलं समाख्यातं श्रीप्रदं पुण्यदं मतम्॥३

उससे ८० हाथ के प्रमाण गंगाजी के दक्षिण तट पर श्रीलक्ष्मी और पुण्य का देनेवाला श्रीस्थंडिल तीर्थ विख्यात है ॥ ३ ॥

यत्र राजा सत्यंधस्तपस्तप्त्वा भृशं प्रभुः ।
जितवान् कोलकं दैत्यं मुक्त एव ततःप्रभुः ॥४॥

जिसमें सत्यसंध राजा ने बड़ा कठिन तप किया

और श्रीमंत्र के प्रभाव से कोलक दैत्य को जीता और उसकी मुक्ति हुई ॥ ४ ॥

कमलेश्वरः ।

लिंगं मारकतं दृष्ट्वा दृष्ट्या ते मुनिसंचयाः ।
प्रकुर्युरभिषेकं वै नानावेदार्थवादिनः ॥
सिद्धेश्वरो महादेवो नाम्ना तत्समजायत ॥ ५ ॥

हे राजन् ! मुनियों ने अपनी दृष्टी से मरकतमणि के लिंग को देखकर उसलिंग का वेदमंत्रों से अभिषेक किया तब से इनका नाम सिद्धेश्वर महादेव हुआ यह सिद्ध नाम का तपस्थल है ॥ ५ ॥

पुनः कदाचिद्भगवान् रामरूपी जनार्दनः ॥ ६ ॥
पूजयामास कमलैः प्रत्यहं शतसम्मितैः ।
ततोऽवधि महाराज कमलेश्वरतां गतः ॥ ७ ॥

हे राजन ! फिर किसी समय में रामावतार धारी भगवान् ने प्रति दिन १०० सौ कमलों से शिवजी का पूजन किया तब से इनका नाम कमलेश्वर हुआ ॥६॥७॥

कंसमार्द्दिनी ।

यत्र देवी परा साक्षाद्वर्त्तते कंसमर्द्दिनी ।
नानायुगे युगे विप्र पुरा नन्दगृहे शुभा ॥ ८ ॥

हे विप्र ! जहां [श्रीक्षेत्र में] प्रतियुग में नन्द गोप के घर में कंस को मारने को जो देवी उत्पन्न होती है वह वहां स्थित रहती है ॥ ८ ॥

शुक्राश्रम (शुक्रता) माहात्म्य ।

कोटीश्वरान्महादेवान्माने क्रोशार्द्धखंडके ।

आवश्यक कथन ।

* श्रीयंत्रकी प्रसिद्ध शिला यहां गंगाजी में है । इसी शिला के नाम से " श्रीनगर " नाम है यहां पर ५ प्रसिद्ध पीठ हैं । राजराजेश्वरी १ कंसमर्द्दिनी २ गौरी ३ चामुण्डा ४ महिषमर्द्दिनी ५ ये सिद्धि के देनेवाले हैं गंगास्नान कर उपरोक्त यथाशक्ति देवों का दर्शन करे। यहां पर संपूर्ण वस्तु मिलती हैं रहने को एक से एक उत्तम दर्जे की धर्मशाला हैं सदावर्त भी है। यहांसे पौड़ी तहसील होकर रेलवे स्टेशन कोट द्वार (५५) मील है पो० आ० तारघर अंग्रेजी औषधालय सब मौजूद हैं।

श्रीनगरसे-सुकृता चट्टी (५) मील है (शुक्राश्रम) भी इसको कहते हैं १ दूकान और बाग हैं।

शुक्राश्रमं महापुण्यं क्रोशार्द्धे दीर्घविस्तृतम् ॥
तस्मिंस्थले पुरा शुक्रस्तपस्तेपे सुदारुणम् ॥९॥

हे राजन् ! कोटीश्वर से आधा कोसपर अति पवित्र इतनाही लम्बा चौड़ा शुक्र के तप का स्थान है, यहां पहिले शुक्र ने तप किया था वहां भृगुकुंड और शुक्राशिला है ॥ ९ ॥

सुकुता से (३) मीलपर भट्टीसेरा चट्टी है ५।४ दूकाने हैं

भट्टीसेरा (ढँग्रीपथ) माहात्म्य ।*

गंगाया उत्तरे तीरे चैत्रवत्यास्तु दक्षिणे ।
क्रोशार्द्धमाने चायाति नाम्ना हर्षवती नदी १०

गंगा के उत्तर और चैत्रवती के दक्षिण तट पर आधकोस से हर्षवती नामवाली नदी आती है ॥ १० ॥

अस्यां स्नात्वा नरो भक्त्या भवानि मुक्तबन्धकः ।

आवश्यक सूचना ।

* यहां पर ४।५ दुकाने हैं रसद सामान सब मौजूद मिलता है भट्टीसेरा से-छांतीखाल (१) मी० पर है १ दूकान डांक बंगला है, मार्ग चढ़ाई का है । छांती-(२।) मी० पर खांकरी चट्टी है मार्ग उतराई का है ५।४ दूकाने हैं

हे पार्वती ! भक्तिपूर्वक इस नदी में स्नान करने से मनुष्य जन्म मरण से मुक्त हो जाता है ।

खांकरा (पट्टवती) माहात्म्य । *

ततो हर्षवतीतीराद्गव्यूतौ परमा नदी ।
नाम्ना पट्टवती ख्याता सर्वदारिद्र्यनाशिनी ॥१॥

हे राजन् ! हर्षवती से (२) कोसपर संपूर्ण दरिद्र को नाश करनेवाली परम पवित्र पट्टवती नामवाली नदी विख्यात है ॥ १ ॥

गंगायां संगमो यत्र नदी पट्टवती परा ।
तत्र नाम्ना महादेवो जागदीश्वरसंज्ञकः ॥ २ ॥

जहां पट्टवती का गंगाजी में संगम है, वहां जगदीश्वर महादेव विराजित है । वह स्थान जागदीश्वर नाम से विख्यात है ॥ २ ॥

---

* खांकरा से-(२) मील पर नरकोटा चट्टी है, ५।७ छप्पर हैं-मार्ग उतराई और सीधा है, नरकोटा से—(३) मील पर गुलाब राई चट्टी है यहां पर २।३ दूकान हैं मार्ग चढ़ाई उतराई का है-यहां से (३॥) मील रुद्र प्रयाग है ।

* रुद्रप्रयाग माहात्म्य।

श्रीगंगापुलिने देवि मन्दाकिन्यास्तपोऽकरोत्।
रुद्रप्रयागे तन्वंगि सर्वतीर्थोत्तमे शुभे ॥ १ ॥
महान्तो यत्र नागाश्च शेषाद्यास्तप आचरन् ॥२॥

हे तन्वंगि पार्वती! मंदाकिनी गंगा के संगम पर रुद्रतीर्थ है, वहीं रुद्रेश्वर नामक शिवलिङ्ग है, और गोपालशर्म्मा का पवित्र तपस्थल है ॥ १ ॥ और जहां अगिनित शेष आदि नागसमूह तप करते हैं ॥ २ ॥

मंदाकिन्यास्तटे रम्ये नानामुनिजनाश्रमे।
मन्दाकिनी के तट पर अनेक मुनिजनों के आश्रम हैं ॥

ब्रह्मरूपेण सृजति पाल्यते विष्णुरूपिणा ॥
रूद्ररूपेण नयति भस्मसात् सचराचरम् ॥ ३ ॥

रुद्रप्रयाग माहात्म्य।

* इस प्रयाग में-मंदाकिनी केदार नाथ के उत्तर वर्त्ती खूंट बांक से निकल कर (४५) मील नागपुर में वहने के बाद रुद्रप्रयागमें अलकनन्दा में मिल जाती है (संगम) हुआ है-वासुकी, काली, मद महेश्वरी इसकी सहायक हैं।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन मुमुक्षुः शिवमभ्यसेत् ॥
स्तोत्रं सहस्रनामाख्यं पठित्वा श्रीशिवो भवेत् ४

हे तन्वंगि ! (जो शिवसहस्र नाम से मेरी भक्ति-पूर्वक स्तुति करता है) (उस पुरुष को मैं) ब्रह्म रूप से उत्पन्न विष्णु रूप से पालन, रुद्र रूप से संहार करता हूं ॥

आवश्यक सूचना ।

इस प्रयाग में स्नान करके पिंडतर्पणादि कर्म करके रुद्रनाथजी के दर्शन करें । यहां पर निवास करने के लिये कम्मली-वाले बाबा ने विशाल धर्मशाला बनवाई है १० । ५ दूकाने भी यहां पर हैं । यहां से सीधे बद्रीनाथ जी का रास्ता अलकनन्दा के किनारे २ करन-प्रयाग आदि मुकामें होकर लालसांगा (चमोली में जाते हैं) और मन्दाकिनी के किनारे २ होकर श्रीकेदारनाथजी के दर्शन करके गोपेश्वर होते हुए रुद्रप्रयाग से जो मार्ग बद्री, केदार, का अलाहिदा २ होगया था वो दोनों मार्ग के यात्री गण इसी लालसांगा (चमोली में संगम) मिल जाते हैं, बद्रीनाथजी के दर्शन करके यहीं चमोली में आकर कर्नप्रयाग होते हुए रामनगर रेलवे स्टेशन पर जाते हैं ।

रुद्रप्रयाग ।

से-सीधे केदारनाथ होकर बद्रीनाथजीवाला मार्ग । रुद्रप्रयाग से-केदारनाथ होकर चमोली तक (११०) मील है, और चमोली से बद्रीनाथ जी (४५) मील हैं ।

तिस में जो मुमुक्षुजन सम्यक् प्रकार से शिवसंनिधि में शिव सहस्र नाम से स्तुति करता है वह शिव-लोक को प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

रुद्रप्रयाग से-कुछ दूरीपर तिलपुड़ा (त्रिपुरेश्वर) है।

त्रिपुरेश्वर माहात्म्य ।

मंदाकिन्या दक्षिणे वै तीरे परमसिद्धिदे ।
त्रिपुरेश्वरनामा वै संस्थितः परमेश्वरः ॥ १ ॥
दर्शनादेवचायाति शैवं पदमनुत्तमम् ॥ २ ॥

हे नारद ! मन्दाकिनी गंगा के दक्षिण तट पर त्रि-पुरेश्वर नामक शिवलिङ्ग है । इसके दर्शन मात्र से शिवलोक की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ २ ॥

अगस्तिमुनि माहात्म्य ।

ततो वै पूर्वदिग्भागे माने गव्यूतिमात्रके ।

रुद्रप्रयाग से-(१०) मीलपर अगस्ति मुनि का आश्रम है । इसके अन्तर्गत याने रुद्रप्रयाग से (६) मील पर छतोली नाम की १ चट्टी है । ५ । ४ दूकाने हैं मार्ग सीधा है ।

अगस्तिमुनि-सूचना ।

यहां पर सुविशाल मन्दिर है मुनेजी की मूर्ति शिष्यों सहित है

मुनिगंगेति विख्याता मुनिप्रस्वेदसंभवा ॥१॥

वहांसे २ कोस पूर्व मुनिगंगा नामकी नदी विख्यात है, अगस्तिमुनि के पसीने से उस नदी की उत्पत्ति है १

तस्यां पश्चिमदिग्भागे नाम्ना शिलेश्वरःस्मृतः ॥
मन्दाकिन्याः पूर्वतटे कुम्भजन्माश्रमःप्रिये॥२॥
तंचेन्न पूजयेद्भक्त्या तस्य सर्वं विनश्यति ।
अगस्तीश्वरो महादेवस्तत्रास्ति भवमोचकः॥३॥

मुनिगंगा के पश्चिम तट की ओर शिलेश्वर नामक महादेव हैं मन्दाकिनी के पूर्व तट पर अगस्तिमुनि का आश्रम है वहां संसारसागर से मुक्त करनेवाले अगस्तीश्वर नामक महादेव हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

अगस्त्यादीन्महाभागान्नत्वा यायान्नलाश्रमम्।

७। ८ दूकाने हैं सुन्दर रमणीक स्थान है, यहां डांकखाना भी है, अगस्ति मुनि से (४।) मील पर है मार्ग सीधा है, ८। १० दूकान हैं, भगवती दुर्गा का मन्दिर भी है। चन्द्रापुरि से (३॥) मील पर भीरिचट्टि है, यहां से एक मार्ग ऊखीमठ को गया है, पुल पार से केदारनाथ को गया है धर्मशाला तथा दूकान भी यहां पर हैं। भीरी से कुण्डचट्टी (३ मील है ६। ७ दूकानें भी हैं मार्ग कुछ उतराई का है (४) मील गुप्तकाशी है।

अगस्ति आदि महाभाग तीर्थों को प्रणाम करके नलाश्रम में जाय ॥

ततः पूर्वोत्तरे पार्श्वे क्रोशयुग्मे घटोद्भवः ॥ ४ ॥
महादेवीति विख्याता सर्वदारिद्र्यनाशिनी ।
ततोऽधोऽधः प्रदेशे तु धारा धनवती मता ॥ ५ ॥

उससे २ कोस पर घटोद्भव का स्थान है, वहां संपूर्ण दरिद्र का नाश करनेवाली महादेवी विख्यात है उससे नीचे नीचे के प्रदेश में धनवती धारा विख्यात है ४।५

गुप्तकाशी माहात्म्य । *

इदं स्थानं गुह्यतमं यतो गुप्तेति काशिका ।
यस्याः स्मरणमात्रेण नश्यन्ति पापराशयः॥१॥

हे पार्वति ! इस काशी में यह स्थान गुप्त है यह

---

* आवश्यक सूचना ।

यह स्थान रमणीक विश्वनाथपुरी है, सर्वेश्वर शिवजी का मन्दिर, मणिकर्णिका कुंड आदि तीर्थ विद्यमान हैं गुप्तकाशी से (१) मील नाला नामक स्थान है ४ । ५ दूकान हैं राजराजेश्वरी देवीजी का मंदिर है राजा नल का तपस्थल है ।

मेरा स्थान गुप्तकाशी के नाम से विख्यात है जिसके स्मरण मात्र से संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ १ ॥

सिद्धैस्तत्र यन्नमितस्ततः सिद्धेश्वरः स्मृतः ।
तत्र गंगा च यमुना गुप्ते तिष्ठत ईश्वरे ॥ २ ॥

हे पार्वति ! इस गुप्तकाशी में ऋषियों ने तप किया था इस कारण सिद्धेश्वर महादेव यहां विराजमान हैं, और यहां गंगा यमुना गुप्त रूप से बहती हैं, सिद्धेश्वर के सामने गंगा और यमुना हैं ॥ २ ॥

तत्र यः स्नाति मनुजो मुक्तिमाप्नोति दुर्लभाम्
ददाति स्वर्णरत्नानि तस्यानन्तं फलं भवेत् ॥ ३ ॥

इन दोनों नदियों में जो मनुष्य स्नान करता है उसको दुर्लभ मुक्ति की प्राप्ति होती है, और जो सुवर्ण दान करता है उसको अनन्त फल मिलता है ॥ ३ ॥

नाला-राजराजेश्वरी माहात्म्य ।

राजराजेश्वरीं देवीमर्चयन्स समाधिना ।
राजराजेश्वरीं देवीं नत्वा संपूज्य यत्नतः ॥ १ ॥

यहां राजा नल ने समाधिस्थ होकर राजराजेश्वरी

देवी का पूजन किया था इस कारण यहां प्रयत्नपूर्वक राजराजेश्वरी को प्रणाम और पूजन करना चाहिये ॥ १ ॥

नाला से (१) मील पर भेता नामक स्थान है ५ । ४ दूकानों की चट्टी है यहां प्राचीन मंदिर तथा गायत्रीतीर्थ है ।

भेता (गायत्रीतीर्थ-माहात्म्य)

ततो दक्षप्रदेशे हि वेदमातृस्थलं महत् ।
चतुर्विंशद्दिनं योऽत्र गायत्रीं जपते नरः ॥ १ ॥
तस्य दर्शनमार्गस्था जायते सा महाप्रभा ॥ २ ॥

हे पार्वति ! उसके दक्षिण ओर गायत्रीतीर्थ है यहां २४ दिन तक जो मनुष्य गायत्री का जप करता है, महाकान्तिवाली गायत्री उसके सम्मुख प्रकट होती है ॥ १ ॥ २ ॥

भेता से (५) मील पर फाटा चट्टि है,

महिखंड
(महिषमर्दिनी) माहात्म्य ॥

केदारदक्षिणेभागे धरो महिषखंडकः ।

पुरा यदा महादेवी जघान महिषासुरम् ॥ १ ॥
तस्य खंडं समादाय चिक्षेप गिरिसत्तमे ।
आविर्भूतापि तत्रैव नाम्ना महिषमर्द्दिनी ॥
तस्या दर्शनमात्रेण नरः शिवपुरं व्रजेत् ॥ २ ॥

हे पार्वति ! केदार के दक्षिण ओर महिषखंड नामक पर्वत है पहिले जब देवीजी ने महिषासुर दैत्य को मारा तब उसके देह का खंड (टुकड़ा) इस पर्वत पर आकर गिरा इस कारण महिषमर्द्दिनी देवी यहां स्वयं प्रकट हुई उन देवीजी के दर्शन मात्र से मनुष्य को शिवलोक की प्राप्ति होती है ॥ १ ॥ २ ॥

व्योंग-भेता से (२) मील-५ । ७ दूकान हैं मार्ग कुछ चढ़ाई है ।

फाटा-माहात्म्य । *

तत्र फेत्कारिणी शैले दुर्गादेवीति विश्रुता ॥ १ ॥

---

* आवश्यक सूचना ।

यह १५।२० दुकानों का कसबा है भोजन की सामग्री सब मिलती है मार्ग चढ़ाई उतार का है ।

फाटा से-बड़ासु (१) मील पर है २ । ३ दूकानें हैं मार्ग मैदान है ।

और वही फेतकारिणी पर्वत पर दुर्गादेवी नाम से विख्यात है ।

मुंडकटा गणेश तथा गौरीकुंड माहात्म्य । *

गौरीतीर्थात्परेभागे क्रोशे परमदुर्लभम् ।
वैनायकं तथा द्वारं संस्थित्वे संस्थितःशिवे ॥ १ ॥

बड़ासु से-(१) मील पर सेरसी है २ । ३ दूकानें हैं-मार्ग सीधा है । सेरसी से-(२॥) मील पर रामपुर है १५ । २० दूकानों का कसवा हैं । रामपुर से (२॥) मील पर वही पूर्वकथित जो गंगोत्तरीवाले मार्ग में पाटीगाड़ पुल लिख आये हैं ; त्रियुगी माहात्म्य भी लिख दिया-अब यहां से त्रियुगी माहात्म्य को न लिखकर अन्य तीर्थ जो नहीं लिख आये हैं वही लिखते हैं भ्रम न करिये ।

पाटीगाड़ से-(१॥) मील पर झलमलपट्टन है. इसको सोमद्वार कहते हैं यहां पर झुलता हुआ पुल है-सोमगंगा का मंदाकिनी से संगम है यहां पर स्नान का फल है ।

आवश्यक सूचना ।

गौरीकुंड

* झलमलपट्टन से (३) मील पर है तथा १५ । २० दुकानों का बाजार है इसके अन्तर्गत (द्वारम्. मुंड़कटा गणेश है) गौरीशंकर का मंदिर हैं, अमृतकुंड गौरीकुंड जल गरम हैं ।

गणेशस्तावकः पुत्रश्चांगरागेण यः कृतः ।
संपूज्य तं गणेशं तु नानानैवेद्यद्रव्यकैः ॥ २ ॥

हे पार्वति ! गौरीतीर्थ से पश्चिम दिशा की ओर एक कोस पर द्वार है जहां (केदारभवन के द्वार पर) गणेशजी स्थित हैं जिनको कि तुमने अपने शरीर से उत्पन्न किया था अनेक प्रकार के नैवेद्य (मिष्टान्न) और द्रव्यों से उनकी पूजा करके केदारभवन को गमन करना चाहिये ॥ १ ॥ २ ॥

त्रिगव्यूतौ मम स्थानाद्दक्षिणे शृणु तीर्थकम् ।
गौरीतीर्थमिति ख्यातं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥
तत्र गौरीश्वरत्वेन ख्यातोऽहं शिवलोकदः ॥ ३ ॥

हे पार्वति ! मेरे स्थान (केदार भवन) से छः कोस दक्षिण की ओर गौरीतीर्थ विख्यात है, उसमें स्नान करने से सर्वसिद्धि प्राप्त होती है वहां शिवलोक का देनेवाला मैं गौरीश्वर नाम से विख्यात हूं यहां रक्तमृत्तिका (लालमिट्टी) धारण करना चाहिये ॥ ३ ॥

गौरीकुंड से (२) मील पर चीरवाला भैरव हैं ।

चीरवासा भैरवः (चिरपथा) माहात्म्य । *

गौरीतीर्थादूर्ध्वभागे पर्वते सौम्यदिक्स्थिते ॥ १ ॥
चीरवासा भैरवस्तु क्षेत्रं रक्षति मामकम् ।
तस्मै चीरादिकं दत्वा सर्वं पुण्यं लभेन्नरः॥ २ ॥

हे पार्वति ! गौरीकुंड से ऊपर उत्तर दिशा की ओर पर्वत के एक स्थल में चीरवासा नामक भैरव विख्यात हैं वे मेरे केदारभवन की रक्षा करते हैं, इनको चीर आदि चढ़ाने से मनुष्य को यात्रा का संपूर्ण फल होता है ॥ १ । २ ॥ यहां पर चीर न चढ़ाने से भैरव यात्रा का फल हर लेते हैं ।

भीमशिला (भीमगोड़ा) माहात्म्य ।

भीमसेनशिला देवि पर्यङ्कं मम कीर्तितम् ।
तस्मिन्नेव महाशैले काली वसति दुःसहा॥ १ ॥

---

* चीरवासा भैरव से-रामबाड़ा (३) मील है मार्ग चढ़ाई का है १५ । २० दुकानों का कसबा है अन्तर्गत भीमशिला (भीमगोड़ा) भी है-यहां से (४॥) मील केदारनाथजी हैं (३) मील मार्ग चढ़ाई का है और (१) मील सीधा चलकर केदारनाथजी हैं ।

तां नमस्कृत्य गच्छेत पर्यङ्के मामके शुभे ॥ २ ॥

हे पार्वति ! भीमशिला मेरा पर्य्यंक (पलंग) है उसी महाशिल पर अतुल-तेजस्विनी कालीजी वास करती हैं उनको प्रणाम करके भीमशिला नामक मेरे पलंग और केदारभवन में गमन करना चाहिये ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ केदारखंडे ४२ अध्याय ।

इति श्रीकेदारखण्डे बदरिकाश्रमतीर्थनिरूपणे

भाषा टीकायां द्वितीयोऽध्यायः ।

श्रीपुरी केदारनाथजी । *

मन्दाकिनी और सरस्वती गंगाओं के मध्य में यह सुविशाल तीर्थ है । इसके ऊपरी भाग में महापथ है जो बरफ से शुशोभित है पुरी से उत्तर श्रीकेदारेश्वरजी का मन्दिर है इसीके अन्दर श्रीकेदारनाथजी हैं केदारलिङ्ग पर घृत मल करके शेष घृत को अपने शरीर पर मले यह विधि शास्त्रानुसार है । यहां पर कई एक कुंड हैं मार्जन आदि विधि से संस्कृत करे इनमें से सर्वश्रेष्ट " उदक कुंड " है इस उदक को अघोर मंत्र से ग्रहण करे ।

---

*इस महाविशाल पुरी का वर्णन अकथनीय है जैसे सूर्य्य के सदृश दीपक-विज्ञजन स्वतः ही जान सक्ते हैं लेखक कहां तक लिखेगा।

अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ।
सर्व्वेभ्यः सर्व्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।

इस अघोर मंत्र से मार्जन, आचमन, स्पर्श आदि ग्रहण दोनों हाथ से तथा अंजुलीपुट द्वारा गोमुख से यथा विधि से करे बड़े २ तीर्थों में पूर्वलिखित हेमाद्रीकृत स्नानसंकल्प द्वारा ही स्नान करना विधिवत् है अन्यथा अल्प फलाधिकारी होता है अतः विधि के अनुसार करै। यहां पर धर्मशाला, सदावर्त बहुत हैं किन्तु इस पुरी में निराहार (उपवास) करना ही यथाविधि है १ रात्री से सिवाय यहांपर कोई भी नहीं रहता है ।

श्रीकेदारमाहात्म्यम् । *

केदारं नाम यत्प्रोक्तं स्वर्गमोक्षप्रदायकम् ।
कानि कानि च तीर्थानि वर्तन्ते तत्रनायकाः ॥१॥
इदं क्षेत्रं तु यत्प्रोक्तं मया देवि तवाधुना ।
न त्यजामि कदाचिद्वै नातः प्रियतरं प्रिये ॥२॥

हे प्रिये पार्वति ! केदार भवन जो कहा सो स्वर्ग और मोक्ष को देनेवाला है यहां अनेक तीर्थनायक

स्थित हैं हे देवि ! यह क्षेत्र जो मैंने तुमसे कहा इसको मैं कभी नहीं त्यागता इससे अधिक प्रिय मुझे कुछ नहीं है ॥ १ ॥ २ ॥

पार्वत्युवाच ।

किं पुण्यं किं फलं चात्र स्नानदानैर्महेश्वर ॥
कानि कानि च तीर्थानि वर्तन्ते तत्र नायक ॥३॥

हे महेश्वर ! वहां कौन २ से तीर्थ वर्तमान हैं और वहां स्नान दान करने से किस पुण्यफल की प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

ईश्वर उवाच ।

दक्षिणस्यां शिवे देवि रेतःकुंडमिति श्रुतम् ।
तत्पयःपानमात्रेण शिव एव न संशयः ॥ ४ ॥

शिवजी बोले कि हे देवि ! केदारभवन के दक्षिण ओर रेतकुंड विख्यात है उसके जलपान मात्र से निःसंदेह शिवरूप हो जाता है ॥ ४ ॥

मन्दाकिन्यास्तु सुतटे तीर्थानि शृणु पार्वति ।

तस्मादेव महातीर्थादधोदेशे शुभप्रदम् ॥ ५ ॥

हे पार्वति ! मन्दाकिनी के तट के सुन्दर तीर्थ सुनो रेतकुंड महातीर्थ के अधोदेश में शुभदायक ॥ ५ ॥

शिवकुण्डमिति ख्यातं शिवलोकप्रदायकम् ।
यत्रोपोष्य सप्तरात्रं प्राणान्वै संत्यजेद्बुधः ॥६ ॥

शिवलोक का देनेवाला शिवकुण्ड विख्यात है जहाँ ७ दिन व्रत करके जो विद्वान् प्राण त्यागता है ॥ ६ ॥

शिवसायुज्यतामेति यतो धारा विनिःसृता ॥
तदूर्ध्वं भृगुकुंडं वै पापिनामपि मुक्तिदम् ॥ ७ ॥

उसकी शिवसायुज्य मुक्ति होती है जहांसे मन्दाकिनी नदी निकली है उससे ऊपर पापियों को भी मुक्ति देनेवाला भृगुकुण्ड विख्यात है ॥ ७ ॥

गोघ्नः कृतघ्नो विप्रघ्नो योऽपि विश्वासघातकः।
श्रीशिलायां पतेद्यस्तु भृगुतुंगान्महोन्नतात्॥८॥

गौ को मारनेवाला, कृतघ्न (किये हुए उपकार को न माननेवाला), ब्राह्मण को मारनेवाला और विश्वास-

घातक भी ऊंचे भृगुतुंग से श्रीशिला पर गिर कर ॥ ८ ॥

प्राणांस्त्यजति देवेशि स परब्रह्मतामियात् ।
तस्मात्तीर्थादूर्ध्वभागे योजनद्वयसंमिते ॥ ९ ॥

हे देवेशि ! प्राण त्यागता है वह परब्रह्म भाव को प्राप्त होता है उससे ऊपर दो योजन के प्रमाण ॥ ९ ॥

रक्तवर्णं जलं तत्र बुद्बुदाकारनिःसृतम् ।
इदं जलं परं गोप्यं न वदेद्दुष्टजन्तुषु ॥ १० ॥

रक्तवर्ण के आकार उबलता हुआ जल निकलता है इस जल का प्रमाण दुष्ट प्राणियों से नहीं कहना चाहिये यह परम गोपनीय है ॥ १० ॥

यस्य स्पर्शेण सर्वेऽपि धातवः स्वर्णतां प्रिये ।
यान्ति लोहादयो देवि स्फाटिकं लिङ्गमुत्तमम्११

हे प्रिये ! जिसके स्पर्शमात्र से लोहे आदि सम्पूर्ण धातु सुवर्णरूप हो जाती हैं, और वहां स्फटिक का लिङ्ग विख्यात है ॥ ११ ॥

यस्यवै पूजनात्सद्यः शिव एव न संशयः ।
तस्मात्सप्तपदे पूर्वं वन्हितीर्थमिति स्मृतम्॥१२

जिसके पूजन करने से मनुष्य तत्काल शिव हो जाता है, इसमें संदेह नहीं, उससे ७ चरण पूर्व वन्हि-तीर्थ विख्यात हैं ॥ १२ ॥

तस्य चिन्हं प्रवक्ष्यामि गदतो मे शृणु प्रिये ।
हिमान्तर्गलितं तद्वै जलं वह्निसमं प्रिये ॥१३॥

हे प्रिये ! उसका चिन्ह कहता हूं, मुझसे सुनो । हिम में से अग्नि के समान उष्ण (गरम) जल निकलता है ॥ १३ ॥

पूजनं तस्य कर्तव्यं घृताद्याहुतिभिस्तथा ।
संतृप्तो जायते वन्हिर्वरमिष्टं प्रयच्छति ॥ १४ ॥

वहां घृत आदि की आहुतियों से पूजन करना चाहिये उससे तृप्त हुई अग्नि प्रसन्न होकर मनइच्छित वर देती है ॥ १४ ॥

तत उत्तरतो देवि आश्चर्यं परमं शिवे ।
शैलाग्रशिखरात्तत्र जलं पतति भूतले ॥ १५ ॥

हे शिवे, हे देवि ! उससे उत्तर की ओर परम आश्चर्य है कि पर्वत के ऊंचे शिखर से पृथिवी पर

जल गिरता है ॥ १५ ॥

तज्जलस्य कणा देवि मुक्ताश्चैव भवन्तिहि ।
तत्रैव भीमसेनेन पूजितोऽहं च मौक्तिकैः॥१६॥

और उस जल के कण मोती बन जाते हैं—हे देवि! यहीं भीमसेन ने मोतियों के द्वारा मेरा पूजन किया था ॥ १६ ॥

यःकश्चिन्मानवो भक्त्या एवं वदति नित्यशः ।
महापथंगमिष्यामि प्राणांस्त्यक्ष्यामि तत्रवै॥१७॥

जो कोई मनुष्य इस प्रकार भक्तिपूर्वक नित्य कहता रहता है कि महापथ (केदारभवन) को जाऊंगा और वहीं प्राण त्यागूंगा ॥ १७ ॥

सोऽपि मे देवदेवेशि प्रियात्प्रियतरोऽस्तिवै ।
किंपुनर्मानवो लोके सर्वसंगविवर्जितः ॥१९॥

हे देवेशि ! वह भी मुझे प्रिय से भी प्रिय है और सर्व संग छोड़ कर जो मनुष्य ॥ १९ ॥

मां न्यस्य हृदि च स्वीये गच्छेद्वै मम मंदिरे ।
स्वर्गारोहगिरेर्मूर्ध्नि स्थानं मे परमं महत् २०

अपने हृदय में मेरा ध्यान करके मेरे मंदिर में जाय तो उसका कहना ही क्या है स्वर्गारोह पर्वत का मस्तक (शिखर) मेरा परम स्थान है ॥ २० ॥

अयं तीर्थमयः शैलो यत्राहं संस्थितः सदा।
दर्शनादेव पापानि ब्रह्महत्यासमानि च ॥२१॥

जहां मैं नित्य निवास करता हूं वह यह तीर्थयुक्त पर्वत है इसके दर्शन मात्र से ब्रह्महत्या के समान पाप भी २१

नश्यन्ति किमु देवेशि पूजनात्स्पर्शनात्तथा।
माध्वी गंगा महेशानि मंदाकिन्यास्तु संगमे॥२२॥

नष्ट हो जाते हैं, हे देवेशि ! फिर पूजन और स्पर्श का तो कथन ही क्या है, हे महेशानि ! माध्वी गंगा और मन्दाकिनी के संगम पर ॥ २२ ॥

ब्राह्मंवैपरमं तीर्थयत्र स्नात्वा गणो भवेत्॥२३॥

ब्राह्म तीर्थ परमोत्तम है जहां स्नान करने से शिवजी का गण हो जाता है ॥ २३ ॥

तद्धंसकुंडमाख्यातं पितॄणांमुक्तिदायकम्॥२४॥

पितरों को मुक्तिप्रदान करनेवाला वह हंसकुंड

विख्यात है ॥ २४ ॥

पितॄणां श्राद्धकर्तारो गच्छेयुः परमं पदम् ।
नरकस्थापि पितरो जन्मजन्मसमुद्भवाः ॥२५॥

वहां पितरों का श्राद्ध करनेवाले मनुष्य परमगति को जाते हैं तथा जन्मजन्मान्तर से नरक में स्थित हुए पितर भी ॥ २५ ॥

त्रिशूलिनो महादेवाश्चन्द्रार्द्धकृतशेखराः ।
वृषस्कन्धास्थिताः सर्वे व्यालयज्ञोपवीतकाः २६

त्रिशूलधारी अर्धचन्द्रशेखर वृष (बैल) पर सवार हुए सब शिवस्वरूप होजाते हैं ॥ २६ ॥

इति ते कथितं देवि केदारेश्वरक्षेत्रकम् ।
श्लोकार्द्धं श्लोकमेकं वा श्रुत्वा चोक्त्वा लभे-
च्छिवम् ॥ २७ ॥

हे देवि ! यह केदारेश्वर क्षेत्र का माहात्म्य तुम्हारे प्रति कहा इसका एक वा आधा श्लोक कह वा सुनकर भी मनुष्य को शिवलोक की प्राप्ति होती है ॥ २७ ॥

केदारमण्डलस्यैव स्वर्भूमेर्दैवतात्मनः । इदं च

परमं स्थानं पृथिव्या भिन्नमुच्यते ॥ २८ ॥
अत्र ये पर्वताश्चैव दृषदः सरितस्तथा । सर्वे
पुण्यतमाःख्याता भुक्तिमुक्तिप्रदायकाः ॥२९॥

स्वर्ग, भूमि, और देवतात्मक केदारमंडल का यह परम स्थान और पृथिवी से भिन्न कहा जाता है ॥२८॥ यहाँ भुक्ति मुक्ति के देनेवाले जो पर्वत, सरोवर और नदियां हैं वे सब पुण्यतम अर्थात् अति पवित्र कथन की हैं ॥२९॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखण्डान्तर्गते
केदारमाहात्म्ये सर्वतीर्थवर्णनं
नाम प्रथम खंड समाप्तम् ।

शृणु देवि पुरावृत्तं व्याधस्यैणस्य तच्छृणु ।
मृगहन्ताऽवसद्व्याधो ग्रामान्ते विकरालकः १

हे देवि ! एक व्याध और मृग का पूर्ववृत्तान्त कहते हैं, सो सुनो, भयानक आकृतिवाला एक व्याध ग्राम की सीमा (हद्द) पर रहता था ॥ १ ॥

मृगमांसाशनो नित्यं विक्रेता सर्ववस्तुनः ।
एकदा स महान् व्याधो मृगान्हन्तुं गतो वने २

सदा मृगों का मांस खानेवाला और संपूर्ण वस्तुओं का बेचनेवाला यह व्याध एक समय मृग मारने को वन में गया ॥ २ ॥

हतास्तत्र महादेवि मृगाश्च बहवस्तथा ॥
एवं हनन्मृगान् व्याधो ययौ केदारतीर्थके ॥ ३ ॥

हे महादेवि ! वहाँ जाकर उसने अनेक मृग मारे इस प्रकार मृगों को मारता हुआ वह व्याध केदारक्षेत्र में चला गया ॥ ३ ॥

गच्छतस्तस्य देवेशि वने मुनिगणान्विते ॥
व्यदृश्यत मुनिश्रेष्ठो नारदो रणयन् गिरम् ॥ ४ ॥

हे देवेशि ! चलते चलते उसको मुनिगणों से युक्त उस वन में वीणा बजाते हुए मुनियों में श्रेष्ठ नारदजी दिखाई दिये ॥ ४ ॥

एतस्मिन्नन्तरे सोऽपि व्याधो वै हृष्टमानसः ॥
योऽयं गच्छति स्वर्णात्मा दिव्यरूपधरो मृगः ॥५॥

उसी समय वह व्याध भी प्रसन्नमन हो गया, दिव्य रूपधारी स्वर्ण (सुवर्ण) का वह जो मृग जाता है ॥५॥

एनं हत्वा स्वर्णमयमहं स्वर्णमयो भवे । इति वै
चिन्तयित्वा तु व्याधः परमविस्मितः ॥ ६ ॥

इस सुवर्णमय हरिण को मार कर मैं भी सुवर्णमय (सुवर्ण से संपन्न) होजाऊँगा इसप्रकार विचार करवह व्याध अत्यन्त विस्मित (चकित) होकर ॥ ६ ॥

धनुः सज्जं चकाराशु बाणं संधाय कार्मुके ।
यावन्निहन्ति तमृषिं तावदस्तं गतो मुनिः ॥ ७ ॥

शीघ्रतापूर्वक धनुष में बाण संधान करने लगा, जब तक कि ऋषि को बाण मारा तब तक नारदमुनि छिप गये अर्थात् उस व्यध की दृष्टि से अदृश्य हो गये ॥ ७ ॥

इति तत्परमाश्चर्यं दृष्ट्वा व्याधोऽतिविस्मितः ।
यावद्गच्छंति चाग्रे तु ददर्श दर्दुरं बिले ॥ ८ ॥

इसप्रकार उस सुवर्ण के मृग का आश्चर्य देख कर वह व्याध अति विस्मित हुआ, जब आगे को चला तो बिल (भट्टा) में एक मेंढक देखा ॥ ८ ॥

सर्पेण ग्रस्यमानं वै महाकायेन सत्वरम् ॥
यावद्ग्रसति मंडूकं सर्पः कालात्मकोह्ययम् ॥९॥

और शीघ्रतापूर्वक बड़े शरीरधारी सर्प के द्वारा खाये जाते हुए तथा जबतक कालात्मक यह सर्प उस (मेंढक) को खाता है ॥ ९ ॥

तावद्बभूव मंडूको नागयज्ञोपवीतिकः ॥
अर्धचन्द्रधरः शीर्षे जटाटव्या विराजितः ॥१०॥

तबतक मस्तक पर अर्धचन्द्रधारी और जटा के समूहों से विराजित (वह मंडूक) शिवरूप होगया ॥१०॥

कैलासाद्रिसमाभासो नृत्यद्गणविराजितः ।
त्रिशूली नीलकंठो वै हस्तिचर्म्माम्बरो विभुः११॥

कैलासपर्वत के समान कान्तियुक्त, नृत्य करते हुए गणों के साथ, हाथी का चर्म धारण किये हुए, नीलकंठ शिव होगया ॥ ११ ॥

इति तत्परमाश्चर्य्यं दृष्ट्वा वै व्याधपूरुषः ॥
किमेतद्वै कथं जातो मंडूकः सर्पवेष्टितः॥ १२ ॥

इस प्रकार के उस आश्चर्य को देख वह व्याध बोला कि यह क्या है और यह मेंढक सर्पों से वेष्टित किसप्रकार होगया ॥ १२ ॥

कस्य रूपमिदं जातं मंडूकस्यान्यदेहकः ।
किंवा स्वप्नमहं मन्ये जाग्रतो मे कथंभवेत्॥१३॥

इस मंडूक ने किस अन्यदेहधारी का शरीर और रूप धारण कर लिया, मैं स्वप्न में हूं या जागता हूं जागृत अवस्था में यह क्या होगया ॥ १३ ॥

भ्रमो मे हि कथं जातः स्वस्थोऽस्मि यत एव हि ।
अथ चेदं कथंचिद्वै भूतोपद्रवकं किमु ॥ १४ ॥

मुझे भ्रम किसप्रकार हुआ मैं तो स्वस्थ (सावधान) हूँ अथवा यह भूतमाया है कुछ समझ में नहीं आता॥१४॥

सन्निकर्षमृतिर्मेद्य वर्तते विकृतिर्यतः ॥
किं करोमि क गच्छामि वनेऽस्मिन्भूतसेविते १५

व्याध विचारने लगा कि आज सर्व कार्य विपरीत दिखाई देते हैं मेरी मृत्यु आज निकट आगई, भूतों से सेवित इस वन में क्या करूं और कहाँ जाऊँ ॥ १५ ॥

को मे रक्षामिदानीं हि करिष्यति महावने ॥
पश्यतो मे हि मंडूको विकृतिं वै कथं गतः ॥१६॥

इस समय इस महावन में मेरी कौन रक्षा करेगा, मेरे

देखते२ मंडूक किस प्रकार विकृति को प्राप्त होगया॥१६॥

इति चिन्तासमाविष्टमना व्याधो हि तत्क्षणात् ॥
पलायनपरो जातो महेशि वनतो यदा ॥ १७ ॥

हे महेशि! इस प्रकार चिन्तायुक्त मन से उसीसमय वह व्याध जब कि भागने को हुआ ॥ १७ ॥

तावद्ददर्श व्याघ्रेण हन्यमानं मृगं किल ॥
पुष्टांगं सुन्दरांगं च महाव्याधो भयातुरः ॥ १८ ॥

उसीसमय पुष्ट और सुन्दर अंगवाले मृग को सिंह के द्वारा निश्चयपूर्वक मरते हुए देखा तब तो वह व्याध भय से और भी घबराया ॥ १८ ॥

तमेव हन्यमानं च मृगं वै शिवरूपिणम् ॥
पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं च व्यालयज्ञोपवीतिनम् ॥१९॥

और उस मरे हुए मृग को पंचवक्र, त्रिनेत्र, व्यालयज्ञोपवीतधारी शिवरूप देखा ॥ १९ ॥

हन्ता यो देवदेवेशि मृगराट् तत्क्षणाद्धतः ॥
व्याधेनानेन केनापि बलीवर्दो बभूवह ॥ २० ॥

हे देवेशि पार्वति ! वह व्याघ्र भी किसी प्रकार इस व्याध के द्वारा मरा और वह बैल होगया ॥ २० ॥

आरुरोह वृषे तस्मिन्स वै पूर्वहतो मृगः ॥
शिवरूपधरःसाक्षात्पश्यतस्तस्य सुन्दरि ॥२१॥

और वह व्याघ्र से मराहुआ हिरन उस बैल पर चढ़ा उसके देखते २ हे सुन्दरि ! वह साक्षात् शिवरूप होगया ॥ २१ ॥

इति तत्परमाश्चर्यं दृष्ट्वा व्याधोऽतिविस्मितः ।
चिन्तयामास बहुशः किमिदं किमिदं त्वहो २२

इस प्रकार के आश्चर्य को देख वह व्याध अति विस्मित हुआ और अनेकप्रकार से विचारने लगा कि अहो! यह क्या है यह क्या है कुछ समझ में नहीं आता ॥२२॥

पुलकांकितसर्वांगो विस्मयाविष्टमानसः ॥
पुनर्ददर्श देवेशि नारदं मुनिमेव तम् ॥ २३ ॥

पुलकायमान है सब अंग जिसका ऐसा वह व्याध आश्चर्य करने लगा, हे देवेशि ! फिर उन्हीं नारदजी को उसने देखा ॥ २३ ॥

तं दृष्ट्वा मनुजाकारं वने तस्मिन्भयावहे ॥
श्रुत्वा तु तन्मुखाद्वृत्तं तत्रत्यं मम वल्लभे॥२४॥

[illegible] ! उस भयानक वन में मनुष्यशरीरधारी [illegible] को देखा उनके मुख से वहाँका मेरा वृत्तान्त सुना ॥ २४ ॥

व्याधः साधुरसाधुश्च वनं साधुरहो परः ॥
इति श्रुत्वा तु स व्याधो बभाषे नारदं मुनिम् २५

नारदजी बोले कि व्याध साधु भी है और असाधु भी है किन्तु वन परमसाधु है इसप्रकार सुनकर वह व्याध नारद मुनि से बोला ॥ २५ ॥

कथं साधुरहं ब्रह्मन्नसाधुश्च कथं वनम् ॥
साध्वसाध्विति यत्प्रोक्तं त्वया किं तद्वदस्व मे२६

हे ब्रह्मन् ! मैं किसप्रकार साधु असाधु हूँ और वन किस प्रकार से श्रेष्ठ है तुमने साधु और असाधु जो कहा सो किसप्रकार से कहा वह सब वृत्तान्त मुझसे कहो ॥२६॥

व्याधेरितं तु तच्छ्रुत्वा विहस्य नारदोऽब्रवीत् ॥
धन्योऽसि लुब्धक श्रेष्ठ यत्त्वया तीर्थमुत्तमम् २७

व्याध के वचन को सुन नारदजी हँसकर बोले कि हे लुब्धकश्रेष्ठ ! तुम धन्य हो जो तुमने इस उत्तम तीर्थ में॥ २७ ॥

आगत्य तादृशं चैव दृष्टं वै शुभदर्शनम् ॥ तस्मादुक्तं च मे साधुस्त्वमसाधुश्च तच्छृणु ॥ २८ ॥

आकर शिवजी के सुन्दर स्वरूप का दर्शन किया इस कारण तुम्हें साधु कहा और जैसे तुम असाधु हो सोभी सुनो आगे कहताहूँ ॥ २८ ॥

यस्मादिदं त्वया व्याध ज्ञातं नेति शुभं परम् ॥ यस्य माहात्म्यतः शीघ्रं तिर्यग्योनिगतो ध्रुवम् ॥ २९ ॥

जिस कारण से कि हे व्याध ! तुमने इस क्षेत्र का माहात्म्य नहीं जाना जिसके माहात्म्य से शीघही पशुयोनि को प्राप्त हुआ भी ॥ २९ ॥

अवाप ये वतां चैव पश्यतस्ते क्षणात्तथा ॥
इति पर्य वाले की ाश्चर्यं रूपं तद्वचनं प्रिये ॥ ३० ॥

तुम्हारे देखते २ क्षणमात्र में शिवरूप होगया, हे प्रिये ! इसप्रकार उस परम आश्चर्यरूप और नारदजीके वचन को ॥ ३० ॥

श्रुत्वा व्याधो महाभागः प्रणनाम भुवि क्षणात् ॥ धन्योऽस्मि कृतकृत्योऽस्मि मुने त्वद्दर्शनादहम् ॥ ३१ ॥

सुनकर वह महाभाग व्याध पृथ्वी में झुककर प्रणाम करने लगा और बोला कि हे नारदमुनि ! मैं तुम्हारे दर्शन से धन्य और कृतकृत्य हुआ ॥ ३१ ॥

योऽहं तव मुखाम्भोजनिःसृतं सुकथामृतम् ॥ पिबापि मुनिशार्दूल त्राहि मां भवसागरात् ३२

जो मैं तुह्मारे मुखरूपी कमल से निकले हुए कथा रूपी अमृत को पीताहूँ हे मुनिशार्दूल ! शरण आये हुए मेरी रक्षा करो ॥ ३२ ॥

पापोऽहं मुनिहन्ताहं हिंसकोऽहं दुरासदः ॥ कथं तरेयं भगवन् कथमेता[illegible]छिदोऽ ॥३३॥

मैं पापी हूँ, मुनियोंको मारनेव[illegible]थमुत्त दुष्ट हूँ,

हे महाभाग ! मैं किसप्रकार तरूं मेरी क्या गति ॥३३॥

भवेन्मे मुनिशार्दूल तद्वदस्व कृपान्वित ॥
उवाच नारदस्तं वै अत्रैव निवसत्विति ॥३४॥

होगी, हे मुनिशार्दूल ! सो कृपा करके मुझसे कहो, तब नारदजी ने कहा कि तुम यहीं निवास करो तब तुम्हारी निष्कृति होगी ॥ ३४ ॥

इत्युक्त्वांतर्दधे देवि पश्यतस्तस्य वै प्रिये ॥
व्याधोऽपि निवसंस्तत्र ययौ वै परमां गतिम् ३५

हे देवि ! हे प्रिये ! इस प्रकार कहकर उसके देखते देखते ही नारदजी अन्तर्द्धान होगये और व्याध भी वहाँ (केदारक्षेत्रमें) रहकर परमगति (स्वर्ग) को प्राप्त हुआ ॥ ३५ ॥

इति तत्क्षेत्रमाहात्म्यमहं वर्षशतैरपि ॥ न क्षमोऽस्मि प्रिये वक्तुं शृण्वतोऽपि परां गतिम् ३६

हे प्रिये ! इस क्षेत्र क माहात्म्य वर्णन करने को मैं सौ वर्ष पर्यन्त भी समर्थ नहीं हूँ इस माहात्म्य को सुननेवाले की भी उत्तम गति होती है ॥ ३६ ॥

तीर्थानि शृणु देवेशि गुह्यानि सुतरां प्रिये ३७

हे देवि ! हे प्रिये ! केदारमण्डलके जो गुप्त तीर्थ हैं, उनको भी सुनो ॥ ३७ ॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखंडान्तर्गते केदार-
माहात्म्ये चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चकेदार माहात्म्य ।

पंचतीर्थानि यो देवि गच्छते भक्तिसंयुतः ।
प्रसंगाद्वा बलात्काराज्ज्ञानादज्ञानतोऽपिवा ॥
नवैतत्सदृशो देवि पुण्यात्मा नात्र संशयः ॥ १ ॥

हे देवि ! प्रसंग से वा बलात्कार अर्थात् अकस्मात ज्ञान अज्ञान से पांच तीर्थों को (केदारनाथ, मध्यमेश्वर, तुंगनाथ, रुद्रहिमालय, कल्पेश्वर,) भक्तिपूर्वक जाता है उसके समान कोई पुण्यात्मा नहीं इसमें संदेह नहीं ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच ।

मम क्षेत्राणि पञ्चैव भक्तप्रीतिकराणि वै ॥२॥
केदारं मध्यमं तुंगं तथा रुद्रालयं प्रियम् ॥

कल्पकं च महादेवि सर्वपापप्रणाशनम् ॥३॥

शिवजी बोले भक्तों को प्रीति करनेवाले मेरे पांच ही क्षेत्र हैं, केदार, मध्यम, तुंग, रुद्रालय और कल्पक, हे देवि ! यह तीर्थ वा क्षेत्र संपूर्ण पापों को नष्ट करते हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

तस्माद्दक्षिणदिग्भागे योजनत्रयसंमिते । मध्यमेश्वरक्षेत्रं हि गोपितं भुवनत्रये ॥ तस्य वै दर्शनान्मर्त्यो नाकपृष्ठे वसेद्विभुः ॥ ४ ॥

उससे दक्षिण की ओर तीन योजन के प्रमाण त्रिलोकी में गोपनीय मध्यमेश्वर क्षेत्र है, मनुष्य उसके दर्शन मात्र से स्वर्गवास करता है ॥ ४ ॥

मांधातृक्षेत्रतो याम्ये योजनद्वयविस्तृतम् ॥५॥
द्वियोजनसमायामं सर्वकामफलप्रदम् ॥
तुंगनाथं शुभं क्षेत्रं पापघ्नं सर्वकामदम् ॥ ६ ॥

मांधातृ क्षेत्र से याम्य दिशा की ओर दो योजन लम्बा और दो योजन चौड़ा सर्व कामनाओं के फल का देने वाला और पाप नष्ट करने वाला सुन्दर तुंगनाथ

क्षेत्र विख्यात है ॥ ५ ॥ ६ ॥

रुद्रालयमिति ख्यातं तीर्थानां तीर्थमुत्तमम् ।
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः ॥७॥

और तीर्थों में उत्तम रुद्रालय तीर्थ भी इसी प्रकार उत्तम विख्यात है जिसके सुनने मात्र से मनुष्य निःसंदेह पापों से छूट जाता है यहां पिण्डदान का विशेष फल है ॥ ७ ॥

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पंचमं वै ममालयम् ।
कल्पस्थलमितिख्यातंसर्वपापप्रणाशनम् ॥८॥

हे देवि! संपूर्ण पापोंको नष्ट करने वाला मेरा पांचवां स्थान कल्पनाथ से विख्यात है सो मैं तुमसे कहता हूं ॥८॥

यत्राहं देवदेवेन त्वर्चितः पर्वतात्मजे । मूढो दुर्वाससा शप्तो नष्टलक्ष्मीर्हतप्रभः ॥ ९ ॥

हे पर्वतात्मजे! जहां मैं देवदेवोंसे पूजन किया जाता हूं दुर्वासा ऋषि के शापसे लक्ष्मीहीन मूढ़ ॥ ९ ॥

युवनाश्वसुतो धीमान् सूर्य्यवंशविवर्द्धनः ।
मांधातानामविख्यातस्तत्रैवतप्तवांस्तपः ॥१०॥

सूर्यवंशको बढ़ाने वाला युवनाश्व का पुत्र बुद्धिमान मांधाता नाम विख्यात था और उसने वहीं तप किया ॥ १० ॥

ततः पूर्वं योजनार्द्धमानेन त्रयसंस्थिते । सरस्वती नदीतीरे सगरस्याश्रमः शुभः ॥ ११ ॥

मांधातृ क्षेत्र से तीन योजन पूर्व सरस्वती नदी के किनारे राजा सगर का आश्रम (तपस्थल) है ॥ ११ ॥

तस्मार्द्धे पश्चिमे भागे नाम्नागोस्थलकंस्मृतम् । तत्राऽहं सर्वदा देवि निवसामित्वयासह॥१२॥

और राजा सगर के तपस्थल में पश्चिम की ओर गोस्थल नामक क्षेत्र विख्यात है हे देवि ! उस स्थान में मैं तुमारे साथ सदा निवास करता हूं ॥ १२ ॥

नाम्ना पश्वीश्वरः ख्यातो भक्तानां प्रीतिवर्द्धनः । त्रिशूलं मामकं तत्र चिह्नमाश्चर्यरूपकम् ॥१३॥

हे पार्वति ! भक्तों की प्रीति बढ़ाने वाला मैं वहां पश्वीश्वर नाम से विख्यात हूं वहां आश्चर्य रूप त्रिशूल का चिन्ह है ॥ १३ ॥

ओजसा चेच्चाल्यते तन्न हि कम्पति कर्हिचित् ।
कनिष्ठया तु यत्स्पृष्टं भक्त्या तत्कंपते मुहुः १४

जोकि बलपूर्वक हिलाने से किसी प्रकार भी नहीं हिलता और भक्तिपूर्वक कनिष्ठ अंगुली मात्र से स्पर्श करने से बारं बार हिलता है यही आश्चर्य है ॥ १४ ॥

यत्राऽहं वृषभारूढो गतः कैलासमुत्तमम् ।
गोस्थलं तु ततः ख्यातं सर्वपापप्रणाशनम् १५

यहां से मैं बैलपर चढ़ कर कैलाश पर्वत पर गया था इस कारण इसका गोस्थल नाम विख्यात हुआ यह संपूर्ण पापों को नष्ट करता है ॥ १५ ॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखण्डे पंचकेदारमाहात्म्ये भाषा टीकायां संपूर्णविषयोनाम षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ।

पुरीबदरीनाथ वाला मार्ग ।

पुरी केदारनाथ से लौटकर (२१) मील पर वही पूर्वकथित "नालाचट्टी" है गुप्त काशी वाला मार्ग छूट जाता है "नालाचट्टी" से डेढ़ मील उतराई उतर कर मंदाकिनी गंगा में लोहा लकड़ी का पुल है और (३॥) तीन मील पर चढ़ाई चढ़कर उखीमठ स्थान है ।

कालीमठमाहात्म्य ।

अथ ते कथयिष्यामि कालिकायाःसुदुर्ल्लभम् ।
माहात्म्यं परमं गोप्यं कलौ दुर्ज्जनमानुषः॥१॥
काली प्रत्यक्षफलदा पूजनात्स्मरणादपि ।
यःकश्चिन्मानवोभक्त्यापूजयेत्परमांशिवाम् २॥
स याति रुद्रभवनं यावदाभूतसंप्लवम् ।
कृते यत्प्राप्यते पुण्यं वर्षकोटिशतैरपि ॥ ३ ॥
तत्पुण्यं प्राप्यतेऽत्रैव त्रिरात्रान्नात्र संशयः ।

उखी मठ ।

यह स्थान प्राचीन तथा सुडौल रमणीक है आबादी भी अच्छी है, पो० आ० सफाखाना, धर्मशाला, आदि १०।१५ दूकानों का बाजार है, ओंकारनाथ शिवजी का मन्दिर है, उसमें ओंकारनाथ शिवलिंग है और अनेक देवमूर्त्तियां हैं । बदरीनाथ, ऊषा, अनिरुद्ध की तथा चित्ररेखा, शिवलिंगादिक अनेक प्राचीन मूर्तियां हैं रावल मंदिर केदारनाथजी भी यहीं निवास करते हैं ।

उखीमठसे यात्रालाइन से अलाहिदा वाटिपा (पगडंडी) से करीव (१२) मील के लगभग-द्वितीय केदार मध्यमेश्वरजी का मंदिर है इसी मार्ग के अन्तर्गत श्री काली माईजी के भी दर्शन होते हैं " कालीमठ । "

तिलधेनुं च यो दद्याद्ब्राह्मणे वेदपारगे ॥ ४ ॥
ससागरवनद्वीपा दत्ता भवति मेदिनी ।
कोटिसूर्य्यप्रतीकाशैर्विमानैः सर्वकामिकैः ॥५॥
मोदते सुचिरं कालमक्षयं कृतशासनम् ।
पक्षिणोमहिषाञ्छागान्मृगान्दिव्यान्हि योददेत्
सतुगन्धर्वगीतिःसन् विमानैर्भास्वरप्रभैः ॥ ६ ॥

अब हम तुमारे प्रति कालिका देवी का परम गुप्त माहात्म्य वर्णन करते हैं। यह माहात्म्य कलियुग में दुर्जन मनुष्यों के सकाश से अत्यन्त छिपाके रखना चाहिये ॥१॥ पूजन अथवा केवल स्मरण करने ही से देवी प्रत्यक्ष होती है अतएव जो मनुष्य भक्ति भावपूर्वक भगवती का पूजन करता है वह प्रलय पर्यन्त रुद्रलोक में निवास करता है ॥ २ ॥ सैकड़ों करोड़ो वर्ष तप करने से जिस पुण्य का फल होता है वही पुण्य यहां तीन रात्रि ही में निःसंदेह प्राप्त होजाता है ॥ ३ ॥ वेदज्ञानी ब्राह्मण को जो तिलधेनु दान कर देते हैं। उनके हाथ से मानो सागर वन और द्वीप द्वीपान्तर सहित भूमि का दान होजाता है ॥ ४ ॥ एवंच वही पुरुष करोड़ों सूर्य के सदृश दीप्ति-

मान विमानों में आरूढ़ हो अक्षय लोक में चिर काल पर्यन्त सुख से निवास करता है ॥ ६ ॥ और जो मनुष्य पक्षी, भैंस, बकरे, और दिव्यमृगों को भगवती के निमित्त देता है, गन्धर्वों के समान उसकी मान शक्ति हो जाती है और उज्ज्वल कान्तिमान विमानों के द्वारा॥६॥ (देवी लोक में निवास करता है)

* मध्यमेश्वर-माहात्म्य ।

मध्यमेश्वरक्षेत्रं हि गोपितं भुवनत्रये ॥ १ ॥

श्रीमध्यमेश्वर क्षेत्र त्रिलोकी में गुप्त है और परम दुर्लभ देवरक्षित है ॥ १ ॥

माषमात्रं च यत्राऽपि सुवर्णं दत्तमस्ति वै ॥
न स जन्मसहस्रेषु दारिद्रेण प्रपीड्यते ॥ २ ॥

जिसने मध्यमेश्वर क्षेत्र में १ माषभर भी सुवर्ण

मार्ग चढ़ाई उतराई का है यहां पर एक धर्मशाला भी है किन्तु भोजन सामग्री उखीमठ से ले जाना चाहिये फिर वापिस उखीमठ को आना पड़ेगा ।

* आवश्यक सूचना ।

पंचकेदारमाहात्म्य पहिले लिख आये यहां पर पिंडदानादिक का माहात्म्य आवश्यक था सो लिख दिया ।

दान करलिया तो फिर वह हजारों जन्मों तक दारिद्र्य से पीडित नहीं होता हैं ॥ २ ॥

पिंडदानस्य माहात्म्यं पितॄणामत्र पार्वति ।
शृणु पापहरं पुण्यं तथा वै जलदानतः ॥ ३ ॥

हे गिरिनंदिनी ! इस क्षेत्र में पितरों के पिंडदान और जलतर्पण के पवित्र पापहारी माहात्म्य को तुम सुनो॥३॥

शतवंश्याः पराःपूर्वे शतवंश्या महेश्वरि ।
मातृवंश्या शतं चैव तथाऽश्वशुरवंशकाः ॥४॥
तारिताः पितरस्तर्हि घोरात्संसारसागरात् ।
यैरत्र पिंडदानाद्याः क्रियादिविकृताः प्रिये॥५॥

अयि प्रिये देवि ! जिन्होंने इस क्षेत्र में पिंडदानादि क्रिया की है उन्होंने १०० शत पुरुष पहिले के सौ पुरुष पीछे के सौ मातृवंश के और श्वशुरवंश के–सब पितर इस घोर संसारसागर (आवागमन) से पार लगादिये (मुक्तकरदिये) ॥ ४–५ ॥

केदारेश इति ख्यातस्त्रिषु लोकेषु मुक्तिदः ।
अधोमार्गेण देवेशि सन्मुखं तु महालये॥६॥

आगतं मुक्तिदं लोके ये स्युर्दर्शनकांक्षिणः ।
ते मुक्ताःसर्वपापेभ्यो ज्ञानकंचुकसंवृताः ॥ ७ ॥

मुक्तिका देनेवाला तीनों लोक में प्रसिद्ध वह केदार-नाथ करके प्रसिद्ध है, हे देवेशि ! पाताल मार्ग से मेरा मुख तो रुद्रनाथ में निकला जो मुक्ति का देनेवाला है लोक में जो उसके दर्शन की इच्छा करते हैं वे सब पापों से मुक्त होकर ज्ञान कवच से वेष्टित भये हुए मुक्त ही हैं ॥ ७-८ ॥

लीना मदीये देहे तु भविष्यन्त्येव मानवाः ।

वे रुद्रनाथ के दर्शन करने वाले मनुष्य अवश्य ही मेरे देह में लीन होजायेंगे ।

* गोपेश्वर-महात्म्य ।

तस्माद्वै पश्चिमे भागे नाम्ना गोस्थलकं स्मृतम् ।

मंडल चट्टी ।

पूर्वकथित से—गोपेश्वर (६) मील पर है ।

* गोपेश्वर ।

यहां पर गोपेश्वर नाम से शिवलिङ्ग विख्यात है तथा कई एक अन्य मूर्त्ति भी विराजमान हैं आश्चर्य युक्त त्रिशूल है ॥

तत्राऽहं सर्वदा देवि निवसामि त्वया सह ॥१॥

वहां से पश्चिम तरफ गोस्थल नामक तीर्थ है जिसे गोपेश्वर भी कहते हैं, हे प्रिये ! वहाँ मैं सदा तुमारे साथ निवास करता हूं ।

नाम्ना पश्वीश्वरःख्यातो भक्तानां प्रीतिवर्द्धनः ।
त्रिशूलं मामकं तत्र चिन्हमाश्चर्यकारकम् ॥ २ ॥

भक्तों की प्रीति को बढ़ाने वाला पश्वीश्वर करके प्रसिद्ध वहां पर हूं वहां मेरा त्रिशूल चिन्ह है । अत्यन्त आश्चर्यकारक है ॥ २ ॥

ओजसो चेच्चाल्यते तन्न हि कम्पति कर्हिचित् ।
कनिष्ठया तु यत्स्पृष्टं भक्त्या तत्कम्पते मुहुः॥३॥

उस त्रिशूल को अब कोई बड़े जोर से हिलावे तो वह कभी हिलता नहीं है यदि भक्तिपूर्वक कानी अंगुली से स्पर्श करे तो बार २ वह त्रिशूल कम्पित होजाता है ॥ ३ ॥

अन्यच्च संम्प्रवक्ष्यामि चिन्हं तत्र सुरेश्वरि ॥
एकस्तत्र पुष्पवृक्षोऽकालेऽपि पुष्पितः सदा॥४॥

हे देवेशि ! वहां पर एक चिन्ह मैं कहता हूं वहां एक कुंज पुष्प का वृक्ष है जो असमयों में भी सदा फूला हुआ रहता है ॥ ४ ॥

अत्र वै पञ्चरात्रं यो जपं कुर्य्यात्समाहितः ।
स सिद्धिं महतीं याति देवरापि दुरासदाम ॥५॥

इस गोपेश्वर क्षेत्र में जो सावधान होकर पांचरात जप करे तो वह मनुष्य देवदुष्प्राप्य सिद्धि को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

आवश्यक सूचना ।

त्रिशूल की महिमा अकथनीय है क्योंकर यह त्रिशूल जो जोर से हिलाना चाहो तो नहीं हिलता । और भक्ति से कानी अंगुली ही से हिल जाता है, कुञ्ज पुष्प बारहो महिना पुष्प देता है, धन्य है इस धाम को जिस धाम में ऐसे आश्चर्ययुक्त दृश्य हैं ।

गोपेश्वर । से (३) मील पर चमोली (लालसांगा) है अलकनंदा का दर्शन है ।

उखीमठ से-(३) मील पर कंथा नामक चट्टी है ५ । ७ दूकानें हैं मार्ग सीधा है यहां से (३) मील पर ग्वालियबिगड़ मुकाम है-५ । ७ दूकानें हैं-ग्वा० से-(१) मी० पर-दैडा च० मार्ग चढ़ाई का है, ५ । ६ दु० है । दै० से-पोथी वासा (२) मील है, १० । १५ दू० बाजार है । मार्ग चढ़ाई का है । पो० से दोगड़ भीटा (१) मील है

तुंगनाथ-माहात्म्य ।

तुंगनाथं शुभक्षेत्रं पापघ्नं सर्वकामदम् ।
यद्दृष्ट्वा सर्वपापेभ्यो विमुक्तो लभते शिवम् ॥१॥

सर्व पापों को हरनेवाला सर्व मनोवांछित फलोंको देनेवाला तुंगनाथ शुभ तीर्थ है जिसके दर्शन करके मनुष्य सब पापों से विनिर्मुक्त होकर शिवसायुज्य मुक्ति पाता है ॥१॥

जलमात्रं हि देवेशि मम लिंगे प्रदास्यति ।
यावत्यः कणिकास्तत्र जलस्य लिंगकोपरि ॥२॥
तावद्वर्षसहस्राणि शिवलोके महीयते ॥

हे देविशि पार्वति ! मेरे लिंग के ऊपर जो जलमात्र

---

२ । ३ दू० हैं मार्ग चढ़ाई का है, दोगड़े से-वणिया कुंड (१) मी० हैं ५ । ६ । दू० हैं धीरे २ की चढ़ाई है । यहां से (१) मी० पर चोपता, है रमणीक तथा धर्मशालादिक दूकानें हैं उखीमठ से कुछ दूर चलकर आपको चढ़ाई और सघन जंगल मिला है-या मिलेगा अब सिवाय तुंगनाथ की (२) मील चढ़ाई और वापिस (२) मील उतराई है, और अब अच्छा मार्ग रमणीक है । चोपता से यात्रा लाईन छोड़कर (२) मील ऊंचे शृंग पर श्रीतुंगनाथ जी तथा अन्य भी कुई मन्दिर हैं ।

भी चढ़ाता है जितने जलकण (बूंद) तुंगनाथ लिंग के ऊपर पड़ेंगे ॥ २ ॥ उतने हजार वर्ष तक वह मनुष्य शिवलोक में पूजित रहता (आनन्द करता) है ॥

नैवेद्यं विविधं यो वै अर्पयेन्मम भक्तितः ।
कदर्य्यान्नं न वै भुंक्ते तथा जन्मसहस्रकम् ॥३॥

जो मनुष्य विविध प्रकार के नैवेद्यों को मेरे लिए भक्तिपूर्वक समर्पण करता है वह हजारों जन्मों तक कदन्न (तुच्छनिरस अन्न) भोजन नहीं करता है अर्थात् उसको उत्तम २ भोज्यादिक प्राप्त होता है ॥ ३ ॥

दक्षिणां मम यो दद्यात्सम्पूज्य भक्तितत्परः ।
न दारिद्र्यमवाप्नोति नरो जन्मसहस्रकम् ॥४॥

और जो मेरी पूजा करके भक्ति तत्पर होकर मेरे

---

*तुंगनाथ से (२) मील की उतराई लेकर यात्रा लाइन की आम सड़क पर भीम वडचार चट्टी जो चोंप ताप (१॥) मील पर है यहां पर ३ । ४ दूकानें हैं भीम से-(२॥) मी० पांगर वासा है ८ । १० दूकानें हैं १ धर्मशाला भी है-पां० से (३) मी० मंडल च० है मंडलचट्टी से (२) मील आगे से चतुर्थ केदार रुद्रनाथजी की घटिया (पगडंडी) से मार्ग गया है बीच में (३) मील पर [illegible]

लिए दक्षिणा देता है वह मनुष्य हजारों जन्मों तक दारिद्र्य को (निर्धनता को) नहीं प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

रुद्रनाथ-माहात्म्य ।

ईश्वर उवाच । शृणु देवि प्रवक्ष्यामि चतुर्थं वै हिमालयम् । रुद्रालयमिति ख्यातं तीर्थानां तीर्थमुत्तमम् ॥ १ ॥

श्रीमहादेव जी बोले कि, हे देवि ! अब मैं चौथे हिमालय को कहता हूं तुम सुनो जो रुद्रालय करके प्रसिद्ध तीर्थों में परमोत्तम तीर्थ है ॥ १ ॥

जरामरणजन्माद्यैर्बाध्यन्ते नैव मानवाः ॥
तद्वै तीर्थमयं स्थानं यत्राऽहं संस्थितः पुमान् ॥२॥

जो मनुष्य रुद्रालय की यात्रा करते हैं वे जन्म मरण जरा (बुढ़ापा) दिक दुःखों से पीड़ित नहीं होते हैं,

---

वति " अनसूया " जी का सुविशाल मंदिर है यहां से करीब (९) मील श्रीरुद्रनाथजी की गुहा (गुफा) मार्ग चढ़ाई का सघन वन है यहां वैतरणी नदी समीप है पिंड तर्पण करना आवश्यक है रुद्रनाथ से दुसरे मार्ग से (७) मील गोपेश्वर है ।

क्योंकि वह सर्वतीर्थमय स्थान है जहां परम पुरुष मैं सर्वदा स्थित हूं ॥ २ ॥

तत्र वैतरणी श्रेष्ठा पितॄणां तारिणी सरित् ॥

वहां (रुद्रनाथ क्षेत्र में) पितरों का उद्धार करनेवाली श्रेष्ठ वैतरणी नदी है ॥

तत्र पिंडप्रदानेन गयाकोटिफलं लभेत् ।
रम्यं शिवमुखं तत्र सर्वाभरणभूषितम् ॥ ३ ॥

उस वैतरणी में पिंड प्रदान करने से कोटि गया श्राद्ध तुल्य फल लाभ होता है और वहां मनोहर सर्व भूषणालङ्कृत शिवजी का मुख है ॥ ३ ॥

एतस्य दर्शनादेव मुक्तो भवति मानवः
पूर्वं हि पाण्डवैः सर्वैर्गोत्रहत्यासमन्वितैः ॥
पापक्षयाय देवेशोऽन्वेषितो बहुधा भृशम् ।
दृष्ट्वा केदारके देशे तान्दृष्ट्वाऽहं जगाम ह॥४॥

इस रुद्रमुख के दर्शन मात्र से ही मनुष्य मुक्त हो जाता है हे प्रिये ! पहिले समय में (महाभारतानन्तर) सब पांडवों ने गोत्रादिहत्याके पाप क्षय होने के लिये

श्री शिवजी को बहुत प्रकार अत्यन्त ढूंढा ॥ ४ ॥

देशे दूरतरं तेऽपि मत्पृष्ठे च समाययुः ।
आगतान्निकटं दृष्ट्वा प्राविशं धरणीं तदा॥५॥

तब उन्होंने मुझे केदार देश में देखा उनको देख कर मैं दूर भागा अति दूर चले जाने पर भी वे पांडव मेरे पीछे २ चले आये उनको अपने समीप आये हुए देखकर मैं पृथ्वी में घुसगया ॥ ५ ॥

तथाविधं तु मां दृष्ट्वा पृष्ठदेशे समागताः ।
केदारखंडके देशे परपर्शुः पृष्ठकं शुभम् ॥६॥

पृथ्वी में घुसते हुए मुझे देखकर मेरे पीछेसे आये-

चमोली ।

यहां पर तारघर, पो० सरकारी दवाखाना, डिपुटी कलक्टर साहब की कचेहरी आदि मौजूद हैं दूकानें भी हैं । श्रीबदरीनाथजी से लौट कर यहीं से पुलपार होकर मेहल चौरी रेलवे स्टेशन रामनगर आदि को जाते हैं चमोली से (२) मील पर मठचट्टी है आरामस्थान ५ । ४ दूकानें यहां से (२) मील पर बौंला नाम से ५ । ४ छप्परे हैं आगे (२) मील पर सिया चट्टी है ५ । ७ दूकाने हैं यहां से (४) मील पर पीपल कोटी बाजार है बीच में हाट पुल के समीप "बिल्वेश्वर महादेव" बिल्व वृक्ष भी है ।

हुवे पांडवों ने केदार प्रदेश में मेरे शुभ पृष्ठको (सुन्दर पीठको) स्पर्श करलिया ॥ ६ ॥

स्पर्शमात्रेण ते सर्वे विमुक्ता गोत्रहत्यया ।
पृष्ठभागं तु तत्रैव स्थितमद्याऽपि पार्वति ॥७॥

स्पर्शमात्र करने से ही वे सब गोत्रहत्या से छूट गये (अर्थात केदार पीठ को स्पर्श करने का ऐसा माहत्म्य है) हे प्रिये गिरिनन्दिनि ! मेरा वह पृष्ठ भाग अद्यावधि वहीं स्थित है ॥ ७ ॥

गरुड़गंगा-माहात्म्य ।

ततो गरुडगंगायां गंगाया दक्षिणे तटे । स्नात्वा देवं समभ्यर्च्य पक्षीशं विष्णुरूपिणम् ॥ १ ॥
गरुडगंगा शिलाभंगो यत्र तिष्ठति मत्प्रिये ।
न तत्र सर्पजभयं विद्यते न तथा विषात् ॥ २ ॥

पीपलकोटी ।

अच्छी ऊँची जगह पर रमणीक स्थान तथा पक्का बाजार, १५।२० दुकानें तथा महाजनी कारोबार भी होता है। पोष्टाफीस आदि सब

उससे अलकनंदा के दक्षिण तट पर गरुड़गंगा में स्नान करके विष्णुरूपी गरुडदेव का अर्चन करे ॥ १ ॥ हे प्रिये ! जहां गरुड़गंगा का शिलाभंग (शिला का टुकड़ा) है वहां सर्प और विषका भय नहीं होता ॥ २ ॥

ततो गणेशनद्यां वै स्नात्वा पापक्षयो भवेत् ।

तदनन्तर गणेशगंगा में स्नान करके निःसंदेह पाप का क्षय होता है ।

मौजूद है मार्ग (१) मी० चढाई का है पीपलकोटी से (४) मील गरुड़गंगा है मार्ग सीधा है ।

गरुड़गंगा से (२) मील पर टंगणी चट्टी है कुछ चढ़ाई लेकर सीधा है-टंगणीसे (३) मील पर पाताल गंगा है यहां पर गणेशजी का दर्शन ५ । ४ चट्टी हैं मार्ग सीधा है । पातालगंगा से (२) मील पर गुलाबकोटी है कुछ चढ़ाई है गुलाबकोटी से (३) मील पर कुम्हार चट्टी है मार्ग (१) मील चढाई है ।

कुम्हारचट्टी ।

यहां पर १५ । १६ दूकाने हैं धर्मशाला भी है । इस ही स्थान से पंचमकेदार कल्पेश्वरजी को सड़क गई है यहां से (५) मील कुछ चढ़ाई और देवदारु का सघन जंगल है ध्यान बदरी भी यहीं हैं वापिस फिर कुम्हार चट्टी को आना पड़ेगा ।
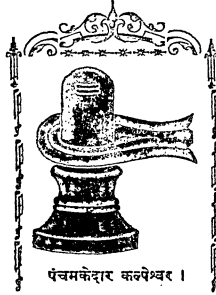
पंचमकेदार कल्पेश्वर।

पञ्चमकेदार कल्पेश्वर माहात्म्य *

ईश्वर उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि पंचमं वै ममालयम्॥
कल्पस्थलमिति ख्यातं सर्वपापप्रणाशनम्॥१॥

हे देवि! अब तुम मेरे पञ्चम स्थान को सुनो मैं कहता हूं जो मेरा स्थान सब पापों को नाश करनेवाला

" कल्पेश्वर " कर के प्रसिद्ध है ॥ १ ॥

यत्राऽहं देवदेवेन ह्यर्चितः पर्वतात्मजे । मूढो दुर्वाससा शप्तो नष्टलक्ष्मीर्हतप्रभः ॥ २ ॥

हे गिरिनन्दिनि ! जब दुर्वासा मुनि के शाप से देवेन्द्र की लक्ष्मी नष्ट होगई तब घबड़ाये हुवे तेजरहित इन्द्र ने जिस कल्प क्षेत्र में मेरी पूजा की थी ॥ २ ॥

आराध्य मां त्वया युक्तं प्राप्तवान् कल्पपादपम् । अहं च देवदेवेशि कल्पेशत्वं समागतः ॥ ३ ॥

तब तुम्हारे सहित मेरी आराधना करके इन्द्र ने कल्पवृक्ष को पाया इसी कारण हे देवि ! मैं कल्पेश भाव को प्राप्त हुआ ॥ ३ ॥

पार्वत्युवाच ।

पुरा ह्यत्र महेशान यानि तीर्थानि चाभवन् । तानि मे वद भक्ताय लोकानां हितकाम्यया ४

श्रीपार्वति बोली कि हे महेशजी पहिले आप जो २

तीर्थ उस कल्पक्षेत्र में हुए हैं उन सब को सर्वलोक हितार्थ हे प्रभो ! अपनी भक्त मेरे लिए कहो ॥ ४ ॥

ईश्वर उवाच ।

शृणु देवि वरारोहे तीर्थानि प्रवराणि वै ।
समासेन प्रवक्ष्यामि शिवलोकप्रदानि च ॥५॥

श्रीमहादेवजी बोले कि हे सुन्दरि ! शिवलोक के देने वाले उन तीर्थों को संक्षेप से कहता हूं तुम सावधान होकर सुनो ॥ ५ ॥

मल्लिङ्गदक्षिणे पार्श्वे कपिलं लिंगमुत्तमम् ।
यस्य दर्शनमात्रेण मम लोके महीयते ॥ ६ ॥

हे देवि ! मेरे लिंग के दहिने बगल परमोत्तम कपिल लिंग है जिसके दर्शन मात्र से ही मेरे शिवलोक में मनुष्य पूजित होता है ॥ ६ ॥

तदधो गिरिकन्ये वै नदी हैरण्वती मता ।
तस्या वै दक्षिणे तीरे भृङ्गीश्वर इतीरितः ॥७॥

हे गिरिनन्दिनि ! उस कपिल लिंग के नीचे हिरण्व

ली नदी कही जाती है उन के दक्षिण तट पर भृंगीश्वर महादेव हैं ॥ ७ ॥

यस्य दर्शनमात्रेण कल्पं शिवपुरे वसेत् ।
इदं क्षेत्रं महेशानि क्रोशद्वयसमायतम् ॥ ९ ॥

जिस भृंगीश्वर के दर्शन मात्र से एक कल्पपर्यन्त शिवपुर में निवास होता है हे महेशि ! यह क्षेत्र दो कोस चौड़ा है ॥ ९ ॥

अग्नितीर्थे नरः स्नात्वा सर्वपापक्षयो भवेत् ।
यत्र तत्र स्थले देवि शिवलिङ्गान्यनेकशः॥१०॥

अग्नि तीर्थ में मनुष्य स्नान करै तो संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं इस क्षेत्र में जहां तहां अनेक शिव लिंग हैं ॥ १० ॥

पंचकेदारमाहात्म्यं शृणुयाद्यः समाहितः ।
सर्वतीर्थेषु स स्नातः पूजिताःसकलाः सुराः११

हे प्रिये ! जो मनुष्य सावधान चित्त से पंचकेदार माहात्म्य को सुनता है उसने सब तीर्थों में स्नान कर लिया और सब देवताओं को पूजलिया अर्थात सर्व तीर्थ-

यात्रादिक देव पूजनादिक का पुण्य उसे मिल जाता है॥११॥
इति श्रीस्कान्दे केदारखंडे महापुराणान्तर्गत-
पंचकेदारमाहात्म्ये समाप्तिर्नाम
त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

कल्पेश्वरजी के दर्शन करके (५) मील कुम्हार चट्टी वापिस आवे-कुम्हारचट्टी-से आगे (२॥) मील पर पैनांग्राम खनोटी है ।

वृद्धबदरी ।

जिस प्रकार पञ्चकेदार हैं ऐसे ही पञ्चबदरी भी माने गये हैं उनही में से एक बदरी नाम से विष्णु भगवान की मूर्ति और मंदिर है यहां बस्ती ब्राह्मणों की है पूजा यहां की दक्षिणी ब्राह्मण करते हैं दर्शन करके आधा मील वापिस खनोटी चट्टी में आना पड़ता है । यहीं से बदरीश पंचरत्न का पाठ करना आवश्यक है; इस वास्ते बदरीश पंचरत्न लिखते हैं । पढ़िए ॥

अथ बदरीपंचरत्न।

तुहिन गिरिमध परमसुखप्रदमाश्रमं अति शोभितम्॥ जहँ वसत सब सुर मुकुटमणि श्रीबद्रिनाथ जगत्प्रभुम्॥ १॥ बहत सुरसरि धार निर्मल अघसमूहनिकन्दनम्॥ सिद्ध

मुनिजन सुर करत जैजै बद्रिनाथजगत्प्रभु-
म् ॥ २ ॥ चल मन्द सुगन्ध वायु खिल पुष्प
सुशोभनम् ॥ शक्ति शेष महेश सुमिरत बद्रि-
नाथ जगत्प्रभुम् ॥ ३ ॥ वदत सनकादिकमुनि
वेदवाक्य निरन्तरम् । ब्रह्म नारद करतस्तुति
बद्रिनाथ जगत्प्रभुम् ॥४॥ सकल जगदाधार
व्यापक ब्रह्म अखिल अनामयम् ॥ जगत-
व्याप्य अपारमहिमा बद्रिनाथ जगत्प्रभुम्
॥ ५ ॥ इन्द्रउद्धवचन्द्ररविगंधर्व सेवततत्प
रम् । करत कमला सतत सेवा बद्रिनाथ
जगत्प्रभुम् ॥ ६ ॥ योग साधत योग
योग निशदिन ज्योति निरखत सन्ततम् ।
भक्तजनपर कृपाकीजे बद्रिनाथजगत्प्र० ॥ ७ ॥
अज अनामय ईश गोद्विजपालकं सुर वन्दि-
तम् ॥ विश्वपालक असुरघातक बद्रिनाथ
जगत्प्रभुम् ॥ ८ ॥ जपत निशिदिन नाम तव

जो लहत भक्तिसुजीवनम् ॥ मिश्र पर नित
करहु कृपा बद्रिनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ९ ॥

इति श्रीस्कान्दे बदरीनारायणमाहात्म्ये स्तुति
निरूपणो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

नृसिंह बदरी

जनोटी से (१) मील पर झड़कुला चट्टी है २ दूकाने यहां से (२) मील पर स्योंधार चट्टी है ३।४ दूकानें हैं यहां से (१) मील पर ज्योतिर्मठ (जोशीमठ) है ।

जोशीमठ नृसिंहबदरी माहात्म्य ।

ततःक्रोशद्वये पुण्यं ज्योतिर्धाम शुभप्रदम् ॥
नृसिंहरूपी भगवान् यत्रास्ते मुक्तिदायकः ॥१॥

उस से दो कोस पर परम पवित्र और शुभदायक ज्योतिर्धाम (जोशीमठ) है जहां मुक्ति प्रदान करनेवाले नृसिंहरूपी भगवान् विराजमान हैं ॥ १ ॥

यत्र प्रह्लादयोगीन्द्रो हरिभक्तिपरायणः ॥
एतत्तीर्थसमं नास्ति विष्णोः प्रीतिकरं परम् ॥२॥
एतत्पीठसमं नास्ति सिद्धिदं सर्वकामदम् ॥
यदस्मिन् क्रियते कर्म तत्सर्वं कोटिसंख्यकम् ॥३॥

आवश्यक सूचना ।

यह पुरी यात्रा लाईन में अच्छी और सुसज्जित है यहां पर नृसिंहजी की मूर्ति दर्शनीय तथा आश्चर्यदायक भी है इनके नग्न दर्शन प्रायः आवश्यकीय मनुष्य को ही मिलता है इनकी एक हाथ की बांह बालवत बारीक है कहते हैं की जब इनकी बांह अदृश्य होगी तब सृष्टि प्रलय होगी । वासुदेवजी की मूर्ति सुविशाल मनुष्य से भी कुछ ऊंची है, परिक्रमा विष्णु पंचायतन के दर्शन सूर्य आदि है नवदुर्गा पूर्ण पीठ हैं । थोड़ी दूर पर यहां से ज्योतेश्वर महादेव

इस पीठ के समान सिद्धि और सकल इच्छित पदार्थों का देनेवाला दूसरा तीर्थ नहीं है इस तीर्थ में जो कर्म किया जाता है वह सब कोटिगुण फल देनेवाला होता है ॥ ३ ॥

विष्णुप्रयाग माहात्म्य *

विष्णुप्रयागके स्नात्वा विष्णुलोक महीयते ।
विष्णुप्रयागतो देवि ईशाने बदरीपरा ॥ १ ॥

के दर्शन हैं कल्पवृक्षवत् एक भारी कदम्ब (कैमा) का वृक्ष देखने योग्य तथा साधु महात्मा यहां पर निवास करते हैं बाग बगीचा फल फूल झरनादि से सुसज्जित दृश्य है भक्तवत्सल का भी मंदिर यहां पर है । यहां से एक मार्ग मानतलाव (मानसरोवर) कैलास यात्रा को गया है इसी मार्ग में भविष्य बदरी तप्तकुंडादिक के दर्शन पूर्ण पीठ लाताथी माइ नन्दाजी के भी दर्शन हैं जिस कैलास यात्रा मार्ग को मील संख्यादिक मुकाम अब पूर्ण परिचय से लिखे जायंगे ।

* विष्णुप्रयाग ।

जोशीमठ से १॥) मील उतराई पर धौली संगम धौली (विष्णु) गंगा नीति के उत्तरी हिस्से से निकल कर (५०) मील पर पैन खंडा में बहकर विष्णु प्रयाग में अलकनन्दा से संगम हुआ (मिल गई) है

इस प्रयाग में स्नान करनेवालों को धोका है लोटे से स्नानादिक कर्म करके विष्णु भगवान के दर्शन करें यहां चट्टान में ३ । ४ दुकान तथा धर्मशाला भी हैं ।

विष्णुप्रयाग में स्नान करने से मनुष्य विष्णुलोक में सुख पाता है हे देवि ! विष्णुप्रयाग से ईशान कोण की ओर सुन्दर बदरी वन है ॥ १ ॥

धवलायां तु गंगायां स्नानं चाभिमतं यतः ।
इदं विष्णुप्रयागाख्यं द्वारं विष्णोः प्रकीर्तितम् ॥२॥

यहां धवलागंगा में स्नान करना मुख्य है यह विष्णु प्रयाग के नाम से विख्यात है ॥ २ ॥

तत्र स्नात्वा जपं कृत्वा नारायणपरायणः ॥
"नमोनारायणायेति" जपेत्प्रणवपूर्वकम् ॥ ३ ॥

वहां स्नान और जप करके नारायण में मनको लगाता हुआ ओंकार पहिले बोलकर अर्थात् ॐ नमो नारायणाय" यथा शक्ति इस मंत्र का जपआरंभ करे ॥३॥

ततो गच्छेन्महाभाग बदर्य्याश्रममंडले ।
जयंच विजयं चैव संपूज्य द्वारपालकौ ॥ ४ ॥

हे महाभाग वहां बदर्य्याश्रम में गमन करै और सब से प्रथम "जय विजय" नामक द्वारपालोंका पूजन करै ॥४॥

अतः परं परं स्थानं देवानामपि दुर्लभम् ।
सूक्ष्मक्षेत्रमिदं ख्यातं सत्यं सत्यं न संशयः ५

देवताओं को भी दुर्लभ इससे आगे परम स्थान (बदर्य्याश्रम) है यह सूक्ष्मक्षेत्र है यह सत्य है इसमें संदेह नहीं ॥ ५ ॥

यावद्विष्णुर्महीपृष्ठे यावद्गंगा महेश्वरि ।
तावद्वै बदरी गम्या दुर्गम्या च ततः परम् ॥ ६ ॥

हे महेश्वरी ! जबतक भूमण्डलपर विष्णु भगवान् की महिमा और गंगा है तबतक ही भक्ति में भरे भक्त बदरी आश्रम में पहुंचसकते हैं, आगे को पहुँचना कठिन होजायगा ॥ ६ ॥

आवश्यक सूचना ।

पद्वीश्वर भगवान, के दर्शन आदि १० कुंड यहां पर हैं विष्णु प्रयाग से (१) मीलपर बलदोडाचट्टी और १ धर्मशाला है बल० से (३॥) मीलपर घाट चट्टी है ५ । ७ दूकानें हैं इससे (१) मीलपर एक उत्तम झरना नदी सहित दूकान है (१) मी० पांडुकेश्वर है

ध्यानबदरी पांडुकेश्वर

पांडुकेश्वर (योगबदरी) मा० *

आवश्यक सूचना । *

यहांपर योगध्यानी तथा विष्णु का मंदिर है (२)

महाराजा पाण्डु ने पूर्वकाल में यहां मृगरूपी मुनि को बाण मार के उनसे शाप पाकरके दुःखी होकर तपस्यार्थ इंद्रद्युम्न सरोवर में पहुंचकर हेमकूट को छोड़ शतशृंग कैलासपर्वत पर पाण्डु ने कुंती माद्री

पाण्डुना च तपस्तप्तं शप्तेन मृगरूपिणा ॥
मुनिना परकोपेन पांडुस्थानं ततस्स्मृतम् ॥१॥

परम कोपमें भरे हुवे मुनि के शापको प्राप्त हुवे

धर्मशाला ११। २० दूकानें तथा मकान हैं (११) मी० यहां से पुरी है। सहित कठिन तपस्या की और यहीं मंत्रशक्ति से धर्म और इन्द्रादिक देवतों का आवाहन करके कुन्ती ने युधिष्ठिरादिक पांचों पुत्रों को उत्पन्न किया। अन्त में महाराज पाण्डु ने शाप से विस्मृत हो माद्री से भोग किया और शाप के बल से यहीं उनकी मृत्यु हुई।

पांडुकेश्वर से-(१) मील पर शेषधारा है यहां शेषजी की मूर्त्ति है यहां पर सदावर्त आदि दूकानभी है। शेषधारा से-(२॥) मील पर लांवगड़ चट्टी है ४। ५ दूकान और कमली महाराज की धर्मशाला सदावर्त है लांवगडसे-(४) मीलपर हनुमान चट्टी (वैखानसतीर्थ) है यहांपर ५। ४ दूकाने १ धर्मशाला सदावर्त यहां से पुरीबद्रिनाथ (४॥ मी० है मार्ग चढ़ाई का भी है।

राजा पाण्डुने तप कियाथा तबसे यह स्थान पाण्डुकेश्वर कहाया है ॥ १ ॥

प्रसन्नो भगवानाह पांडुं परमसुन्दरम् ॥
भोभो पांडो तव क्षेत्रे धर्मादीनां सुताःकिल ॥२॥
भविष्यन्ति सुतात्मानः सर्वे शास्त्रार्थपारगाः ।
इति श्रुत्वा वचस्तस्य विष्णोश्च परमात्मनः ॥३॥

तबसे प्रसन्न हुवे भगवान ने परम सुन्दर राजा पाण्डु से कहा कि-हे राजन् पाण्डो ! तुम्हारे स्त्री रूपी क्षेत्र में निःसंदेह धर्म आदि के वरदान से पुत्र होंगे वह सब आत्मवान और शास्त्रों के तत्व के पारगामी होंगे तिन परमात्मा विष्णु के इस प्रकार वचन को सुनकर ॥ २ ॥ ३ ॥

कृतकृत्यं स्वयं मेने दर्शनादेव सुन्दरि ॥
पंधीश्वरो महादेवो भक्तानां प्रीतिवर्द्धनः ॥ ४ ॥

उनके दर्शन से ही राजाने अपने को कृतकृत्य माना और हे सुन्दरी ! तहां भक्तों की प्रसन्नता को बढ़ाने वाले पन्धीश्वर महादेव हैं ॥ ४ ॥

वैखानसतीर्थ माहात्म्य ।

ततः क्रोशद्वये देवि वैखानसमुनिस्थलम् ।
यज्ञभूमिस्तथा तत्र तेषां मुनिवरात्मनाम् ॥ १ ॥

हे देवि ! वहां से दो कोस पर वैखानस मुनियों का आश्रम है । तथा उन श्रेष्ठ मुनियों की यज्ञभूमि है ॥ १ ॥

नदीनां प्रवरा सा वै महापातकनाशिनी ।
होतृस्थाने मुनीनां तु शृणु प्रत्ययलक्षणम् ॥२॥

वह नदियों में श्रेष्ठ नदी महापातकों का नाश करने वाली है और तहां मुनियों के हवनशाला में विश्वास के लक्षण सुनो ॥ २ ॥

अद्यापि तत्प्रदेशे वै यवा दग्धास्तथा तिलाः ।
अंगाराश्चाऽपि दृश्यन्ते होतृस्थाने महात्मनाम् ३

अब भी उस स्थल में जले हुवे जौ, तिल, अंगार भी महात्माओं के हवन स्थानों में देखने में आते हैं ॥ ३ ॥

योगीश्वरभैरव माहात्म्य ।

तदूर्ध्वं पर्वते रम्ये देवगन्धर्वसेविते ।
योगीश्वर इति ख्यातो भैरवोऽतिभयङ्करः ॥ १ ॥
तमर्चयित्वा नत्वा च गच्छेत् सूक्ष्मतरे स्थले ॥
कुबेरस्य शिलां नत्वा दारिद्र्यं नोपजायते ॥ २ ॥

आवश्यक सूचना ।

यह यज्ञ राजा मरुत् ने किया था समस्त देवतागण बृहस्पति जी आदि सभी एकत्र हुवे थे आश्चर्य है अब तक यहां अंगारे, यव, तिल जहां पर लाठी से खोदो वहां पर मिलते हैं । हनुमान जी के दर्शन भी यहां पर हैं । हनुमान चट्टी से (१॥) मील पर रड़ंग पुल है। इसके पास ही योगीश्वर भैरव की मूर्ति है ।

उससे आगे देवता और गन्धर्वों से सेवित परम रमणीय पर्वत पर योगीश्वर नाम से प्रसिद्ध भयंकर भैरवजी हैं ॥ १ ॥ उनका पूजन और प्रणाम करके दरिद्रता नहीं होती तथा कुवेर शिला को प्रणाम करे ॥ २ ॥

नरनारायणौ श्रेष्ठौ पर्वतौ मुनिवन्दितौ ॥
यो नमेत्परया भक्त्या न स भूयोऽभिजायते ॥३॥

मुनियों से वन्दित नरनारायण नामक दो श्रेष्ठ पर्वतों को भक्ति पूर्वक प्रणाम करने से पुनर्जन्म नहीं होता है ॥ ३ ॥

ऋषिगंगामाहात्म्य ।

स्नात्वा ऋषीणां गंगायां धारायां वै समाहिताः ॥
पानं कुर्वन्ति ते मर्त्याः परब्रह्ममवाप्नुयुः ॥ १ ॥

जो मनुष्य सावधानी के साथ ऋषिगंगा की धारा में स्नान करके उसके जलको पीते हैं वह मनुष्य परब्रह्म को प्राप्त होते हैं ॥ १ ॥

दत्वा चाश्रमवासिभ्यो जीर्णानि वसनानि च ।
गच्छेच्छुद्धे महाक्षेत्रे श्रीमद्बदरिकाश्रमे ॥ २ ॥

आश्रम वासियोंको जीर्णवस्त्र देकर शोभायमान महाक्षेत्र पवित्र वदरिकाश्रम में जाय ॥ २ ॥

कूर्मधारा-माहात्म्य ।

आचमेत्कूर्मधारायां जलं परमपावनम् ॥
यदीच्छेत्सुतरां शुद्धिं दर्शने परमात्मनः ॥ १ ॥

यदि परम सिद्धि और परमात्माके दर्शन की इच्छा करै तो परम पावन कूर्मधारा के जलका आचमन करै ॥ १ ॥

आवश्यक कथन ।

आप अब हनुमान चट्टीही से वदरीश धाम गंधमादनपर्वत कुदरति वाग फुहारा आदिक तिरछी चढ़ाई का मार्ग अवलोकन करते २ वदरीपुरी पहुंच गये हो ।

श्रीवदरीपुरी ।

श्रीवदरीपुरी अलकनन्दाके तटपर वसी हुई है बाजार लंबा चौड़ा तथा पण्डागणोंके अच्छे २ मकानात हैं बाजार में सर्व प्रकार की वस्तु क्रयविक्रय होती हैं दवाखाना, पोष्टआफिस, तारघर, पोलीस स्टेशन, सेठ साहूकारों की ओर से एक से एक सुसज्जित धर्मशालाएं रहने के वास्ते बनी हैं । श्रीवदरीश मन्दिर का द्वार पूर्वको ओर है दहिने श्री लक्ष्मीजी का मंदिर है पास ही पाकशाला (भोगमण्डी) है बांये घंटाकर्ण, तथा हनुमानजी का सुविशाल

श्रीबद्रीनाथ
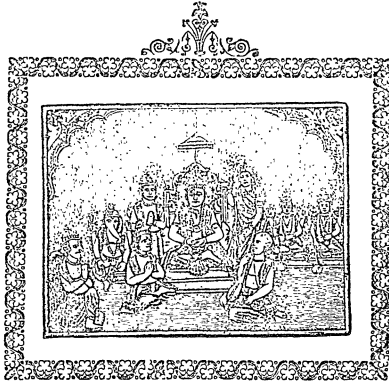
तप्तकुण्डकी उत्पत्ति ।

स्कन्द उवाच ।

कथं वैश्वानरः श्रीमान् सर्वलोकैककारणम् ॥

मूर्ति हैं, सामने गरुड़जी हैं, मंदिर तिखंडा है, सबसे भीतर सिंहासन हैं जहां बीच में स्वर्ण छत्र के नीचे जिनके किरीटपर बहुमूल्य हीरा चमकता है, वही बदरीश हैं, दहिने कुबेरजी हैं बायें नर नारायण हैं

बदरीमनुसंतस्थौ तन्मे वद महामते ॥ १ ॥

स्कन्दजीने कहा सकल लोकों की स्थिति का कारण श्रीमान् अग्नि देवता बदरी क्षेत्रमें आकर कैसे स्थित हुआ सो हे महामते ! मुझसे कहिये ॥ १ ॥

शिव उवाच ।

पुरा समाजः समभूदृषीणामूर्ध्वरेतसाम् ॥
गंगा भगवती यत्र कालिंद्या सह संगता ॥२॥

शिवजी बोले जहां यमुनाके साथ भगवती गंगा मिली है तिस प्रयाग में पूर्व कालमें तहाँ ऊर्ध्वरेता ऋषियों की सभा हुई थी ॥ २ ॥

दशाश्वमेधिकं नाम तीर्थं त्रैलोक्यदुर्लभम् ॥

सामने उद्धव, नारद, और गणेशजी हैं, मंदिर से कई एक पैड़ीयां उतर कर केदारलिङ्ग महेश्वर का मन्दिर है इसके नीचे तप्तकुण्ड गौरीकुण्ड सूर्यकुंड नृसिंहकुंड ये कुंड गरम जल के हैं नारद कुंड अलकनन्दा में नारद शिला के नीचे है पासही बीच गंगा में वाराह शिला है, नृसिंह शिला गरुड़ शिलाएँ ये पास २ में हैं और धर्म शिला मन्दिर की परिक्रमा में है यहां पर सुफल मिलता है देवप्रयाग के पण्डागण तप्तकुंड में सुफल देते हैं ऋषिगंगा के तटपर स्नान करके कूर्मधारा प्रह्लादधारा आदिक में मार्जन करके ब्रह्मकपाल में पितरों के निमित्त पिण्ड दान करे ।

तत्राबभूव भगवान् हुतभुक्प्रश्रयान्वितः ॥ ३ ॥

त्रिलोकी में दुर्लभ दशाश्वमेध नामक जो तीर्थ है तहाँ भगवान् अग्निदेव विनय और नम्रताके साथ ॥ ३ ॥

ऋषीणामग्रतः स्थित्वा प्रष्टुं समुपचक्रमे ॥
कियन्मानं तु तत्क्षेत्रं किं फलं तत्र जायते॥४॥

ऋषियों के आगे स्थित होकर प्रश्न करने लगे कि बदरीक्षेत्र कितने योजन प्रमाण में है और तहाँ क्या फल प्राप्त होता है ॥ ४ ॥

अग्निरुवाच ।

दृष्टादृष्टैकदृग्ज्ञाना भवंतो ब्रह्मवित्तमाः ॥
दीनार्थकरुणापूर्णहृदया हि दयालवः ॥ ५ ॥

अग्निने कहा-जिनको देखे और अनदेखे पदार्थों का ज्ञान एकही दृष्टिसे होता है उन ब्रह्मज्ञानियों में भी तुम श्रेष्ठ हो तुम दयालु हो इसीसे दुःखितों के निमित्त आपका हृदय करुणा से भरजाता है ॥ ५ ॥

सर्वभक्षसमुद्भूतपातकालिप्ततेजसः ॥
कथं स्यान्निरयान्मोक्षो मम ब्रह्मविदुत्तमाः ॥६॥

हे ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठो ! मेरा तेज सब कुछ भक्षण करने से उत्पन्न हुए पातकसे लिप्तरहा है सो इस नरक समान पातक से मेरी मुक्ति कैसे हो ॥ ६ ॥

सर्वेषामृषिवर्य्याणामाज्ञया बादरायणः ॥
गंगांभसि समाप्लुत्य वाक्यं चेदमुवाचह ॥७॥

तब सकल श्रेष्ठ ऋषियों की आज्ञा से व्यासजीने गंगाजल में स्नान करके यह वाक्य कहा ॥ ७ ॥

व्यास उवाच ।

अस्त्येकः परमोपायो भवतः पापनिष्कृतौ ॥
सर्वभक्षकृतः पुंसो बदरी शरणं महत् ॥८॥

व्यासजी बोले हे अग्ने ? तुम्हारा पातक दूर होनेका एक परम उपाय है, सर्वभक्षी प्राणीको सबसे बढ़कर रक्षा करने वाला बदरी क्षेत्र है ॥ ८ ॥

यत्रास्ते भगवान् साक्षाद्देवदेवो जनार्दनः ॥
भक्तानामप्यभक्तानामघहा मधुसूदनः ॥ ९ ॥

जहां भक्तोंके और भक्तिहीनोंके भी पापोंको नष्ट करने वाले देवताओं के भी पूज्य जनार्दन साक्षात्

मधुसूदन भगवान हैं ॥ ९ ॥

तत्र गंगांभसि स्नात्वा विष्णोःकृत्वा परिक्रमाम्
दंडवत्प्रणिपातेन सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ १० ॥

तहां गंगाजल में स्नानकर विष्णुकी परिक्रमा करके दण्डवत् प्रणाम करने से सकल पापों का क्षय होता है१०

ततो व्यासमुखाच्छ्रुत्वा ऋषीणामनुवादतः ॥
उत्तराभिमुखो वन्हिर्गंधमादनमाययौ ॥ ११ ॥

व्यासजी के मुखसे ऐसा सुनकर और ऋषियों के भी इसे ठीक बताने पर अग्नि तहां से उत्तरको मुख करके गन्धमादन पर्वत पर आया ॥ ११ ॥

ततो बदरिकां प्राप्य स्नात्वा गंगांभसि स्वयम्
नारायणाश्रमंगत्वा नत्वाप्रोवाच भक्तिमान् १२

यहांसे बदरीक्षेत्र में आ गंगाजल में स्नान करके स्वयंही भक्ति से भराहुआ नारायण के आश्रम में जा प्रणाम करके कहने लगा ॥ १२ ॥

अग्निरुवाच ।

विशुद्धविज्ञानघनं पुरातनं सनातनं विश्व-

सृजः पतिं गुरुम् ॥ अनेकमेकं जगदेकनाथं नमाम्यनंताश्रितशुद्धबुद्धिम् ॥ १३ ॥

अग्निने कहा-परम शुद्ध विज्ञानघन पुराणपुरुष सनातन रहने वाले जगत्स्रष्टा ब्रह्मके भी स्वामी और गुरु, कार्यरूपसे अनेक और कारण रूपसे एक, जगत् के एक स्वामी, अनन्त और आश्रितों की बुद्धिको शुद्ध करने वाले भगवान् को मैं नमस्कार करता हूं ॥ १३ ॥

मायामयीं शक्तिमुपेत्य विश्वकर्तारमुद्यद्रजसो-पयुक्तम् ॥ सत्वेन चास्य स्थितिहेतुमुग्रमरूपं-तमोनिर्ग्रसितारमीडे ॥ १४ ॥

मायारूपिणी शक्तिको स्वीकार करके उदय को प्राप्त होते हुए रजोगुण से युक्तहो विश्वकी रचना करने वाले सत्व गुणके द्वारा इस जगत् की स्थिति के कारण और तमोगुण को स्वीकार करके प्रलय करने वाले उग्र नामक भगवान् की मैं स्तुति करता हूं ॥ १४ ॥

अविद्ययाविश्वविमोह आत्मन् विश्वैकरूपं वि-ततं त्रिलोक्याम् ॥ विद्यासितं त्वां सकलङ्क-

मेतत्स्वविद्यया जीवमयं प्रपद्ये ॥ १५ ॥

अविद्या करके विश्वको मोहित करने वाले आत्म स्वरूप सकल विश्व जिन एकका स्वरूप है, जो त्रिलोकी भरमें व्यापक हैं विद्याशक्ति करके निर्मूल और अपनी ज्ञानशक्ति करके इस सकल को जानने
प्राणिवध आपकी शरणागत हूं ॥ १५ ॥

भक्तेच्छया स्वीकृतदेहयोगमाभोगभोग्यायत-भोगयोगम् ॥ कौशेयपीताम्बरजुष्टमिष्टं विचित्रशक्तीष्टमजेष्टमीडे ॥ १६ ॥

भक्तोंकी इच्छासे दिव्य विग्रह धारण करनेवाले, श्रीलक्ष्मी के विलासार्थ शेषजी के विशाल शरीरपर विराजमान, रेशमी पीताम्बरको धा ण करनेवाले, सबके इष्ट, विचित्र शक्तियों करके पूजित और ब्रह्माजी के भी इष्टदेव की मैं स्तुति करता हूँ ॥ १६ ॥

इति प्रसन्नो भगवान् स्तुतः सर्वहृदि स्थितः ॥
प्रोवाच मधुरं वत्स पावकं पावनार्थिनम् ॥१७॥

सकल जीवोंके हृदयमें विराजमान भगवान् इस

प्रकार स्तुति करने पर प्रसन्न होगए और अपनी पवित्रता चाहने वाले अग्नि से मधुर वाणी में कहने लगे कि–हे वत्स ! ॥ १७ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

वरं वरय भद्रं ते वरदोहमुपागतः ॥
स्तवेनानेन तुष्टोहं विनयेन तवानघ ॥ १८ ॥

श्रीभगवानने कहा—हे निष्पाप ! मैं तेरे इस स्तोत्र और विनय से प्रसन्न हुआ वरदान देनेको आया हूं, अब तू वर माँग, तेरा कल्याण हो ॥ १८ ॥

अग्निरुवाच ।

ज्ञातं भगवता सर्वं यदर्थमिह चागतः ॥
तथापि कथयाम्येतदीश्वराज्ञानुपालनम् ॥ १९ ॥

अग्नि ने कहा–मैं जिस निमित्तसे यहाँ आया हूँ वह आपने सब जान लिया है तथापि स्वामी की आज्ञा पालनीय समझ कर यह कहता हूं ॥ १९ ॥

सर्वभक्षणजाघौघविनिवृत्तिः कथं भवेत् ।
अत्यन्तभयसंपत्तिरेतस्माज्जायते मम ॥ २० ॥

सर्वभक्षण से उत्पन्न हुए पापसमूह की सर्वथा निवृत्ति कैसे होगी ? इससे मुझको बड़ा भारी भय लग रहा है ॥ २० ॥

श्रीभगवानुवाच ।

क्षेत्रदर्शनमात्रेण प्राणिनां नास्ति पातकम् ।
मत्प्रसादात्पातकं तु त्वयि मास्तु कदाचन २१

श्रीभगवान ने कहा—इस बदरीक्षेत्र के दर्शन मात्र से प्राणियों के पातक नष्ट होजाते हैं और अब मेरे अनुग्रह से तुझको कभी पातक नहीं लगेगा ॥ २१ ॥

ततः प्रभृति पूतात्मा पावकः सर्वतो दिशम् ॥
कलयावस्थितश्चात्र द्रवत्वेनावतिष्ठते ॥ २२ ॥

उस समय से पवित्रात्मा अग्नि सब दिशाओं में अपनी कलासे स्थित है और यहां तो द्रवीभूत होकर उष्ण जल के रूप से स्थित है ॥ २२ ॥

य एतत्प्रातरुत्थाय शृणोति श्रद्धया शुचिः ॥
अग्नितीर्थकृतस्नानफलमाप्नोत्यसंशयः ॥२३॥

जो प्रातःकाल के समय उठकर स्नान से शुद्ध हुआ

श्रद्धापूर्वक इस कथा को सुनता है वह निःसन्देह अग्नि-तीर्थ में स्नान करने के फलको पाता है ॥ २६ ॥

इति श्रीस्कंदपुराणे सपादलक्षसंहितायां सह्याद्रिखंडे शिवकार्तिकेयसंवादे बदरीमाहात्म्ये भाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ ३ ॥

नारदशिला माहात्म्य ।

नारदो भगवान् तत्र प्रतेपे परमं तपः ॥ दर्श-नार्थं महाविष्णोर्वायुभक्षो जितेन्द्रियः ॥ १ ॥
षष्टिवर्षसहस्राणि शिलायां वृक्षवृत्तिमान् ॥
तदासौ भगवान् विष्णुर्वृद्धब्राह्मणरूपधृक् ॥ १ ॥

तिस शिला पर भगवान् नारदजी ने महाविष्णु का दर्शन करने की इच्छा से वृक्षों की समान केवल वायु भक्षण करके जितेन्द्रियता से साठ सहस्र वर्ष पर्यन्त परमतप किया तब विष्णु भगवान् बुड्ढे ब्राह्मण का रूप धारण कर ॥ २ ॥

जगाम पुरतस्तस्य कृपया मुनिसत्तमम् ॥
उवाच वचनं चारु किमिह क्लिश्यते ऋषे ॥ ३ ॥

कृपा करके तिन श्रेष्ठ मुनि नारदजी के सन्मुख गए और सुन्दर वचन कहा कि हे ऋषे ! तुम यहां क्लेश क्यों उठा रहे हो ॥ ३ ॥

किं वा तपासि तद् ब्रूहि तपसा क्षीणकल्मषः ॥
बदरीवासिनो लोका विष्णुतुल्या न संशयः ॥४॥

तुम किस कामना से तप कर रहे हो सो कहो तप से तुम्हारे सब पाप क्षीण होगये बदरी क्षेत्र में निवास करनेवाले निःसंदेह विष्णुतुल्य हैं ॥ ४ ॥

नारद उवाच ।

को भवान् विजनेऽरण्ये ममानुग्रहतत्परः ॥
चेतः प्रसन्नतामेति दर्शनात्ते द्विजोत्तम ॥ ५ ॥

नारदजी ने कहा इस निर्जन वन में मेरे ऊपर अनुग्रह करने को तत्पर हुवे आप कौन हैं ? हे द्विजवर्य्य ! तुम्हारे दर्शन से चित्त प्रसन्नता को प्राप्त होता है ॥ ५ ॥

दर्शयामास रूपं स्वं नारदाय कृपार्दितः ॥
तं दृष्ट्वा सहसोत्थाय तनौ प्राणमिवागतम् ॥६॥

कृपालु होकर नारदजी को अपना स्वरूप दिखाया उस रूप को देखकर नारद एक साथ उठ खड़े हुए और अपने शरीर में प्राण आगया जाना ॥ ६ ॥

कृताञ्जलिपुटो भूत्वा नमस्कृत्य पुनः पुनः ॥
तुष्टाव प्रणतो भूत्वा जगतामीश्वरेश्वरम् ॥ ७ ॥

हाथ जोड़े वारंवार नमस्कार करके प्रणत भाव से लोकपालों के भी स्वामी की स्तुति करी ॥ ७ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तुष्टोऽहं तपसानेन स्तोत्रेण तव नारद ॥
त्वत्तो भक्तो न मे कश्चित्त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥८॥

श्रीभगवान ने कहा हे नारद ! तुम्हारे इस तप और स्तोत्र से मैं प्रसन्न हूं तीनों लोकों में तुम्हारे समान मेरा कोई भक्त नहीं है ॥ ८ ॥

वरं वरय भद्रं ते वरदोऽहं तवागतः ॥
मद्दर्शनात्प्तकामानां सर्वेषां विद्धि नारद ॥ ९ ॥

हे नारद ! मैं आगया वर मांगो ? तुम्हारा कल्याण हो मेरे दर्शन से सकल मनोरथों की सिद्धि हुई जानो ॥९॥

नारद उवाच।

मच्छिलासन्निधानं च न त्याज्यं ते कदाचन॥
मत्तीर्थदर्शनात्स्नानात्स्पर्शाद्वाचमनात्तथा॥
देहैर्न युज्यते देही तृतीयोऽस्तु वरो मम॥१०॥

हे भगवन्! आप मेरी इस शिला की समीपता को कभी न त्यागें और इस मेरे तीर्थ के दर्शन, स्नान, स्पर्श तथा आचमन से प्राणी फिर शरीर को धारण न करें यह मेरा तीसरा वर हो॥ १०॥

श्रीभगवानुवाच।

एवमस्तु तव स्नेहात्तव तीर्थे वसाम्यहम्।
चराचराणां जन्तूनां कल्याणाय न संशयः॥११॥

श्रीभगवान ने कहा ऐसा ही होगा तुम्हारी भक्ति के कारण मैं तुम्हारे तीर्थ में चराचर सकल प्राणियों के कल्याण के लिए निःसंदेह निवास करूंगा॥ ११॥

इति श्रीस्कंदपुराणे सपादलक्षसंहितायां सह्याद्रिखंडे श्रीभगवन्नारदसंवादे श्रीबदरीमाहात्म्ये भाषा टीकायां चतुर्थोऽध्यायः समाप्तः॥ ४॥

मार्कण्डेयशिला माहात्म्य ।

नारदजी ने मार्कण्डेयजी से कहा कि बदरीवन में जाओ यहां श्रीहरि का नित्य निवास रहता है ॥ १ ॥

स्नात्वा शिलोपविष्टःसन् जजापाष्टाक्षरं मुनिः।
बदरीनायकप्रीतिमिच्छन्सद्भक्तिपूर्वकम् ॥ २ ॥

तहां जाकर मुनि ने स्नान करके बदरीनारायण के प्रसन्न होने की इच्छा से परम भक्ति के साथ शिला पर आसन लगा अष्टाक्षर मंत्र का जप किया ॥ २ ॥

ततः प्रसन्नो भगवांस्त्रिरात्र्यंते जनार्दनः ॥
शंखचक्रगदापद्मवनमालाविभूषितः ॥ ३ ॥

तबसे तीन रात के अनन्तर शंख, चक्र गदा और वनमाला से विभूषित जनार्दन भगवान प्रकट हुए ॥३॥

श्रीभगवानुवाच ।

एवं स्तुतस्ततः श्रीशो मार्कण्डेयेन धीमता ॥
प्रीतस्तमाह विप्रर्षे वरं मे व्रियतामिति ॥ ४ ॥

बुद्धिमान् मार्कण्डेयजी के इस प्रकार स्तुति करने

पर श्रीहरि प्रसन्न होकर उनसे बोले कि हे विप्रर्षे ! मुझ से वरदान मांगो ॥ ४ ॥

मार्कण्डेय उवाच ।

यदि तुष्टो भवान् मह्यं भगवान् दीनवत्सलः ।
निश्चला त्वयि मे भक्तिः पूजायां दर्शनं तथा ॥५॥

मार्कण्डेयजी ने कहा कि यदि आप दीनवत्सल भगवान् मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो आपमें मेरी निश्चल भक्ति हो तथा पूजा के समय आपका दर्शन हुआ करे ॥५॥

शिलायां तव सान्निध्यं वरएष वृतो मया ।
मत्तीर्थदर्शनात्स्नानात्स्पर्शाद्वाचमनात्तथा ॥६॥

इस शिला में आपका निवास रहै और मेरे तीर्थ का दर्शन, स्नान, स्पर्श, तथा आचमन करने से पुरुष पवित्र हो ! मैं यही वरदान मांगता हूं ॥ ६ ॥

सूत उवाच ।

तथेत्युक्त्वा महाविष्णुर्यथावन्तर्हितो द्विजः ॥
मार्कण्डेयस्तु संतुष्टो जगाम पितुराश्रमम् ॥७॥

सूतजी कहते हैं कि हे मुनियों ! ऐसा ही होगा यह कहकर महाविष्णु अन्तर्धान होकर चले गये और द्विज मार्कण्डेय भी प्रसन्न होकर अपने पिता के आश्रम को चले गए ॥ ७ ॥

इति मार्कण्डेय शिला माहात्म्यम् ॥

वैनतेयशिला माहात्म्य ।

बदर्य्या दक्षिणे भागे गंधमादनशृंगके ॥
गरुडस्तप आतेपे हरिवाहनकाम्यया ॥ १ ॥

गरुड़जी ने बदरी क्षेत्र के दक्षिण भाग में गंधमादन पर्वत के शिखर पर श्रीहरि का वाहन होने की इच्छा से तप किया ॥ १ ॥

ततः पंचमुखी साक्षादाविरासीन्नगोपरि ॥
तेनोदकेन पादार्घं चकार विनतासुतः ॥ २ ॥

तब पर्वत के ऊपर साक्षात् पंचमुखी गंगा प्रगट हुईं उसके जल से गरुड़जी ने पादार्घ किया ॥ २ ॥

व्रियतां वर इत्युक्तो गरुडो हरिणा ततः ।
तवैकवाहनं श्रीमान् बलवीर्यपराक्रमैः ॥ ३ ॥

अजेयो देवदैत्यानां स्यामहं ते प्रसादतः ॥
इयं मन्नामविख्याता सर्वपापहरा शुभा ॥ ४ ॥

श्रीहरि ने जब गरुड़जी से कहा कि वर मांगो। तब गरुड़जी ने कहा कि–हे श्रीमन्! मैं बल वीर्य पराक्रम से युक्त और देवता तथा दैत्यों से अजेय आपका वाहन होऊँ और आपके अनुग्रह से यह शिला मेरे नाम से सब पापों को हरनेवाली शुभरूप प्रसिद्ध हो ॥ ४ ॥

गंगायाः स्मरणात्पुंसां विषव्याधिर्न जायते ॥
यस्तां नमति भक्त्यावै तस्य पापक्षयोभवेत् ॥५॥

गरुड़गंगाके स्मरण से पुरुषों का विष का रोग न रहै और जो भक्ति के साथ इस गंगा को प्रणाम करै उसके पाप नष्ट होजायँ ॥

ततः विष्णुः ॐ इत्युक्त्वा ।

तब विष्णु भगवान् ने इस वरदान को तथास्तु कहा ।

वाराहाशिला माहात्म्य ।

श्रीशिव उवाच ।

रसातलात्समुद्धृत्य महीं दैवतवैरिणम् ।

हिरण्याक्षं रणे हत्वा बदरीं समुपागतः ॥ १ ॥

श्रीशिवने कहा-पाताल से पृथिवी का उद्धार करके और देवताओं के वैरी हिरण्याक्ष को रण में मारकर भगवान बदरी क्षेत्र में आये ॥ २ ॥

शिलारूपेण भगवान् स्थितिं तत्र चकार ह ।
तत्र गत्वातुमुनयःस्नात्वागंगाजलैश्शुभैः ॥ ३ ॥

तहां भगवान् ने शिलारूप से स्थिति की मुनियों ने तहां जाकर और गंगाजल में स्नान करके ॥ ५ ॥

दानं दत्त्वा स्वशक्त्या वै गंगाम्भःक्षांतमानसः ।
अहोरात्रं स्थिरो भूत्वा जपेदेकाग्रमानसः॥६॥

अपनी शक्ति के अनुसार दान देकर गंगाजल से शांतमन वाला पुरुष एकाग्र मन से एक रातादिन स्थिरता के साथ जप करै ॥ ६ ॥

शिलायां देवदृष्टिस्तु तस्य पुंसः प्रजायते ।
बहुना किमिहोक्तेन यद्यदिच्छति साधकः॥७॥
तस्य तत्सिद्ध्यति क्षिप्रं यद्यपिस्यात्सुदुष्करम् ।

पुण्यं यशस्यमायुष्यं पुत्रदं धनधान्यदम् ॥ ८ ॥

उस पुरुष को शिला में देव दृष्टी हो जाती है इस विषय में अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं है। साधक जो २ चाहता है उसका वह मनोरथ यदि अति कठिन हो तब भी शीघ्र ही सिद्ध हो जाता है वह तीर्थ पुण्य कीर्ति का दाता आयुवर्द्धक तथा पुत्र धन धान्य देनेवाला है ॥ ७ ॥ ८ ॥

नारसिंहशिला माहात्म्य ।

श्रीशिव उवाच ।

हिरण्यकशिपुं हत्वा नखाग्रेणैव लीलया ।
क्रोधाग्निना प्रदीप्तांगः प्रलयानलसन्निभः ॥१॥

श्रीशिवजी ने कहा–भगवान् लीला से नख के अग्र से ही हिरण्यकशिपु का वध करके क्रोधाग्नि से लाल नेत्र वाले प्रलयकाल की अग्नि के समान प्रदीप्त हुए ॥ १ ॥

(तब देवता तथा ऋषियों ने नृसिंह भगवान की स्तुति से शांति की) ।

ततः प्रसन्नो भगवान्नृसिंहः सिंहविक्रमः ।
उवाच वचनं चारु वरं मे व्रियतामिति ॥ २ ॥

तब सिंह की समान पराक्रमी नृसिंह भगवान् ने प्रसन्न हो यह सुन्दर वचन कहा कि-वर मांगो ॥ २ ॥

ऋषय ऊचुः ।

यदि प्रसन्नो भगवान् कृपया जगतां पतिः ।
विशाला न परित्याज्या वरोऽस्माकमभीप्सितः॥३

ऋषियों ने कहा-यदि जगत्पति भगवान् मेरे ऊपर कृपा करके प्रसन्न हैं तो विशाला को कभी न त्यागिए यही मेरा इच्छित वर है ॥ ३ ॥

एवमस्तु ततः सर्वे स्वाश्रमं ऋषयो ययुः ।
नृसिंहोऽपि शिलारूपो जलक्रीडापरोऽभवत्॥४॥

भगवान् ने कहा ऐसा ही होगा तब सब ऋषि अपने २ आश्रम को चलेगये और नृसिंह भगवान भी शिलारूप हो जलक्रीडा में तत्पर होगए ॥ ४ ॥

उपवासत्रयं कृत्वा जपध्यानपरायणः ।

नृसिंहरूपिणं साक्षात्पश्यत्येव न संशयः ॥५॥

तहां जपध्यानपरायण पुरुष तीन उपवास करके निःसंदेह साक्षात् नृसिंह भगवान् का दर्शन पाता है॥५॥

यं एतच्छ्रद्धया मर्त्यः शृणुयाच्छ्रावयेच्छुचिः ॥
सर्वपापविनिर्मुक्तो वैकुण्ठे वसतिं लभेत् ॥६॥

जो मनुष्य पवित्र होकर श्रद्धा के साथ इस चरित्र को सुनता और सुनाता है वह सब पापों से छूटकर वैकुंठ में निवास पाता है ॥ ६ ॥

महाराज की वर्तमान मूर्त्ति ।

श्रीशिव उवाच ।

प्राप्ते कलियुगस्यादौ तीर्थे नारदसंज्ञके ॥
अन्तर्हितोऽसौ भविता दृष्ट्वालोकान्कुमेधसः॥१

श्रीशिवजी ने कहा—कलियुग के आरम्भ समय नारदतीर्थ में दुर्बुद्धि मनुष्यों को देखकर अन्तर्ध्यान हो जायँगे ॥ १ ॥

ततोऽहं यतिरूपेण तीर्थान्नारदसंज्ञितात् ॥

उद्धृत्य स्थापयिष्यामि मूर्त्तिं लोकहितेच्छया २

तब मैं दण्डी का रूप धारण कर के लोकों के हित की इच्छा कर के नारदतीर्थ से मूर्त्ति को निकाल कर स्थापन करूंगा ॥ २ ॥

यस्य दर्शनमात्रेण पातकानि महांत्यापि ।
विलीयंते क्षणादेव सिंहं दृष्ट्वा मृगा इव ॥ ३ ॥

जिसके दर्शन से बड़े २ पातक भी क्षण भर में ऐसे विलीन हो जायंगे जैसे सिंह को देख कर मृग भाग जाते हैं ॥ ३ ॥

सर्वधर्मोज्झिता देवं बदरीशहरिं प्रभुम् ॥
तं दृष्ट्वा मुक्तिमायान्ति विनायासेन पुत्रक ॥४॥

हे पुत्र ! सकलधर्मों से हीन भी बदरीश प्रभु श्रीहरिदेव का दर्शन करके बिना परिश्रम के ही मुक्त हो जाते हैं ॥ ४ ॥

त्यक्त्वा सर्वाणि तीर्थानि हरिः साक्षात्कलौ युगे ।
बदरीमनुसंप्राप्य साक्षादेवावतिष्ठते ॥ ५ ॥

कलियुग के आनेपर साक्षात् श्रीहरि सकल तीर्थों को त्याग कर बदरीक्षेत्र में आकर प्रत्यक्ष निवास करते हैं ॥ ५ ॥

कलिकाले ह्यनुप्राप्ते मुक्तिर्येषां मनीषितम् ।
द्रष्टव्या बदरी तैस्तु हित्वा तीर्थान्यनेकशः ॥६॥

कलिकाल के आनेपर जिनके मन में मुक्ति पाने की इच्छा हो वह बहुत से तीर्थों को छोड़कर एक बदरी क्षेत्र का ही दर्शन करै ॥ ६ ॥

विना ज्ञानेन योगेन तीर्थाटनपरिश्रमम् ॥
एकेन जन्मना जंतुः कैवल्यंसमवाप्नुते ॥ ७ ॥

बिना योग, ज्ञान और तीर्थयात्रा के परिश्रम के ही पुरुष एक जन्म में ही मुक्ति पाजाता है ॥ ७ ॥

जन्मान्तरसहस्रैस्तु सम्यगाराधितो हरिः ।
यदीच्छेद्बदरीं द्रष्टुं यया जंतुर्न शोच्यते ॥ ८ ॥

जिनका दर्शन करने वाले को शोक नहीं होता ऐसे बदरीनारायण के दर्शन की यदि इच्छा हो, तो समझ ले कि इसने सहस्रों जन्म पर्यन्त श्रीहरि का भले प्रकार आराधन किया है ॥ ८ ॥

बदरी बदरीत्युक्त्वा प्रसंगान्मनुजोत्तमः ॥
संसारतिमिराबाधादीपमुज्ज्वालयत्यसौ ॥९॥

किसी प्रसंगवश श्रीबदरी २ कहनेवाले श्रेष्ठ मनुष्य संसाररूपी अंधकार को दूर करनेके लिये मानो दीपक बालते हैं ॥ ९ ॥

यथा दीपावलोकेन तमोबाधा न जायते ॥
तथैव बदरीं दृष्ट्वा पुंसो मृत्युभयं कुतः ॥१०॥

जिस प्रकार दीपक के प्रकाश से अन्धकार की बाधा नहीं होती है, तैसे ही बदरी क्षेत्र का दर्शन करके पुरुष को मृत्यु का भय कहां, (कभी नहीं होता) ॥ १० ॥

दर्शनाद्यस्य पापानि रुदन्ति व्याहतानि च ॥
मुक्तिमार्गमिवालक्ष्य तं वन्दे बदरीपतिम् ॥११॥

जिसके दर्शन से पाप अत्यन्त पीडित हुए से रुदन करते हैं उन बदरीश को मुक्ति के मार्ग के समान मान कर मैं प्रणाम करता हूं ॥ ११ ॥

बदरी की प्रदक्षिणा ।

अतिकृच्छ्रैर्महाकृच्छ्रैर्द्वादशाब्दैः कृतं भवेत् ॥

हरेः प्रदक्षिणात्पुंसां बदर्यां तत्पदे पदे ॥ १२ ॥

दश वर्ष पर्य्यन्त अतिकृच्छ्र और महाकृच्छ्र करने से जो फल होता है वह ही बदरी क्षेत्र में श्रीबदरीश की प्रदक्षिणा करने से पग २ पर प्राप्त होता है ॥ १२ ॥

महाप्रसाद ।

बदर्य्यां विष्णुनैवेद्यं सिक्थमात्रं षडानन ॥
अनेकान् शोधयेत्पापान्तुषाग्निरिवकांचनम् १३

हे स्वामि कार्त्तिकेय ! जैसे भूसी की अग्नि सुवर्ण को शुद्ध करती है तैसे ही बदरी क्षेत्र में विष्णु भगवान् के नैवेद्य का कण मात्र भी अनेकों पापों की शुद्धता करता है ॥ १३ ॥

लक्ष्मीः पचति नैवेद्यं भवान्यत्र निवेदकः ॥
स्वीकरोति महाविष्णुर्दोषः कथमिहोच्यते॥१४॥

श्रीलक्ष्मी नैवेद्य को पकाती है और हे नारदजी ! आप परोसते हैं तथा श्रीविष्णु भगवान स्वीकार करते हैं। फिर इसे दोष कैसे कहा जा सकता है ॥ १४ ॥ (अर्थात इस महाप्रसाद को भक्षण करने में कोई

दोष नहीं है)

प्राणांतं यस्य पापस्य प्रायश्चित्तं प्रकीर्त्तितम् ॥
विष्णोर्निवेदितान्नेन बदर्य्यां तन्निवर्तते ॥ १५॥

जिस पाप का प्रायश्चित्त प्राणान्त कहा है (अर्थात अनेकानेक पुण्यों से भी जो नहीं छूटता और मरण के अंत नरक में वास होता है) वह पाप बदरी क्षेत्र में विष्णु भगवान को निवेदन किये हुये अन्न के भक्षण से निवृत्त होता है ॥ १५ ॥

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंगनागमः ॥
नैवेद्यभक्षणाद्विष्णोर्बदर्य्यां याति संक्षयम्॥१६॥

ब्रह्महत्या, मद्यपान, चोरी और गुरु-स्त्रीसमागम का पाप बदरी क्षेत्र में विष्णु का नैवेद्य खाने से नष्ट हो जाता है ॥ १६ ॥

वैश्वदेवादिकं कार्य्यं निर्माल्येन हरेरिह ॥
श्राद्धमप्यत्र तेनैव कार्यं नैवास्ति संशयः ॥१७॥

इस बदरी क्षेत्र में बलि वैश्वदेव आदि कर्म नारायण के निर्माल्य से करै और यहां श्राद्ध तथा

पिंडादिक क्रिया भी निःसंदेह निर्माल्य (चावल का भोग) से ही करै ॥ १७ ॥

स्वतंत्रपाकजाद्यं चेद्बदरीनाथदृष्टिताः ॥
विश्वेदेवान्पितॄनन्यान्भावयेदंतरात्मना ॥ १८ ॥

चौका आदि न लगाकर (यानै कुछ विचार न कर) स्वतंत्रतासे बनाया बासी नैवेद्य (सूखा हुआ देश देशावरों को भी ले जाने में महाप्रसादही के तुल्य है) बदरीश के दृष्टिमात्रसे पवित्र होता है उसकेही द्वारा हृदय से विश्वेदेव पितर तथा औरों का भी सत्कार करै ॥ १९ ॥

ये नरा न प्रगृह्णन्ति पापाः संसारभागिनः ॥
यात्राकृतं फलं तेषां न कदाचित्प्रजायते ॥२० ॥

जो संसार में अधम पुरुष विष्णु के नैवेद्य को ग्रहण नहीं करते उनको यात्रा करने का फल कदापि नहीं होता ॥ २० ॥

नैवद्यनिन्दनाद्विष्णोर्नितान्तंन तमोगतिः ॥

विष्णु के नैवेद्य की निन्दा करने से घोर तामिस्र नरक होता है।

चांडालेनापि संस्पृष्टं न दोषाय भवेत् कचित् ॥

चांडाल से छूजाने पर भी वह दोषकारक नहीं होता (यह केदारखंड की संमति है)

श्रीबदरीश का चरणामृत ।

तावत्तीर्थानि भासंते व्रतानि नियमा यमाः ॥
पादोदकं विशालायां यावन्न पुरतो भवेत् ॥१॥

तब तक ही तीर्थ व्रत नियम और यम शोभा पाते हैं जब तक बदरी क्षेत्र में जाकर भगवान का चरणामृत सामने नहीं आता ॥ १ ॥

प्रायश्चित्तानि जल्पंति तावदेव षडानन ॥
यावन्न लभते विष्णोर्बदर्यां चरणोदकम् ॥२॥

हे स्वामिकार्तिकेय ! तब तक ही प्रायश्चित्त बातें मारते हैं जब तक बदरी क्षेत्र में पुरुष विष्णु का चरणामृत नहीं पाता ॥ २ ॥

किं तेषां गुणशीलेन स्वाध्यायाभ्यसनेन वा ॥
येषां न जायते भक्तिर्बदर्यां चरणोदके ॥ ३ ॥

जिनको बद्रीश के चरणोदक में भक्ति नहीं होती उनको गुण, शील और स्वाध्याय का अभ्यास करने से क्या फल है ? (कुछ भी नहीं) ॥ ३ ॥

अष्टोत्तरशतावृत्या परिक्रम्य नमेद्धरिम् ॥
जपेच्च मंदिरे तस्य स्वेष्टमंत्रं समाहितः ॥ ४ ॥

श्रीबदरीश (हरि) की १०८ एक सौ आठ परिक्रमा कर के प्रणाम करै और उनके मंदिर में सावधान होकर अपना इष्ट मंत्र (जो गुरू से लिया हो वा (ॐ नमो नारायणाय) आदि मंत्रों का जप करै ॥ ४ ॥

जपादीनां फलं यत्र नात्र कार्य्या विचारणा । स्वाधिकारानुसारेण स्वाध्यायार्चाहुतादिकम् ॥ ५ ॥

यहां जपका ही फल होता है ऐसा विचार न करै किन्तु अपने अधिकार के अनुसार स्वाध्याय, पूजन, हवन आदि करै ॥ ५ ॥

गंगातीरेऽथवा जप्याच्छिलानां मध्यतोऽपि वा ॥ वाराणस्यधिकादेशात्सत्यं शतगुणाधिकम् ॥ ६ ॥

गंगा के किनारे अथवा पंचशिलाओं के मध्य में जप करे । यहां जप करने से काशी से सौगुना अधिक फल होता है ॥ ६ ॥

श्रीब्रह्मकपाल-माहात्म्य ।

स्कंद उवाच ।

कराद्विगलितं यत्र कपालं ते महेश्वर ॥ तस्य तीर्थस्य माहात्म्यं कृपया वद मे पितः ॥ १ ॥

स्वामिकार्तिकेय कहते हैं कि हे पिताजी ! आप सब के ईश्वर हो जिसस्थान में आपके हाथ से ब्रह्मकपाल (अर्थात ब्रह्माजी की खोपड़ी) गिरा है उस तीर्थ का माहात्म्य कृपा करके मुझसे कहिये ॥ १ ॥

ईश्वर उवाच ।

पिंडं विधाय विधिवत्पातकात्त्रायते पितॄन् ॥ पितृतीर्थमिदं प्रोक्तं गयातोऽष्टगुणाधिकम् २॥

ब्रह्मकपाल में विधिपूर्वक पिंडदान कर पुरुष पितरों की पातकों से रक्षा करता है । इसीसे यह पितृतीर्थ कहाता है, और गया से आठ गुणा अधिक फल देनेवाला है ॥ २ ॥

पितृतर्पणतो यान्ति पितरः स्वर्गमुत्तमम् ॥
अहोरात्रं स्थिरो भूत्वा जपन्तिष्ठन्समाहितः॥३॥

पितरों का तर्पण करने से पितर उत्तम स्वर्ग को जाते हैं। एक दिनरात्री स्थिरहोकर एकाग्रचित्त से जप करे तो परम पुण्य होता है ॥ ३ ॥

ब्रह्मकपाले पितरः प्रेक्षमाणाः स्ववंशजम् ॥
तिष्ठंति तस्मात्पिंडानां प्रदानं मुनयोऽब्रुवन्॥४॥

ब्रह्मकपाल में पितर अपने वंशज की राह देखते रहते हैं इस कारण मुनि जनोंने यहां पिंडदान करने को कहा है ॥ ४ ॥

गमिष्यति विशालायां तारितास्तेन वै वयम् ॥ माहात्म्यं केन शक्येत वक्तुं वर्षशतैरपि ॥ ५ ॥

नोट (प्रायः यात्री लोग पूछा करते हैं कि ब्रह्मकपाल में पिंड किये पीछे गया आदि तीर्थों में पिंडादिकर्म करने में क्या दोष शास्त्रसमति से होता है उन यात्रियों की शंकानिवारणार्थ शास्त्रसंमति से यथोचित लिखते हैं ।

तो उससे हम तारे जायंगे ऐसा इसका माहात्म्य सैकड़ों वर्षों में भी कौन कहसकता है ॥ ५ ॥

सनत्कुमारसंहितान्तर्गत ।
गया से अधिक फल ।

तत्रैव बदरीक्षेत्रे पिंडं दातुं प्रभुः पुमान् ।
मोहाद्गयायां दद्याद्यः स पितॄन् पातयेत्स्वकान्

तिस बदरी क्षेत्र में ब्रह्मकपाल में पितरों के अर्थ पिंडदान करने को समर्थ भी जो मनुष्य यह जानते हुए भी शरीर के मोहवश गयाजी में पिंडदान देते हैं वह अपने पितरों को अधःपतित करते हैं (अर्थात् स्वर्ग से नरक में गमन करवाते हैं इससे बदरीनाथ में पिंड किए पीछे कहीं भी पिंडदान न करे)

बहूनि संति तीर्थानि विशालायां षडानन ॥
कपालमोचनं तीर्थमधिकं पितृकर्मणि ॥ ६ ॥

हे कार्तिकेय ! बदरी क्षेत्र में बहुत से तीर्थ हैं किन्तु पितरों के उद्धार के निमित्त कपालमोचन (ब्रह्मकपाल) तीर्थ ही सबसे बड़ा है ॥ ६ ॥

वसुधारा-माहात्म्य ।

मानसोद्भेदनात्प्रत्यग्दिशि सर्वमनोहरम् ॥
वसुधारेति विख्यातं तीर्थं त्रैलोक्यदुर्लभम्॥१॥

मानसोद्भेद तीर्थ से पश्चिम की ओर सब प्रकार से मनोहर तीनों लोक में दुर्लभ वसुधारा नामक तीर्थ प्रसिद्ध है ॥ १ ॥

अत्र पुण्यवतां ज्योतिर्दर्शनं जलमध्यतः ॥
यद्दृष्ट्वा न पुनर्मर्त्यो गर्भवासं प्रपद्यते ॥ २ ॥

इस वसुधारा के जल में पुण्य मनुष्यों को ज्योति का दर्शन होता है जिसके दर्शन से मनुष्य पुनः गर्भ में प्राप्त नहीं होता ॥ २ ॥

येऽशुद्धपितृजाः पापाःपाखण्डमतिवृत्तयः ॥ न
तेषां शिरसि प्रायः पतन्त्यापः कदाचन ॥ ३ ॥

बदरी पुरी से (४) मीलपर वसुधारा तीर्थ है इसके अंतर्गत मातामूर्ति का दर्शन है । तथा पुलपार हो कर मणभद्र पुरी, व्यास-गुफा आदि और भी कई एक दृश्य हैं ।

जो शुद्ध पिता से उत्पन्न नहीं है, किन्तु जारसे पैदा पापात्मा है उस पाखण्ड बुद्धि और पाखण्ड का व्यापार करने वाले मनुष्य के शिरपर वसुधारा का जल कभी नहीं पड़ता है॥

वसिष्ठ उवाच।

शृणवरुन्धति वक्ष्यामि यथाह भगवाञ्छिवः।
तत्ते संप्रति वक्ष्यामि पुण्यं पापविनाशनम्।

हे अरुंधति! जिसप्रकार शिवजीने पार्वतीसे कहा है वह पवित्र और पापको दूर करनेवाला आख्यान तुमसे वर्णन करता हूँ॥ १॥

बदरीवनमाहात्म्यं कथयामास पार्वतीम्।
कण्वाश्रमं समारभ्य यावन्नंदागिरिर्भवेत्।
तावत् क्षेत्रं परं पुण्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्॥२॥

एक समय बदरीवनका माहात्म्य शिवजीने पार्वती से कहाथा, कण्वाश्रमसे लेकर नन्दगिरीपर्य्यन्त उसक्षेत्र का प्रमाण है, भुक्ति, मुक्ति और पुण्यका बढ़ाने-वाला है॥ २॥

धन्याः कलियुगे घोरे ये नरा बदरीं गताः ।
तत्र ब्रह्मादयो देवा हरिभक्तिरताः प्रिये ॥ ३ ॥

इस घोरकलियुगमें वे मनुष्य धन्य हैं, जो बदरीक्षेत्र में गये हैं, वहाँ हे प्रिये! विष्णुभगवान्‌की भक्तिमें तत्पर ब्रह्मादि देवता- ॥ ३ ॥

निवसन्ति स्थले रम्ये नानातीर्थविराजिते ॥
धन्यः स एव लोकेषु यो गच्छेद्बदरीं नरः ॥ ४ ॥

निवास करते हैं, और यह अनेक तीर्थोंसे विराजित है, संसार में वही धन्य है जिसने बदरीवनकी यात्रा की ॥ ४ ॥

अगम्यं पापिनां तद्वै महदैश्वर्यदायकम् ।
मनसापि स्मरेद्यो वै विशाले बदरीति च ।
तेऽपि तद्वासिनो ज्ञेया मृता मुक्तिमवाप्नुयुः॥५॥

महाऐश्वर्यका देनेवाला वह क्षेत्र पापियोंको अगम्य है जो मनसे भी विशाल बदरीका स्मरण करते हैं ! उनको बदरीवनका निवासी जानना, और मरकर उनकी मुक्ति होती है ॥ ६ ॥

गंधमादनबदरी नरनारायणाश्रमः । कुवेरादि-
शिलारम्यो नानामुनिगणान्वितः ॥ ६ ॥

गंधमादन नरनारायणाश्रम, कुवेरशिला, वराह, नारद, गरुड, मार्कण्डेय शिलाओंसे पूर्ण, प्रह्लाद, कूर्म और इन्द्रादितीर्थ और अनेकमुनिगणों से युक्त इसप्रकार का बदरिकाश्रम है ॥ ६ ॥

चिह्नं तत्र प्रवक्ष्यामि येन ते प्रत्ययो भवेत् ।
तप्तोदकमयी धारा वह्नितीर्थसमुद्भवा ॥ ७ ॥

वहांका चिह्न वर्णन करताहूँ,जिससे तुम्हें विश्वास हो, वह्नितीर्थसे निकली हुई उष्ण जल की धारा वहाँ बहती है ॥ ७ ॥

बदरीनाथनैवेद्यं यो मोहात्तु परित्यजेत् ॥
चांडालादधमो ज्ञेयः सर्वधर्मबहिष्कृतः ॥ ८ ॥

अज्ञानसे जो पुरुष बदरीनाथके नैवेद्यको त्यागताहै, उसको चांडालसे अधम और सब धर्मोंसे बहिष्कृत जानो ॥ ८ ॥

लक्ष्मीः पचति नैवेद्यं भुंक्ते नारायणः स्वयम् ।

चांडालेनापि संस्पृष्टं न दोषायकचिद्भवेत् ॥ ९ ॥

उस नैवेद्यको लक्ष्मीजी पाक करती हैं और नारायण उसका स्वयं भोजन करतेहैं, वह नैवेद्य चांडालसे भी छुजाय तो दोष नहीं ॥ ९ ॥

येन भुक्तं तु नैवेद्यं श्रीविष्णोः परमात्मनः ।
स वै लोके परब्रह्मस्वरूपो नात्र संशयः ॥१०॥

जिसने श्रीविष्णुभगवानका नैवेद्य भक्षण किया, वह परब्रह्मस्वरूप है, इसमें संदेह नहीं ॥ १० ॥

बदरीनाथमूर्त्तिं वै मनसापि स्मरेत्तु यः ॥
तेन तप्तं तपस्तीव्रं दत्ता तेन धराखिला ॥ ११ ॥

जो पुरुष बदरीनाथ की मूर्त्तिका मनसे भी स्मरण करता है, उसने बड़ा तीव्र तप करलिया और उसने संपूर्ण पृथ्वीका दान करदिया ॥ ११ ॥

माषमात्रं तु यो दद्यात्सुवर्णं रजतं हि वा ।
जन्मतांरसहस्रेषु दारिद्रं नोपजायते ॥ १२ ॥

जिसने यहां एक उड़दके बराबर सुवर्ण या चाँदीका दान किया उसको हजारजन्मपर्यन्त दरिद्रता नहीं

होती ॥ १२ ॥

करमात्रमपि जलं पितॄनुद्दिश्य येन वै । दत्तं तेन कृतं सर्वं पितॄणां भक्तिकारणम् ॥ १३ ॥

जिसने पितरोंके निमित्त करमात्र भी जल दिया उसने अपने पितरोंके मुक्त करनेका सब उपाय कर-लिया ॥ १३ ॥

लोभमोहसमाविष्टे कलौ धर्मविवर्जिते । नरास्त एव धन्याः स्युर्बदरीं ये गताः प्रिये १४

हे प्रिये ! धर्मसे वर्जित और लोभ, मोहसे युक्त इस कलियुगमें वेही मनुष्य धन्य हैं, जो बदरिकाश्रमको गये ॥ १४ ॥

बदरीवासिनो लोका विष्णुतुल्या न संशयः ॥ येषां दर्शनमात्रेण पापराशिः प्रणश्यति ॥१५॥

बदरीवनमें निवास करनेवाले प्राणी विष्णुतुल्य हैं, इसमें संदेह नहीं जिनके दर्शन मात्रसे पापसमूह नष्ट हो जाता है ॥ १५ ॥

बदरीतरुणा या वै मंडिता पुण्यगा स्थली ।

यत्र साक्षात्सरिच्छ्रेष्ठा गंगा पापौघनाशिनी १६

जो बदरीक्षेत्र बेरके वृक्षोंसे शोभित है और वह पवित्र स्थल है जहाँ पापसमूहको नष्ट करनेवाली साक्षात् गंगाजी वहन करती हैं ॥ १६ ॥

विष्णोश्चाप्यत्र सान्निध्यं सर्वपापप्रणाशनम् । एतत्परात्मकं क्षेत्रं न त्याज्यं मुक्तिमिच्छता १७

हे प्रिये ! संपूर्ण पापोंको नष्ट करनेवाली विष्णुकी स्थिति भी यहीं है यह सर्वोत्तम क्षेत्र मुक्ति चाहनेवाले पुरुषको नहीं त्यागना चाहिये ॥ १७ ॥

यावत्प्राणाः शरीरेऽस्मिन् यावदिन्द्रियशुद्धता । गात्राणि यावच्छैथिल्यं प्राप्नुवन्ति महात्मभिः ॥ १८ ॥

इस शरीरमें जबतक प्राण हैं जबतक इन्द्रियें शुद्ध हैं जबतक शरीर शिथिल नहीं होता तबतक महात्मा पुरुषों को बदरीवनकी यात्रा अवश्य करनी चाहिये ॥ १८ ॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखण्डान्तर्गतबदरीमाहात्म्ये भाषाटीकायां दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

धर्मज्ञानविभक्तीनां मार्गाञ्छ्रुत्वा सविस्तरम् ।
सनत्कुमारं देवर्षिः पप्रच्छ पुनरेव तम् ॥ १ ॥

देवर्षि नारदजी धर्म ज्ञान और भक्तिके मार्गोंको सुन-कर फिर सनत्कुमारजीसे पूछने लगे ॥ १ ॥

बदर्य्याश्रममाहात्म्यं सारात्सारतरं महत् ।
महत्या श्रद्धया युक्तो नत्वा चैव पुनः पुनः २

बदरीनारायणके सारसे सारभूत माहात्म्य को बड़ी श्रद्धा व भक्तिसे युक्त वारंवार प्रणाम करके ॥ २ ॥

नारद उवाच ।

दयासिन्धो महाविद्वन् सर्वलोकहितेच्छया ।
वक्तुमर्हसि मत्प्रीत्यै बदर्याश्रमवैभवम् ॥ ३ ॥

नारदजी बोले कि, हे दयासिन्धो ! हे महाविद्वन् ! संपूर्णप्राणियोंके हितके निमित्त और मेरी प्रीतिके लि-मित्त बदरिकाश्रमका माहात्म्य वर्णन करनेको तुम समर्थ हो ॥ ३ ॥

यत्र नारायणो देवस्तपः परममास्थितः ।

क्षेमं वितन्वन्नाकल्पादास्ते सर्वामरान्वितः॥४॥

जहाँ विष्णु भगवान परम तप करतेहैं और कल्पसे लेकर संसारकी कुशलता विस्तीर्ण करते हैं ॥ ४ ॥

अर्च्यते हि मया नित्यं भक्त्या परमया हरिः ।
दर्शनादेव सर्वेषां नृणां मुक्तिं प्रयच्छति ॥ ५ ॥

उन हरिकी मैं परम भक्तिसे अर्चना करताहूं और वे दर्शनमात्रसे सब प्राणियोंको मुक्तिप्रदान करते हैं ॥५॥

यत्र संति समस्तानि तीर्थानि सततं मुने ।
यत्र सर्वे मुनिश्रेष्ठाः श्रद्धया परया युताः॥ ६॥

ऐ मुने ! जहाँ समस्त तीर्थ नित्य विद्यमान रहते हैं और जहाँ परमश्रद्धासे संपूर्ण श्रेष्ठमुनि ॥ ६ ॥

वसंति सततं विद्वन् विष्णुप्रीतिविवृद्धये ।
तस्य मे वद माहात्म्यं मुने सर्वहितेरत ॥७॥

विष्णुकी प्रीति बढ़ानेके निमित्त सदा निवास करते हैं हे मुने ! सबका हित चाहनेवाले वह माहात्म्य मुझसे कहो ॥ ७ ॥

सनत्कुमार उवाच ।

साधु साधु महाभाग धर्मं पृच्छसि शोभनम् ।
सर्वभूतहितायैव धन्योऽसि त्वं स्वतो यतः ॥८॥

सनत्कुमार कहने लगे हे महाभाग ! तुम धन्य धन्य हो तुमने सुन्दर धर्म बूझा, तुमने आपही संपूर्ण प्राणियोंके हित के निमित्त जो धर्म बूझा, इसकारण तुम धन्य हो ॥ ८ ॥

यदा श्रीविष्णुसान्निध्यं द्वारावत्यामभूत्तव ।
नास्प्राक्षीत्तावदेव त्वां दक्षशापः पुरा खलु ॥९॥

जव द्वारावतीमें श्रीविष्णु भगवान्‌के निकट दक्षने जो तुमको पहिले शाप दिया था, वह तुम्हें नहीं छुआ ॥९॥

अत्र न त्वां स्पृशत्येष कदाचिदपि नारद । तेन
जानीहि सान्निध्यं कृष्णस्यात्र निरन्तरम् ॥१०॥

हे नारद ! वह शाप तुमको यहाँ कभी स्पर्श नहीं करता, तो यहाँ विष्णु भगवान् की स्थिति जानो ॥१०॥

प्रोक्तं महेश्वरेणैतत्पार्वत्यै कृपया पुरा । ब्रह्मणा
च परं मह्यं विष्णुना च कृपालुना ॥ ११ ॥

हे नारद ! यह माहात्म्य शिवजी ने पहिलेपहिल पार्वतीजीसे कहा पुनः ब्रह्माजी तथा परमकृपालु विष्णु भगवान्ने मुझसे कहा ॥ ११ ॥

तदद्य सम्यग्वक्ष्यामि श्रद्धया शृणु नारद ।
बदरी बदरीत्येवं विशालेत्यपि यो वदेत् ॥१२॥

हे नारद ! वह आज मैं तुमसे विधिपूर्वक कहताहूँ, तुम श्रद्धा से सुनो, बदरी बदरी और विशाला इस प्रकार जो कथन करता है ॥ १२ ॥

तस्य वैवस्वतो राजा पादौ मूर्ध्ना नमस्यति ।
आगरुत्मत्सरित्तीरादभिसारस्वताम्भसः॥१३॥

वैवस्वत राजा उसके चरणोंको शिरसे प्रणाम करतेहैं और गरुड़गंगासे सरस्वती नदीके किनारेतक ॥ १३ ॥

नारायणाश्रमं प्राहुराकण्वाख्याश्रमात्परे ।
विष्णुकेशवनन्दाख्यप्रयागैः समलंकृतम्॥१४॥

बदरिकाश्रम कहतेहैं और कोई कण्वाश्रमसे सरस्वतीके तटतक वर्णन करतेहैं विष्णु केशव और नन्द प्रयागोंसे वह स्थान शोभित है ॥ १४ ॥

नारायणाश्रमे सर्वे जन्तवः स्युश्चतुर्भुजाः ॥१५॥
बदरीवासिनां पुंसां यो दद्याद्वसनाशने। अश्व-
मेधसहस्रेभ्यस्तस्य पुण्यं शताधिकम् ॥ १६ ॥

बदरीनारायणमें वसनेवाले संपूर्ण प्राणी चतुर्भुज रूप होजातेहैं ॥ १५ ॥ बदरीवनके निवासियोंको जो वस्त्र और भोजन देताहै उसको हजार अश्वमेधोंसे सौगुना फल मिलता है ॥ १६ ॥

वैदिकाच्च तपोनिष्ठाद्भक्तिज्ञानादितत्परात्। बद-
रीवासिनं श्रेष्ठं विद्धि नारद धार्मिकात् ॥१७॥

हे नारद ! वेद जाननेवाले, तप करनेवाले, भक्ति और ज्ञानसंपन्न और धर्मात्मासेभी बदरिकाश्रमके निवासीको श्रेष्ठ जानो ॥ १७ ॥

ध्यानार्चादिविहीनोऽपि बदरीवासमात्रतः। श्रेष्ठं
विद्धि मुनिश्रेष्ठ वेदान्तार्णवपारगात् ॥ १८ ॥

हे मुनिश्रेष्ठ ! ध्यान और पूजनकी विधिसे विहीन भी बदरीनारायण में निवासमात्रसेही वेदान्त-पारंगमसे भी श्रेष्ठ है ॥ १८ ॥

या च साधनसंपत्तिः पुरुषार्थचतुष्टये । तया विना तदाप्नोति नारायणसमाश्रयः ॥ १९ ॥

हे नारद ! जो चार पुरुषार्थोंकी संपत्ति (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) है वह बदरीनारायणमें वास करनेसे विना परिश्रमकेही मिलजातीहै ॥ १९ ॥

आमृतरेत्रवत्स्यामि परमापद्गतोऽपि यः । धिया संकल्प्य तिष्ठेत तं विद्धि जगदीश्वरम् ॥२०॥

मरणपर्यन्त यहाँ वास करूंगा, चाहे कितनाही कष्ट क्यों न हो किन्तु बदरीका निवास नहीं छोडूँगा, इस प्रकार मनमें संकल्प करके जो मनुष्य स्थित रहताहै उसको जगदीश्वर जानो ॥ २० ॥

मुहूर्त्तं क्षणमात्रं वा यः स्मरेद्बदरीं धिया । दिने २ स धन्यः स्याद्दूरस्थोऽप्यस्तकिल्बिषः ॥ २१ ॥

हे नारद ! दूरदेशमें स्थित हुआ भी जो प्रतिदिन मुहूर्त्तमात्र भी बुद्धिपूर्वक बदरीशका स्मरण करताहै, वह धन्य और निःपाप है॥ २१ ॥

बदरीवासिनो यश्च स्मरति स्वीयया धिया ।

सोऽपितद्वासिकल्पः स्यान्नारदैतत्प्रभावतः॥२२॥

हे नारद ! बदरी वनमें वास करनेवालोंको जो अपनी बुद्धिसे स्मरण करताहै, वह भी बदरीनारायणके प्रभावसे बदरीवनका निवासी जानना चाहिये ॥ २२ ॥

अतिपापोपपापानि महापापानि चांजसा ।
बुद्ध्यबुद्धिकृतान्यङ्ग प्रविशन्बदरीं दहेत् ॥२३॥

हे अङ्ग हे नारद! बदरी वनमें प्रवेश करते ही मनुष्यके ज्ञान वा अज्ञानसे किये हुए महापाप, उपपाप, अतिपाप जल जाते हैं ॥ २३ ॥

गच्छन्तं बदरीं दृष्ट्वा स्वं वंश्यं पितरो मुने ।
क्रीडन्ति निलयं विष्णोर्वैकुंठं प्राप्नुमो वयम्२४

हे मुने ! अपने वंशके पुरुषको बदरीनारायण जाते-हुए जब पितर देखते हैं तब प्रसन्न होते हैं कि अब हम विष्णुभगवान के स्थान वैकुंठमें गमन करेंगे ॥ २४ ॥

बदरीदेशसंचाराद्यादृशः पुण्यसंचयः ।
प्राप्यते भक्तिवृद्धिश्च तद्वन्नैवापरैः शुभैः ॥२५॥

बदरीनारायणकी यात्रासे जो पुण्यसंचय और भक्ति

की वृद्धि होतीहै, सो और धर्म करनेसे नहीं होती॥२५॥

अहो कथं न कुर्वन्ति संसारोद्विग्नमानसाः ।
वासमेव बदर्याख्ये क्षेत्रे नारायणप्रिये ॥ २६ ॥

बड़ा आश्चर्य है कि संसारके जन्ममरणसे डरने-वाले प्राणी नारायण के प्यारे बदरिकाश्रम में वास नहीं करते ॥ २६ ॥

सत्यं ब्रवीमि योगीन्द्र भुजमुद्धृत्य नानृतम् ।
बदरीवासमात्रेण पुरुषार्थः कलौ युगे ॥ २७ ॥

हे योगीन्द्र नारद ! मैं भुजा उठाकर सत्य कहता हूँ झूठ नहीं, इस कलियुगमें बदरिकाश्रम में निवास करने-ही से पुरुषार्थकी प्राप्ति होती है ॥ २७ ॥

क्षेत्रान्तराणि सर्वाणि बदरीगोपनाय वै ।
गदितानि पुराणादौ नात्र कार्य्या विचारणा २८

और पुराणआदिकोंमें जो अन्य क्षेत्र वर्णन कियेहैं सो बदरीनारायणके छिपानेके निमित्त हैं इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥ २८ ॥

बदरीक्षेत्रमुत्सृज्य क्षेत्रांतरयियासुना । जन्मा-

न्तरसहस्रेषु कृतं पुण्यं विनाश्यते ॥ २९ ॥

बदरीक्षेत्रको त्यागकर जिसने अन्य तीर्थोंकी यात्रा की उसने हजारजन्मोंका कियाहुआ पुण्य नष्ट करदिया२९

गत्वान्यत्र यदैवासौ दानार्चाहवनादिकम् । करोति निष्फलं तत्स्यान्नारदैतन्मयोदितम् ॥३०॥

हे नारद! और तीर्थोंमें जाकर जो मनुष्य जप तप दान पूजन और हवन आदिक करताहै उसका कियाहुआ सब कृत्य निष्फल होजाता है यह मैं सत्य कहता हूँ ॥ ३० ॥

वरं पानीयमात्रेण बदर्य्यां क्षुन्निवारणम् । अन्यत्र शर्करायुक्तात्पायसाद्विषसम्मितात् ॥ ३१ ॥

बदरिकाश्रममें जल पीकर भूख बुझाना श्रेष्ठ है और अन्य तीर्थों में शर्करायुक्त पायस (खीर) विष के समान है, इसकारण पहिले बदरीयात्रा करै ॥ ३१ ॥

अदृश्या यत्र कुर्वन्ति वेदध्वनिमहर्निशम् । मुनयस्तत्स्थलं मोक्तुं को यतेत सुधीरिह ॥३२॥

जहाँ मुनिजन रातदिन वेदध्वनि (वेदके शब्दोंको उच्चारण) करतेहैं पर दृष्टिगोचर नहीं होते उसस्थलके

छोड़नेको कौन बुद्धिमान् पुरुष प्रयत्न करेगा ॥३२॥

गच्छन्तं बदरीक्षेत्राद्विहसन्ति सुरादयः। चिंतामणिकरान्तःस्थं सिंधौ मुंचत्यसाविति ॥ ३३ ॥

. हे नारद ! बदरीक्षेत्रको त्यागकर अन्यतीर्थमें जानेवालेको देखकर इन्द्रादिदेवता हंसतेहैं कि यह मूढ़बुद्धि हाथ में रक्खी हुई चिंतामणिको समुद्रमें फेंकताहै ॥ ३३ ॥

बदर्यां नारदीयेऽस्मिन् क्षेत्रे येन न लभ्यते । मरणं मणिकर्ण्यां तु तेन प्रार्थ्यं न चेतरैः ॥३४॥

बदरीक्षेत्रमें नारदकुंडपर जिसको मरण प्राप्त न हो उसको काशी मणिकर्णिका घाटपर मरणकी प्रार्थना करनी चाहिये औरोंको नहीं ॥ ३४ ॥

सूर्यसोमोपरागादौ बदरीं यत्नतो व्रजेत् । अलाभे तु कुरुक्षेत्रं गच्छन्नपि न दुष्यति ॥३५॥

सूर्य, चन्द्रमाके ग्रहणपर बदरीवनमें प्रयत्नपूर्वक जाना चाहिये यदि वहां न जासके तो कुरुक्षेत्र जानेमें भी कुछ दोष नहीं है ॥ ३५ ॥

शिरःकपालं यत्रैतत्पपात ब्रह्मणः पुरा । तत्रैव

बदरीक्षेत्रे पिण्डं दातुं प्रभुः पुमान् ॥ ३६ ॥

पहिले जहाँ ब्रह्माजीका शिर गिरा है वह ब्रह्मकपाल है वहाँ मनुष्यको पितरोंके निमित्त पिण्डदान करना चाहिये ॥ ३६ ॥

मोहाद्गयायां दद्याद्यः स पितृन् पातयेत्स्वकान् । लभते च ततः शापं नारदैतन्मयोदितम् ॥३७॥

हे नारद ! जो पुरुष अज्ञान से ब्रह्मकपालको त्याग गयाजीमें पिंडदान करताहै उसके पितर नीचे गिरतेहैं और उसको शाप लगताहै यह मैंने कहाहै ॥ ३७ ॥

अव्याजकरुणापात्र उद्धवो यत्र विष्णुना । प्रेषितो बदरीक्षेत्रे ततः किमपरं वरम् ॥ ३८ ॥

जिस बदरीक्षेत्र में स्वयं विष्णुभगवान्ने निर्मल करुणाके पात्र उद्धवजीको भेजा उस स्थानसे श्रेष्ठ और क्या होगा ॥ ३८ ॥

समुद्रतीरे विद्येते कले विष्णुमहेशयोः । यत्र नारायणो देवस्त्वत्तीर्थादुद्धरिष्यति ॥ ३९ ॥

हे नारद ! समुद्रके किनारे विष्णु महेश्वर की कला

हैं, जहाँ बदरीनारायणदेव तुम्हारे तीर्थसे प्राप्त होंगे ॥३९॥

गुप्तावतारो विष्णोर्वै वासुदेवसमाह्वयः । सूर्य वंशप्रदीपोऽत्र कारयिष्यतिसत्क्रियाम् ॥४०॥

यहाँ विष्णुभगवानका गुप्त अवतार है, यहाँ रामचन्द्र तपस्या करेंगे ॥ ४० ॥

तदाप्रभृति मर्त्यानां सुगम्या बदरी भवेत् ।
यावद्विष्णोः कला तिष्ठेज्ज्योतिःसंज्ञे निजालये ॥
ततः परं ततः पूर्वमगम्या बदरी भवेत्॥ ४१ ॥

ज्योतिर्मठ मेरा स्थान है वहाँ जबतक विष्णुभगवान की कला विद्यमान है, तबतक बदरीवनमें पुरुष जासकते हैं, इसके उपरान्त बदरीवन अगम्य होजायगा ॥ ४१ ॥

अतः स्वसमये नित्यं न त्याज्या बदरी नृभिः ॥
दूरस्थानां गृहस्थानामन्येषां वा सनातने ॥४२॥

इस कारण उस समय तक मनुष्यों को बदरीवनकी यात्रा नहीं छोड़ना चाहिये, दूर देशमें रहनेवाले वा अन्य कोई ॥ ४२ ॥

वासेऽक्षमत्वं यद्यत्र गंतव्यं प्रतिवत्सरम् ।

वत्सरे वत्सरे यस्तु बदरीं याति मानवः॥४३॥

यदि निवास न करसके तो प्रतिवर्ष वदरीनारायण की यात्रा करनी चाहिये, जो मनुष्य प्रतिवर्ष वदरीनारायण की यात्रा करता है ॥ ४३ ॥

सोऽपि तद्वासिकल्पः स्यादिति मे निश्चितं मतम्

वह भी वदरीवन के निवासी के समान जानाजाता है यह मेरा निश्चित संमत है ।

सुरेज्ये कुम्भगे यस्तु बदरीं याति भक्तितः ।
ब्रह्मज्ञानिसहस्रेभ्यः श्रेष्ठोऽसौ नात्र संशयः॥४४॥

हे नारद ! कुम्भके वृहस्पतिमें जो मनुष्य भक्तिपूर्वक वदरीनारायणकी यात्रा करताहै, वह हजारों ब्रह्मज्ञानियों से श्रेष्ठ है इसमें सन्देह नहीं ॥ ४४ ॥

तावकीनऱ्हदे स्नात्वा दृष्ट्वा नारायणं प्रभुम् ।
जप्त्वा स्वशाखां गेहादिं गच्छंस्तद्वासिभिःसमः

हे नारद ! जो मनुष्य तुह्मारे कुण्डमें (नारदकुण्डमें) स्नान करके वदरीनारायण का दर्शन करता है और अपनी शाखा के अनुसार जप करके अपने घरको लौटता है,

उसको वहां के निवासियोंके समान जानो ॥ ४५ ॥

उपवासत्रयं कृत्वा श्रीमदष्टाक्षरं सुधीः ।
लक्षं जप्त्वा व्रजेद्यस्तु सोऽपि तद्वासिभिःसमः ४६

जो बुद्धिमान् तीन उपवास और एक लक्ष बदरी नारायण के मंत्र का जप करके बदरीनारायण से घरको लौटता है उसको वहाँ के निवासियों के समान जानो४६

कारयित्वा दरिद्रस्य वासमन्नादिदानतः ।
गच्छन्निजगृहं यस्तु सोऽपि तद्वासिभिःसमः४७

जो बदरिकाश्रम में दरिद्रों को वस्त्र और अन्नादि का दान करके अपने घर को लौटता है वह भी वहां के निवासियों के समान है ॥ ४७ ॥

स्थूलं सूक्ष्मं ततः सूक्ष्मं शुद्धं चेति चतुर्विधम् ।
बदरीक्षेत्रमाहुर्वै सारूप्यादिप्रदं क्रमात् ॥४८॥

हे नारद ! यह बदरीक्षेत्र चार प्रकारका विख्यात है स्थूल, सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म और शुद्ध यह चारों क्रम से सारूप्य, सामीप्य, सालोक्य और सायुज्य मुक्ति को देते हैं ॥ ४८ ॥

कण्वाश्रमादिपक्ष्यम्बुपर्य्यन्तंस्थूलमुच्यते ।
ततो विष्णुप्रयागान्तं सूक्ष्मं विद्धि मुनीश्वर ४९

हे मुनीश्वर नारद ! कनासु नामक नन्दप्रयाग से गरुड़गंगा पर्य्यन्त स्थूलक्षेत्र कहा जाता है, और वहाँ से विष्णुप्रयाग तक सूक्ष्म बदरीक्षेत्र जानो ॥ ४९ ॥

आकुबेरशिलं तस्मात्ततः सूक्ष्मं महामुने ।
ततःसरस्वतीतीरपर्य्यन्तंशुद्धमुच्यते ॥ ५० ॥

हे महामुने!विष्णुप्रयाग कुबेरशिला तक अतिसूक्ष्म क्षेत्र है, और वहाँसे सरस्वती गंगाके किनारेतक शुद्धक्षेत्र कहाता है ॥ ५० ॥

वासे मृतौ च दानादौ जपहोमार्चनादिषु ।
शुद्धं श्रेष्ठमलाभे तु स्थूलादौ तत्समाचरेत् ५१

हे नारद! शुद्ध बदरीनारायणक्षेत्र में निवास, मरण, दानादि, जप, होमादि और पूजन यह सब श्रेष्ठ है न मिलसके तो स्थूल बदरीक्षेत्रमें वास आदि कृत्य करे॥५१॥

स्थूलादौच महायोगिन् वाराणस्यादिदेशतः।
सत्यं शताधिकं पुण्यं नात्र कार्य्या विचारणा ५२

हे महायोगिन् ! स्थूलआदिकों में जप होम आदि करना भी काशीआदिकों से निःसन्देह सौगुना फल देता है इसमें विचार नहीं करना चाहिये ॥ ५२ ॥

शुद्धे तु बदरीक्षेत्रे चातुर्मास्यमुपेयुषाम् ।
अध्यात्मचिन्तानिष्ठानां जीवन्मुक्तित्वमेवहि५३

शुद्ध बदरीक्षेत्रमें चातुर्मास्य भर (श्रावण भाद्रपद आश्विन कार्तिक) निवास करनेवालों को और अध्यात्मचिन्तन करनेवालोंको जीवन्मुक्त जानो ॥ ५३ ॥

तत्याज स्वतनुं यत्र पांडुः स्थानमिदं मुने ।
स्वर्गद्वारं बदर्यन्तं मर्तव्यं तत्र तत्प्रियैः ॥५४॥

हे मुने ! पांडुकेश्वर बदरीपर्यन्त स्वर्गद्वार कहा है भगवान् की प्रीति के निमित्त उनको यहाँ मरना श्रेष्ठ है ॥ ५४ ॥

वैखानसोपरिष्टात्तु मुक्तिद्वारमपावृतम् । तत्र मुक्त्यर्थिना देहपातनं प्रार्थ्यमेव हि ॥ ५५ ॥

हे नारद ! वैखानस तीर्थ से ऊपर मुक्ति द्वार गुप्त रूप से है वहाँ मुक्ति की इच्छा करनेवाले को अपने मरण

की प्रार्थना करनी चाहिये ॥ ५५ ॥

बहुभिरिह मुने किं भाषितैर्विष्णुभक्तिप्रभवभुवि बदर्यां वासमेवातिभक्त्या । विदधतु यदि भक्तिः प्रार्थ्यते पद्मनाभे भगवति करुणाब्धौ तत्पदध्यानपूताः ॥ ५६ ॥

हे नारद ! बहुत कथन से क्या प्रयोजन है, भक्ति उत्पन्न करनेवाली बदरीनारायण भूमि में भक्तिपूर्वक निवास करना ही श्रेष्ठ है। जो मनुष्य बदरीश्वर पद्मनाभ करुणा के समुद्र की भक्ति की इच्छा करे तो बदरीनारायण के चरणकमलों के ध्यान करने से पवित्र होकर यहाँ (बदरीवन में) निवास करें ॥ ५६ ॥

इति श्रीस्कान्दे केदारखण्डान्तर्गतबदरीनारायण माहात्म्ये भाषाटीकायामेकादशोऽध्यायः॥११॥

सरस्वती गंगा प्रयाग माहात्म्य ।

सरस्वतीजले स्थित्वा जपं कृत्वा सहस्रकम् ।

पुरीसे प्रायः (१४) मील सत्पथ है, जिसके अंतर्गत (१॥)

मनसस्तस्य विच्छेदो न कदापि प्रजायते ॥१॥

सरस्वती के जल में खड़े होकर सहस्र बार सरस्वती का मंत्र जपे तो सरस्वती से उसका मन कभी दूर नहीं होता ॥ १ ॥

वेदव्यासोऽपि भगवान् यत्प्रसादादुदारधीः ।
पुराणसंहिताकर्ता बभूवात्र न संशयः ॥ २ ॥

भगवान वेदव्यासजी भी जिसके प्रसाद से उदार-बुद्धिवाले होकर पुराण और संहिताओं के रचनेवाले हुए ॥ २ ॥

मणभद्र पुरी से भी भोटान "कैलास" मानसरोवर को कठिनता से मार्ग गया है।

मील पर सरस्वती गंगा जो भोटान कैलास मानतलाव (मानस-रोवर) की तरफ से आकर यहां पर अलकनन्दा से मिली सरस्वती-प्रयाग नाम से विख्यात है, पास ही मणभद्रपुरी (मारगा ग्राम है) गणेशगुहा, मुचकुन्दगुहा, व्यासजी के ग्रन्थ रचने की गुहा सामने के पर्वत पर श्यामकर्ण घोड़े का आकार आदि है।

सत्यपद-स्वर्गारोहण माहात्म्य ।

अस्ति सत्यपदं नाम तीर्थं त्रैलोक्यदुर्लभम् ।
तत्र स्नानेन सारूप्यं विष्णोर्यात्यधमः पुमान् १

त्रैलोक्य में दुर्लभ सत्यपद नाम का तीर्थ है, तहां स्नान करने से अधम पुरुष भी विष्णु के समानरूपता को प्राप्त करता है ॥ १ ॥

पञ्चधारा-माहात्म्य । *

श्रीशिव उवाच ।

ततो नैर्ऋत्यदिग्भागे पंचधाराः पतंत्यधः ।
प्रभासं पुष्करं चैव गया नैमिषमेव च ॥
कुरुक्षेत्रं विजानीहि द्रवरूपं षडानन ॥ १ ॥

श्रीशिवजीने कहा, हे षडानन ! वहांसे नैर्ऋत्यकोण

* प्रिय महाशय ! यहां पर अनेक तीर्थ और अद्भुत दृश्य हैं भाग्यवानही यहां आसकते हैं क्योंकि (१४) मील मार्ग जो अनुमान से

में जल की पांच धाराएं नीचे गिरती हैं उनको जलरूप-धारी प्रभास, १ पुष्कर, २ गया, ३ नैमिषक्षेत्र, ४ और कुरुक्षेत्र, ५ जानो ॥

ततस्त्वपरतस्तीर्थं लोकपालाभिधं परम् ॥
यत्र संस्थापयामास लोकपालान् हरिःस्वयम् ।१।

वहां से पश्चिम की ओर लोकपाल तीर्थ है, जहां श्रीनारायण ने लोकपालों की स्थापना की थी ॥ १ ॥

यत्र स्नात्वा विधानेन कुर्यान्मध्याह्नकालिकाम् ।
संध्यां यः परमं ज्योतिर्जले पश्यति चक्षुषा ॥२॥

लिखा गया है इसको यात्रीगण ३। रोज में पार करसकते हैं, अधिक क्या कहें ।

बदरीनाथजी के दर्शन कर लौटतीवार श्रीपुरी से (११) मील पंडुकेश्वर से (२) मील नीचे केवल लड़की का 'कन्या' नामक पुल पार कर "लोकपाल तीर्थ" को मार्ग पगडंडी से गया है, कन्या-पुल से (३) मील पर भीमउडार नामका गांव है, इस गांव के लोग

यहां जो मनुष्य विधिवत् स्नान कर मध्याह्नसंध्या करे वह जलमें अपने नेत्रोंसे परमज्योति को देखता है ॥२॥

यत्र काम्यानि कर्माणि फलंत्याशु मनस्विनाम्॥
यत्र पिंडप्रदानेन गयातोऽष्टगुणं फलम्॥ ३ ॥

जहां बुद्धिमानों के किये हुए काम्यकर्म शीघ्र फलीभूत होते हैं, जहां पिंडदान करने से गयाजी से अठगुना फल मिलता है ॥ ३ ॥ इति शुभम् ॥

साथ आते हैं यही वहांके पंडा भी माने जातेहैं। भीमउडार से (१०) मील लोक पल तीर्थ है बीचमें धर्मशाला कमलीवाले बाबा की धर्मशाला हैं। कठिन चढ़ाई का मार्ग इसी धर्मशाला से है अकथनीय दृश्य है भीमउडार से (१५) मील कागभुशुंड (कणकुल) तीर्थ है बिलकुल कठिन मार्ग जोकि (१५) मील ३ रोज की रास्ता है। यहां से लौटकर प्रायः बहुतकम मनुष्य आते हैं मैं खुद इस दृश्यके दर्शन को गया, किन्तु अभाग्य वश मुझे (२) मील अवशेष रहने पर ही लौट आना पड़ा।

भविष्य बदरी। *

लौटकर फय्यापुल में आना चाहिये। फय्यापुल पार करके पूर्व-कथित जोशीमठ में आकर भविष्यबदरी नन्दादेवी आदि के दर्शन करते हुए कैलास यात्रा मानतलाव (मानस सरोवर) जाना चाहिये।

अथ बदरीपतेः प्रातःस्मरणम् ।

नमस्कृत्य जगन्नाथं हरिं कृष्णं जगत्पतिम् ॥
आदिदेवमजं विष्णुं वरेण्यमनघं शुचिम् ॥१॥
वक्ष्यामि सकलं यद्वत्तथा शृणु यदीच्छसि ॥
योगमायां समाश्रित्य बदरीविपिने स्थितः ॥२॥
प्रातःस्मरामि बदरीश्वर योगमूर्त्तिं ब्रह्मात्मजोद्भव-कुबेरसमर्चितांघ्रिम् ॥ नानासरित्कमठशेषसुरेन्द्रतीर्थनीराच्छ शोभितमहामनसैर्न क्षित्यै ॥ १ ॥ प्रातर्भजामि बदरीं बदरीविशालां नानार्णदेव मुनिसिद्धसुराभिजुष्टाम् । श्रीवत्सकौस्तुभलसन्मणिभिर्विभान्तं नारायणं हृदय-

* भविष्यबदरी सुवाई, जोशीमठ से (८) मीलपर हैं, बीचमें (६) मीलपर तपोवन तप्तकुंड है यहां से सड़क छोड़कर (२) मीलपर बदरीश के दर्शन हैं ये पंचबदरी में से हैं यहां तप्तकुंड आदि तीर्थ हैं १२ महीना पूजा होती है यहां का माहात्म्य बदरीनाथ ही के तुल्य है मार्ग(६)मील सीधा (२) मील है और तपोवन से चढाई है ।

तोयभवंनरंच ॥ २ ॥ प्रातर्नमामि बदरीपति-
पादपद्मं योगीशमानसमधुव्रतलुब्धकन्दम् ॥
यत्पांशुतो विशततापहृदाभिधेय श्रीभाविनोद-
विलसत्त्रिदशाभिवंद्यम् ॥३॥ नारायणं धृतकि-
रीटलसन्मणिमेखलंचकम्बुवज्र मुद्गरसुदर्शन-
चारुहस्तम् । पीताम्बरंस्मितलसन्मुखमालस-
न्तम् ॥ ४ ॥ प्रातर्वदामि बदरीश्वरमेवतीर्थं
नामानि विष्टपजना घुदवानलानि । प्रह्लादना
रदसरिद्वरतप्तकुंडं नामानि विष्णुपद केवल
सार्थकानि ॥ सूक्तां मनःसरसिजे मुहुरुद्दत्ते-
नेतां किरीटधृतहीरमणिप्रभाभिः । प्रातः
स्मृतिं स्मरति यो बदरीपतेस्तु प्रद्योतितस्य वपु-
षो लभते स्वभक्तिम् ॥ ६ ॥

इति श्रीबदरीनारायणप्रातःस्मरणं समाप्तम् ॥

नंदादेवी-लाताग्राम। *

* लाताग्राम भविष्य बद्री से (२) मील पर है बीचमें (१) मील पर ऋणी पुल पर धवलागंगा में ऋषि-गंगा का संगम है यहां स्नान का महाफल है, कैलास मार्ग लाईन कुछ चढ़ाई लेकर माता नन्दा देवी का ऊंचे शिखरपर सुविशाल मंदिर है अन्दर भगवती की बहुमूल्य भूषणों से सुशोभित मूर्ति है, और साधक जन अभीष्ट सिद्धि प्रत्यक्ष फल को प्राप्त करते हैं। यहां से केदारखण्ड छूट गया है, किम्पुरुष खंड लग गया है॥

नन्दादेवी-लाताग्राम से दोभाषिया मुलक याने कुछ भाषा हम लोग (गढ़वाल) से मिलती है और कुछ बोली भाषा भोटान (हूण-देश) से मिलती याने कुछ अजनबी भाषा यहां से और निप्ति ग्राम तक यही भाषा है निप्ति से आगे ३ तीन दिन तक निर्जन वन निरा धार कैलास शिखर ऊंचे २ शृंग मिनट २ में प्रलय का सादृश्य दृश्य-मान होता है आंधी के साथ २ गोले बरसने लग जाते हैं कभी २ बर्फ भी गिरता है। मनुष्य आंधी से उड़ जाते हैं कभी बरफ से दब जाते हैं यह आश्चर्य मिनटों में होता है इस कठिन मार्ग से पार होकर भोटान की तराई ग्राम आदि मिल जाते हैं॥

नन्दादेवी से कुछ उतराई लेकर कैलास का मार्ग मिल जाता है निति ग्राम से कुछ दूर तक याने होती मुकाम तक अंगरेज सरकार का राज्य है सड़क पुल अमन चैन से रमणीय है यहां से (४) मील पर (समूण गैठा) सरकारी पड़ाव है। समूण गैठा से (९) मील पर जूमा ग्राम है ये सरकारी पड़ावें हैं मार्ग चढाई उतारका है भोजन सामग्री कठिनता से मिलती है। जूमा से (९) मील पर मलारीग्राम है यहां पर २०० दो सौ तक मकानात हैं भोजन सामग्री सब मिल जाती है और ऊनी वस्त्र, सवारी के लिये किराए में कम मूल्य से घोड़े भी मिल जाते हैं। मलारी से (६) मील पर पांपाग्राम है यहां पर सरकारी चुंगी है भोट में बिकनेवाली चीजें लिखी जाती हैं क्लर्क सरकार की तर्फ से है। पांपा से (५) मील पर नितिग्राम है यह ग्राम अच्छा है।

निति से-कैलास पर्वत मानसरोवर (मानतलाव) का मार्ग ।

निति से (३) मील पर कसोड़ डीप मु० बकरीवालों का है कसोड़ डीप से (४) मी० कालाजावर यहां पर भी मुकाम है। कालाजावर से (११) मील पर रिमखिम मुकाक है रिमखिम से (५) मील पर नानि होती है, यहां से (६) मील पर डागर मुकाम है। डागर से (६) मील पर साग मु० है साग से (६) मील पर शिवचिलम यहां पर भोटिया चीनियों का व्यापार का स्टेशन है निति घाटा, और हार, व्यांजो, दारमा आदि मुलकों के व्यापारी भोटिया (हूणदेशियों) से ऊन, बकरी, चंवर पूछ, चंवर गाय, भोटिया घोड़ा, निमक, सुहागा घोड़ों के जीन याने घोड़े के

सवारी का सामान, पशमिना, गुदम्मा, कम्मल, चुगडा आसन, घुलदम, आदिका व्यापार होता है।

यहांसे आगे हर एक मुकामोंपर इस व्यापारकी अधिक विक्री होतीहै

शिवचिलम।

से-(९) मील पर गोमाचेन मुकाम है यहां भी व्यापारका स्टेशन है गोमाचेन से (१२) मील पर दरम्याती मुकाम है। यहां पर दो २ नदियां हैं एक का नाम दरम्याती दूसरी का नाम गोन्याती है। गोन्याती नदी छोटी है यही पार करनी पड़ती है, गोन्याती से (६) मील पर ग्यानीम मुकाम है इसमें इस राज्य का मजिष्ट्रेट कचहरी करता है खारफुन नाम से विख्यात है ग्यानीम से (१६) मील पर गौरीकुंड है गौरीकुंड से (६) मील पर कैलास पर्वत (महादेव) है।

कैलास बीच (मध्य) मैदान में बरफ से दबा हुवा शृंग है चारो ओर पानी है और (१) मील पर ऊंचा है २० मील गोलाई (मोटा) है जो कि अनुमानन समुद्र से ३०००० ..स हजार फुट ऊंचा है और अनुमानन् (२०) मील की गोलाई (मोटाई) है, पांच मील गोलाई पर लांमा गुरु जोकि कैलास देव के पुजारी हैं वे रहते हैं ये लोग ब्रह्मचर्य्य पालन करनेवाले होते हैं इनका आयु (उमर) २०० दोसौवर्ष से अधिक वतलाते हैं चेहरा इनका बालक का सा चमकता दमकता रहता है ये लोग सादी नहीं करते हैं दयाशील पंडित ज्ञानी सदुपदेशक हैं इनके रहने के वास्ते कैलास शृंग की गोलाई यानें परिक्रमा में प्रति मील पर एक गोनवा (गुहा) है मंदिर भी इसको कहते हैं ऐसे स्थान प्रति प्रतिश्यां मील पर ४ स्थान हैं एकेक गोनवे याने (गुहा) में २०० दोसौ से भी अधिक लामा निवास करते हैं

इनकी गुजर मुलक से जहागिर और यात्रियों के चढ़ावा से होती है यहां पर २० गज ऊंचा भी दीपक घृतपूरित हरसमय (अखंड) चलता रहता है ऐसे कई एक दीपक रहते हैं जोत के लिए यहां के राजा और रईसों ने फीमवा से गाय और बकरी २। २ तक प्रत्येक घरसें कैलास देव को चढ़ा देने का नियम किया है जिस्से घृत की कमी नं होने पावे।

परिक्रमा उत्तर के गोनवासे आरम्भ है इस गोनवा में लांमा गुरु स पूजा करने के लिए दरखास्त करनी पड़ती है मंजूर होने पर लांमा १ रकाबी पर १६ कटोरे रखकर देता है उन कटोरों में नाना प्रकारके नैवेद्य याने घी, चीनी, पंचमेवा, पीने की चाय, सत्तू आदिसे १६ कटोरों को पूरित करके ≈) तीन आने नगद देने से वहां चढ़ाया जाता है बाजे लोग गाय बकरी वस्त्र आदि यथाशक्ति चढ़ाया करते हैं यही प्रसाद वहां से भी मिलता है, मूर्ति यहां की ३० गज से भी ऊंची हर एक धातु की ढालुआं खूबसूरत बनी रहती हैं अगनित मूर्तियां बेशकीमती यहां हैं भोजनसामग्री यहां पर प्रायः भोटिया चाय और सत्तू चंवर गाय का कच्चा घृत गुड़ मिलता है। यहां की भाषा समझ में नहीं आती परन्तु दोभाषिया भी मिल जाते हैं मानसरोवर कोन परसे विना बादल हिम बरसता है।

मानसरोवर मानतलाब।

कैलास से-(१२) मील पर कैलास और हिमालयके बीच में है जिसको वहांवाले राकसताल भी कहते हैं, मानसरोवर (१५) मील लंबा और (११) मील चौड़ा है वैदिक और बौद्ध दोनों मजहबवालों

का मुख्य और प्रशंसनीय तीर्थ है यहां पर भी लामा लोग पंडा माने जाते हैं इनको दक्षिणा देकर अपने मजहब के शास्त्रानुसार कृत्य करें॥ मानसरोवर में स्नान करनेवालोंको तत्काल फल की प्राप्ति होती है।

खास उस मुल्क की पैदाइशों में सब से ज्यादा कीमती चीज चाय है। दो प्रकार के पेड़ वहां ऐसे पैदा होते हैं कि उनमें से दो चीजें मोम और चर्बी की तरह निकलती हैं और बत्ती बनाने के काम आती हैं। कपूर के पेड़ भी वहां बहुत होते हैं काट २ कर घास के साथ लोहे के बेगों में उनका मुंह बंदकरके आग पर चढ़ा देते हैं कुछ देर में कपूर उन दरख्तों के पत्ते और टहनियों से जुदा होकर घास में जम जाता है जंगली जानवर जैसे घोड़े बैल [जोवा] चंवर गाय [सुरागाय] गधे यह बन के जानवर बड़ी कठिनता से गड्ढे बना २ कर फांस डालकर पकड़े जाते हैं यहां पर मकान बहुत कम बनते हैं खेमा ओढ़ कर रहते हैं यहां पर छोटे बड़े ग्राम बहुत हैं किन्तु तिब्बत का बड़ा शहर लासा पेकिनसे १८०० मील नैऋत कोन है लामागुरु उसी जगह रहता है वह शहर प्रायः चार मील लम्बा और १ मील चौड़ा है शहर के बीच में एक बड़ा मंदिर बना है उस पर तमाम सोनेका काम हुआ है आदमी की बनाई हुवातिअज्लु की चीजों से इस मुल्क में एक बड़ी दीवार है यह दीवार असलीचीन की उत्तर हद्दपर है पंद्रह सौ मील अर्थात् साढ़ेसात सौ कोस से अधिक लंबी और बीस फुट से लेकर तीस फुट तक ऊंची है और चौड़ी भी इतनी है कि उसके ऊपर छ सवार बराबर रकाब से रकाब मिलाकर चल सकते हैं और सौ सौ गज के तफ़ावत पर बुर्ज रखे हैं जहां पहाड़ और दर्या दर्मियान में आगये हैं वहां भी इस दीवार को इन पर पुलडाल कर लेगये हैं अर्थात् खाड़ी और नदियों पर पुल बनाया

है और फिर पुल के ऊपर दीवार उठाई है । यहां के कारीगर धातु की मूर्ति आदि ढालुआं अच्छी बनाते हैं और ऊनके जूते यहां पर ४० । ५० रुपये जोड़ी तक बनते हैं पशमिना आदि ऊनके वस्त्र अच्छे से अच्छे बनते हैं । कैलास से लासा मोंढंनी का रास्ता है-तिब्बत, भोट, हूणदेश, चीन-इन नामोंसे विख्यात है ।

कैलास-मानसरोवर से-लौटतीवार शिवचिलम निति होते हुए वही पूर्वकथित जोशीमठ में आना पड़ता है ॥ अब आपको बदरी-नारायण की यात्रा लाईन मिलगई है ॥

जोशीमठ से-लालसांगा-(चमोली)

तक पूर्वकथित मार्ग से आना होता है चमोली से पुल पार होकर २ चट्टियां पड़ और मठीयाणा बीच में हैं (७॥) मील पर नन्द प्रयाग अच्छी बस्ती और तीर्थ है ।

विरहगंगा-माहात्म्य । *

तत उत्तरदिग्भागे नदी परमपावनी ।
व्रीहिकानाम विख्याता सर्वपापहरा मता ॥१॥

उससे उत्तर दिशा की ओर परमपवित्र और जल से पूर्ण पापको नाश करनेवाली व्रीहिकानाम की नदी विख्यात है ॥ १ ॥ (यहां पर स्नान करके लौटकर (४) मील चमोली में आकर यात्रा लाईन मिलती है) ॥

चमोली से बांया पुल पार कर (४) मील ऊपर पूर्वतर्फ "विरहीगंगा" त्रिसूली के बाक से निकल (२०) मील दशोली में बहकर अलकनन्दा में मिलगई है ।

* नन्दप्रयाग-माहात्म्य ।

नन्दो नाम महाराजो धर्मात्मा सत्यसंगरः ॥
यज्ञं चकार विधिवद्बह्वन्नं भूरिदक्षिणम् ॥ १ ॥

यहां धर्मात्मा और सत्यवादी नन्द नामक महाराजाने विधिपूर्वक यज्ञ किया उस यज्ञ में ब्राह्मणों को बहुत अन्न और दक्षिणा दी ॥ १ ॥

नाम चक्रे च संतुष्टस्तन्नाम्ना समलंकृतम् ।
संगमे स्नानमात्रेण शुद्धान्तर्जायते नरः॥ २ ॥

और प्रसन्नतापूर्वक उस क्षेत्रका नाम नन्दप्रयाग रक्खा इस अलकन्दा और नन्दा के संगम पर स्नान करने से मनुष्य का अन्तःकरण शुद्ध होजाता है ॥ २ ॥

---

* यहां पर नन्दागिनी त्रिशूली से निकल (३५) मील वहकर में अलकनन्दा से मिलगई है ॥

नन्दप्रयाग से (६) मील पुल पार करके दशोली की तर्फ (५) मील सीधा (४) मील चढ़ाई वैराश कुंड है ।

ततो योजनके देवि शिवलिंगं सुदुर्लभम् ।
वसिष्ठेशो महादेवो मया संराधितःपुरा ॥ १ ॥

देवि! नन्दप्रयाग से एकयोजनपर बड़ा दुर्लभ शिवलिंग है और वहां वसिष्ठेश महादेव हैं जिनकी मैंने पहिले आराधना की थी ॥ १ ॥

(यहां पर कुंड है मंदोदरी, रावण आदि हैं)

*कर्णप्रयाग माहात्म्य ।

अन्यच्च तव वक्ष्येऽहं तीर्थं परमदुर्लभम् ।
यत्र कर्णःपुरा तन्वि तपस्तेपे यतात्मवान् ॥ १ ॥

कर्णप्रयाग नन्दप्रयाग से (११) मीलपर है, बीच में सोमल, लगासु, जयकंडी यह चट्टियां ३।२॥ (१।) मीलों पर हैं भोजन की सब सामग्री मिलती है-कर्णप्रयागमें पोष्टआफीस तारघर औषधालय, धर्मशाला सब मौजूद हैं यहां से एक सड़क दहीने श्रीनगर होकर कोटद्वार, और हरिद्वार रेलवे स्टेशन को गई है और बांया मेलचौरी होकर रामनगर हलद्वानी, काट गोदाम रेलवे स्टेशन को सीधी चली गई है ।

यहां पर-पिंडरगंगा-जिला अल्मोड़ा के नन्दकोट पहाड़ के पिंडरी बांक से निकलकर (८०) मील जिला अल्मोडा में बहने के बाद (६०) मील जि० गढ़वाल में बहकर कर्णप्रयाग में अलकनन्दा में मिल जाती है ॥

हे तन्वि और भी परम दुर्लभ ब्रह्मसुर नाम का तीर्थ मैं तुमसे कहता हूं । जिस तीर्थ में पूर्व काल में कर्ण राजा ने नियमपूर्वक तप किया था ॥ १ ॥

तत्र वै त्रीणि लक्षाणि मुक्तानि ब्रह्मरक्षसां ।
क्षेत्रं तच्छृणु कैलासनिकटे नन्दपर्वतात् ॥२॥

और तीन लाख ब्रह्मराक्षसों को मुक्ति मिली है वो तीर्थ कैलास में नन्दपर्वत के समीप है उस तीर्थ को सुनो २

※ कर्णप्रयाग से-रेलवे स्टेशन रामनगर वाला मार्ग ।

※ पंजाब प्रान्तवाले यात्री कर्णप्रयाग से २० मील पर पूर्वकथित रुद्रप्रयाग होकर श्रीनगर होते हुए रेलवे स्टेशन हरिद्वार को जाते हैं कर्णप्रयाग से रुद्रप्रयाग तक, चटुवा पीपल, कमेड़ा, शिवानन्दी, ४।५।७।८। मील पर दूकान हैं पिंडारका और अकलकनन्दा गंगा के संगम पर ॥

कर्णप्रयाग से-(११॥) मील पर आदिबदरी मुकाम है बीचमें सेमली, मरोली, भटोली; ये चट्टियां ४।२।१॥ (४) मीलों की हैं अच्छी और सुसज्जित भोजनसामग्री सब मिलती है आदिबदरी ७।८ दूकानों की है आदिबदरी का मंदिर है डाकखाना आदि सब है मार्ग सीधा है आदिबदरी से-(११॥) मील पर धोनारघाट मुकाम है यहां पुलिस स्टेशन डाकखाना आदि सभी है ८। १० दूकान हैं । बीचमें आदिबदरी से (२) मील चढाई है ९ मील उतराई और सीधा मार्ग है बीचमें ज्योंकापानी, कालामाटी, ग्वाडचट्टी ५॥) २॥। २॥। १। मीलों पर है रहने को सुभिता है

गंगापिंडारकासंगे शिवक्षेत्रे सुरालये।
कर्णो नाम महाराजो महादीक्षां समाश्रितः॥ ३॥

गंगा अलकनन्दा और पिंडारका संगम पर देवतों के रहने का स्थान कल्याण कर्नेवाले क्षेत्र में कर्ण राजा ने यज्ञ दीक्षा धारण किई ॥ ३ ॥

वामदेवादयो ये च मया सह वरानने।
कर्णयज्ञे समायाता मुनयो ब्रह्मवादिनः ॥ ४ ॥

घुनारघाट से-(६) मील पर मेहचौरी है मार्ग सीधा है। यहां ५।६ दूकान और पुलिस की चौकी है। इधर हरिद्वार आदि स्थानों से आये हुए जापानी और बोझा ढोनेवाले कुली मेहलचौरी में अपना आड़ा लेकर अपने यात्रियों को छोड़ देते हैं, क्योंकि यहां से जिला गढ़वाल छूटता और आगे जिला अल्मोड़ा आरम्भ होजाता है। इसलिए यहां पर कुली बदल जाते हैं, मेलचौरी से फिर नये कुली, घोड़ा आदि मिल जाते हैं।

गनाई (चौखुटिया) मेहलचौरी से (८) मील पर है। यह स्थान जिला अल्मोड़ा में है। मेहलचौरी से पंडुआ खालतक (१) मील की चढाई है अब उतराई और सीधा है। २ मुकाम बीचमें सेमलखेत और नारायण चट्टी है। गनाई में १०।१२ दूकान हैं यहां डाकखाना, और सफाखाना भी है बस्ती अच्छी है गनाई से-२ लाईन गई हैं एक बायाँ काटगोदाम रेलवे स्टेशन को गई है। अब यह सड़क छूट गई है। दूसरी

हे वरानने वेदपाठ करनेवाले वामदेव आदि मुनि लोक मेरे सहित कर्ण राजा के यज्ञ में आये ॥ ४ ॥

सूर्यमाराधयामास यज्वा यज्ञे स भूमिपः ।
ततःकतिपयाहैस्तु वरं प्रादान्महात्मने ॥ ५ ॥

यज्ञ में राजा कर्ण ने सूर्य नारायण की आराधना किई कुछ दिनके बाद सूर्य ने कर्ण राजा को वर दिया॥५॥

कवचं च तथाभेद्यं तूणीरं च तथाक्षयं ।
अजेयत्वं महावीरैः क्षेत्रनाम तथा ददौ ।
कर्णप्रयागनाम्ना वै क्षेत्रं तदवधि स्मृतं ॥ ६ ॥

गणाई से (नई लाइन) रामनगरको ।

जब रामनगर नया रेलवे स्टेशन खुल गया है अब यात्रियों को (२०) मील की मंजिल कम होगई और मार्ग भी अच्छा है अब उसही मार्ग के मुकाम लिखे जाते हैं, यहां से रामनगर (६२) मील पर है ।

गनाई से (७०) मील पर अच्छी और बड़ी चट्टी है पोष्ट आदि १० । १२ दूकाने हैं, मासी नाम से विख्यात है ।

मासी से-(११) मील पर भिखिया सैण नाम का स्थान है मार्ग सीधा है पुलिस स्टेशन पोष्टाफीस छोटासा बाजार भी है यहां पर रामगंगा दूधातोली पहाड़ के दीवाली खाल से निकलकर (१६)

और न टूटनेवाला कवच और न नाश होने-वाला भाता (बाण रखने की थैली) और बड़े बड़े वीरों को जीत लेना और क्षेत्र का नाम दिया ॥ ६ ॥

कर्णप्रयागनाम्ना वै क्षेत्रं तदवधि स्मृतं ।
प्रशंसंतस्तथा सर्वे मुनयो ब्रह्मवादिनः ।
स्थितिमत्र तथा चक्रुः स्वस्य स्वस्य वरानने ॥७॥

उसी दिन से यह क्षेत्र (कर्णप्रयाग) नाम से कहा गया और हे सुंदर मुखवाली अरुंधति वेदपाठी मुनि लोग भी इस क्षेत्रमें स्तुति करते हुये रहे हैं ॥ ७ ॥

मील लोहवाम बहने के बाद जि० अल्मोडा में चली गई फिर बूंगी में आकर (३०) मील तक पातलीदून में बहकर भिखियासैन में चन्द्र-भागा से संगम हुआ ।

भिखियासैण से-गुजरगढ़ी (८) मील है ५ । ४ दूकानें हैं और गांव भी है-गुजर गढी से (५॥) मील पर पनुवांघोखोन मुकाम है अच्छी चट्टी है—पनुवांघोखोन से—(२) मील पर गोदा चट्टी है यहां से अगीड़ा टोटा आम चट्टी को यदि गाड़ी के सड़क से जाओगे तो (८) मील होगा और यदि बटिया से जावो तो सिर्फ (१) मील की चढ़ाई है । गोदा से-टोटा आम गाडी सड़क से (९) मील है और बटिया से (१) मील है । टोटा आम से-कुमरिया (५) मील है । सड़क गाड़ी की है कुमरिया से-(४) मील पर मुहाण

तेषां नामभिरत्रापि कुंडान्यासन्महांति च ॥
तत्र तत्र नरः स्नात्वा सूर्यलोके महीयते ।
सूर्यकुंडं च तत्रास्ति चतुर्वर्गफलप्रदं ॥ ८ ॥

इस कर्णप्रयाग में भी उन मुनि लोकों के नामके बड़े २ कुंड हैं और धर्म अर्थ काम मोक्ष देनेवाला सूर्यकुंड भी है ८

उमानाम्नी तथा देवी तत्रैवास्ति महेश्वरी ॥
बलिदानादिभिर्यो वै पूजयेत्तां सुरार्चितां ।
प्रयच्छति वरान्कामानंते स्वपुरवासितां ॥ ९ ॥

इस कर्णप्रयाग क्षेत्र में उमा नाम की ईश्वरी देवी है देवता लोगों से पूजित भगवती उमा देवी की जो कोई बलिदानादिकों से पूजा करेगा उसे अच्छे २ कामों को देके अपने लोक में वास देगी ९

चट्टी है-मुहाण से गरजिया (६) मील पर है और गरजिया से (७) मील पर रामनगर रेलवे स्टेशन है अब आप बद्रीनाथ से लौट आये हैं अब महिनों का रास्ता दिनों का हो गया है आप यदि अब यहीं से बिकट पहाड़ कठिनधाम आदि पांव पैदल चलनेवाले मार्ग के आश्चर्यजनक पशुपति, ज्वालामुखी आदि तीर्थों से मुक्त होना चाहें "तो" बेखटके बिना किसी के पूछे या मदत लिए या साथ किये विनाही इस पुस्तक के अधोलिखित मील संख्यादि मुकामों के सहारे जासकते हैं ।

उमेश्वरो महादेवः सर्वयज्ञफलप्रदः ।
वैनायकी शिला तत्र रक्तवर्णविचित्रिता ॥
तां स्पृष्ट्वा च परिक्रम्य विघ्नानां नाशनं भवेत् १०

और सर्व यज्ञ का फल देनेवाला (उमेश्वर) नाम का महादेव है और लाल रंग की (वैनायकी) नाम की शिला चित्रित की हुई है उसे हात लगाके परिक्रमा करने से विघ्नों का नाश होगा ॥ १० ॥

इति पुण्यतमं स्थानं सर्वकामदमुत्तमम् ।
अत्र यो मृतिमाप्नोति कल्पं शिवपुरे वसेत् ११

इस प्रकार का सर्व काम का देनेवाला उत्तम स्थान है

रामनगर रेलवे स्टेशन से

" पशुपतिनाथ जी " का मार्ग रेलवे स्टेशन रामनगर से "बेंगाल नॉर्थवेस्टर्न रेलवे " जेंकसन गोंडा गोरखपुर होते हुए । विजमन गंज (वीरगंजा) तक रेलवे लाईन से रेल भाड़ा अन्दाजन ४ रुपये कुछ आने लगते हैं । वीरगंजा से नयपाल पशुपतिनाथजी का मंदिर (८८) मील है पांव पैदल मार्ग से मुकाम लिखते हैं इसी मार्ग से अपको आना जाना होगा ।

वीरगंजा से (९) मील पर नोतनबाजार है यहां पर भोजन सामग्री इफरात से मिलती है सवारी के लिये भोटिया घोड़े भी मौजूद रहते हैं ।

इस क्षेत्र में जो मरेगा वो कल्पतक शिवपुर (कैलास) में रहेगा ॥ ११ ॥

कर्णप्रयागे यो मर्त्यो माषमात्रं सुवर्णकं ।
विप्राय वेदविदुषे ददाति स्वर्गभाग्भवेत्॥१२॥

जो मनुष्य इस कर्णप्रयाग में वेद जानने वाले ब्राह्मण को मासे भर सोना दान करेगा वो स्वर्ग भोगनेवाला होगा॥१२॥

इति श्रीस्कन्दपुराणान्तर्गतकेदारखण्डे
कर्णप्रयागमहात्म्यम् सम्पूर्णम् ॥

नोतन बाजारसे-(१२) मीलपर वेथरीव मुकाम है रहने के लिये अच्छा है मार्ग कुछ चढ़ाई का है।

वेथरीवसे-वटोला राहदानि नैपाल राज्य में जाने के वास्ते ~)॥। सात पैसे देकर टिकट लेना पड़ता है । वटोला से (१८) मीलपर पालया, मुकाम है मार्ग चढाई, उतार सीधा है दूकाने अच्छी हैं पालया से-(१६) मीलपर पोरवरा मुकाम है रमणीक स्थान है यहां से (२९) मील नैपाल पशुपतिनाथजी का मंदिर है।

नैपाल

शीतप्रधान पर्वतीय देश है यहां के राजा का शुभ नाम "श्रीत्रिभुवनवीर विक्रमशाह देव महाराज" है, मंत्री का नाम "चन्द्रसमशेर" है इनका बड़ाभारी राज्य है जिसकी राजधानी काठमेडू नामक नगर है, इस नैपाल राज्य में " पशुपतिनाथ " द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से हैं साधु महात्मा इनके भी दर्शन को बहुत जाते हैं, और मग्न होकर कुछ न कुछ गाते हैं।

पशुपत्यष्टकम् ।

श्रीगणेशाय नमः॥ पशुपतींदुपतिं धरणीपतिं गज-
लोकपतिं च सतीपतिम् ॥ प्रणतभक्तजनार्तिहरं
परं भजत रे मनुजा गिरजापतिम् ॥१॥ न जनको
जननी नचसोदरो नतनयो न च भूरिबलं कुलम्॥
अवति कोपि न कालवशंगतंभज० ॥२॥ मुरज-
डिंडिमवाद्यविलक्षणं मधुरपंचमनादविशारदम्॥
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं-भजतरे० ॥ ३ ॥ शरण-
दं सुखदं शरणान्वितं शिवशिवेतिशिवेतितंनृ-
णाम् ॥ अभयदं करुणावरुणालयं भज० ॥ ४ ॥
नरशिरोरचितं मणिकुंडलं भुजगहारमुदं वृषभ-

अवधरुहेलखंड रे० हरिद्वार से-
ज्वालाजी-पहाड़ को

नार्थवेस्टर्न रेलवे द्वारा-जालंधर सिटी जलंधर, तक रेलभाड़ा २॥=) है-यह स्टेशन रेलका यहांतक हर एक नगर या धामों से रेल द्वारा आना होता है जांलधर से आगे होशियारपुर तक इक्का और घोड़ा गाड़ी की सवारी से जाना होता है यहां पर इक्का गाड़ी

ध्वजम् ॥ चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत० ॥ ॥ ५ ॥ मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजिफलप्रदम् ॥ प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भज० ॥ ६ ॥ मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम् ॥ जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलम् भजत० ॥ ७ ॥ हरिविरंचिसुराधिपपूजितं यमजनेशधनेशनमस्कृतम् ॥ त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भज० ॥ ८ ॥ पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतम् विरचितं पृथिवीपति

छूट जाती है यहां से अनुमानन् (५०) मील ज्वालामाई का मंदिर है, होशियारपुर से (१२) मील पांव पैदल का मार्ग आरम्भ हुआ मगवार है यहां रहने को अच्छा है मगवार से (१२) मील अंबा मुकाम है अम्बासे (१२) मील गोपीपुरडेरा है ५।४ दूकान हैं तहसील भी यहां पर है गोपीपुर डेरा से (१४) मील पर श्रीज्वालामाई का मंदिर है यहां पर वस्ती बहुत है मन्दिर वस्ती से अलाहिदा है।

ज्वालाजी माई

यहां पर ज्वाला माई का मंदिर है हवनकुण्डी है इस कुंड में जोत

सूरिणा। पठति संशृणुते मनुजः सदा शिवपुरी वसते लभते मुदम् ॥ ९ ॥

इति श्रीमत्पशुपत्यष्टकं संपूर्णम्।

देवीस्तोत्रम्।

नमंत्रं नोयंत्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो न चाऽह्वानं ध्यानं तदपि च जाने स्तुतिकथाः। न जाने मुद्रास्ते तदपिचनजाने विलपनं परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥ १ ॥ विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तवचरणयोर्या च्युतिरभूत्। तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्व-

का दर्शन होता है देवीजी की मूर्ति अग्नितत्त्वमय है अर्थात मंदिर के बीच में अन्य स्थान में भी अग्नि की ज्योति निकलती है दोनों नवरात्रों में बड़ा भारी मेला होता है नवरात्रों में ज्योति का दर्शन अधिकतर होता है यहां पर शाक्तों का पूजनीय अभीष्टदाता स्थान है पशुबली भी यहां पर होता है यहां के पण्डागण ब्राह्मण होते हैं।

माई के मंदिर में खड़े होकर हाथ जोड़े और इस (देव्यपराध-क्षमापन स्तोत्र) को पढ़े।

चिदपि कुमाता नभवति ॥ २ ॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननिबहवः संति सरलाः परं तेषां मध्ये जननि विरलोऽहं तव सुतः। मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो० ॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता नवादत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तव मया। तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमंयत्प्रकुरुषे कुपु० ॥ ४ ॥ परित्यक्त्वादेवान्विविधविधिसेवाकुलतया मया पंचाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि। इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता निरालंबो लंबोदरजननि कं

ज्वालामुखी से लौटकर पूर्वकथित मार्ग द्वारा जालंधर को आना होता है। यहां से रेल में सवार हो १॥।~) एक रुपया तेरह आना सहारनपुर तक का रेल भाड़ा है सहारनपुर में आकर यहां से गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी का भी बादशाहीबाग होकर रास्ता गया है साहरनपुर से बादशाही बाग (२२) मील है इक्कागाड़ी की सवारी भी मिलती है। यहां से पांव पैयदल ११। १२ रोज में गंगोत्तरी को पहुंचते हैं लौटकर जहां इच्छा हो वहां जाइये भटवाड़ी से बूढ़केदार वही पूर्वकथित मार्ग से केदार बदरी को चले जाते हैं।

यामि शरणम् ॥ ५ ॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा निरातंको रंको विहरति चिरं कोटिकनकैः । तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं जनः को जानीते जननिजपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥ चिताभस्मालेपो गरलमशनंदिक्पटधरो जटाधारी कंठे भुजगपतिहारी पशुपतिः । कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥ नमोक्षस्याकांक्षा न च विभव-

---

अमरनाथजी–वाला मार्ग अवध रु० खंड रे० हरिद्वार से

नार्थवेस्टर्न रेलवे–अमृतशहर तक का रेल भाडा ३।) रु० है। अमृतशहर से ५) रु० जम्बु तक। जम्बु से पांव पैदल से ५। ७ दिन में काश्मीर जाना होता है वहां विश्राम कर फिर यहां से ४। ५ रोज के रास्ते से श्रीअमरनाथजी को पहुंच जाते हैं कश्मीर से मटण महादेव जाने को २। ३ रोज की रास्ता में जाना होता है रास्तेही में मटण महादेव तथा कुंड है इस कुंड में अल्पमृत्युवालों की गति होती है पंडे ब्राह्मण होते हैं ॥

वांछापि च नमे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापिनपुनः । अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु ममवै मृडानी रुद्राणी शिव शिवभवानीति जपतः ॥ ८ ॥ नाराधितासि विधिना विविधोपचारैः किंरुक्षचिंतनपरैर्न कृतं वचोभिः । श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे धत्से कृपामुचितमंव परं तवैव ॥ ९ ॥ आपत्सु मग्नः स्मरणंत्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि । नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरंति ॥ १० ॥ जगदंब बिचित्रमत्र किं परि-

अमरनाथजी ।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों मेंसे हैं यहां पर शीत बहुत पड़ता है पिंडी शिवजी कि अपालिंग बरफ की है जो कृष्ण पक्ष को घटती तथा शुक्ल पक्षको बढ़ती है तथा यहां पर १ एक कबूतर का जोड़ा पूर्णमासी को अवश्य दर्शन देता है जिसके दर्शन करने का भी बड़ा माहात्म्य है। यहां पर आने को स्वच्छ शुद्ध भाव होना चाहिए बलकी (१) मील दूरा पर से अपने अंग के सब वस्त्र निकालकर भूर्जपत्र का लेबास पहिरना चाहिए और "शिव षडक्षर स्तोत्र" का पाठ करना चाहिये ।

पूर्णा करुणास्ति चेन्मयि । अपराधपरंपरावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥ ११ ॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥ १२ ॥

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

शिवषडक्षर स्तोत्रम् ।

ॐ कारबिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायंति योगिनः ।
कामदं मोक्षदंचैव ॐ कारायनमोनमः ॥ १ ॥
नमंति ऋषयो देवा नमत्यप्सरसांगणः ।
नरा नमंति देवेशंमकाराय नमोनमः ॥ २ ॥
महादेवं महात्मानं महाध्यानपरायणम् ।
महापापहरं देवं मकाराय नमोनमः ॥ ६ ॥
शिवंशांतंजगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शिकारायनमोनमः ॥ ४ ॥
यत्रयत्रस्थितोदेवः सर्वव्यापीमहेश्वरः ।

॥ श्रीजगदीशजी ॥
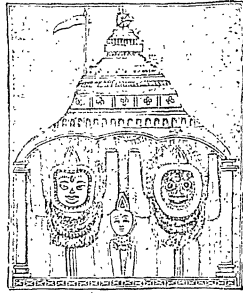
कदाचित्कालिंदीतटविपिनसंगीतकरवो मुदाभीरीनारीवदन कमलास्वादमधुपः । रमाशंभुब्रह्मामरपतिगणेशार्चितपदो जगन्नाथस्वामी नयनपथगामी भवतु मे ॥१॥

यो गुरुस्सर्वदेवानां यकाराय नमोनमः ॥ ६ ॥
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेनसह मोदते ॥ ७ ॥

इति शिवषडक्षर स्तोत्रं संपूर्णम् ।

॥ अथ जगन्नाथमाहात्म्यम् ॥

सूत उवाच ।

अथ वक्ष्ये सुरवरा दर्शनस्य विधिं तदा ॥
मार्कण्डेयवटे रम्ये प्रथमं स्नानमाचरेत् ॥ १ ॥

श्रीसूतजी बोले हे ब्राह्मणों ! अब मैं श्रीजगदीश के दर्शन का माहात्म्य तथा विधान कहताहूं तुम सब चित्त लगाकर सुनो । प्रथम परम रमणीय मार्कण्डेयवट के निकट जाय मार्कण्डेय तीर्थ में स्नान करना चाहिये ॥ १ ॥

मार्कण्डेयेश्वरं मर्त्यो हरं पश्येदुदारधीः ॥
ततः प्रासादमागत्य प्रणमेच्चक्रमुत्तमम् ॥ २ ॥

पश्चात मार्कण्डेयेश्वर महादेव का दर्शन पूजन करके जगदीश के मन्दिर के पास पहुंच परमोत्तम सुदर्शन चक्र का दर्शन कर प्रणाम करे ॥ २ ॥

वटमूलं ततो गत्वा प्रार्थयेद्वटमव्ययम् ॥
वटं प्रदक्षिणीकृत्य गणेशं प्रणमेत्ततः ॥ ३ ॥

पूर्वोक्त वटराज की प्रार्थनापूर्वक परिक्रमा करके गणेशजी का दर्शन कर प्रणाम तथा पूजन करे ॥ ३ ॥

ततो वटेश्वरं नत्वा मङ्गलां प्रार्थयेत्सुधीः ॥
क्षेत्रपालं नमस्कृत्य नरसिंहं तथा द्विजाः ॥ ४ ॥

तदनंतर वटेश्वर को दण्डवत और महामङ्गला की प्रार्थना कर क्षेत्रपाल तथा नरसिंहजी का दर्शन पूजन करना ॥ ४ ॥

विमलं विमलास्थानं गत्वा तां प्रार्थयेत्सुधीः ॥
पातालेश्वरदेवेशमीशानेश्वरमेव च ॥ ५ ॥

हे विप्रेन्द्रों ! फिर निर्मल विमला स्थान में जाय और पातालेश्वर तथा ईशानेश्वर का दर्शन पूजन कर प्रार्थना करे ॥ ५ ॥

प्रणमेत्परया भक्त्या वैनतेयं तथा द्विजाः ।
जयं च विजयं चैव स्तुत्वा नत्वा पुनः पुनः ॥६॥

और भक्तियुक्त होता हुआ प्रणाम करके गरुड़जी

जय विजय की स्तुति कर वारंवार प्रणमा करना चाहिये ॥ ६ ॥

बलभद्रं सुभद्रां च जगन्नाथं सुदर्शनम् ।
स्तुत्वा परमया भक्त्या प्रणमेद्दण्डवद्भुवि ॥ ७ ॥

फिर भक्तियुक्त चित्त से सुभद्राजी बलभद्रजी जगदीशजी तथा सुदर्शन चक्र को स्तुति पूर्वक दण्डवत करना ॥ ७ ॥

इत्थं यः कुरुते मर्त्यो विष्णोर्दर्शनमुत्तमम् ।
पदे पदेऽश्वमेधानां फलं प्राप्नोति दुर्लभम् ॥८॥

हे द्विजश्रेष्ठों ! जो मनुष्य इस प्रकार से विष्णु भगवान का अति उत्तम दर्शन करता है वह एक २ पद पर अश्वमेध याग का फल पाता है ॥ ८ ॥

इति श्रीसूतसंहितायां नीलाद्रिमहोदये पुरुषोत्तम माहात्म्ये सप्तमोऽध्यायः ।

सूत उवाच ।

दर्शनान्ते ततो गच्छेत् श्वेतगङ्गां शुभोदयाम् ।
प्रार्थयेत्परया भक्त्या सर्वपापोपशान्तये ॥ १ ॥

सूतजी बोले हे श्रोताओं! पूर्वोक्त तीर्थों और देवताओं का दर्शन करके श्वेतगङ्गा पर जाय सकल पाप पुञ्जोंके नाशार्थ भक्तिपूर्वक प्रार्थना करे ॥ १ ॥

स्नानं च विधिवत् कुर्यान्माधवेतौ विलोकयेत् ।
उग्रसेनान्तिकं गत्वा प्रार्थयेदतिभक्तितः ॥ २ ॥

और फिर वैशाख में विधिवत स्नान कर उग्रसेन के पास जाय विनती करे ॥ २ ॥

आज्ञां संप्रार्थ्य मार्गे तु हनुमन्तं विलोकयेत् ॥
ततः स्तुत्वा च नत्वा च तीर्थराजान्तिकं व्रजेत् ३

और यात्रा करने की आज्ञा मांगकर मार्ग में हनुमानजी का दर्शन कर स्तुति और प्रणाम कर तीर्थराज के समीप जाय ॥ ३ ॥

दण्डवत्प्रणमेत्तस्मै सप्तवारिधिमण्डपम् ।
संकल्पं विधिवत्कृत्वा दुरितक्षयपूर्वकम् ॥ ४ ॥

सप्त समुद्रको भक्ति भाव से दण्डवत कर स्नान के लिये विधिवत संकल्प कर स्नानादि क्रिया करनी चाहिये ४

नीलाचलपतिं विष्णुं प्रार्थयेद्द्विजसत्तमाः ।

लोकनाथं ततो गच्छेत्प्रार्थयेदतिभक्तितः ॥५॥

हे द्विजों ! तत्पश्चात नीलाचलपति महाविष्णु की प्रार्थना करके लोकनाथ के निकट पहुंच भक्ति से प्रणाम करे ॥ ५ ॥

इन्द्रद्युम्नसरस्तीरे नीलकण्ठं नमेद् बुधः ।
यमेश्वरं नमस्कृत्य कपालमोचनं तथा ॥ ६ ॥

फिर इन्द्रद्युम्न सरोवर पर जाय नीलकण्ठ का पूजन कर यमेश्वर तथा कपालमोचन का दर्शन पूजन कर प्रणाम करना ॥ ६ ॥

एवं प्रदक्षिणं कुर्यात्पञ्चम्यां द्विजसत्तमाः ।
कोटिगोदानजं पुण्यं वाजपेयफलं लभेत् ॥७॥

हे विप्रों ! पञ्चमीके दिन इस प्रकार परिक्रमा करने से कोटि गोदान तथा वाजपेय यज्ञ का फल होता है ॥७॥

सूत उवाच ।

ब्रह्महत्यादिपापघ्नं निर्माल्यं जगदीशितुः ।
भजतां द्विजशार्दूला मुक्तिस्तेषां न दुर्लभा ॥८॥

सूतजी बोले हे ब्राह्मणों ! ब्रह्महत्यादि बड़े २ पातकों

को भस्म करने वाले जगदीश के निर्माल्य को जो मनुष्य भक्ति से ग्रहण करते हैं उनको मुक्ति अति सुलभ होती है ॥ ८ ॥

जगन्नाथस्य नैवेद्यं महापातकनाशनम् ।
भक्षणात्फलमाप्नोति कपिलाकोटिदानजम् ॥९॥

इसी प्रकार महापातकों को मिटानेवाले जगन्नाथ जीके महाप्रसाद को भाव सहित भक्षण करनेवालोंको भी कोटि कपिला गोदान का फल मिलता है ॥ ९ ॥

चाण्डालादिद्विजस्पृष्टं तदन्नं द्विजसत्तमाः ॥
भोक्तव्यं सहसा विप्रैः पावनं सुरदुर्लभम् ॥१०॥

हे द्विजश्रेष्ठों ! जो महाप्रसाद देवताओं को भी दुर्लभ और पवित्र है उसको अन्त्यजादि के भी स्पर्श का विचार न करके भक्षण करना ही चाहिये जो ऐसा आचरण करता है ॥ १० ॥

यज्ञास्तपांसि विप्रेन्द्रा व्रतानि विविधानि च ॥
तीर्थाटनानि तेनैव कृतानि सुकृतानि च ॥ ११ ॥

हे विप्रेन्द्रों ! सकल यज्ञ, निखिल तप, अशेष व्रत उसी प्रकार सम्पूर्ण तीर्थयात्रा और अखिल पुण्य उस

मनुष्य ने भलीभांति कर लिये ॥ ११ ॥

पितरस्तर्पितास्तेन तथा देवा महर्षयः ।
गवां कोटिप्रदानाच्च वाजपेयशतं तथा ॥१२॥

और उसीने देव, ऋषि, पितर भी तृप्त किये उसी प्रकार करोड़ों गौदान का फल तथा वाजपेय यज्ञ का फल भी प्राप्त कर लिया ॥ १२ ॥

अश्वमेधसहस्रस्य राजसूयशतं च यत् ।
व्रतोपवासतो विप्रा यत्फल जायते तदा ॥१३॥

और हज़ार अश्वमेध, सौ राजसूय, अशेष व्रत तथा उपवासों के आचरण करने से जो फल होता है ॥१३॥

तत्फलं समवाप्नोति जगन्नाथान्नभक्षणात् ।
कुक्कुरस्य मुखाद्भ्रष्ट तद्ग्राह्य दवतरपि॥१४॥

वह फल जगन्नाथजी के महाप्रसाद के भक्षण ही से अनायास प्राप्त होता है यह प्रसाद यदि श्वान के मुख से गिरा हुआ हो तो भी देवता लोग उसको ग्रहण करने की लालसा रखते हैं ॥ १४ ॥

तस्मात्तदन्नं सहसा प्राप्तमात्रं तदश्नियात् ।

विचारणा न कर्त्तव्या न कर्त्तव्या कदाचन १५

इस कारण महाप्रसाद प्राप्त होने पर बिना विचारे ही स्वीकार करना चाहिये शंका विचार वा सन्देह करना उचित नहीं ॥ १५ ॥

साक्षाद्ब्रह्मस्वरूपोयं जगन्नाथो न संशयः ।
प्राप्तमात्रेण खादन्ति हृष्यन्ति च पुनः पुनः १६

श्रीजगदीश भगवान् प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं इसीलिये महाप्रसाद पातेही भक्षण करके बारं बार आनन्दित होते हैं ॥ १६ ॥

तेपि नीलाचलस्यापि हरेर्दर्शनतः फलम् ।
यस्यापि याचिका लक्ष्मीर्यस्य भोक्ता जगत्पतिः१७

क्योंकि नीलाचल तथा जगन्नाथजी का दर्शन और उनके महाप्रसाद को भक्षण महालक्ष्मीजी तथा जगत्पति भगवान् करते हैं ॥ १७ ॥

तदन्नाशनता विप्रा विष्णुलोके महीयते ।
इन्द्रद्युम्नोपि भूपालो नारदेन समन्ततः ॥१८॥

॥ श्रीरामेश्वरजी ॥
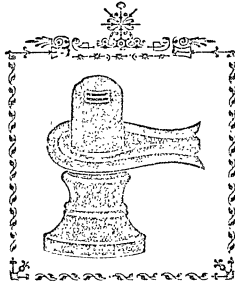
सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबद्ध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः ।
श्रीरामचन्द्रेण समर्चितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ॥१॥

हे विप्रों ! इस महाप्रसाद को स्वीकार करने से वैकुण्ठ में देवताओं से भी पूजनीय होता है और इसी (महाप्रसाद) के कारण राजा इन्द्रद्युम्न नारद मुनि के सहित ॥ १८ ॥

समारुह्य विमानाग्र्यं सत्यलोकं समाययौ ।
इत्थं संस्थापितं विष्णुं प्रद्युम्नेन महात्मना १९

दोनों उत्तमोत्तम दिव्य विमान पर बैठ कर सत्यलोक में गये इस प्रकार प्रद्युम्न से स्थापित श्रीजगदीश के ॥ १९ ॥

पठतां शृण्वतां पुंसां तद्दर्शनफलं भवेत् ॥२०॥

इस माहात्म्य को जो पढ़ता वा सुनता है वह भी जगदीश के दर्शन और यात्रा का पूरा फल पाता है ॥२०॥

इति श्रीसूतसंहितायां नीलाद्रिमहोदये पुरुषोत्तममाहात्म्ये भाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ श्रीजगन्नाथार्पणमस्तु ॥

॥ अथ सेतुयात्रा क्रम माहात्म्यम् ॥

सूत उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि सेतुयात्राक्रमं द्विजाः ।
यं श्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते मानवः क्षणात् ॥१॥

श्रीसूतजी बोले, महर्षियों! अब हम सेतुबंध रामेश्वर की यात्रा का क्रम तथा माहात्म्य कहते हैं, जिसके सुनते ही से मनुष्य सकल पातकों से छूट जाता है ॥ १ ॥

स्नात्वाचम्य विशुद्धात्मा कृतनित्यविधिःसुधीः।
रामनाथस्यतुष्ट्यर्थंप्रीत्यर्थंराघवस्यच ॥२॥
भोजयित्वायथाशक्ति ब्राह्मणान्वेदपारगान् ।
भस्मोद्धूलितसर्वांगस्त्रिपुण्ड्राङ्कितमस्तकः ॥ ३ ॥
गोपीचंदनलिप्तोवास्वकालेप्यूर्ध्वपुंड्रकः ।
रुद्राक्षमालाभरणःसपवित्रकरःशुचिः ॥ ४ ॥

वह क्रम इस प्रकार है कि, जब यात्रा करना हो तब पहिले स्नान कर नित्यकर्म से निवृत्त हो रामेश्वरजी और श्रीरामचन्द्रजी के प्रीत्यर्थ वैदिक विप्रों को यथाशक्ति भोजन करावे और सर्वांग में भस्म लगाय मस्तक में त्रिपुण्ड धारण करे, भस्म यदि न मिले तो गोपीचन्दन आदि से ऊर्ध्वपुण्ड (खड़ा टीका) कर गलेमें रुद्राक्ष की माला, हाथोंमें पवित्र (पैंती) धारण करे ॥ २-३-४ ॥

सेतुयात्रांकरिष्येहमितिसंकल्प्यभक्तितः ॥

स्वगृहात्प्रव्रजेन्मौनी जपन्नष्टाक्षरंमनुं ॥ ५ ॥

और हाथमें अक्षत और द्रव्य सहित जल ले (अहं सेतु यात्रां करिष्ये) मैं सेतुयात्रा करूंगा ऐसा संकल्प कर मौन हो अष्टाक्षर मन्त्र (श्रीरामेश्वरायनमः अथवा पंचाक्षर मंत्र (नमः शिवाय) को जपता हुआ घर से निकले ॥ ५ ॥

पंचाक्षरंनाममंत्रं जपेन्नियतमानसः
एकवारंहविष्याशीजितक्रोधोजितेंद्रियः ॥ ६ ॥

एकाग्र हो एकवार हविष्य अन्न (होमनेयोग्य) भोजन करे, काम क्रोध आदिको और इन्द्रियों को जीत करके॥६॥

पादुकाछत्ररहितस्तांबूलपरिवर्जितः
तैलाभ्यंगविहीनश्चस्त्रीसंगादिविवर्जितः ॥ ७ ॥

जूना न पहिरे, छाता न लगावे, पान न खाय, तेल न लगाव और स्त्रीसंग न करे ॥ ७ ॥

शौचाद्याचारसंयुक्तःसंध्योपास्तिपरायणः
गायत्र्युपास्तिंकुर्वाणस्त्रिसंध्यंरामचिंतकः॥ ८॥

सदा पवित्रतादि आचार, संध्यावन्दन, गायत्री की

उपासना करता हुआ तीनों काल श्रीरामजी का चिन्तन किया करे ॥ ८ ॥

मध्येमार्गंपठन्नित्यंसेतुमाहात्म्यमादरात् ।
पठन्रामायणंवापिपुराणांतरमेववा ॥ ९ ॥

और मार्गमें सेतुमाहात्म्य, रामायण अथवा अन्य किसी पुण्य-पुराण का पाठ करता रहे २ ॥ ९ ॥

व्यर्थवाक्यानिसंत्यज्यसेतुंगच्छेद्विशुद्धये। प्रतिग्रहंनगृह्णीयान्नाचारं चपरित्यजेत् ॥ १० ॥

रास्तेमें निष्फल वार्तालाप कोई (वकवाद) नकरे प्रतिग्रह (दान) नले और सदाचारका त्याग न करे ॥१०॥

कुर्यान्मार्गेयथाशक्तिशिवविष्ण्वादिपूजनं ।
वैश्वदेवादिकर्माणियथाशक्तिसमाचरेत् ॥११॥

शिव विष्णु आदि देवताओंका पूजन, वैश्वदेवआदि कर्म शक्तिअनुसार सादर करता जाय ॥ ११ ॥

ब्रह्मयज्ञमुखान्धर्मान्प्रकुर्याच्चाग्निपूजनं
अतिथिभ्योन्नपानादिसंप्रदद्याद्यथाबलं ॥१२॥

ब्रह्मयज्ञादि धर्म और अग्नि की पूजा कर अभ्यागतों को अन्न जल देना चाहिये ॥ १२ ॥

दद्याद्भिक्षांयतिभ्योपिवित्तशाठ्यंपरित्यजन्
शिवविष्ण्वादिनामानिस्तोत्राणिचपठेत्पथि ।१३।

यति (संन्यासियों) को भी भिक्षा वित्तशाठ्य रहित दान और शिव विष्णु आदि देवताओंके स्तोत्रोंका पाठ करे ॥ १३ ॥

धर्ममेवसदाकुर्यान्निषिद्धानिपरित्यजेत् ॥
इत्यादिनियमोपेतःसेतुमूलंततोव्रजेत् ॥ १४ ॥

निषिद्ध-कर्म का त्याग धर्माचरण आदि नियमों से युक्त हो सेतुके समीप जाना चाहिये ॥ १४ ॥

पाषाणंप्रथमंदद्यात्तत्रगत्वासमाहितः ।
तत्रावाह्यसमुद्रंचप्रणमेत्तदनंतरं ॥ १५ ॥

तीर्थमें पहुंच कर प्रथम समुद्र को सात वा एक पाषाणका अर्पण करे तीर्थको आवाहन और प्रणाम करे॥ १५॥

अर्घ्यंदद्यात्समुद्रायप्रार्थयेत्तदनंतरं
अनुज्ञांचततःकुर्यात्ततःस्नायान्महोदधौ ॥१६॥

अर्घ्य दे प्रार्थना कर अनुज्ञा पाय समुद्रमें स्नान करे ॥ १६ ॥

मुनीनामथदेवानांकपीनांपितृणांतथा
प्रकुर्यात्तर्पणंविप्रामनसासंस्मरन्हरिं ॥ १७ ॥

मनसे हरिका स्मरण करता हुआ मुनि, देवता, कपि और पितरों का तर्पण करे ॥ १७ ॥

पाषाणसंख्या ।

पाषाणसप्तकंदद्यादेकंवाविप्रपुंगवाः
पाषाणदानात्सफलंस्नानंभवतिनान्यथा॥ १८ ॥

पाषाण की संख्या । सात, अथवा एक ॥ प्रमाद से यदि पाषाण दिये विनाही स्नान करे तो वह निष्फल होता है ॥ १८ ॥

पाषाणदानमंत्रः ।

पिप्पलादसमुत्पन्नेकृत्येलोकभयंकरे ॥
पाषाणंतेमयादत्तमाहारार्थंप्रकल्प्यतां ॥ १९ ॥

पषाण देनेका मंत्र । हाथमें पाषाण लेकर यह मंत्र (पिप्पलादसमुत्पन्ने) पढ़ पत्थर समुद्रमें छोड़दे ॥ १९ ॥

सान्निध्यमंत्रः ।

विश्वाचित्वं घृताचित्वंविश्वयोनेविशांपते ।
सान्निध्यंकुरुमेदेवसागरेलवणांभसि ॥ २० ॥

यह सांनिध्य करने का मंत्र पढ़ सान्निध्य करे ॥२०॥

नमस्कारमंत्रः ।

नमस्तेविश्वगुप्तायनमोविष्णोहयपांपते ।
नमोहिरण्यश्रृंगायनदीनांपतयेनमः ॥ २१ ॥
समुद्रायवयूनायप्रोच्चार्यप्रणमेत्तथा ।

यह प्रणाम करने का मंत्र पढ प्रणाम करे ॥ २१ ॥

अर्घ्यमंत्रः ।

सर्वरत्नमयः श्रीमान्सर्वरत्नाकराकरः ॥२२॥
सर्वरत्नप्रधानस्त्वंगृहाणार्घ्यंमहोदधे ।

अनुज्ञापनमंत्रः ।

अशेषजगदाधारशंखचक्रगदाधर ॥ २३ ॥
देहिदेवममानुज्ञांयुष्मत्तीर्थनिषेवणे ॥

इस अर्घ्यदान के मंत्र से अर्घ्य दे और अनुज्ञाके मंत्र से अनुज्ञा पावे ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥

प्रार्थनामंत्रः ।

प्राच्यांदिशिचसुग्रीवंदक्षिणस्यांनलंस्मरेत् ।२४॥
प्रतीच्यांमैंदनामानमुदीच्यांद्विविदंतथा ।
रामंचलक्ष्मणंचैवसीतामपियशस्विनीं ॥ २५ ॥
अंगदंवायुतनयं स्मरेन्मध्येविभीषणं ।
पृथिव्यांयानितीर्थानिप्राविशंस्त्वामहोदधे २६
स्नानस्यमेफलंदेहिसर्वस्मात्त्राहिमांभसः ।
हिरण्यशृंगमित्याभ्यांनाभ्यांनारायणंस्मरेत् २७

प्रार्थना के मंत्र से प्रार्थना करे हिरण्यशृङ्गं वरुणं प्रपद्ये तीर्थम्मे देहि याचितः यन्मयाभुक्तमसाधूनां पापेभ्यश्च प्रतिग्रहः इन मन्त्रों को पढ़ नाभि स्थल में श्रीनारायण का ध्यान करे ॥२४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

ध्यायन्नारायणंदेवंस्नानादिषुचकर्मसु ।
ब्रह्मलोकमवाप्नोतिजायतेनेहवैपुनः ॥ २८ ॥

स्नानादि कर्मों में नारायण का ध्यान, पुनर्जन्म रहित ब्रह्मलोक का देनेवाला है ॥ २८ ॥

सर्वेषामपिपापानांप्रायश्चित्तंभवेत्ततः ।

प्रह्लादंनारदंव्यासमंबरीषंशुकंतथा ॥ २९ ॥

अन्यांश्चभगवद्भक्तांश्चिंतयेदेकमानसः। स्नान-मंत्रः। वेदादिर्योवेदवासिष्ठयोनिः सरित्पतिः सागररत्न योनिः ॥ ३० ॥

अग्निश्चतेतेजइळाचतेजोरेतोधाविष्णुरमृतस्यनाभिः। इदंतेअन्याभिरस्यमानमाक्रियाः काश्चसिंधुंप्रविशंत्यापः। सर्पोजीर्णामिवत्वचंजहामिपापंशरीरात्। सशिरस्कोअभ्युपेत्य। समुद्रायवयूनायनमस्कुर्यात्पुनर्द्विजाः। सर्वतीर्थमयंशुद्धं नदीनांपतिमंबुधिं। द्वौसमुद्रावितिपुनः प्रोच्चार्यस्नानमाचरेत्। ब्रह्मांडोदरतीर्थानिकरस्पृष्टानितेरवे ३२

तेनसत्येनमेसेतौतीर्थंदेहिदिवाकर। प्राच्यांदिशिचसुग्रीवमित्यादिक्रमयोगतः ॥ ३३ ॥

स्मृत्वाभूयोद्विजाः सेतौतृतीयंस्नानमाचरेत्। देवीपत्तनमारभ्यमव्रजेद्यादिमानवः ॥ ३४ ॥

तदातुनवपाषाणमध्येसेतौविमुक्तिदे स्नानमनु-
निर्यौकुर्यात्स्वपापौघापनुत्तये ॥ ३५ ॥
दर्भशय्यापद्व्याचेद्गच्छेत्सेतुंविमुक्तिदं । तदात-
त्रोदधावेवस्नानंकुर्याद्विमुक्तये ॥ ३६ ॥

और यही एक संपूर्ण पातकों का प्रायश्चित भी है ॥ फिर एक चित्त हो व्याल, शुक, अम्बरीष आदि भगव-द्भक्तों का स्मरण करे ॥ स्नान के मंत्र से शिखान्त स्नान करे समुद्रको प्रणामकर ह्रीं समुद्रौ इत्यादि दो मन्त्रों को पढ़ पुनः स्नान करे । इन मंत्रो को पढ़ तत्सद्देवता सुग्री-वादिका स्मरण कर तीसरा स्नान करे ॥ ये सब मंत्र मूल स्थित हैं ॥ ३६ ॥

तर्पण विधिः ।

पिप्पलादंकविंकण्वंकृतांतंजीवितेश्वरं ।
मन्युंचकालरात्रिंचविद्यांचाहर्गणेश्वरं ॥ ३७ ॥
वसिष्ठंवामदेवंचपराशरमुमापतिं । वाल्मीकिं
नारदंचैव वालखिल्यान्मुनींस्तथा ॥ ३८ ॥
नलनीलंगवाक्षंचगवयंगंधमादनं ।

मैंदंचद्विविदंचैवशरभंऋषभंतथा ॥ ३९ ॥
सुग्रीवंचहनूमंतंवेगदर्शनमेवच ।
रामंचलक्ष्मणंसीतांमहाभागांयशस्विनीं ॥४० ॥

तर्पण विधि ॥ जल में खड़े २ अंजुली में तिल सहित जल ले निम्नलिखित मंत्रोंको पढ़ता हुआ प्रत्येक को तीन २ अंजुली दे ॥ पिप्पलादं तर्पयामि । कविंतर्प । कपर्दिन० । कृतान्तंत० । मन्युंत० । कालरात्रिंत० । विघ्नं । अहर्गणेश्वरं । वसिष्ठं । वामदेवं । पराशरं । उमापतिं । वाल्मीकिं । नारदं । वालखिल्यान्मुनीन् । नलं । नीलं । गवाक्षं । गवयं । गंधमादनं । मैन्दं । द्विविदं । शरभं । ऋषभं । सुग्रीवं । हनूमन्तं । वेगदर्शनं । रामं । लक्ष्मणं । सीतां ॥ ३९-४० ॥

त्रिःकृत्वातर्पयेदेतान्मंत्रानुक्त्वायथाक्रमं ।
विप्रोश्चतत्तन्नामानिचतुर्थ्यंतानिवैद्विजाः ॥४१॥
देवानृषीन्पितॄंश्चैवविधिवच्चतिलोदकैः ।
द्वितीयांतानिनामानिचोक्त्वावातर्पयेद्द्विजाः ४२
तर्पयेत्सपवित्रस्तुजलेस्थित्वाप्रसन्नधीः ।

तर्पणात्सर्वतीर्थेषुस्नानस्यफलमाप्नुयात् ॥४३॥

शिवतर्पण चतुर्थ्यन्त नाम से देव, ऋषि, पितृतर्पण चतुर्थी अथवा द्वितीयान्त नाम से सपवित्र हस्त और प्रसन्न हो विधिपूर्वक तर्पण करनेसे स्नानका सकल फल होता है ॥ ४३ ॥

एवमेतांस्तर्पयित्वानमस्कृत्योत्तरेज्जलात् ।
आर्द्रवस्त्रंपरित्यज्यशुष्कवासःसमावृतः ॥ ४४ ॥
आचम्यसपवित्रश्चविधिवच्छ्राद्धमाचरेत् ।
पिंडान्पितृभ्योदद्याच्चतिलतंडुलकैस्तथा ॥४५॥
एतच्छ्राद्धमशक्तस्यमयाप्रोक्तंद्विजोत्तमाः ।
धनाढ्योन्नेनवैश्राद्धंषड्रसेनसमाचरेत् ॥ ४६ ॥
गोभूतिलहिरण्यादिदानंकुर्यात्समृद्धिमान् ।
रामचंद्रधनुष्कोटावेवमेवसमाचरेत् ॥ ४७ ॥
पाषाणदानपूर्वाणितर्पणांतानिवैद्विजाः ।
सेतुमूलेयथैतानिविधिवध्द्यतनोद्विजाः ॥ ४८॥

जल से बाहर हो सूखे वस्त्र पहिन आचमन कर

पवित्र धारण करके विधिवत् श्राद्ध करे । इस श्राद्ध करने में यदि असमर्थ हो तो तिल सहित चावल से केवल पिंड-प्रदान करे । धनवान मनुष्य षड्रस अन्नसे श्रद्धायुक्त श्राद्ध करे और गौ, भूमि, तिल, सोना आदिका दान भी अवश्य करे । श्रीरामचन्द्रजी के धनुष्कोटि तीर्थ में भी पाषाणदानादि तर्पणान्त क्रिया पूर्ववत् करनी चाहिये । और सेतुमूल में भी स्नानका यही प्रकार है ॥ ४८ ॥

चक्रतीर्थेततोगत्वातत्रापिस्नानमाचरेत् ।
पश्येच्चसेत्वधिपतिंदेवंनारायणंहरिं ॥ ४९ ॥

चक्रतीर्थ म उक्त प्रकार से स्नान और सेतुपति श्रीनारायणका दर्शन करना चाहिये ॥ ४९ ॥

गच्छन्पश्चिममार्गेणतत्रत्येचक्रतीर्थके ।
स्नात्वादर्भशयंदेवंप्रपश्येद्भक्तिपूर्वकं ॥ ५० ॥

वहां से पश्चिम कुछ दूर दर्भशय देव का दर्शन करे ॥ ५० ॥

कपितीर्थंततःप्राप्यतत्रापिस्नानमाचरेत् ।
सीताकुंडंततःप्राप्यतत्रापिस्नानमाचरेत् ॥५१॥

पश्चात् कपितीर्थ और सीताकुण्ड में स्नान करना चाहिये ॥ ५१ ॥

ऋणमोचनतीर्थेतुततःप्राप्यमहाफलं ।
स्नात्वाप्रणम्यरामंचजानकीरमणंप्रभुं ॥ ५२ ॥
गच्छेल्लक्ष्मणतीर्थेतुकंठादुपरिवापनं ।
कृत्वास्नायाच्चतत्रापिदुष्कृतान्यपिचिंतयन्५३

ऋणमोचन तीर्थ में स्नान और श्रीरामचन्द्रजीको प्रणाम कर लक्ष्मणतीर्थ में क्षौर विधिसे निवृत्त हो कृतपातकों को स्मरणकरताहुआ स्नान करे ॥ ५३ ॥

ततःस्नात्वारामतीर्थेततोदेवालयंव्रजेत् ।
स्नात्वापापविनाशेचगंगायमुनयोस्तथा ॥५४॥
सावित्र्यांचसरस्वत्यांगायत्र्यांचाद्विजोत्तमाः ।
स्नात्वाचहनुमत्कुंडेततःस्नायान्महाफले ॥५५॥
ब्रह्मकुंडंततः प्राप्यस्नायाद्विधिपुरःसरं ।
नागकुंडंततःप्राप्यसर्वपापविनाशनं ॥ ५६ ॥
स्नानंकुर्यान्नरोविप्रानरकक्लेशनाशनं ।

गंगाद्याःसरितःसर्वास्तीर्थानिसकलान्यपि॥५७॥
सर्वदानागकुंडेतुवसंतिस्वाघशांतये।
अनंतादिमहानागैरष्टाभिरिदमुत्तमं ॥ ५८ ॥
कल्पितंमुक्तिदंतीर्थेरामसेतौशिवंकरं।
अगस्त्यकुंडंसंप्राप्यततःस्नायादनुत्तमं ॥ ५९ ॥

रामतीर्थ में स्नान कर देवालय में जाय पापविनाशन, गंगा, यमुना, सरस्वती, गायत्री और हनुमत्कुण्ड, ब्रह्मकुण्ड, और नागकुण्ड में अवश्य स्नान करे यह स्नान नरकके क्लेशको नष्ट करता है और यहां गंगाआदि बड़े २ तीर्थ अपने पापीजनित तापके शान्त्यर्थ वास करते हैं। यह तीर्थ अनन्तादि अष्ट महानागोंने कल्पित किया है। यहां से अगस्त्यकुंड की यात्रा अवश्य करनी चाहिये ॥ ५९ ॥

अथाग्नितीर्थमासाद्यसर्वदुष्कर्मनाशनं।
स्नात्वासंतर्प्यविधिवच्छ्राद्धंकुर्यात्पितॄन्स्मरन् ६०
गोभूहिरण्यधान्यादिब्राह्मणेभ्योस्वशक्तितः।
दत्वाग्नितीर्थतीरेतुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ६१ ॥

अनंतर सकल दुष्कर्मों के विनाश करनेवाले अग्नि-

तीर्थ में स्नान, तर्पण, श्राद्ध और पितरोंका स्मरण कर ब्राह्मणोंको यथाशक्ति गौ, भूमि, सोना अन्न आदि देने से सब पाप नष्ट होजाते हैं ॥ ६१ ॥

अथवायानितीर्थानिचक्रतीर्थमुखानिवै ।
अनुक्रांतानिविप्रेंद्राःसर्वपापहराणितु ॥ ६२ ॥
स्नायात्तदनुपूर्वेणस्नायाद्वापियथारुचि ।
स्नात्वैवंसर्वतीर्थेषुश्राद्धादीनिसमाचरेत् ॥ ६३ ॥

चक्रतीर्थादि पूर्वोक्त क्रमसे अथवा यथारुचि व्युत्क्रम से भी स्नान और श्राद्धादि कर्म करने में दोष नहीं है ॥ ६२ ॥

पश्चाद्रामेश्वरंप्राप्यनिषेव्यपरमेश्वरं ।
सेतुमाधवमागत्यतथारामंचलक्ष्मणं ॥ ६४ ॥
सीतांप्रभंजनसुतंतथान्यान्कपिसत्तमान् ।
तत्रत्यसर्वतीर्थेषुस्नात्वानियपूर्वकं ॥ ६५ ॥
प्रणम्यरामनाथंचरामचंद्रंतथापरान् ।
नमस्कृत्यधनुष्कोटिंततःस्नातुंव्रजेन्नरः ॥६६॥

तत्रपाषाणदानादिपूर्वोक्तनियमंचरेत् ।
धनुष्कोटौचदानानिदद्याद्वित्तानुसारतः ॥६७॥

रामेश्वर, सेतुमाधव, राम, लक्ष्मण, सीता, हनूमान् और अन्य २ कपिश्रेष्ठोंका दर्शन, पूजन, प्रणाम तत्तस्थ-स्थलके तीर्थोंमें स्नान और श्राद्धादि से निवृत्त हो धनुष्कोटि तीर्थमें पूर्वोक्त पाषाणदानादि क्रिया कर वित्तानुसार दान धर्म करना चाहिये॥ ६७ ॥

क्षेत्रंगाश्वतथान्यानिवस्त्राण्यन्यानिचादरात् ।
ब्राह्मणेभ्योवेदविद्भ्योदद्याद्वित्तानुसारतः ॥६८॥
कोटितीर्थंततःप्राप्यस्नायान्नियमपूर्वकं ।
ततोरामेश्वरंदेवंप्रणमेद्वृषभध्वजं ॥ ६९ ॥
विभवेसतिविप्रेभ्ये दद्यात्सौवर्णदक्षिणां ।
तिलंधान्यंचगांक्षेत्रंवस्त्राण्यन्यानितंडुलान् ७०
दद्याद्वित्तानुसारेणवित्तलोभविवर्जितः ।
धूपंदीपंचनैवेद्यंपूजोपकरणानिच ॥ ७१ ॥
रामेश्वरायदेवायदद्याद्वित्तानुसारतः ।

स्तुत्वारामेश्वरंदेवंप्रणम्यचसभक्तिकं ॥ ७२ ॥
अनुज्ञाप्यततोगच्छेसेतुमाधवसंनिधिं ।
तस्मैदत्वाचधूपादीननुज्ञाप्यचमाधवं ॥ ७३ ॥
पूर्वोक्तनियमोपेत:पुनरायात्स्वकंगृहं ।
ब्राह्मणान्भोजयेदन्नैः षड्रसै:परिपूरितैः ॥ ७४ ॥

वैदिक ब्राह्मणों को गौ, भूमि, वस्त्रादि देकर कोटि-तीर्थ की यात्रा समाप्त कर रामेश्वर का दर्शन पूजन और प्रणाम करे और सुवर्ण, दक्षिणा, तिल, धान्य, गौ, भूमि वस्त्र, चावल, धूप, दीप, नैवेद्य, और पूजाके उपकरण समर्पण कर भक्तिपूर्वक स्तुति प्रणाम करे और अनुज्ञा पाय सेतुमाधव के निकट जाय धूपदीपादिसे पूजन कर पूर्वोक्त नियमोंसे युक्त हो षड्रसयुक्त अन्नसे ब्राह्मण-भोजन करे ॥ ६८-६९-७०-७१-७२-७३-७४ ॥

तेनैवरामनाथोस्मैप्रीतोभीष्टंप्रयच्छति ।
नारकंचास्यनास्त्येवदारिद्र्यंचविनश्यति ॥ ७५ ॥

इस प्रकार विधिवत् यात्रा करनेसे रामेश्वरजी प्रसन्न होकर इच्छित फल देते हैं और भक्तोंके नरक-

जनित क्लेशोंको नष्ट कर दारिद्र्यका भी नाश कर डालते हैं ॥ ७५ ॥

संततिर्वर्धतेतस्यपुरुषस्यद्विजोत्तमाः ।
संसारमवधूयाशुसायुज्यमपियास्यति ॥ ७६ ॥

और साधक पुत्र पौत्रादि सहित सदा फूले फले अपार दुःखागार संसार-सागरको गौके खुरके समान सुखपूर्वक पार कर अन्तमें सदाशिवजीकी सायुज्य मुक्ति के पात्र भी होते हैं ॥ ७६ ॥

अत्रागंतुमशक्तश्चेच्छ्रुतिस्मृत्यागमेषुयत् ।
ग्रंथजातंमहापुण्यंसेतुमाहात्म्यसूचकं ॥ ७७ ॥
तंग्रंथंपाठयेद्विप्रामहापातकनाशनं ।
इदंवासेतुमाहात्म्यंपठेद्भक्तिपुरःसरं ॥ ७८ ॥
सेतुस्नानफलंपुण्यंतेनाप्नोतिनसंशयः ।
अंधपंग्वादिविषयमेतत्प्रोक्तंमनीषिभिः ॥ ७९ ॥

श्रीसूत उवाच ।

एवंवःकथितोविप्राःसेतुयात्राक्रमोद्विजाः।

एतत्पठन्वाशृण्वन्वासर्वदुःखाद्विमुच्यते ॥ ८० ॥

इति श्रीस्कंदपुराणे सेतुमाहात्म्ये यात्राक्रमो नाम एक-पंचाशत्तमोऽध्यायः ॥ ५१ ॥

यदि विधिपूर्वक यात्रा करने में असमर्थ हो तो निगमागमोक्त पुण्य फलदायक महापापनाशक सेतुमाहात्म्यका पाठ स्वयं करे अथवा ब्राह्मणद्वारा सुने इस प्रकार से माहात्म्य का भक्तिपूर्वक पाठ वा श्रवण करने से भी सेतुतीर्थ के स्नान का फल होता है परन्तु माहात्म्य श्रवण का यह विधि केवल अशक्त (अंधे, लंगड़े आदि) के लिये ही कहा है नकि सर्वसाधारण के लिये । श्रीसूत जी बोले हे द्विजों ! इस माहात्म्य के श्रोता वक्ता गणोंको भी किसी क्लेशका भय नहीं रह जाता अर्थात् सदा सुखी रहते हैं ॥ ८० ॥

इति श्रीस्कन्दपुराणे सेतुमाहात्म्ये भाषाटीकायां
यात्राक्रमो नाम एकपंचाशत्तमोऽध्यायः ॥

अर्धोदयः ।

पौषे मासे विष्णुभस्थे दिनेशे भानोर्वारे किञ्चिदुद्यद्दिनेशे ॥ युक्तामाचेन्नागहीना तु पाते

विष्णोर्ऋक्षे पुण्यमर्धोदयं स्यात् ॥ १ ॥
किञ्चिन्न्यूने महोदयः ।

अर्थ । मकरगत रवि, पौष मास, अमावास्या, रविवार, श्रवण नक्षत्र, व्यतीपात योग एकत्र होनेपर अर्धोदय पर्व और कुछ योग कम हो तो महोदय पर्व होता है ॥ अर्धोदय में अर्घ्य देनेके मंत्र ॥ दिवाकर नमस्तेऽस्तु तेजोराशे जगत्पते ॥ अत्रिगोत्रसमुत्पन्न लक्ष्मीदेव्याः सहोदर ॥ अर्घ्यं गृहाण भगवन् सुधाकुम्भ नमोऽस्तुते ॥ १ ॥

व्यतीपात महायोगिन् महापातकनाशन ॥ सहस्रबाहो सर्वात्मन् गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तुते ॥ २ ॥

तिथिनक्षत्रवाराणामधीश परमेश्वर ॥ मासरूप गृहाणार्घ्यं कालरूप नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥

इन मंत्रोंको पढ़ अर्घ्यप्रदान करे ॥ प्रार्थना के मंत्र ॥ श्रवणर्क्षे जगन्नाथ जन्मर्क्षे तव केशव ॥ यन्मया दत्तमर्थिभ्यस्तदक्षय्यमिहास्तुते ॥ १ ॥

नक्षत्राणामधिपते देवानाममृतप्रद ॥ त्राहिमां रोहिणीकान्त कलाशेष नमोऽस्तुते ॥ २ ॥

दीनानाथ जगन्नाथ कालनाथ कृपाकर ॥ त्वत्पादप-

द्युगलेभक्तिरस्त्वचला मम ॥ ३ ॥ व्यतीपात नमस्तेऽस्तु सोमसूर्यसुत प्रभो ॥ यद्दानादि कृतं किंचित्तदक्षयमिहास्तु ते ॥ ४ ॥

अर्थिनां कल्पवृक्षोऽसि वासुदेव जनार्दन ॥ मासतर्पनकालेश पापंशमय मे हरे ॥ ५ ॥

हाथ जोड़ इन मंत्रों को पढ़ प्रार्थना करे और यथाशक्ति दान धर्म तथा ब्राह्मण-भोजन करना अत्यावश्यक है, क्योंकि अर्धोदय के समान सांसारिक दुःखों से छुड़ानेवाला दूसरा पर्वकाल नहीं है ॥ ५ ॥

इति श्रीरामेश्वरार्पणमस्तु ।

॥ श्रीद्वारकानाथजी ॥
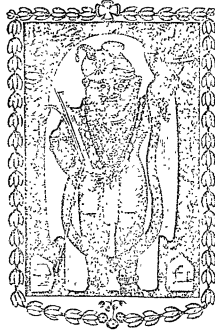
श्रीद्वारकानाथमिति स्वरूपं पश्यन्ति ये भक्तजनाः कलौयुगे।
गच्छन्ति ते विष्णुपदं नृदेव योगीश्वराणामपि दुर्लभं चयत्॥१॥

अथ द्वारकामहात्म्यम् ।

॥ श्रीनारद उवाच ॥

द्वारावतीमंडलन्तुशतयोजनविस्तृतम् ।
तस्यप्रदक्षिणासर्वायोजनानाञ्चतुःशतम् ॥ १ ॥

सोरठा-अति पुनीत संवाद, नारद नृप-बहुलाश्व कर ।
भल भाषा अनुवाद, करहुं पथिकहित हेरि कर॥१॥

नारदजी बोले । द्वारका क्षेत्र चारसौ कोस विस्तृत है और उसकी पूरी प्रदक्षिणा चारसौ योजन की है ॥ १ ॥

तन्मध्येकृष्णरचितंदुर्गंद्वादशयोजनम् ।
द्वितीयंचबहिर्दुर्गंनवत्याचतदुत्तरैः ।
क्रोशैःसंघट्टितंराजञ्छ्रीकृष्णेनमहात्मना ॥ २ ॥
तृतीयंचतथादुर्गंद्व्यूनैश्चद्विशतैर्नृप ।
क्रोशैःसंघट्टितंराजन्रत्नप्रासादसंयुतम् ॥ ३ ॥

जिस क्षेत्रमें श्रीकृष्णनिर्मित प्रथम दुर्ग बारह योजनका, दूसरा नब्बे कोसका, तीसरा एकसौ अट्ठानबे को-

सका, तीनों दुर्ग सुवर्णरचित और रत्नजड़ित महलोंसे विराजित हैं ॥ २ ॥ ३ ॥

तेषामन्तरदुर्गोपिश्रीकृष्णस्यमहात्मनः ।
मन्दिराणिविचित्राणिनवलक्षाणिसंतिहि ॥४॥

इनके मध्यमें भगवानका खास दुर्ग चित्र विचित्र नौलाख महलोंसे विभूषित है ॥ ४ ॥

तत्रराधामन्दिरस्यद्वारेलीलासरोवरम् ।
सर्वतीर्थोत्तमंराजन्गोलोकाच्चसमागतम् ॥ ५ ॥
यस्मिन्स्नात्वानरः पापीव्रतीभूत्वासमाहितः ।
अष्टम्यांहेमदानञ्चदत्वानत्वाविधानतः ॥ ६ ॥
कोटिजन्मकृतैःपापैर्मुच्यतेनात्रसंशयः ।
प्राणांतेतन्नरंनेतुंगोलोकाच्चमहारथः ॥ ७ ॥
सहस्रादित्यसङ्काशआगच्छतिनसंशयः ।
दशकन्दर्पलावण्योरत्नकुण्डलमण्डितः ॥ ८ ॥
स्रग्वीपीताम्बरःश्यामःसहस्रार्कस्फुरद्द्युतिः ।
सहर्षः पार्षदैर्युक्तश्चामरान्दोलराजितः ॥ ९ ॥

जयध्वनिसमायुक्तोवेणुदुन्दुभिनादितः ।
भूत्वैवंरथमास्थायगोलोकंयात्यसंशयम् ॥१०॥

और श्रीराधाजी के महल के द्वारपर लीलासरोवर परमरमणीय गोलोकसे प्राप्त और सकलतीर्थोत्तम तीर्थ है जिसमें स्नान करनेसे अतिपातकी मनुष्य भी अनेक-जन्मार्जित पापोंसे निःसंदेह मुक्त हो जाता है और अन्तकालके समय गोलोकागत सहस्रसूर्यप्रभ दिव्य रथ पाय सद कामदेववत् सुन्दर, रत्न-कुण्डल-भूषित, दिव्यमा-लाधारी, श्यामसुन्दर, परमानन्दयुक्त, चामरहस्त पार्षदोंसे विराजित जयध्वनि, वेणु, दुन्दुभि, आदि वाद्यों के सहित गोलोक में जाता है ॥ ९-१० ॥

अथतीर्थानिचान्यानिशृणुराजन्महामते ।
शतोत्तराणितत्रैवसहस्राणिचषोडश ॥ ११ ॥
अष्टभिःसहितान्येवपत्नीनांभवनानिच ।
तानिप्रदक्षिणीकृत्यनत्वानत्वापृथक्पृथक् ॥ १२ ॥
ज्ञानतीर्थंसमाप्लुत्यस्पृशेद्यःपारिजातकम् ।
तस्यज्ञानंचवैराग्यंभक्तिर्भवतितत्क्षणम् ॥ १३ ॥

हे राजन्! इसके अतिरिक्त अन्य २ पुण्य तीर्थ हैं जिनका वर्णन करता हूं सुनो। सोलह हजार एकसौ आठ राजरानियोंके महलोंकी परिक्रमा प्रणाम और ज्ञान तीर्थमें स्नान और पारिजातकको स्पर्श करनेवालेको ज्ञान वैराग्य और भक्तिकी प्राप्ति होती है ॥ ११-१३ ॥

श्रीकृष्णोहृदयेतस्यवसेध्दृष्टमनाःसदा ।
समृद्धिसिद्धयःसर्वास्तंभजंतिनिसर्गतः ॥ १४ ॥
समुक्तःसकृतार्थःश्येद्धःपश्येद्धरिमंदिरम् ।
तत्समोवैष्णवोनास्तितीर्थंचतत्समंनहि ॥ १५ ॥

उसके हृदयमें भगवान प्रसन्नतापूर्वक सदा वास करते हैं और समस्त ऋद्धि सिद्धि अनायासही प्राप्त होती हैं। जो हरिमंदिरका दर्शन करता है वह कृतार्थ और मुक्त है उसके समान वैष्णव तथा हरिमंदिरके समान तीर्थ सकल भुमंडलमें नहीं है ॥ १४ ॥ १५ ॥

पंचयोजनविस्तीर्णाद्भगवन्मंदिरात्ततः ।
धनुःशतेकृष्णकुण्डः कृष्णतेजःसमुद्भवः ॥ १६ ॥
यंस्नात्वाकुष्ठितोमुक्तःसांबोजांबवतीसुतः ।

तस्यदर्शनमात्रेणसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १७ ॥

यह मंदिर पाच योजन लम्बा और उतना ही चौड़ा है यहांसे सौ धनुषकी दूरीपर श्रीकृष्णजीके तेजसे उत्पन्न कृष्णकुण्ड है जिसमें स्नान करनेसे जाम्बवती-सुतः साम्बका कुष्ट नष्ट हो गया था जिसके दर्शनमात्र से ही मनुष्य अनेक पातकों से छूट जाता है ॥ १६-१७ ॥

तस्मादष्टादशपदेपूर्वस्यांदिशिमैथिल ।
सर्वतीर्थोत्तमंपुण्यंबलभद्रसरोमहत् ॥ १८ ॥

यहां से पूर्व अठारह पैर पर परमपुनीत बलभद्र तीर्थ है ॥ १८ ॥

पृथ्वीप्रदक्षिणांकृत्वाबलदेवोमहाबलः ।
यज्ञंयत्रविनिर्माय्यरेवत्याविरराजह ॥ १९ ॥

जहां बलदेवजी ने पृथ्वी की प्रदक्षिणा और यज्ञ कर रेवती सहित निवास किया ॥ १९ ॥

तत्रस्नात्वानरःसद्योमुच्यतेसर्वपातकात् ।
पृथ्वीप्रदक्षिणायाश्चफलंतस्यनदुर्लभम् ॥२०॥

जहां स्नान करने से सकल पातकों की निवृत्ति होती है और पृथ्वी के प्रदक्षिणा का फल अनायास हीं मिल जाता है ॥ २० ॥

भगवन्मंदिराद्राजन्सहस्रधनुरग्रतः ।
दक्षिणस्यांमहातीर्थंगणनाथस्यवर्त्तते ॥ २१ ॥
अनिर्देशेगतेराजन्प्रद्युम्नेस्वसुतेतदा ।
गणेशपूजनंयत्रकारयामासरुक्मिणी ॥ २२ ॥
यत्रस्नात्वाहेमदानंयोददातिनृपेश्वर ।
पुत्रप्राप्तिर्भवेत्तस्यवंशस्तस्यविवर्धते ॥ २३ ॥

भगवानके मंदिर से दक्षिण सहस्र धनुष पर गणेश-तीर्थ है प्रद्युम्न का अदर्शन होने पर यहीं रुक्मिणी देवीने गणेशार्चन कर प्रद्युम्नका पता पाया था यहां स्नान तथा सुवर्ण दान करने से पुत्रप्राप्ति और उत्तरोत्तर वंशवृद्धि होती है ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

भगवन्मंदिराद्राजन्दिग्विभागेचपश्चिमे ।
धनुर्षिद्विशतेचास्तेदानतीर्थंपरंशुभम् ॥ २४ ॥
तत्रश्रीकृष्णचंद्रस्यनित्यंदानंकरोतियः ।

तत्रस्नात्वानरोराजन्द्विपलंकांचनंतथा ॥ २५ ॥
चतुर्गुणंतुरजतंपट्टांवरशतंतथा ।
तथासहस्रमौल्यानिनवरत्नानियानिच ॥ २६ ॥
योददातिनरश्रेष्ठस्तस्यपुण्यफलंशृणु ।
अश्वमेधसहस्राणिराजसूयशतानिच ॥ २७ ॥
दानतीर्थस्यपुण्यस्यकलांनार्हंतिषोडशीम् ।
बद्रिकाश्रमयात्रायांयत्फलंलभतेनरः ॥ २८ ॥
तस्माच्छतगुणंपुण्यंदानतीर्थेपरात्मनः ।
सैंधवारण्ययात्रायामेषस्थेचदिवाकरे ॥ २९ ॥
उत्पलावर्त्तयात्रायांवृषस्थेभास्करेसति ।
स्नानंदानंलक्षगुणंभवतीहनसंशयः ॥ ३० ॥

हरिमंदिर से पश्चिम दो सौ धनुष पर पवित्र दानतीर्थ है ॥ जहाँ स्नान करनेवाले और आठ तोले सुवर्ण, महावस्त्र शत, [illegible], और नये ९ रत्न देनेवाले का फल सुनो हजारों अश्वमेध और सैकड़ों राजसूय, दानतीर्थ पर किये हुए पुण्यके सोलहवें अंश के भी समान नहीं हैं दानतीर्थ

के यात्रा का फल केदारखण्डान्तर्गत बद्रिकाश्रम यात्रा से भी सौगुना है॥ मेष संक्रान्ति में सैन्धवारण्य यात्रा और वृष संक्रांति में उत्पलावर्त यात्रा के पुण्य से लक्षगुना पुण्य है ॥ ३० ॥

तस्मात्कोटिगुणंपुण्यंदानतीर्थेविदेहराट् ।
मासमेकंचयःस्नानंदानतीर्थेकरोतिहि ॥ ३१ ॥
तस्यजातंचयत्पुण्यंचित्रगुप्तोनवेत्तितत् ।
तस्यतीर्थस्यमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥३२॥

यदि एक मास पर्यन्त यहां निवास कर नित्य स्नान दान करनेवालों को उक्त पुण्य से कोटिगुना पुण्य होता है। अधिक तो क्या चित्रगुप्त भी उसकी गणना नहीं कर सकते ब्रह्माजी भी इस तीर्थ के माहात्म्य का वर्णन अपने चारों मुखों से करते संकुचाते हैं॥ ३१ ॥ ३२ ॥

सर्वेषांचैवदानानामश्वदानंपरंस्मृतम् ।
अश्वदानाद्गजस्यापिगजदानाद्रथस्यच ॥ ३३ ॥
रथदानात्परंराजन्भूमिदानंविशिष्यते ।
भूमिदानादन्नदानंमहादानंप्रकथ्यते ॥ ३४ ॥

अन्नदानसमंदानंनभूतंनभविष्यति ।
देवर्षिपितृभूतानांतृप्तिरन्नेनजायते ॥ ३५ ॥

समस्त दानों में अश्वदान उत्तम गिना जाता है अश्वदान से गजदान गजदान से रथदान रथदान से भूमिदान और भूमिदान से अन्नदान उत्तरोत्तर अधिकतर हैं परन्तु अन्नदान के समान दान न भूतं न भविष्यति क्योंकि देवता, ऋषि, पितर तथा भूतों की तृप्ति अन्न ही से होती है ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

दानतीर्थेह्यन्नदानंयःकरोतिमहामनाः ।
ऋणत्रयंविमुच्याथयातिविष्णोःपरंपदम् ॥३६॥

दानतीर्थ पर अन्नदाता तीनों (देव, ऋषि, पितृ) ऋणों से उऋण हो विष्णुजी के परमपद को पाता है॥३६॥

दशैवमातृकेपक्षेराजेंद्रदशपैतृके ।
प्रियायादशपक्षेतुपुरुषानुद्धरेन्नरः ॥ ३७ ॥
चतुर्भुजादिव्यरूपानागारिकृतकेतनाः ।
स्रग्विणःपीतवस्त्रास्तेप्रयांतिहरिमंदिरम् ॥३८॥

हे राजेन्द्र ! उसके माता, पिता और भार्या के दूसर पुर्खे चतुर्भुज, दिव्यदेही गरुड़ासनारूढ़, वनमाला से भूषित, पीताम्बरधारी और वैकुण्ठवासी होते हैं ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

भगवन्मंदिराद्राजन्नुत्तरस्यांदिशिश्रुतम् ।
क्रोशार्द्धंनृपशार्दूलमायातीर्थमनोहरम् ॥ ३९ ॥
विराजतेयत्रनित्यंदुर्गादुर्गतिनाशिनी ।
सिंहारूढाभद्रकालीचंडमुंडविनाशिनी ॥ ४० ॥

हे राजन् ! हरिमंदिर से उत्तर आधकोस पर परम रम्य मायातीर्थ है, जहां दुर्गतिहारिणी दुर्गाजी भगवती सिंहासनपर विराजती हैं ॥ ४० ॥

स्यमंतकंसमाहर्तुमृक्षराजबिलंगते ।
पुत्रेचदेवकीदेवींपूजयामाससत्फलैः ॥ ४१ ॥
तदाजगामप्रियपासमणिर्भगवान्हरिः ।
तद्दिनात्तत्प्रसिद्धंस्यान्मायातीर्थफलप्रदम् ॥४२॥
मायातीर्थेचयःस्नात्वामायांसंपूज्यमानवः ।
सर्वांमनोरथप्राप्तिंप्राप्नुयान्नात्रसंशयः ॥ ४३ ॥

इति श्रीमद्गर्गा०श्रीद्वा०द्वा०मा० ना०प्रथमदुर्गे-लीलासरोवरहरिमंदिरज्ञानतीर्थकृष्णकुंडबलभद्रसरोगणेशतीर्थदानस्थलमायातीर्थमाहात्म्यं नामैकादशोध्यायः ॥ ११ ॥

जब भगवान् ने स्यमंतकमणि खोजने के लिये जामवंत की गुफा में प्रवेश किया और कई दिनों तक भीतर ही रह गये उस समय देवकीजीने घबराकर सुन्दर २ फल और फूलों से दुर्गा देवीका पूजन कर भगवान को कुशल और जाम्बवती (जामवंत की कन्या) तथा मणि सहित पाया था । अतएव इसका नाम मायातीर्थ प्रसिद्ध हुआ, यहां स्नान, दान तथा मायादेवी का पूजन करनेवाले सकल मनोरथसिद्धि अवश्य सम्पादन करते हैं ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

इति श्रीमद्गर्गा० श्रीद्वा० द्वा० मा० ना० प्रथम-दुर्गे लीलासरोवर हरिमन्दिर ज्ञानतीर्थादि-माहात्म्यवर्णनन्नामैकादशोऽध्यायः ।११।

श्रीनारद उवाच।

द्वितीयस्यापिदुर्गस्यपूर्वद्वारेविदेहराट्।
इन्द्रतीर्थंमहापुण्यंकामदंसिद्धिदायकम् ॥ १ ॥

नारदजी बोले ! दूसरे दुर्गके पूर्व द्वार पर पुण्य, कामना तथा सिद्धि दायक इन्द्रतीर्थ है ॥ १ ॥

तत्रस्नात्वानरोराजन्निन्द्रलोकंप्रयातिहि।
इहैवचन्द्रसादृश्यंवैभवंप्राप्यतेनरः ॥ २ ॥

हे राजन् ! जिसमें स्नान करने से इन्द्रलोक प्राप्त होता है और यहीं चन्द्रवत ऐश्वर्य का लाभ होता है ॥२॥

तथावैदक्षिणेद्वारेसूर्यकुण्डोभिधीयते।
यत्रसत्राजितेनापिपूजितोभूत्स्यमन्तकः ॥ ३ ॥

और दक्षिण द्वार पर सूर्यकुण्ड नामका तीर्थ है जहाँ सत्राजितने तपस्या करके सूर्यनारायण के प्रसाद से स्यमन्तक मणि पाया ॥ ३ ॥

तत्रस्नात्वापद्मरागंयोददातिनृपेश्वर।
सूर्यप्रभविमानेनसूर्यलोकंप्रयातिहि ॥ ४ ॥

यहां स्नान और पद्मराग मणि प्रदान करनेवाले प्रभाकरप्रभ विमान के द्वारा सूर्यलोक में जाय सुख-पूर्वक निवास करते हैं ॥ ४ ॥

तथावैपश्चिमेद्वारेब्रह्मतीर्थंविशिष्यते ।
तत्रस्नात्वानरोराजन्स्वर्णपात्रेचपायसम् ॥ ५ ॥
योददातिमहाबुद्धिस्तस्यपुण्यफलंशृणु ।
ब्रह्महापितृहागोघ्नोमातृहाचार्यहाघवान् ॥ ६ ॥
इन्द्रलोकेपदंधृत्वाबिभ्रद्ब्रह्ममयंवपुः ।
चन्द्राभेनविमानेनयातिब्रह्मपदंसच ॥ ७ ॥

वैसेही पश्चिम द्वार पर ब्रह्मतीर्थ है जहां स्नान कर क्षीरपूर्ण सुवर्ण पात्र के दान का फल यह है, कि ब्रह्महत्या, पितृहत्या, गो, मातृ, आचार्य (गुरु) हत्या और अन्य २ पातकों का नाश तथा इन्द्रलोकप्राप्ति चन्द्रतुल्य विमान प्राप्ति और ब्रह्मलोक प्राप्ति है ॥ ५–६–७ ॥

तथावैउत्तरेद्वारेक्षेत्रंस्यान्नैललोहितम् ।
यत्रसाक्षान्महादेवोराजतेनीललोहितः ॥ ८ ॥

हे राजन्! उत्तर द्वार पर नीललोहित नामक क्षेत्रमें साक्षात महादेवजी बिराजमान हैं ॥ ८ ॥

देवतामुनयःसर्वेतथासप्तर्षयःपरे ।
वसंतियत्रवैदेहतथासर्वेमरुद्गणाः ॥ ९ ॥
नीललोहितलिंगंतुयत्रसंपूज्ययत्नतः ।
ऐश्वर्यमतुलंलेभेरावणोलोकरावणः ॥ १० ॥

और समस्त देव सप्तऋषि, मुनि, और मरुद्गण भी सदा उपस्थित रहते हैं । यहीं रावण ने भक्ति भाव से यत्नपूर्वक नीललोहित की पूजा करके अतुल ऐश्वर्य प्राप्त किया ॥ १० ॥

कैलासस्यापियात्रायांयत्फलंलभतेनृप ।
तस्माच्छतगुणंपुण्यंनीललोहितदर्शनात् ॥ ११ ॥

और जिसके दर्शन से कैलास की यात्रा से सौगुना फल होता है ॥ ११ ॥

नीललोहितकुण्डेवैस्नातोयस्त्रिदिनंनरः ।
सयातिशिवलोकाख्यंपापायुतयुतोपिहि ॥ १२ ॥

अयुत पापों से युक्त मनुष्य भी यहां तीन दिनके स्नान मात्र से शिवलोक पाता है ॥ १२ ॥

सप्तसामुद्रकन्नामतीर्थंयत्रविराजते ।
तत्रस्नात्वानरःपापीपापसंघैः प्रमुच्यते ॥ १३ ॥
सप्तानाञ्चसमुद्राणांस्नानपुण्यंलभेत्त्वरम् ॥
विष्णुर्विरिंचोगिरिशइन्द्रोवायुर्यमोरविः ॥ १४ ॥
पर्जन्योधनदः सोमः क्षितिरग्निरपांपतिः ।
तत्पार्श्वेपुसदाह्येतेतिष्ठन्तिमनुजेश्वर ॥ १५ ॥
सप्तकोटीनितीर्थानिब्रह्माण्डयानिकानिच ।
सर्वाणितत्रतिष्ठन्तिसप्तसामुद्रकेनृप ॥ १६ ॥
तत्रस्नात्वानरःपश्चात्कृत्वासर्वपरिक्रमम् ।
प्राप्नोतिद्वारकायाश्चयात्रायाःसकलंफलम् ॥१७॥

सप्तसामुद्र तीर्थ में स्नान करने से महापातकी भी सकल पापों से मुक्त हो सातों सुमुद्रों के स्नान का फल पाता है वहीं ब्रह्मा विष्णु महेश इन्द्र वायु यम कुबेर चन्द्र सूर्य पर्जन्य भूमि अग्नि वरुण इत्यादि देवता और

अखिल ब्रह्माण्ड के सात कोटि तीर्थ भी उपस्थित हैं इसमें केवल स्नान करने ही से प्रदक्षिणापूर्वक द्वारका-यात्रा का फल होता है ॥ १३-१४-१५-१६-१७ ॥

सप्तसामुद्रकमृतेनयात्राफलदास्मृता ।
सप्तसामुद्रकंतीर्थंविष्णुरूपंविदुःसुराः ॥ १८ ॥

सप्तसामुद्र स्नान रहित यात्रा निष्फल होती है क्योंकि इसको समस्त देवता साक्षात् विष्णु भगवान का स्वरूप मानते हैं ॥ १८ ॥

इति श्रीमद्गर्गा० श्रीद्वारकाखण्डे द्वारकामा० नारदबहुलाश्वसंवादेद्वितीयदुर्गेइन्द्रतीर्थसूर्य-कुण्डब्रह्मतीर्थनैललोहितसप्तसामुद्रकमाहात्म्यं-नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

इति श्रीमद्गर्गा० श्रीद्वा० मा० नारदबहुलाश्व संवादे द्वितीयदुर्गे इन्द्रतीर्थ-सूर्यकुण्ड ब्रह्मतीर्थ नैललोहित सप्तसामुद्रकमाहात्म्यं नाम द्वादशोऽध्यायः ।

श्रीनारद उवाच ।

तृतीयस्यापिदुर्गस्यपूर्वद्वारेमहाबलः ।
रक्षत्यहर्निशंराजन्हनूमानंजनीसुतः ॥ १ ॥
तंप्रेक्ष्यभगवद्भक्तंहनूमंतंमहाबलम् ।
जायतेभगवद्भक्तोहनूमानिवमानवः ॥ २ ॥

नारदजी बोले । तीसरे दुर्गके पूर्व द्वार पर हनुमान-जी हैं जो अहोरात्र तीर्थ की रक्षा करते हैं । जिनके दर्शन से तत्तुल्य पराक्रमी और भक्त होता है ॥ १-२ ॥

तथावैदक्षिणाद्वारंचक्रंनामसुदर्शनम् ।
रक्षत्यहर्निशं राजञ्छ्रीकृष्णगतमानसम् ॥ ३ ॥
तस्यदर्शनमात्रेणभवेद्भक्तोहरेःपरः ॥
भक्तस्यापिसदारक्षांकरोतिहिसुदर्शनम् ॥ ४ ॥

दक्षिण द्वार पर क्षेत्रभक्तरक्षक सुदर्शन चक्र स्थित है जिसके दर्शन पूजन से हरिभक्त होता है ॥ ३-४ ॥

तथावैपश्चिमंद्वारंजांबवानृक्षराड्बली ॥
रक्षत्यहर्निशंराजन्भगवद्भक्तिसंयुतः ॥ ५ ॥

तंप्रेक्ष्यभगवद्भक्तंजांबवंतंमहाबलम् ॥
चिरंजीवीहरेर्भक्तोभवतीहचमानवः ॥ ६ ॥

पश्चिम द्वार पर ऋक्षराज जामवंत हैं जिनके दर्शन से दीर्घायु और हरि के भक्ति की प्राप्ति होती है ॥५-६॥

तथावैचोत्तरंद्वारंविष्वक्सेनोमहाबलः ॥
रक्षत्यहर्निशंराजञ्छ्रीकृष्णहृदयोमहान् ॥ ७ ॥
तस्यदर्शनमात्रेणनरोयातिकृतार्थताम् ॥
शृणुराजन्बहिर्दुर्गात्तीर्थंपिंडारकंस्मृतम् ॥ ८ ॥
पिंडारकस्यमाहात्म्यंशृणुताद्राजसत्तम ॥
यस्यस्मरणमात्रेणमहापापात्प्रमुच्यते ॥ ९ ॥
अथसिद्धयोरिवद्वारेरैवताद्रिसमुद्रयोः ॥
मध्येपिंडारकक्षेत्रंतीर्थानांतीर्थमुत्तमम् ॥ १० ॥

उत्तर द्वार पर विष्वक्सेन हैं जिनके दर्शन से मनुष्य कृतार्थ हो जाता है ॥ हे राजन् ! दुर्गके बाहर पिंडारक तीर्थ का बड़ा माहात्म्य है जो स्मरणकर्ताओं को महापातकों से मुक्त करता है ॥ रैवत पर्वत और समु-

इके मध्य में सर्वतीर्थोत्तम पिंडारक तीर्थ है ये दोनों अभीष्ट सिद्धिके द्वार ही हैं ॥ ७-८-९-१० ॥

क्रतुराजंराजसूयंयदुराजोमहाबलः ॥
चकारयत्रवैदेहपरिपूर्णतमाज्ञया ॥ ११ ॥
सर्वाणियत्रतीर्थानिसमाहूतानिसर्वतः ॥
निवासंचक्रिरेराजन्नुग्रसेनक्रतूत्तमे ॥ १२ ॥
तेनपिंडारकंनामसर्वतीर्थस्यपिण्डतः ॥
तत्रस्नात्वानरःसद्योराजसूयफलंलभेत् ॥ १३ ॥

जिस समय राजा उग्रसेनने राजसूय नाम का यज्ञ किया तब राजा के अनुरोध से भूमंडल के सकल तीर्थ यहां आये और सभोंने अपने २ पिंड (देहों) से यह तीर्थ उत्पन्न किया इसी कारण यह 'पिंडारक' नाम से प्रसिद्ध हुआ यहां स्नानकर्ता राजसूय यागका फल पाता है ॥ ११-१२-१३ ॥

यत्रैवत्रिंदिनंस्नात्वाव्रतीभूत्वासमाहितः ॥
ब्राह्मणेभ्यःस्वर्णदानंदत्वायःप्रणतोभवेत् ॥१४॥
इहैवनरदेवःस्यात्समहात्मानसंशयः ॥

नित्यंशृणोतिसततंबंदिवाग्भिर्यशःस्वयम् ॥१५॥
सुवर्णरत्नवस्त्राद्यैःसुचंद्रवदनैःपरैः ॥
स्त्रीसंघैःसेवितोनित्यंहृष्टपुष्टोमहाबलः ॥ १६॥
अहोरात्रंप्रताडयंतेद्वारिदुंदुभयोघनैः ॥
करींद्राणांचचीत्कारैरश्वह्रेषैस्समन्वितम् ॥१७॥

यहां यदि तीन दिन व्रतादि से युक्त और एकाग्र हो स्नान, सुवर्णदान, तथा तथा विनयपूर्वक प्रणाम करे तो इसी लोक में राजा होकर प्रतिदिन वन्दीजन द्वारा अपना यश श्रवण करता है और सुवर्ण, रत्न, बहावस्त्र और चन्द्रमुखी वनिता सहित हृष्ट, पुष्ट, बलवान, होता है। उसके द्वार पर दुंदुभि ध्वनि गजेन्द्रों के चिक्कार घोड़ों के हिनहिन शब्दों से शब्दायमान रहते हैं॥ १४-१५-१६-१७॥

विराजतेराजसंघैःप्रेक्षयन्प्रांगणाजिरम् ॥
रत्नप्रासादनिचयंध्वजमंडलमंडितम् ॥ १८ ॥
मत्तकुंजरकर्णाभ्यांताडिताभृंगमंडली ॥
अलंकरोतितद्द्वारंमंडितंमंडलेश्वरैः ॥ १९ ॥

और राजसमाज से चौक सदा भरा रहता है महलों के

शिखरों पर ध्वजा फहराते हैं मंडलेश्वरों से भरे द्वार पर मत्त मातङ्गोंके कर्णोंसे ताडित भ्रमर गूंजते हैं॥१८-१९॥

पिंडारकस्नानमृतेकथंराज्यंभवेदिह ॥
अंतेमोक्षंकथंयातिनरःपापयुतोपिहि ॥ २० ॥
पिण्डारकस्नानमृतेनवर्मपिंडारकस्नानमृतेनकर्म ॥ पिंडारकस्नानमृतेनधर्मःपिंडारकस्नानमृतेनशर्म ॥ २१ ॥

पिंडारकका स्नान किये विना राज्य और मोक्ष पाना तथा आत्मरक्षा, कर्म, धर्म, कुशल, क्षेम इत्यादि सब असाध्य है ॥ २०-२१ ॥

पिंडारकस्नानमृतेवियोगीपिंडारकस्नानकरस्तुयोगी ॥ पिंडारकस्नानकरःसुभोगीपिंडारकस्नानकरोनरोगी ॥ २२ ॥

पिंडारकस्नान विना किये वियोगी और स्नान करने से योगी, भोगी, और निरोगी रहता है ॥ २२ ॥

द्वारावतींमाधवमासमध्येप्रदक्षिणीकृत्यनमस्क-

रोति ॥ सर्वाइहामुत्रचसिद्धयोपिवैदेहतत्पाणि-
तलेभवंति ॥ २३ ॥

वैशाख मास में यदि प्रदक्षिणापूर्वक प्रणाम करे तो ऐहिक और पारलौकिक सिद्धियां हस्तगत होती हैं ॥२३॥

तीर्थाप्लुतोधःशयनःशुचिश्चमौनीव्रतीवायवभो-
जनेन ॥ आरभ्यचैत्रींकिलपौर्णमासींयोमाधवी
मेत्यकरोतियात्राम् ॥ २४ ॥

तत्पुण्यसंख्यांगदितुंनशक्यश्चतुर्मुखोवेदमयोवि-
धाता ॥ योमेघधारांगणयेत्कदाचित्कालेनपुण्या-
निनकृष्णपुर्याः ॥ २५ ॥

पिंडारक-तीर्थ स्नायी, भूमिशायी, शुचि, मौनी, उपोषित, हविष्याशी अथवा यवभक्षी चैत्री पूर्णिमा से वैशाखी पूर्णिमा पर्यन्त द्वारका की यात्रा करनेवाला अगाध पुण्यके फलका भागी होता है ॥ जिसकी गणना ब्रह्माजी भी नहीं कर सक्ते । कदाचित् मेघधारा गिनी जायंगी परन्तु कृष्णपुरी के पुण्य की गिन्ती कदापि न होगी ॥ २४—२५ ॥

यथातिथीनांहरिवासरश्चयथाहिशेषोफणिनांफ-
णींद्रः ॥ यथागरुत्मान्दिविपक्षिणांचयथापुराणे
षुच भारतंच ॥ २६ ॥

यथाहिदेवेषुचदेवदेवः श्रीवासुदेवोयदुदेवदेवः ॥
तथापुरीक्षेत्रसमस्तमध्ये द्वारावतीपुण्यवतीप्र-
शस्ता ॥ २७ ॥

जैसे तिथियों में हरिवासर, सर्पों में शेष, पक्षियों में गरुड़, पुराणों में महाभारत, देवताओं में इन्द्र, यादवों में वासुदेव श्रेष्ठ हैं वैसे ही सप्तपुरी इत्यादि सकल पवित्र क्षेत्रों में द्वारकाजी श्रेष्ठ हैं ॥ २६–२७ ॥

अहोतिधन्यायदुमंडलीभिर्विराजतेभूमितलेमनो-
हरा ॥ वैकुंठलीलाधिकृताकुशस्थलीयथातडि
द्भिर्जलदावलिर्दिवि ॥ २८ ॥

यह वैकुण्ठ की ललित लीलाओं का नमूना, नभगत अति चंचल चपलायुत मेघमंडली की छबि सें दूना, यादवों की मंडलीसे सेवित कुशस्थल भूतल में धन्यतर है ॥२८॥

यत्रैवसाक्षात्पुरुषः परेश्वरोधृत्वाचतुर्व्यूहमलंवि-
राजते ॥ यस्तूग्रसेनायददौनृपेशतांकृष्णायतस्मै
हरयेनमोनमः ॥ २९ ॥

चारों व्यूहों के धारक उग्रसेन के राज्यदायक आ-
नन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र को अनेकशः प्रणाम हैं ॥ २९ ॥

यदास्वलोकंभगवान्गमिष्यतिसंप्लावयिष्यत्यथ
तांतदार्णवे॥ वैदेहदिव्यंहरिमंदिरंविनातस्मिन्निं-
वासंभगवान्करिष्यति ॥ ३० ॥

हे राजन्! जब भगवान भूमि का भार उतार दीनों
को तार अवधिको पूर्ण कर निजधामको पधारेंगे तब इस
पवित्र पुरीको हरिमंदिर के सिवाय रत्नाकर सागर में
डुबाय उसीमें (हरिमंदिर में) निवास करेंगे ॥ ३० ॥

शृण्वंतितत्रैवकलौजनाध्वनिंकृष्णोक्तमित्थंसत-
तंदिनेदिने ॥ अवेदविद्योयदिवासविद्योयोब्राह्म-
णोवैसतुमामकीतनुः ॥ ३१ ॥

और वहीं (हरि मंदिर में) भक्तियुक्त भक्त जन
(ज्ञानी अथवा जड़ ब्राह्मण मेरा प्रत्यक्ष प्रगट स्वरूप है)

इस ध्वनि को सुनेंगे ॥ ३१ ॥

भूत्वाथविप्रोऽब्धितटादगाधंगत्वागृहीत्वाप्रतिमां परस्य ॥ कृत्वाप्रतिष्ठांचविधायसार्धंकरिष्यते स्थापनमर्कएषः ॥ ३२ ॥

श्रीद्वारकानाथमितिस्वरूपं पश्यंतियेभक्तजनाः कलौयुगे ॥ गच्छंतितेविष्णुपदंनृदेवयोगीश्वराणामपिदुर्लभंयत् ॥ ३३ ॥

और फिर अर्क विप्र हो, समुद्र में जा परमात्मा की प्रतिमा ले स्थापन करेंगे ।

हे राजन ! कराल कलिकाल में जो लोग द्वारकाधीशका दर्शन व पूजन करेंगे वे योगिदुर्लभ भगवत्पद पाय सुखी होंगे ॥ ३२-३३ ॥

इदंमयातेकथितंनृदेव माहात्म्यमेतत्किलकृष्णपुर्याः ॥ शृणोतियः श्रावयतेचभक्त्याश्रीद्वारकावासफलंलभेत्सः ॥ ३४ ॥

श्रीद्वारकायानृपखंडमेतन्मयातवाग्रे कथितंसुपु-

ण्यम् ॥ कीर्तिंकुलंभक्तिमतीवमुक्तिंददातिराज्यं चसदैवशृण्वताम् ॥ ३५ ॥

इस प्रकार मैंने तुमसे द्वारका जीका माहात्म्य वर्णन किया इसको जो लोग भक्तिपूर्वक सुनेंगे व सुनावेंगे वे भी द्वारकावासका फल पावेंगे और इसके श्रोता वक्तागणों को श्रीयशोदानन्दनन्दन राधाहृदयचंदन। श्रीकृष्णचन्द्र विशाल कीर्ति, उत्तम कुल, दृढ़ भक्ति, अक्षय मुक्ति और राज्य देकर कृतकृत्य करेंगे ॥ ३४-३५ ॥

इति श्रीमद्गर्गाचार्यसंहितायांश्रीद्वारकाखण्डे द्वारकामाहात्म्ये नारदबहुलाश्वसंवादे तृतीय-दुर्गे पिंडारकमाहात्म्यंनामत्रयोदशोऽध्यायः१३ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ द्वारकामाहात्म्यम् समाप्तं।

इति श्रीमद्गर्गाचार्य संहितायां श्रीद्वारकामाहात्म्ये नारदबहुलाश्वसंवादे तृतीयदुर्गे पिंडारकमाहात्म्यं नाम भाषाटीकायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

❋ मथुरा माहात्म्य।

जपोपवासनिरतो मथुरायां षडानन।
यदिकुर्यात्प्रमादेन पातकं तत्र मानवः॥
विश्रान्तस्थानमासाद्य भस्मीभवति तत्क्षणात्॥१
विश्रान्तिंविधिवत्स्नात्वा पृथक् कृत्वातिलोदकं।
पितॄनुद्धृत्यनरकाद्विष्णुलोकं प्रयच्छति॥ २॥

हे स्वामी कार्तिकेय ! मथुरा में पुरुष को जप और व्रतोपवास में तत्पर रहना चाहिये यदि मनुष्य से भूल में कुछ पाप कर्म हो जाय तो तिस मथुरा पुरी में विश्रान्त को प्राप्त हो स्नान करे तब उसका वह पातक तत्काल भस्म होजायगा॥ १॥

यदि विश्रान्त के विषे विधिपूर्वक स्नान करके पितरों का पृथक् २ तिल जल से तर्पण करे तो पितरों का दुःखमय नरक से उद्धार करके स्वयं विष्णुलोक को प्राप्त होता है॥ २॥

❋ मथुरा पुरी।

सातोंपुरीयों में से एक पवित्र तीर्थ है-देहली से १।) रु० किराया रेल का है।

श्रीकृष्णजन्म ।

देवकृतगर्भस्तुतिः । देवाऊचुः ।

जगद्योनिरयोनिस्त्वमनंतोऽव्यय एवच ।
ज्योतिःस्वरूपोह्यवशः सगुणो निर्गुणो महान्॥१॥
भक्तानुरोधात्साकारोनिराकरो निरंकुशः ।
निर्व्यूहो निखिलाधारो निःशंकोनिरुपद्रवः ॥२॥
निरुपाधिश्च निर्लिप्तो निरीहोनिधनांतकः ।
स्वात्मारामःपूर्णकामो निमिषो नित्यएवच ॥३॥
स्वेच्छामयः सर्वहेतुः सर्वः सर्वगुणाश्रयः ।
सर्वदोदुःखदो दुर्गो दुर्जनांतकएवच ॥ ४ ॥
सुभगोदुर्भगोवाग्मी दुराराध्योदुरत्ययः ।
वेदहेतुश्च वेदश्च वेदांगो वेदविद्विभुः ॥ ५ ॥
इत्येवमुक्त्वा देवाश्चप्रणेमुश्चमुहुर्मुहुः ।
हर्षाश्रुलोचनाः सर्वे ववृषुः कुसुमानिच ॥ ६॥
द्विचत्वारिंशन्नामानि प्रातरुत्थाययः पठेत् ।
दृढ़ा भक्तिं हरेर्दास्यं लभते वांछितंफलम् ॥७॥

इत्येवंस्तवनं कृत्वा देवास्ते स्वालयंययुः ।
बभूव जलवृष्टिश्च निश्चेष्टा मथुरा पुरी ॥ ८ ॥

इति देवकृत गर्भस्तुतिः सम्पूर्णा ।

* अयोध्या माहात्म्य ।

स्वर्गद्वारे नरः स्नात्वा दृष्ट्वा रामालयं शुचिः ।
न तस्य कृत्यं पश्यामि कृतकृत्यो भवेद्यतः ॥ १ ॥

जो मनुष्य अयोध्या पुरी में सरयू के स्वर्गद्वार तीर्थ में स्नान श्री रघुनाथजी के मन्दिर का दर्शन करके पवित्र होजाते हैं उनको अन्य साधन करने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि वह इतने साधन से ही कृतार्थ होजाते हैं मानो जो कुछ करना था सो सब कर चुके ॥ १ ॥

श्रीरामाष्टकम् ।

भजे विशेषसुन्दरं समस्तपापखण्डनं ।
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव राममद्वयम् ॥ १ ॥

---

* अयोध्यापुरी ।

देहली से ३।।≈) रेल किराया है अयोध्यानगरी श्रीरामचन्द्र महाराज की जन्मभूमि है और सातों पुरियों में है यह सरयू के किनारे पर है ।

जटाकलापशोभितं समस्तपापनाशकम् ।
स्वभक्तभीतिभंजनं भजेहराममद्वयम् ॥ २ ॥
निजस्वरूपबोधकं कृपाकरं भवापहम् ।
समं शिवं निरंजनं भजेहराममद्वयम् ॥ ३ ॥
निष्प्रपंचनिर्विकल्पनिर्मलं निरामयम् ।
चिदेकरूपसंततं भजेहरामद्वयम् ॥ ४ ॥
भवाब्धिपोतरूपकं ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
गुणाकरं कृपाकरं भजेह राममद्वयम् ॥ ५ ॥
महावाक्यबोधकैर्विराजमानवाक्पदैः ।
परब्रह्मव्यापकं भजेहराममद्वयम् ॥ ६ ॥
शिवप्रदं सुखप्रदं भवच्छिदं भ्रमापहम्
विराजमानदैशिकं भजेहराममद्वयम् ॥ ७ ॥
रामाष्टकं पठतियः सुकरं सुपुण्यं व्यासेन भाषि-
तमिदं शृणुतेमनुष्यः। विद्यां श्रियं विपुलसौख्यम-
नंतकीर्तिं संप्राप्यदेहविलये लभते चमोक्षम्॥८॥
इति श्री व्यासविरचितं रामाष्टकं समाप्तम् ।

* प्रयागमाहात्म्य ।

वेण्यां स्नात्वा शुचिर्भूत्वा कृत्वा माधवदर्शनम् ।
भुक्त्वा पुण्यवतां भोगानितो माधवतां व्रजेत् ॥ १ ॥
माघेमासि नरःस्नात्वा त्रिवेण्यां भक्तिभावितः ।
बदरीकीर्तनात्पुण्यं तत्र प्राप्नोति मानवः ॥ २ ॥

त्रिवेणी में स्नान कर पवित्रता के साथ माधव भगवान का दर्शन करके पुण्यवानों के भोगों को भोगकर अन्त में साक्षात् विष्णुस्वरूप को पाता है ॥ १ ॥ मनुष्य माघ के महीने में भक्तिभाव के साथ त्रिवेणी में स्नान करके तहां बदरीनाथजी का कीर्तन करने से यात्राके पुण्य को पाता है ॥ २ ॥

प्रयागाष्टकम् ।

मुनय ऊचुः । सुरमुनिदितिजेन्द्रैः सेव्यते

---

* प्रयागराज ।

किराया अयोध्या से १।) प्रयाग में त्रिवेणी [जहां गंगा यमुना और सरस्वती का संगम हुआ है] यह स्थान मुख्य तीर्थ है यहां एक अक्षयवट भी है जो इस समय किले के अन्दर है ।

योऽस्ततंद्रैर्गुरुतरदुरितानां काकथा मानवाना-म् । सभुविसुकृतकर्तुर्वांछितावाप्तिहेतुर्जयति विजितयागस्तीर्थराजः प्रयागः ॥ १ ॥ श्रुतिः प्रमाणंस्मृतयः प्रमाणं पुराणमप्यत्र तथा प्रमा-णम् ॥ यत्रास्तिगंगा यमुना प्रमाणं सतीर्थराजो जयतिप्रयागः ॥ २ ॥ नयत्रयोगाचरणप्रतीक्षा यज्ञेष्टिदीक्षान विशिष्टदीक्षा । नतारकज्ञान गुरोरपेक्षा सती० ॥ ३ ॥ चिरं निवासं न समीक्षते यो ह्युदारचित्तः प्रददाति च क्रमा-त् । यः कल्पितार्थांश्वददातिपुंसः सती० ॥४॥ यत्राप्लुतानां नयमो नियंता यत्रस्थितानां सुगतिप्रदाता॥यत्राश्रितानाममृतप्रदाता सती० ॥ ५ ॥ पुर्यः सुप्रसिद्धाः प्रतिवचनकरास्तीर्थ-राजस्य नार्यो नैकट्यानंददाने प्रभवति-सुगुणा काश्यतेब्रह्मयस्याम् । सेयंराज्ञिप्रधाना प्रियवचनकरी मुक्तिदानेनयुक्ता येनब्रह्माण्डमध्ये

सजयतिसुतरां तीर्थराजःप्रयागः ॥ ६ ॥ तीर्था-
वलीयस्य सुकंठभागे दानावलीवल्गति पादमू-
लम् । व्रतावलीदक्षिणपादमूले सजय० ॥ ७ ॥
अज्ञापियज्ञाः प्रभवोपियज्ञाः सप्तर्षिसिद्धाः
सुकृतानभिज्ञाः । विज्ञापयंतः सततंहिकाले स
जयति० ॥ ८ ॥ सितासितेयत्र तरंगचामरे
नद्योविभाते मुनिभानुकन्यके । लीलातपत्रं
वटएवसाक्षात्स ती० ॥९॥ तीर्थराजप्रयागस्य
माहात्म्यंकथयिष्यतः ॥ शृण्वतः सततं भक्त्या
वाञ्छितंफलमाप्नुयात् ॥ १० ॥
इतिश्रीमत्स्यपुराणे प्रयागराजमाहात्म्याष्टकंसमाप्तं

* काशीमाहात्म्य ।

असीवरुणयोर्मध्ये पंचक्रोशंमहत्तरम् ॥
अमरा मुक्तिमिच्छन्ति नराणां तत्र का कथा॥१॥

---

* काशी विश्वनाथपुरी ।
प्रयाग राज से काशीजी का रेल भाडा ॥≡) है यह सातो

काशी में असी और वरुणा नदी के मध्य में परम श्रेष्ठ पंचक्रोशीनामक स्थान है तहां निवास करके देवता भी मुक्ति चाहते हैं फिर मनुष्यों की तो बातही क्या है ॥ १ ॥

मणिकर्णिकाज्ञानवाप्योर्विष्णुपादोदके तथा।
ह्रदे पंचनदेस्नात्वा न मातुः स्तनपो भवेत्॥२॥

मणिकर्णिका पर, ज्ञानवापी में, विष्णु पद के जल में और पंचनद ह्रद कहे (पंच गंगा) पर स्नान करके मनुष्य माता का स्तन पीनेवाला नहीं होगा अर्थात् उसका फिर संसार में जन्म नहीं होता मुक्ति हो जाती है ॥ २ ॥

विश्वनाथाष्टकम्।

गंगातरंगरमणीयजटाकलापं गौरीनिरन्तरवि-
भूषितवामभागम्। नारायणप्रियमनंगमदापहारं

पुरीयों में से है यहां पर विश्वनाथ महादेव जी का मंदिर मुख्य तीर्थ है यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से है अन्नपूर्णा आदि अनेक मूर्ति व मन्दिर हैं-मणिकर्णिका आदि अनेक घाट हैं यह संस्कृत विद्या का मुख्य स्थान है काशीनिवास का महाफल है।

वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥१॥ वाचाम-
गोचरमनेकगुणस्वरूपं वागीशविष्णुसुरसेवित-
पादपीठम् ॥ वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं
वाराणसी० ॥ २ ॥ भूताधिपं भुजगभूषणभूषि
तांगं व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशांकुशाभयवरप्रदशूलपाणिंवारा० ॥ ३ ॥
शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं भालेक्षणान-
लविशोषितपंचबाणं । नागाधिपारचितभासुरक-
र्णपूरं वारा० ॥४॥ पञ्चाननं दुरितमत्तमतंग-
जानां नागांतकं दनुजपुंगवपन्नगानाम् । दावा-
नलं मरणशोकजराटवीनां वारा० ॥ ५ ॥
तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयमानन्दकन्दमपरा
जितमप्रमेयम् । नागात्मकं सकलनिष्कलमा-
त्मरूपं वारा० ॥ ६ ॥ आशांविहाय परिहृत्य
परस्य निन्दां पापेरतिं च सुनिवार्य मनः
समाधौ । आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं

वारा० ॥ ७ ॥ रागादिदोषरहितंस्वजनानुराग-
वैराग्यशांतिनिलयं गिरिजासहायम् । माधुर्य-
धैर्यसुभगं गरलाभिरामं वारा०॥ ८ ॥ वारा-
णसीपुरपतेःस्तवनं शिवस्य व्याख्यातमष्टकमिदं
पठते मनुष्यः । विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमन
न्तकीर्त्तिं संप्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्
॥ ९ ॥ विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवस-
न्निधौ । शिवलोकमवाप्नोतिशिवेन सहमोदते
॥१०॥ इति श्रीव्यासकृतं विश्वनाथाष्टकंसम्पूर्णम्

दशाश्वमेधिकं तीर्थं दशयज्ञफलप्रदम् ॥

अर्थ—काशी में दशाश्वमेध नाम का तीर्थ दशयज्ञों के फल का देनेवाला है ।

काशीपंचकम् ।

मनोनिवृत्तिः परमोपशांतिः सातीर्थवर्या मणिकर्णिका च । ज्ञानप्रवाहा विमलादिगंगा

सा काशिकाहं निजबोधरूपा ॥१॥ यस्यामिदं कल्पितमिन्द्रजालं चराचरं भाति मनोविलासम्॥ सच्चित्सुखैकापरमात्मरूपा सा का० ॥ २ ॥ कोशेषु पंचस्वधिराजमाना बुद्धिर्भवानी प्रतिदेहगेहम् । साक्षीशिवः सर्वगतोंतरात्मा सा०। ॥ ३ ॥ काश्यां हि काश्यते काशी काशीसर्व प्रकाशिका ॥ ४ ॥ काशीक्षेत्रंशरीरं त्रिभुवनजननीव्यापिनी ज्ञानगंगा भक्तिः श्रद्धागयेयं निजगुरुचरणध्यानयोगः प्रयागः । विश्वेशोऽयं तुरीयः सकलजनमनः साक्षिभूतोऽतरात्मा देहे सर्वंमदीये यदिवसति पुनस्तीर्थमन्यत्किमस्ति ॥ ५ ॥ इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं काशीपंचकं समाप्तम् ॥

गयामाहात्म्यम् ।

सनत्कुमार उवाच

वक्ष्ये तीर्थं परं पुण्यं श्राद्धादौसर्वतारकम् ।
गयातीर्थं सर्वदेशे तीर्थेभ्योऽप्यधिकं शृणु ॥१॥
गयासुरस्तपस्तेपे ब्रह्मणा क्रतवेऽर्थितः ।
प्राप्तस्य तस्य शिरसि शिलांधर्मोत्यधारयत् ॥२॥
तत्र ब्रह्माकरोद्यागं स्थितश्चादिगदाधरः ॥
फल्गुतीर्थादिरूपेण निश्चलार्थमहर्निशम् ॥ ३ ॥
गयासुरस्य विप्रेन्द्र ब्रह्माद्यैर्दैवतैः सह ॥
कृतयज्ञो ददौ ब्रह्मा ब्राह्मणेभ्योगृहादिकम् ॥४॥
श्वेतकल्पे तु वाराहे गयोयागमकारयत् ।
गयानाम्ना गयाख्यातं क्षेत्रं ब्रह्मर्षिकांक्षितम् ५
कांक्षन्तिपितरः पुत्रान् नरकाद्भयभीरवः ।
गयांयास्यति यः पुत्रः सनस्त्राताभविष्यति ॥६॥
गयाप्राप्तं सुतं दृष्ट्वा पितृणामुत्सवोभवेत् ॥
पद्भ्यामपिजलंस्पृष्ट्वासोस्मभ्यंकिन्नदास्यति ७

सनत्कुमार जी बोले कि परम पवित्र श्राद्धादिक करने से पितरों को मोक्ष देनेवाला सम्पूर्ण देशों में श्रेष्ठ गया तीर्थ के माहात्म्य को सुनो ॥ १ ॥ प्रथम गयासुर दैत्य ने ब्रह्मा से यज्ञ कराने की इच्छा करके तप किया तो धर्मराज आकर गयासुर के शिर में पत्थर की शिला रक्खी ॥२॥ उसी शिला पर ब्रह्मा जी यज्ञ करते भये वहीं पर आदिगदाधर भगवान् तीर्थरूप से प्रकट होकर दिन रात्री उसके निश्चलार्थ स्थित हुवे ॥ ३ ॥ हे विप्रेन्द्र! ब्रह्मादि देवताओंने वहीं पर यज्ञ किया और ब्राह्मणों को गृहादिक सामग्री देकर संतुष्ट किया ॥ ४ ॥ कुछ काल के बाद श्वेतवाराहकल्प में गय ने वहीं पर यज्ञ किया तबसे ब्रह्मर्षियों करके भी आकांक्षित गया नामसे वह क्षेत्र प्रसिद्ध हुआ ॥ ५ ॥ नरक में स्थित पितर सदैव इच्छा करते हैं कि मेरा पुत्र गया जावे और हम मोक्ष पावैं ॥६॥ गया में आये हुए पुत्र को पितर देखकर अतिप्रसन्न होते हैं और कहते हैं कि मेरा नाम लेकर यदि पुत्र पैर से भी जल दे तो हमको मानो समस्त पदार्थ प्राप्त होगये ॥ ७ ॥

काशी से गयाजीका १॥≡) काशीसे एकदम जगन्नाथजी का ६॥।≈) और मथुरा का ४॥।-) हरिद्वार का ४॥) गयाजी से एकदम जगन्नाथ पुरी का ६≡) वैद्यनाथ होकर ७॥।) रेल भाड़ा है यहां पहिले फल्गु

वैद्यनाथ ।

गयाजी से लक्खीसराय होके जाने में स्टेशन देवधर के नजदीक वैद्यनाथजी का मंदिर है द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से है वैद्यनाथ जी के पास में शिवालिंगा नदी है पिंडी चार अंगुल के अनुमान ऊँची है मंदिर बहुत पुराना है ॥

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसंतं गिरिजा-समेतम् ॥ सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ॥ १ ॥

जगन्नाथपुरी ।

किराया गयाजी से ७॥।८) कलकत्ता मार्ग में है प्रसिद्ध शहर है खड्गपुर होकर रास्ते में कटक शहर आता है कटक से आगे जगन्नाथ पुरी की तरफ भुवनेश्वर का मंदिर है यह मंदिर भी बड़ा भारी है और इसे जगन्नाथ जी से

नदी मार्ग में आती है इसमें स्नान करने क्या पांव रखने मात्र से भी पितरों का मोक्ष होना शास्त्र में लिखा है गयाजी में अनेक जगह श्राद्ध किये जाते हैं विशेष मुख्य विष्णुपद प्रेतशिला आदि है यहां पर बुद्धगया में चीन, जापान- ब्रह्मा आदि दूर दूरके मुल्कों से हजारों बौद्ध यात्री हरसाल तीर्थयात्रा को आते हैं ।

पहिले का बतलाते हैं वहां से अगाड़ी साक्षी गोपाल का मंदिर है जगन्नाथ जी की यात्रा के पीछे यहां की यात्रा करनी आवश्यक है और साक्षी समझी जाती है।

श्रीजगन्नाथ पुरी में मार्कण्डेयसरोवर है यहां मार्कण्डेय ऋषि ने तप किया था इसके स्नान का भी माहात्म्य है

श्री जगन्नाथ जी का मंदिर भी बड़ा भारी है मूर्त्ति जगदीश भगवान की बड़ी विशाल है मस्तक में हीरा खूब चमकता है मूर्त्ति की दाहिनी तरफ बलभद्रजी और बीच में बांई ओर सुभद्रा जी हैं तथा सुदर्शन चक्र विराजमान है

पुरी के निकट ही महोदधि नाम समुद्र है यहां समुद्र के स्नान का भी बड़ा माहात्म्य है यहां पर श्राद्ध करने में बालू (रेत) के पिंडदान किये जाते हैं।

समुद्र के किनारे कबीर जी तथा नानकजी मलूक जी करमाबाई इन माहात्माओं की मूर्तियां हैं।

पुरी के यात्रियों को रसोंई बनाने की आज्ञा नहीं है महाराज का प्रसाद ही भोजन करने में आता है यहां पर कच्ची पक्की रसोंई का कुछ भेद नहीं है और जात पांत छुवा छूत का कुछ भी विचार यहां नहीं सब जाति के मनुष्य एक पंगत में बैठकर दाल भात आदि बड़े प्रेम से खाते हैं, महाराज की रसोंई का बड़ा भारी स्थान है।

मंदिर से जन्मपुर दो मील है जहां पर महाराजका जन्म हुआ था यहां आषाढमें मेला होता है रथयात्रा की सवारी निकलती है यहां से चलती समय श्वेतगंगा में स्नान करने की रीति है।

सेतुबंध रामेश्वर।

(जगन्नाथ से रेल किराया करीब १७।।-)

जगन्नाथ पुरी से रामेश्वर आतीवार साक्षीगोपाल का ॥) और भुवनेश्वर का ≡) है यहां से खुदरा रोड जंक्षन का ≡) है यहां से "मदरास" तक का ९।।।) है समुद्र के किनारे २ रेल जाती है रास्ते में कई नदी आती हैं जिनमें बेजावढ़ा बड़ा प्रसिद्ध जङ्क्शन है यहां से हैदराबाद दक्षिण नजीक है और किराया २।।।) लगता है शहर हैदराबाद बहुत भारी है यहां के नवाब निजामहैदराबाद हिन्दुस्थान में सब से बड़ा रईस है बेजवाड़े के आसपास सरदी नहीं है)

मदरास शहर बड़ा भारी है कई एक रेलस्टेशन है और मारवाड़ी बाजार से २ मील पर पार्थसारथी भगवान हैं।

चिदंबर ।

किराया मदरास से १॥।)

चंगल पट होते हुवे चिदंबर जाते हैं यहां पर शिवगंगा नदी है और महादेवजी का मंदिर बहुत प्राचीन मनु महाराज का स्थापित बताते हैं मंदिर बहुत बड़ा है जिसके चारों तरफ के दरवाजे दस २ मंजिल ऊंचे हैं बारह परिक्रमा हैं बाग लगा है भीतर तालाव भी है राजसभा का स्थान इतना बड़ा है कि जिसमें ११०० खंभे लगे हैं कटहरे सोने चांदी के हैं मन्दिर की लागत करोड़ों रुपयों की है अब भी नाटकोट के किसी साहुकार ने २५ लाख रुपये लगाकर मरम्मत करादी है इसमें १ मूर्त्ति सोने की है जिन को नटराज कहते हैं और एक बिल्लौर का है तथा एक माणिक का है एक बालिस्त ऊंचा है दूसरे तरफ सोने के सिंहासन पर गोविन्दराजशेषावतार का है एक तरफ चांदी के सिंहासनपर शिवकी परमसुन्दरी देवीजीहैं इतनी समृद्धिऔर किसी भी देवस्थान में प्रतीत नहीं होती ।

त्रिचनपाली (श्रीरंगपत्तन) किराया चिदंबरसे त्रिचनपाली फोर्टका १२) है स्टेशन से १ मील पर कावेरी गंगा हैं यहां से २ मील श्रीरंगनाथ भगवान का मन्दिर है अकथनीय दृश्य

है वृन्दावन में श्रीरंगजी का मन्दिर यही नमूना है किन्तु इससे छोटी है कावेरी से १ मील पर जंबुकेश्वर महादेव हैं मंदिर बड़ा भारी है पिंडी जल तत्व (जलकी) है यहां भी नाटकोट के साहूकारने ५ लाख रुपये लगा के मरम्मत कराई है। धन्य है नाटकोट के साहूकार को वृद्धि हो पुण्यवानों की ईश्वर इन महाशयों की मन धर्मोन्नति से न हटावे।

सेतुबंधरामेश्वर।

किराया त्रिचनपाली से पाम्बन तक का २।-) के अनुमान है, रेल मडपं स्टेशन तक जाती थी यहां से किश्ती द्वारा पाम्बन जाते थे अब पाम्बन तक भी रेल की तजवीज हो गई है।

यहां पर लक्ष्मणकुंड पर मुंडन होता है फिर रामेश्वरजी के दर्शन होते हैं मंदिर बड़ा भारी है मंदिर का एक दरवाजा समुद्र की तरफ की १२ मंजिल ऊंचा है दूसरा बाजार की तरफ का १० मंजिलका है इस मंदिर की भी ६।७ परिक्रमा हैं श्रीरामेश्वरजी की मूर्त्ति पाषाणी एक बालिश्त ऊंची है रामेश्वर महादेव जी के दाहिनी तरफ शयनमंदिर है उसी तरफ दूसरा पार्वतीजी का

मंदिर है निज मंदिर के आगे सिंहासन पर श्रीरामचन्द्र जी की मूर्त्ति विराजमान है तथा सीताजी, लक्ष्मणजी, हनूमान् जी भी साथही सुशोभित हैं—ये भी द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से है-शिवजी पर गंगोत्तरी जलकी शीशियां रोज यात्री लोग चढाते हैं शिवसहस्त्रनाम से बिल्वपत्र भी चढ़ता है, यहां पर, चतुर्विंशति २४ तीर्थ हैं स्नान का महत्फल है, पुरी से १॥. मील एक ऊंचे टीले पर रामझरोखा" स्थान है यहां ही विराज कर लंकाविजय के बाद रामचन्द्रजी ने सब को सेवानुकूल फल दिया था-

रामेश्वरपुरी से ११ मील पर धनुष तीर्थ है गाडियों में बैठ कर समुद्र की खाडियों में से जाना होता है यहां पर समुद्र धनुषाकार है यहां दोनों तरफ से समुद्रों का संगम होता है पूर्व से महोदधि नामक और पश्चिम से सरलागिर मिले है यहां पर पानी खूब उछलता है भंवर पड़ते हैं किश्ती स्टीमर कोई भी नहीं आसक्ती, यहां ही से लंकाविजय के बाद श्रीरामचन्द्र जी ने धनुष बलसे सेतु तोड़ दिया था यहां से चलती समय कोटि तीर्थ का स्नान करते हैं जिसके बाद नहीं ठहरते ।

रामेश्वरजी से लंका पुरी को स्टीमर जाता है किराया

कोलम्बा तक स्टीमर का ३) रु० है कोलंबा से कांडी तक रेल जाती है पाम्बन से मंडपं स्टेशन तक किश्ती भी जाती है—

मथुरा ।

किराया मंडपं (रामेश्वर) स्टेशन से १) रु० है यहां पर मीनाक्षीदेवी का भी करोड़ोंके लागत का मंदिर है यहां से तोताद्रि पद्मनाभजनार्दन कन्याकुमारी आदि तीर्थ निकट हैं पास ही जनबद्री जैनियों का तीर्थ है ।

कांची माहात्म्य ।

विष्णुकांच्यां हरिः साक्षाच्छिवकांच्यां शिवः स्वयम् ॥ अभेदादुभयोर्भक्त्या मुक्तिः करतले स्थिता ॥ १ ॥

विष्णुकांची में साक्षात् विष्णु का निवास है और शिवकांची में साक्षात् शिव का निवास है,दोनोंमें किसी प्रकार का भेदभाव न रखकर भक्ति करनेवाले पुरुष के हाथ में मुक्ति स्थित है ॥ १ ॥

विभेदजननात्पुंसामधोगतिरुदीर्यते ।

इनमें भेददृष्टि रखने से पुरुषों की अधोगति है यह शास्त्र ने कहा है।

कांची।

किराया मथुरा से कांची तक ४।) मथुरा से वापिस फिर त्रिचनपाली होते हुवे तंजोर मयावरं चंगन पर होकर शिवकांची पहुंचते हैं शिवकांची नगर खासा है यहां शिवजी की पिंडी चौरस १ हाथ ऊंची मृत्तिका की है इस पर जल की जगह तैल चढ़ाते हैं यह पिंडी पृथ्वी तत्व है मंदिर बड़ा भारी है यहां भी नाटकोट के साहुकारने १५ लाख रुपये व्यय कर मरम्मत करवाई है, अधिक क्या कहें पुण्य संचय करने वाले ही ईश्वरांश हैं, यहां से ३ मील पर विष्णुकांची है, नृसिंह, लक्ष्मी जी के मंदिर की दीवारों पर पत्थरों पर लिखा हुआ है सातों वेद पुरियों में से है।

किराया कांची से त्रिपति का ।॥) कांची मे आरकोन होते हुवे रेनी गुंटा स्टेशन है यहां से ६ मील स्टेशन त्रिपति शहर है त्रिपति से १॥ मी० बालाजी पर्वत है इसे वेंकटाचल भी कहते हैं बालाजी से ३ मी० पर पापनाशिनी गंगाजी हैं जिसमें स्नान करने से प्रत्यक्ष

पाप नाश होते प्रतीत होता है अर्थात् रंग श्वेत हो जाता है फिर दूर तक वह धारा अगही नजर आती है किराया त्रिपति से (होसपेट पंपापुर) के २॥) यहां पर तुंगभद्रा गंगा है यहां पहिले सुग्रीव रहते थे थोड़ी दूर पर चक्रतीर्थ है यहां से ३ मी० फटिक शिला है यहां पर रामचन्द्रजी ने बहुत दिन व्यतीत किये थे यहीं से ही लंकापर चढ़ाई की थी यहां से कुछ दूर किष्किन्धा सुग्रीव की राजधानी है २॥ मी० पर पंपासरोवर है यहां पर पर्वतों में उत्तम तपोभूमि हैं ।

नासिक ।

किराया होसपेट से नासिक का ५॥≈) है सोलापुर होते हुवे धोंड स्टेशन आता है यहां से पुना को भी रेल गई है धोंड से मनमांड होकर नासिक पहुंचते हैं मनमांड से हैदराबाद की रेल के दौलताबाद स्टेशन से १० मील पर घृश्नेश्वर महादेव द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से है ।

इलापुरेरम्यविशालकेऽस्मिन्समुल्लसंतंहि जगद्वरेण्यम् । वंदे महोदारतरस्वभावं घृश्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये ॥ १ ॥

नासिक स्टेशन से नासिक शहर ६ मील है यहां पर घोड़ा की ट्राम गाड़ी जाती है शहर में जाने को हिन्दू यात्रियों से ।) लेते हैं नासिक शहर के पासही गोदावरी गंगा है पास ही पंचवटी है सीता गुफा नाम से पृथ्वी के नीचे है गुफा में जाने को रास्ता तंग है यहां तक कि १ आदमी से सिवाय दूसरा आदमी नहीं जासक्ता है अन्दर श्रीरामचन्द्र जी का मंदिर है-दूसरी तरफ गुफा के शिवजी का भी मंदिर है यहां पर उस समय ५ वट वृक्ष थे इसी से पंचवटी करके विख्यात है स्थान रमणीय है थोडेही दूर तपोवन तथा दण्डकारण्य है यहां रामचन्द्र जी ने सूर्पणखा नककटी कियी थी पंचवटी गुफा के बाहर से ही रावण सीता को छल से हर ले गया था नासिक शहर रमणीक है यहां से २० मील पर श्रीत्र्यम्बकेश्वरजी का मन्दिर है जोकि त्र्यम्बक महादेव द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में विख्यात हैं यहीं से गोदावरी निकलती है-

त्र्यम्बक ।

सह्याद्रिशीर्षे विमलेवसंतं गोदावरीतीरपवित्र-देशे । यद्दर्शनात्पातकमाशुनाशं प्रयाति तं

त्र्यम्बकमीशमीडे ॥ १ ॥

नासिक से त्र्यम्बकेश्वर तक टांगे जाते हैं।

बंबई।

किराया नासिक से बंबई तक का १॥) बम्बई शहर हिंदुस्थान में सबसे बड़ा है शहर में मुंबादेवी, भोलेश्वर, लक्ष्मीनारायण, वालुकेश्वर, और महालक्ष्मी के मंदिर उत्तम २ हैं चारो ओर समुद्र है-

द्वारका।

किराया बंबईसे स्टीमर (जहाज तीसरे दर्जे का ३) है, दूसरे दर्जेका ५) है मार्ग स्टीमर का ही है अनभ्यासी मनुष्यों का कुछ देर जी मिचलाता है, वीरावल, मांगरोल, पोरबंदर, जिसे सुदामापुरी कहते हैं इन स्थानों पर पाव २ घंटा ठहरता है खाने की चीज प्रायः हिन्दू यात्री बम्बई से ही लेजाते हैं ३६ घंटा में जहाज द्वारका के समीप पहुंचता है आगे कुछ दूरतक किश्तियों से समुद्र के किनारे आते हैं वहां से कुरसियों पर बिठाके उतारे जाते हैं किराया किश्तियों का ।) कुरसियों का =) है यहां गोमती स्नान की फीस १।) रु० लेते हैं श्री द्वारकाजीका मंदिर यहां पर गोमती द्वारका में बहुत ऊंची और

प्राचीन है, श्री द्वारकानाथ जी की मूर्ति अनुमान डेढ़ हाथ ऊंची अति सुन्दर है, इनके दाहिने प्रद्युम्न जी का मंदिर है बांये टीकम जी का है यहां सब रानियों के मंदिर है यहां से २ मील बेट द्वारका के मार्ग में रुक्मणि जी का निवास स्थान है यह कृपा दुर्वासा ऋषिकी है द्वारका में रहने को शाप दिया है इससे अलहिद है।

यहांही गोमती का समुद्र में संगम हुवा है, द्वारका ३। ४ हजार घरोंकी बस्ती है भाषा गुजराती और राज्य बड़ौदा का है इसी गोमती से द्वारका से बेटद्वारका १७ मील है पहिले गाड़ीयो में सवार होकर रामडातक आते हैं यहां किश्ती में बैठ कर बेट द्वारका पहुंचते हैं जो कोई का मन भावे तो रामडा में छाप ले सक्ता है बेट द्वारका में भी श्री द्वारकाधीश का मन्दिर है वही पूर्व कथित ठाटबाट से सुशोभित है, निज मंदिर में जानेकी फीस यहां १॥।) लगती है यहां से २ मील गोपीतलाई है, और गोपीनाथजी व गोपालजी का मंदिर है यहीं गोपी चन्दन होता है।

---

* गोपीनाथजी से २ मी० नागनाथजी। द्वादशज्योतिर्लिङ्गों में से नागनाथ महादेवजी का मंदिर विराजमान है।

पोरबंदर ।

किराया द्वारका से किश्ती का १=) इसका नाम सुदामा पुरी भी है शहर रमणीक है यहां कभी कृष्ण महाराज का सखा भक्त सुदामाजी की झोपड़ी पड़ीथी कृष्ण की कृपा से महलात बन गये थे ।

जूनागढ़ व गिरनार ।

किराया पोरबंदर जूनागढ़ का १।=) जूनागढ़ शहर अच्छा है ३ मी० गिरनार पर्वत है गिरनार के चारो तरफ ४ पहाड हैं गिरनार पर्वत पर चढ़ने में ९ हजार के करीब सीढ़ियां हैं रमणीक है थोडी दूर चल कर गोपीचन्द भर्तृहरि जी की गुफा है आगे गोमुखी है वाजी सोरठ के महल हैं ऊपर अंबिका देवी का मंदिर दूसरी तर्फ गोरखनाथ की गुफा व समाधी है तीसरी तर्फ औघडराय की समाधी चौथी पर दत्तात्रेय भगवान की चरण पादुका और स्वामी रामानन्द की समाधी है गिरनार जैनियों का भी बड़ा तीर्थ है पर्वत पर चढ़ने को ५) रु० किराये की डोली भी आदमियों द्वारा जाती है पहाड़ से नीचे शहर के पास गिरधरजी नरसीजी दमोदरजी भाऊनाथजी की मूर्त्तियों के

दर्शन हैं, यहां पर १ मुकबरा नवाब साहब का देखने काबिल है।

जूनागढ़ से वीरावल तक ।।।) है वहां से २ मी० प्रभास पट्टन है वहीं पर सोमनाथ महादेव जी का मंदिर है ये द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में से हैं।

प्रभासक्षेत्र, यहीं है यादवस्थली है, यहां से-सब यादव तथा कृष्णजी और बलदेवजी स्वर्ग को पधारे थे।

सोमनाथ।

सौराष्ट्रदेशे विशदेतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतं-
सम्। भक्तिप्रदानाय कृपाऽवतीर्णं तं

सोमनाथं शरणं प्रपद्ये।

किराया जूनागढ़ से २।।।) शहर बडाभारी है कई एक कारखाना हैं।

डाकोरजी।

किराया अहमदाबाद से ।।≈)।। हैं, यहां डाकोरजी भक्तरामदास की भक्ति से श्रीद्वारकानाथजी पधारे थे कथा भक्तमाल में है यहां रणछोड द्वारकानाथजी की १। हाथ ऊंची अति सुन्दर मूर्ति तथा मंदिर और गोमती

तालाव है दूसरे मंदिर में लक्ष्मीजी की वलदेव जी की और रामदास भक्त की मूर्ति विराजमान है।

* अवंतिका पुरी (माहात्म्य)

अवंत्यां विधिवत्स्नात्वा क्षिप्रायां माधवे नरः ॥
पिशाचत्वं न पश्यंति जन्मान्तरशतैरपि ॥ १ ॥

यदि पुरुष वैशाख के महीने में उज्जयिनी के विषैं क्षिप्रानदी में विधिपूर्वक स्नान करे तो सैकडों जन्मों में भी पिशाचयोनि को नहीं पाता है ॥ १ ॥

कोटितीर्थेनरः स्नात्वा भोजयित्वाद्विजोत्तमान् ॥
महाकालं हरंदृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २ ॥
मुक्तिक्षेत्रमिदंसाक्षान्मम लोकैकसाधनम् ॥

---

* उज्जैन । (अवंतिका) पूरी ।

किराया डाकोर से २=) उज्जैन सातों पुरियों में से है यहां पर शहर के निकट ही क्षिप्रा नदी है शहर में महाकालेश्वर महादेव का मंदिर है यह द्वादशज्योतिर्लिङ्गों में से हैं यहां से थोड़ी दूर गोपीचन्द्-भर्तृहरि की गुफा है पासही सिद्धपत सांदीपन ऋषि का स्थान है जहां द्वारका जाते हुए कुछ समय कृष्णमहाराज ने विद्याध्ययन किया था ।

दानाद्दरिद्रताहानिरिहलोके परत्रच ॥ ३ ॥

मनुष्य कोटि नामक तीर्थ में स्नान करके श्रेष्ठब्राह्मणों को भोजन करा कर और महाकाल शिव का दर्शन करके सकल पापों से छूट जाता है ॥ यह उज्जयिनी मुक्ति पाने का साधन का स्थान और भैरव कुंड लोक का साक्षात् साधन है इस क्षेत्र में दान करने से इस लोक और पर लोक में उपयोगी पदार्थों की कमी नहीं रहती॥ २ ॥ ३ ॥

अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वंदेमहाकालमहासुरेशम् ॥ १ ॥

ओंकारनाथ ।

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमेसज्जनतारणाय ॥
सदैव मांधातृपुरे वसंतमोंकारमीशं शिवमेकमीडे ॥ १ ॥

ओंकारनाथ ।

किराया उज्जैन से १≈) है इन्दौर होते हुए स्टेशन खेड़ी घाट से ओंकारजी जाते हैं सिर्फ ५ कोस है सवारी

बैलगाड़ी की मिलती है विष्णुपुरी से नाव में बैठ कर नर्मदापार करके शिवपुरी ओंकारनाथजी है मंदिर पहाड़ पर मूर्ति १ बिलस्त ऊंची है द्वादश जोतिर्लिङ्गों मेंसे हैं यहां भिलराजा छोटासा है गंगोत्तरी जलकी शीशी यहां भी चढ़ती है।

अजमेर पुष्करजी।

किराया उज्जैन से अजमेर तक ३-) फिर से रतलाम होकर नामली आदि होते हुए अजमेर आते हैं चितौड़ स्टेशन से उदयपुर को जाते हैं मावली स्टेशन से नाथ-द्वारा जाते हैं यहां पर मूर्ति गिरधरलालजी की है ११०० सौ रुपये का सामान उदयपुर से नित्य भोग लगता है चढ़ा हुआ प्रसाद पक्वान्न आदि बाजार किफायत मिलता है नाथद्वारा से थोड़ी दूर कई मील का सरोवर है यहां उदयपुरही का राज्य में चारभुजा एकलिंग स्थान भी पूज्य है जैनियों का तीर्थ केसरयानाथ मंदिर भी है।

अजमेर से ८ मील में पुष्कर राज तीर्थ है पुष्कर राज १ बड़ा तालाब कई मील के घेरे में है पुष्कर से ऊंचे पहाड़ी टीलेपर सावित्रीजी का मंदिर १॥ मील है।

पुष्कर-क्षेत्र (माहात्म्य) ।

कार्तिक्यां पुष्करेस्नात्वाश्राद्धंकृत्वासदक्षिणम्।
भोजयित्वाद्विजान्भक्त्याविष्णुलोकेमहीयते १
सकृत्स्नात्वाह्रदेतस्मिन् यूपं दृष्ट्वासमाहितः।
सर्वपापविनिर्मुक्तो जायतेद्विजसत्तम ॥ २ ॥

कार्तिक मास की पूर्णिमा के दिन पुष्कर में स्नान करके और सावधानी के साथ यज्ञस्तंभ का दर्शन कर के तथा श्राद्ध करके और ब्राह्मणों को भक्ति के साथ भोजन कराकर दक्षिणा देवे वह पुरुष विष्णु-लोक में प्रतिष्ठा पाता है ॥ १ ॥ तिस पुष्कर के तालाव में एक वार स्नान करके और सावधानी के साथ यज्ञस्तंभ का दर्शन करके हे द्विजोत्तम ! पुरुष सकल पापों से छूट जाता है ॥ २ ॥

जयपुर ।

अजमेर से किराया जयपुर का ॥=) है शहर चौपड कासा है

❋ कुरुक्षेत्र (माहात्म्य) ।

कुरुक्षेत्रं हरिक्षेत्रं गयाच पुरुषोत्तमम् ।

पुष्करं दर्दुरक्षेत्रं वाराहविधिनिर्मितम् ॥ १ ॥
बदर्य्याख्यं महापुण्यं क्षेत्रं सर्वार्थसाधनम् ।
यस्य दर्शनमात्रेण पापाराशिः प्रणश्यति ॥२॥

कुरुक्षेत्र, हरिक्षेत्र, गया, पुरुषोत्तमक्षेत्र (जगदीश पुरी) पुष्कर दर्दुरक्षेत्र वाराहक्षेत्र और विधि निर्मित परमपवित्र बदरी नामक क्षेत्र सकल मनोरथों को सिद्ध करनेवाले हैं जिस के दर्शन करने मात्रसे ही पापों का समूह नष्ट हो जाता है इस प्रकार ९ क्षेत्र हैं ॥ १ ॥ २ ॥

कुरुक्षेत्रेरामतीर्थे स्वर्णंदत्वास्वशक्तितः ।
सूर्योपरागेविधिवत्सनरोमुक्तिभाग्भवेत् ।

सूर्यग्रहण के समय कुरुक्षेत्र के रामतीर्थ में अपनी शक्ति के अनुसार विधिपूर्वक सुवर्ण का दान करने से मनुष्य मुक्ति का भागी होता है ॥ ३ ॥

येतत्र प्रतिगृह्णंतिनरालोभवशंगताः ।
पुरुषत्वं नतेषांवैकल्पकोटिशतैरपि ॥ ४ ॥

तिस कुरुक्षेत्र में जो मनुष्य लोभ के बश होकर दान लेते

हैं उनको सैकड़ों करोड़ कल्पों में भी पुरुषत्व नहीं मिलता॥४॥

इति श्रीतीर्थयात्रानिरूपणं समाप्तम् ।

* कुरुक्षेत्र ।

किराया दिल्ली होते हुए जयपुर से कुरुक्षेत्र का ३।) है । कुरुक्षेत्र नाम से सरोवर जगतप्रसिद्ध है सूर्यग्रहण पर यहां बड़ा मेला होता है इस भूमिपर कौरव पाण्डवों का महाभारत नाम युद्ध हुआ था ग्यारह अक्षौहिणी सेना सहित बड़े २ बली कौरवों की हार हुई थी और ७ अक्षौहिणी सेनावाले पाण्डवों की जीत हुई थी पांडव वीर अर्जुन के सारथी कृष्ण महाराज हुए थे ।

श्रीबदरीनाथ यात्रा लाइनें म शुद्ध और यथार्थ आप को यही एक दूकान से संपूर्ण उपयोगी चीजें एक भाव से मिलेंगी यहां पर मोल नहीं होता ।

१. बदरीश यात्रा मार्गप्रदर्शिका संक्षेप से वर्णन और भजन स्तुति सहित ।) सजि० ।) साधारण =)॥

२ बदरीनाथ पुरी तथा लाईन का नक्सा -)

३ बदरीश भजन, आर्ती, स्तुति -)

४ फोटो के छोटे बड़े चित्र हर एक मूल्य से)।)॥ -) =) ≡) ।) ॥) १) २) ३) तक के ।

५ बदरीश चित्र दर्शन अगूठी ≈). ≡) ।) ॥)

६ रंगीन चित्र फोटो लाख गुणा उत्तम और किफायत −) ≈) ≡) ।) तक के ।

७ सिंहासन सहित फोटो के ९ चित्र तांबा, पीतल, चांदी, सोना, जरमनी सिलवर आदि धातुओं के पत्रोंपर मूर्ति ≡) ।))॥

आंख की अक्सीर औषधि " नेत्रावलेह, " बदरीश धाम में पैदा होनेवाली ममीरा के योग से तयार किया हुआ मू० ॥)

असल शिलाजीत का पता ।

अभीष्ट सिद्धी " शक्तियंत्र " मू० १) रु.

जज व माजिष्ट्रेट आदि मान्य पुरुषों से प्रशंसापत्र प्राप्त विशेष जानने के लिए बिना मूल्य पुस्तक मंगाकर देखिये ।

उपरोक्त हर एक चीजों की सरकार गवर्नमेन्ट द्वारा रजिष्ट्री करा ली हैं सिवाय हमारे दूसरे जगह नहीं मिलेगी ।

आनन्द ।

बदरीनाथ यात्रा लाईन में आपको लौटती वार निम्नलिखित चीजें अवश्य लेने योग्य हैं ।

बदरीनाथजी के अंगवस्त्र, चन्दन गोली, चरणपादुका, द्रोण पत्र, सूखा हुआ महाप्रसाद यह सब चीजें मोक्ष और जयप्रद हैं ।

और

जड़ी बूटियों में से भूजेपत्र, तेजबल की लाठी, मासी, तगर धूप डोला (आरचा) चोरक (चोरा) ब्राह्मी बूटी, आदि अवश्य लेने योग्य हैं उपरोक्त चीजें आपको पीपल कोटी से और बदरी नाथ पर्यन्त हर दूकानों में मिल सक्ती हैं।

निवेदक--

उपाध्याय पं० बलिराम शर्म्मा

पो० जोशीमठ गढ़वाल।

भारतवर्ष की तीर्थ यात्रा तथा रेलवे लाईन से जाने आने का रास्ता।

* सड़कें पेस्तर यहां सिवाय पगडंडियों के सड़कें न थीं मगर अब सर्कार इंगलिशियाने बहुत उमदा सड़क बनवादी हैं और रोज ब रोज उम्दा सड़कें बनती जाती हैं।

रेलवे लाईन हिन्दुस्तान के हर हिस्से में रेलें जारी हैं जिनमें से खास २ नीचे लिखी जाती हैं।

(१) इष्ट इन्डियारेलवे कलकत्ते से शिमले तक जारी है इसकी एक शाख इलाहाबाद से जबलपुर तक गई है दूसरी टूंडला से आगरा को गई है इत्यादि, खास २ रेलवे स्टेशन पटना; बनारस, मिर्जापुर, इलाहाबाद, कानपूर, इटावा, आगरा, अलीगढ़, देहली, करनाल, कालिका है॥

(२) नार्थ वेस्टर्न रेलवे देहली से गाजियाबाद, मेरठ, सहारनपुर, अमृतसर, लाहोर से रोहरी शक्कर होती हुई किराचीको गई है।

(३) ग्रेट इन्डियन पेनशली रेलवे—इसकी दो शाखें हैं एक बंबई से जब्बलपुर तक है यहां पर ईस्ट इन्डियन रेलवे से मिलगई है रास्ते इटारसीसे एक शाख झासी, आगरा, मथुरा, होती हुई देहली तक गई है दूसरी शाख बंबई से रनछोर तक गई है जहां पर मदरास रेलवे से मिलगई।

(४) बंबई बड़ोदा ऐंड सैन्ट्रल इन्डिया रेलवे यह लाईन बंबई से अहमदाबाद होती हुई कच्छ की खाड़ी के किनारे पर तबरी तक गई है और इसकी बड़ी शाख राजपूताना मालवा रेलवे है जो अहमदाबाद से कानपुर तक गई है इसके खास स्टेशन कानपुर फररुखाबाद मथुरा भरतपुर जैपुर अजमेर वगैरह हैं ।

(५) अवधरुहेलखंड रेलवे-यह लाईन मुगलसरायसे सहारनपुर तक गई खास स्टेशन बनारस, रायबरेली, लखनऊ हरदोई, शाहजहांपूर, बरैली, मुरादाबाद, सहारनपूर हैं ।

(अ) इसकी एक शाख मुरादाबाद से देहली तक गई है ।

(ब) शाख लसकर से देहरादून तक गई है ।

(स) बरेली से अलीगढ़ को गई ।

(द) लखनऊ से बनारस को गई)

(य) लखनऊ से कानपुर को गई ।

(६) बंगाल नागपुर रेलवे यह लाईन नागपुरसे असन से ।

(७) बंगालनार्थ वेस्टर्न रेलवे वह लाईन तक गई । कानपुर से काठियावाड़ तक जारी है इस पर खास स्टेशन लखनऊ वारहबंकी गोंडा गोरखपुर छपरा वगैरः है ।

(८) सौथ इंडियन रेलवे ।

(९) ब्रह्मा स्टेट रेलवे ।

(१०) ईस्टर्न बंगाल रेलवे ।

(११) बंगाल सेंट्रल रेलवे ।

(१२) रुहेलखंड कमायूंरेलवे ।

(१३) सदर मरहटा रेलवे ।

(१४) राजपूताना मालवा रेलवे अहमदाबाद अजमेर लाईन

(१५) वेस्ट इन्डियन पोर्चुगीजरेलवे । क्यासलराक से दुधासागर चांदोर होती हुई मारमोगोआ तक गई है ।

(१६) मद्रासरेलवे–नार्थइस्टला । वाल्टैरस–कोकनाडा जांच तथा वेजा वाडा बीच मद्रास को होती हुई अझिकल तक गई ।

(१७) निजाम हैदराबाद रेलवे–और हैदराबाद गोदावरी रेलवे सिकन्दराबाद मनमाड़ लाइन–डारना कल से वेज वाडा को होती हुई ।

(१८) बेंगाल नागपुर रेलवे, कलकत्ता लाईन नागपुर से गोदिया को कटनी, सिनी को चली गई ।

(१९) इस्टर्नबेंगालरेलवे । कलकत्ता डायमंड हार्बर लाईन ।

(२०) अवधरुहेलखंडरेलवे लाइन–मुगलसराय से सीधी लखनऊ को ।

(२१) सिंधसागर रेलवे लालामुसा से मुलतान को । अब इतनेही मुख्तसररेलवे लाईनें लिखकर खतम् कर देते हैं क्योंकि रेल की सवारी आम खास की है अमुक स्टेशन से अमुक स्टेशन की दूरी तथा रेल भाड़ा प्रायः सभी स्टेशनोंपर यात्री लोगों को

सुभीते के लिये लिखा रहता है तथापि बड़े २ शहरों से अमुक २ स्थान या स्टेशन का रेल भाड़ा क्या है सो नीचे विस्तार से लिखते हैं देख लीजिये ।

मील दिल्ली से-तीसरे दर्जेका किराया वर्तमान ।

दिल्ली से-	कानपुर	३-)	,,	आगरा	१॥≈)
,,	प्रयाग	४-)	,,	ग्वालियर	२॥≈)
,,	काशी	४।=)	,,	उज्जैन	५॥)
,,	भागलपुर	६॥≡)	,,	अहमदाबाद	५॥=)
,,	गयाजी	५≡)	,,	जूनागढ़	८≡)
,,	कलकत्ता	८॥)	,,	रेवाड़ी	॥)॥।
,,	अम्बाला	१॥=)	,,	अलवर	१)
,,	लाहौर	९)	,,	जयपुर	२)
,,	शिमला	५॥।)	,,	अजमेर	२॥)
,,	रावलपिंडी	५॥=)	,,	चित्ताडगढ़	३॥=)
,,	पेशावर	६॥।=)	दिल्ली से-	उदयपुर	४।=)
,,	मुलतान	५।=)	,,	रतलाम	४॥।=)
,,	किरांचि वयाफुलेरा	१०॥=)	,,	खंडवा	६।)
,,	मथुरा	१।)	,,	भुसावल	७-)

,,	नासिक	८॥।-)	,,	हैदराबादद०	१२।-)
,,	बंबई [बी० बी०]	८-)	,,	मदरास	१६।=)
,,	नागपुर	१०।)	,,	रामेश्वर	२१-)

बंबई से किराया ।

भारत के प्रसिद्ध शहरों का बमूजिब टाइम बफेयर टेबिल

३० जून १९०७ बी० बी० सी० आई० रेलवे-

बंबई कुलाबासे-दादर	-)॥	,,	बड़ौदा	२॥।-)
,, सूरत	१॥।=)	,,	अहमदाबाद	३।=)
,, भड़ोंच	२।=)	,,	आबूरोड़	४॥=)

बम्बई कुलाबासे ।

मारमाड [जं]	५॥-)	चमन	१६।)
पाली मारबाड़	५॥।)	अजमेर	६।)
लूनी	६)	जयपुर	६॥≡)
हैदराबादसिंध	९।=)	बांदीकुई	७।=)
कोटरी	९।≡)	रेवाड़ी	७॥≡)
कराची	१०॥≡)	हिसार	८।≥)
रुक	११॥≡)	सिरसा	८॥।)
क्वेटा, बिलूचिस्तान	१४॥।=)	भिटंडा	९=)

फिरोजपुर	९॥।)	टूंडला	८।)
लाहोर	१०॥।	कानपुर	१०)
रावलपिंडी	१२॥)	लखनौ	१०॥=)
पेशावर	१३॥।=)	इलाहाबाद	११।)
दिल्ली	८-)	मुगलसराय	१२)
(इंटर]	१०।≥)	बनारस	"
मेरठ सिटी	८॥-)	बांकीपुर	१३।)
सहारनपुर	९।=)	मोकामाह	१३॥)
लूकसर	९॥।-)	बरदवान	१४॥।-)
हरिद्वार-बद्रीनाथ लाईन	१०)	हवड़ा कलकत्ता	१५।-)
देहरादून-मसूरी	१०।=)	रायचूर	४॥≥)
करनाला	९-)	मदरास	८।-)
अंबाला	९॥≡	पूना	१।)
कालका	१०।≡)	नासिक	१।)
शिमला	१४)	भूसावल	२॥।=)
मुरादाबाद	९।≥)	नागपुर	५।≥)
बरेली०	१०=)	खण्डवा	३॥।≡)
काठगोदामनैनीताल	११॥≥)	इटारसी	४॥।-)
भरतपुर	७॥।-)	जबलपुर	६।≡)
आगरा	८-)		

रेवाड़ी से ।

भिवानी	॥)॥।	अजमेर से-	
हिसार	।॥=)॥।	चीत्तौड़	१।≡)
सिरसा	१।=)	नीमच	१॥-)
भिटंडा	१॥।≡)	जावरा	२।≡)
नारनौल	।-)।	नामली	२।-)
फलेरा	१=)	रतलाम	२।=)

उज्जैन २॥-) इन्दौर २॥।≡) खंडवा ३॥=) हैं।

नोट—मार्ग के भेद तथा अन्य कारण से किराया में कमी वेशी भी होती है।

इसके सिवाय आपने उन २ स्थानों को ढूंढलिया है कि जिनमें अनुष्ठानादिक कार्य्योंकी प्रत्यक्ष फलसिद्धि होती प्रतीत होवे ! सो प्रत्यक्ष फल सिद्धिदाता लातानन्दा स्थल मिला जहां पुत्रप्राप्ति आदि कार्य्यों पर " शक्तियंत्र " सिद्ध कर प्रकाशित किया है जिसके धारण वा पूजन से प्रत्यक्ष फल मिलता है। जिसकी न्योछावर आज तक पूरे ४) रु० थी अब गुणी तथा महात्मा जनों के अनुरोध से दो प्रकार स मूल्य नियुक्त किया है महापुरुषों को वही पूर्वलिखित ४) रु० न्योछावर से अर्पण करते हैं और दीनजनों को १।) रु० न्योछावर से वी० पी० द्वारा भेज देते हैं सन्मुखस्थ पुरुषों को यथोचित समझ कर देते हैं। परदेश से मँगानेवाले पुरुषों को विधिवत लिख कर भेज देते हैं विशेष हाल जानना हो तो गुण, प्रशंसा, गवाही, विधि, मूल्य आदि सहित निर्मित किया हुआ षट्कर्म नामक पुस्तक प्रकाशित है मंगाकर सावधान हूजिए। परदेश से मंगानेवाले व्यक्ति को चाहिए कि १ पैसे के पोष्टकार्ड पर अपना नाम स्त्री अपने पति का नाम और, अभीष्ट कार्य्य देवनागरी अक्षरों में लिख भेजें।

पता—

उपाध्याय पं० बलिराम शर्मा पो० जोशीमठ जि० गढ़वाल।

निवेदक गोपालजी वर्मा।

इस यन्त्र की हजारों गवाहों ने प्रत्यक्ष फल मिलने की गवाही दिई है किन्तु संपूर्ण गवाहों की गवाही आपके सामने पेश करने की इस पुस्तके में गुंजाइश नहीं है किन्तु जो उच्चपद और न्यायाध्यक्ष तथा जगत को विश्वसनीय हैं उन महापुरुषों की कुछ गवाही आपके समीप पेश करता हूं पढ़ कर विश्वास कीजिए।

अंग्रेज़ी पत्र का अनुवाद ।

(१) श्रीयुक्त १०८ मुआफ़ीदार राय श्रीदत्तजी साहब जज व मॅजिस्ट्रेट, गढवाल अलमर्कूम ८ चै०शु०च० ६४ के पत्र में लिखते हैं ।

उपाध्याय पं० बलिराम शर्मा के "शक्तियंत्र" के धारण वा पूजन से जगत का उपकार होगा मैंने खुद कई एक बार परीक्षा कर निश्चय किया है ।

अंग्रेजी पत्र का अनुवाद ।

(२) जज दफ्तर राय महेन्द्रदत्तजी साहब जज व मैजिस्ट्रेट कैम्प महीपुर देहरादून मर्कूमा ७ ज्येष्ठ ६६ के पत्र में कहते हैं कि ।

श्रीयुक्त उपाध्याय पं० बलिराम शर्म्माजी महाशय आपको धन्य-वाद के साथ २ कहता हूं कि आपके "शक्तियन्त्र" के धारण से आज (८) महिना रायसाहब की बड़ी साहिबा को गर्भ स्थित हुए होगये हैं अब ईश्वर चाहे तो श्रावण में प्रसव होनेका निश्चय है आप शीघ्र ही इस तर्फ आकर दर्शन दीजिए मेरी तर्फ से श्रीभग-वती लाता मांसं विनय करते रहोगे इति शुभम् ।

(३) बनारस दुर्गाघाट १९५८ के पत्र में डाक्टर साहब बलवंत-रावजी कहते हैं ।

महोदय पं० बलिरामजी महाराज आपसे मंगाया हुआ "शक्ति-यंत्र । पं० भोलानाथजी शास्त्रीजी की स्त्री को धारण करवा कर पुत्र लाभ हुआ है मैं आश्चर्य युक्त होकर और सत्य मन से कहता हूं कि आपका "शक्तियंत्र" प्रारब्धियों को ही मिलता है ।

(५) महाजन बाबू बिशन सिंह जी साहब कोठीवाल बनारस ब्रह्मनाल १९५२ के कार्तिक के पत्र से कहते हैं कि ।

श्रीयुक्त उपाध्याय पं० बलिराम शर्म्माजी महाराज आपके सत्या-नुष्ठान "शक्तियंत्र" धारण से मेरे पुत्र हुआ मैं पितरों से उऋण हो

गया इस खुशीमें मैंने आपको २५) रु० साल आपकी जिन्दगी तक देनेका यह सनद पत्र आपके अर्पण कियां । द: बाबू विशनसिंह

बा: महावीर पांडे ।

श्रीयुक्त पं० कैलासपति पांडेयजी मु० रेवती जि० बलिया आश्विन शु० १५।१९६९ के पत्रसे कहते हैं।

श्री ६ युत उपाध्याय पं० बलिराम शर्माजी महाशय ! कैलासपति का अनेक प्रमाण पहुंचे आपसे सविनय प्रार्थना है कि जैसे " शक्ति-यंत्र " आपने सिद्ध करके गत फागुन में १यंत्र मेरे वास्ते और दूसरा सिगही राम सिंगासन को दिया उन यंत्रों से हम लोगोंका कार्य्य सिद्ध हुआ वैसेही " शक्तियंत्र " सिद्ध करके बाबू प्रमोद नारायण सिंहजी रईस को अति शीघ्र भेज देने की प्रार्थना है ।

द: कैलासपति पांडेय ।
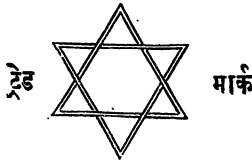
अभीष्ट सिद्धी " शक्तियंत्र "

शक्तियंत्र की अधिक बिक्री देख कर नक्काल महाशय नकल करने

को तन, मन, धन, अर्पण कर उद्युक्त हुए हैं इस वास्ते हमारे "शक्ति-यंत्र" के ग्राहकों को चाहिए कि हमारे "शक्तियंत्र" पर ट्रेड मार्क (निशान) षट्कोण देखकर धारण करें।

पता—

उपाध्याय पं० बलिरामशर्म्मा } निवेदक गोपालजी वर्म्मा।
पो० जोशीमठ (गढवाल)

आंख की अक्सीर, और परीक्षित औषधि।

बदरीश हिमालय में पैदा होने वाली ममीरा के योगसे—तय्यार किया हुआ "नेत्रावलेह" का मूल्य ॥) बड़ी डिब्बी। छोटी डिब्बी।) जो हमेशा लगानेवाले को पूरी मात्रा है।

आंखसे पानी और खुजली लाली पीड़ा पर औरत के दूधमें घिस कर रत्तीभर औषध का चारों ओर लेप कर और आंखमें छोड़ देनेसें (१०) मिनट में आंख साफ और पीड़ा आराम होती है (२) रोज ऐसे करने से (२) महीने की बीमारी जड़से साफ हो जाती है। बरसों की बीमारी (१) महीने भर विधि सहित सेवन करनेसे निर्मूल हो जाती है।

रतौंधी, धुंद व जाला पर भी यही विधि है फूली पर बच्चेवाली औरत के दूध में डाल कर आंख के चारों ओर लेप करे और आंख में छोड़ भी देवे ऐसा करने से ७ रोज में फूली कट जाती है (५) साल की फूली कट सकी है अधिक साल की नहीं कटेगी।

आंखकी जोत बढ़ाने के लिए सप्ताह में (७) दिन में १ रोज सेवन करने से काफी है बाकी विधि डिब्बियों के लेबिलों पर छपा रहता है।

पता—उपाध्याय पं० बलिराम शर्म्मा
पो० जोशीमठ गढवाल।

" शिलाजीत "

यहां बद्रीश लाइन में हरसाल सरकार गवर्नमेन्ट की ओर से ठीके पर १५ · · २० . दूकानें रहती हैं किन्तु उत्तम शुद्ध और गुणकारी चीज पांचही चार दूकानों में मिलती है और अपनी २ शिलाजीत सब ही उत्तम बतलाते हैं परन्तु वह सत्य नहीं है इन लोगों के विश्वास दिलाने से भोले भाले लोक धोके में आ जाते हैं सो सब अनर्थ है सच्ची दूकानों का पता पत्रव्यवहार, हमारे पत्ते से करने में यथार्थ भाव बतलाया जाता है या सच्ची दूकानों से खरीद कर वी० पी० पारसल से भेज भी देते हैं।

उत्तम शिलाजीत का भाव १।) १॥) २) ३) और घटिया का -) ≈) ≡) ।) ॥) बतलाते हैं इस अनर्थ को देख कर इन लोगों पर कैसे विश्वास हो सकता है इसकी पहिचान कई तरह से कहते हैं किन्तु सच पूछिये तो इसकी पहिचान कुछ भी समझ में नहीं आती है, हां, जो इसकी पहिचान जानते हैं वे तो असल भाव भी जान सकते हैं कि इसके बनाने में किस तरह परिश्रम है तो भाव ।) ॥) १।) होना अवश्य ही होना चाहिए किन्तु जो लोग केवल ठीकेदारों के ही विश्वास दिलाने से काली स्याह समझ कर -) ≈) १।) १॥) ३) रु० तोले के भाव से खरीद कर पीछे पछताते हैं उन लोगों को चाहिए कि किसी भले आदमी के राय से या जो इस अमूल्य गुणवाली अमृतलता को पहचानता हो जांच कर लेवे नहीं तो अशुद्ध सेवन से मरण होता है। हर तरह के विज्ञापनबाजों के विश्वास दिलाने से धोके में न आकर मुझसे १ पैसे का पोष्टकार्ड में शिलाजीत के भाव पहिचान या सच्ची दूकान का पता पूछ कर सावधानी से मंगा कर यथार्थ गुण पावेंगे।

शिलाजीत के गुण जैसे शास्त्रों में या विज्ञापनवालों के विज्ञापनों में हैं सो यथार्थ हैं किन्तु सिद्धान्त है कि 'परवाच्येषु निपुणः सर्वो भवति सर्वदा। आत्मवाच्यं न जानाति जानन्नपि विमुह्यति' दूसरे को तो अवश्य ही विश्वास दिलाने में निपुण। किन्तु हैं स्वयम् विश्वसनीय नहीं हैं।

शिलाजीत के गुण-नामर्दी कमजोरी, धातुक्षीणता, प्रमेह, सुजाक; कम ताकत, आदि रोगों की उत्तम औषधि है।

नोट-मैं ठीकेदार नहीं हूं न मैं शिलाजीत को बेचता हूं न मुझे इस से कुछ लाभ ही है केवल मुझे आप लोगों के हित की बात बतला देना ही अत्यावश्यक है।

कस्तूरी का भाव-खुली २०) २५) ३०) ४०) रु० तोले। बंद ८) १२) १६) रु० तो०। इसके भाव में कमी बेशी क्यों है इसके लिए पत्रव्यवहार से खुलासा होगा।

चंवर ३) ४) ६) ८) १०) १५) रुपये सेर के भाव से मिल सके हैं इसके खरीदने में धोका नहीं है क्योंकि यह चीज खुलासा है इसकी जांच सर्व साधारण से भी हो सकती है।

बद्रीनाथजी से लौटती बार आपको नीचे लिखी चीजें अवश्य लेने योग्य हैं।

(१) बद्रीनाथजी के अंगवस्त्र।

(२) चन्दन गोली, चन्दन की चरणपादुका।

(३) सूखा प्रसाद घरमें बांटने को।

(४) द्रोणपत्र की माला यह चीजें आपको मोक्ष प्रद हैं।

(५) चारधाम सहित बद्रीमाहात्म्य यह आपको ज्ञानप्रद है।

बद्रीनाथ लाइन में मिलनेवाली चीजें, शिलाजीत, कस्तूरी, चंवर, भूर्जपत्र, तेजबल की लाठी, निर्विषि, बद्रीशधाम में पैदा होनेवाली ममीरा के योग से तय्यार " नेत्रावलेह " ब्राह्मीबूटी, आदि चीजें आपको विश्वासी जनों की राय से लेनी चाहियें।

निवेदक-

उपाध्याय पं० बलिराम शर्म्मा

पो० जोशीमठ, गढवाल

बद्रीनाथ में मिलने का पता—

पं० भवानी दत्त भट्ट।